आत्म-निवेदन

•

कुछ लोग विश्वविद्यालयों में पढ़-पढ़ कर विद्वान् बनते है, और कुछ लोग विश्वविद्यालयों की देहली पर पैर भी नही रखते और तब भी वे विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक बन जाते है। उनके लिखे ग्रंथ विश्वविद्यालयों में पढ़ाये तक जाते हैं। महापडित राहुल साकृत्यायन की ही जाति के ही साहित्यकार श्री मार्टिम विक्रमसिह ने भी कभी किसी विद्यालय या महाविद्यालय मे कुछ भी कहने-सुनने लायक पढ़ाई नही की। तो भी उनकी कृतियाँ न केवल सिंहल में आदृत हैं; बल्कि सिंहल से बाहर अंग्रेजी, रूसी आदि विदेशी भाषाओ में अनूदित हुई हैं।

श्री मार्टिम विक्रमसिह का जन्म २९ मई १८९१ को दक्षिण श्रीलंका के कोग्गल नामक गाँव मे हुआ। २२ वर्ष की आयु से नियमित रूप से लिखना शुरू किया। संतोष और सौभाग्य का विषय है कि ८१ वर्ष की परिपक्व आयु में भी उनकी लेखनी ने विश्राम नही लिया।

उनका पहला उपन्यास 'लीला' उस समय प्रकाशित हुआ, जब वे कोई ३० वर्ष के थे। श्री मार्टिम विक्रमसिह ने एक-दो नही, लगभग १६ उपन्यास लिखे है, जिनमे सबसे प्रसिद्ध है 'कीचड़ द्वीप', 'विराग', 'ग्राम-परिवर्तन', 'कलियुग' और 'युगात'। पहले दो उपन्यासो को छोड़ कर शेष तीनों को हम एक ही

उपन्यास के तीन खण्ड भी कह सकते हैं। केवल उपन्यास ही नही, हमारे 'यशपाल' की तरह आपने कहानियाँ भी लिखी है, और यह कह सकना कठिन है कि आप अधिक अच्छे उपन्यासकार हैं या कहानी लेखक ? आप के सात कहानी-संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं।

मार्टिम विक्रमसिंह केवल कहानीकार और उपन्यासकार ही नही हैं। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार है। 'सिंहल-संस्कृति', 'बौद्ध जातक कथाएँ', 'रूसी उपन्यास' और 'सिंहल-साहित्य' ये चारों ग्रन्थ आप की अंग्रेजी रचनाएँ हैं।

उपन्यासो और कहानियो के अतिरिक्त अन्य विविध विषयो पर भी लेखक ने अन्य ग्रन्थ-रचनाएँ की है। आप की कुछ विशिष्ट कृतियो के नाम है, (१) बौद्ध दर्शन और समाज दर्शन, (२) सोवियत भूमि का उत्थान, (३) बौद्ध-धर्म और संस्कृति तथा (४) सिंहल विचार वीथि।

पालि-थेरी-गाथाओ का सिंहल कविता मे उल्था करने का श्रेय आपको ही प्राप्त है।

लेखक के जिस उपन्यास का हिन्दी रूपान्तर पाठको की सेवा मे उपस्थित किया जा रहा है, उसका सिंहल नाम है 'गम्पेरलिय'। इसका शब्दशः अनुवाद होना चाहिये : 'ग्रामपरि-वर्तन'। सिंहल भाषा मे तो 'गम्पेरलिय' ठीक है, किन्तु हिन्दी मे उसे 'ग्राम परिवर्तन' कर देने से ऐसा लगा कि कही पाठक इसे सेवाग्रामी-उपन्यास न समझ लें। इस उपन्यास को सर्वोदयी-विचारधारा से कुछ भी लेना-देना नही है। इसीलिए हिन्दी मे इसे 'एक गाँव : अनेक युग' कर दिया है, जो नाम उपन्यास के वर्ण्य-विषय का अधिक अच्छा बोधक है। और यूँ यह बात अपनी जगह सत्य ही है कि हर नाम केवल पुकारने भर के लिए ही होता है।

अनुवादक स्वयं न कहानी-लेखक है और न उपन्यास-लेखक। कहानी-लेखक और उपन्यास-लेखक होने का सौभाग्य होना तो दूर की बात, वह उनका अच्छा पाठक भी नही रहा। उसकी गिनती उन अज्ञो में की जा सकती है कि जो 'इतिहास' ग्रन्थों को 'कहानियो' और 'उपन्यासो की अपेक्षा अधिक यथार्थ, अधिक प्रामाणिक वाङ्मय मानने के अभ्यस्त रहे है। किन्तु इधर अनुवादक को भी यह विश्वास हो गया है कि 'कहानी' और 'उपन्यास' तो साहित्य की दो विधायें मात्र है और वे दोनो आंतरिक तथा बाह्य-जगत् के यथार्थ चरित्र-चित्रण मे इतिहास पर आसानी से बाजी मार ले जा सकती है। उनमें 'इतिहास' की अपेक्षा कही अधिक 'इतिहास' रहता है।

'एक गाँव : अनेक युग' एक बदलते हुए गाँव और उससे भी अधिक उस गाँव के बदलते हुए समाज का इतिहास है, संभवत: लेखक के अपने गाँव कोग्गल का ही। उपन्यासकार ने उपन्यास का आरंभ ही इन शब्दो से किया है—

'गाँव-रूप से कोग्गल के सात-आठ हजार वर्ष पुराना होने का प्रमाण पृथ्वी के नीचे हो तो हो, किन्तु पृथ्वी के ऊपर एक भी नही है, यूँ एक भूमि-खण्ड की हैसियत से यह गाँव करोड़ों वर्ष पुराना भी हो सकता है। इसका साक्षी है रेलवे-लाइन के पास वह पर्वत, जिसे ग्राम-वासी 'हिटिगल देवालय' या 'देवल-गल' कहते है।' (पृ० १)

सारा उपन्यास इसी गाँव के एक 'बडे घर' का इतिहास है। उसके अधिकांश पात्र इसी 'बड़े घर' के है। उस घर और उसके निवासियों के बारे मे लेखक का कहना है : "समय के परिवर्तन से होनेवाली वेदनाओ को जिस प्रकार यह घर सहन करता चला आया है, उसी प्रकार समाज के परिवर्तन से होने

वाली पीडाओ को सहते चले आने की दृढ वंश-परम्परा का अभिमान उस घर के निवासियो को है।" (पृ० ४)

जिस प्रकार काव्य के खण्ड-काव्य, और महाकाव्य आदि भेद किये जाते है, उसी प्रकार मैं समझता हूँ कि 'महाउपन्यासो' के भी वैसे ही लक्षणो से मिलते-जुलते लक्षण किये जा सकते हैं, अथवा महाकाव्य के लक्षणो को ही महा-उपन्यास के लक्षणों के रूप मे स्वीकार किया जा सकता है। ग्रथ का आकार-प्रकार अथवा उसकी वृहत् पृष्ठ संख्या ही किसी कृति को 'महाकाव्य' या 'महा-उपन्यास' नही बना सकती।

इन पंक्तियो के लेखक की विनम्र सम्मति में यथार्थ चरित्र-चित्रण ही किसी भी उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता है—व्यक्तियो के मनोभावो का चित्रण, उनके हृदयो के घात-प्रतिघातो का चित्रण, समाज का सही चित्रण और प्रकृति का मनमुग्धकारी चित्रण। और इन सबसे ऊपर लेखक की अपनी मान्यताओं का ईमानदाराना-चित्रण। जिन लेखकों की किन्ही भी विषयो में अपनी कुछ भी मान्यताएँ नही हैं, जो 'कला कला के लिए' के ही उपासक है, ऐसे मिथ्याचारियो के विषय मे हमे कुछ भी नही कहना है।

मातर स्वामिनि, जो इस उपन्यास की एक प्रधान पात्र है, के विषय मे लेखक का कहना है—

"ऐसे अवसर बहुत ही कम आये है कि उसके खाते समय कोई भिखमंगा चला आया हो और वह भूखा ही लौट गया हो। उसके समस्त जीवन मे ऐसी एक भी पूर्णिमा नही आई थी, जब उसने साग-सब्जी से भरी एक तश्तरी और वैसी ही दूसरी भात की तश्तरी 'विहार' न भेजी हो। इतना होने

पर भी वह भिक्षुओ या 'धर्म' के प्रति अंधी-श्रद्धा रखनेवाली 'उपासिका' न थी।" (पृ० २४)

उसी मातर-स्वामिनी के बारे मे अन्यत्र कहा है—

"उसके छुटपन का समाज अब वैसा समाज नही रहा, गाँव अब वैसा गाँव नही रहा, वह बात मातर-स्वामिनी के ध्यान में नही आती थी। राष्ट्र मे परिवर्तन आने पर उस राष्ट्र के निवासी भी बदल जाते हैं—यह बात न तो उसको मिली शिक्षा का ही विषय थी और न उसके प्रत्यक्ष अनुभव में आई थी।" (पृ० ४०)

उसी समय के समाज का चित्रण इन शब्दों में किया गया है—

"उन दिनो ऐसी कोई भी गृहिणि जो मध्य-आयु पार कर चुकी हो, घर से दो फलांग दूरी पर भी जाती, तो या तो किसी दूसरी स्त्री को साथ लेकर, या किसी लड़के को अथवा किसी नौकर-चाकर को।' (पृ० ४४)

एक जगह प्रकरणवश लिखा है—

"आज से सात आठ वर्ष पहले ग्रामीण लोग इससे कुछ भिन्न तरह से ही दुलहिन को दिखाते थे...सात आठ वर्ष से यह प्रथा लुप्त हो गई है, और इसकी जगह नई पद्धति ने ले ली है।" (पृ० ७४)

मातर-स्वामिनी जैसे ही एक दुसरे पात्र की मनोदशा का चित्रण इन शब्दों मे किया है—

"ज्यो ही पियल ने सुना की नन्दा का विवाह किसी दूसरे से होने जा रहा है, तो समय रूपी शीतल जल से शान्त हुई उसकी रागाग्नि पुन· प्रज्ज्वलित हुई, उसमे ईर्ष्या और शंका रूपी ईंधन पडने से, उसकी साँस की गति तीव्र हो गई।" (पृ० ८६)

तिस्स घर-भर का लाड़ला लड़का है। उसके वारे मे लिखा है—

"स्त्रियो की वात सोचने पर या तो उसे अपनी माँ की याद आती थी, या कभी-कभी वहनो की। इसलिए उसके मन मे स्त्रियों के प्रति या तो गौरव का भाव था, या भय का अथवा लज्जा का।" (पृ० १००)

इसी तिस्स के वारे मे उसकी दोनो वहनो और माता के स्नेह ने इस प्रकार अभिव्यक्ति पाई है—

"शुभ मुहूर्त पर कोलम्वु के लिए प्रस्थान करने से पूर्व अनुला तथा नन्दा ने पान के पत्तो मे दो-दो रुपये लपेट कर तिस्स के हाथ मे रखे। माँ ने भी तिस्स को दो रुपये दिये और उसका मुँह चुम साश्रु नेत्रों से वोली—

"वेटा, अच्छी तरह रहना। गाँव की तरह रात मे कही मटरगश्ती करने न जाना। कुसंगति से वचे रहना। काम करते समय पढाई की भी फिकर करना।" (पृ० १३१)

इसी तिस्स का परिचय इन कसे हुए शव्दो मे दिया है—

"तिस्स उन लोगो मे से था कि जिनके लिये न केवल उनकी भावनाएँ कष्टप्रद होती हैं, वल्कि उनकी वुद्धि भी उन्हे कष्ट देती है। भावनाओं की तीव्रता उसे अपनी माता से मिला प्रसाद था, वुद्धि की कुशाग्रता पिता की कृपा थी।" (पृ०१४७)

पियल और नन्दा दो अन्य प्रधान पात्र है। नन्दा को लेकर पियल की मनोदशा का चित्रण इस प्रकार हुआ—

"विवाह से पहले जव पियल ने नंदा की ओर देखा, तो उसके मन मे किसी कवि के मन मे पैदा होनेवाली भावना पैदा हुई थी। 'नन्दा मुझे प्यार करती है' मानना उसके असीम सन्तोष का कारण हुआ। उस समय जो 'लालसा', जो 'सन्तोष की भावना' पियल के मन मे पैदा हुई, वह उस लालसा या संतोष

की भावना से किसी भी प्रकार भिन्न न थी, जो उस बालक के मन मे पैदा होती है, जिसे कही से एक चमकदार परोवाला पक्षी मिल गया हो।" (पृ० १४३)

और नन्दा के बारे मे है—

"अपने भीतरी प्रकाश से अपने जो दोप दृष्टिगोचर हो उन्हे धर्म की किसी मान्यता की चादर से ढँके रखने का अभ्यास नन्दा को न था।" (पृ० २५०)

व्यक्तियों के चरित्र-चित्रण से भी कठिन होता है समय-विशेष के समान विशेष की अवस्था का सही स्वरूप उपस्थित करना। उपन्यास-सम्राट् प्रेमचन्द इस कला मे माहिर थे। उन्ही के ढंग पर सिंहल उपन्यास-सम्राट् ने भी लिखा है—

"बडे घर के लोग अपने लिए शास्त्र पुछवाना या अदृश्य दिखलवाना कत्तिरिना जैसी विश्वासपात्र स्त्रियो के माध्यम से ही करते थे।" (पृ० ५८)

इन्ही बडे लोगो के बारे मे है—

"न केवल गाँव के लोग ही 'बडे घर' के लोगो की तंग-दस्ती से अपरचित थे, बल्कि प्रायः घर पर आने-जानेवाले पियल आदि को भी इसका कुछ पता न था। अपनी तंग-दस्ती दूसरो से छिपाये रखने के लिए यदि उन्हे भूखे रहना पड़ता था, तो भी वे अपने वंशाभिमान के कारण ऐसा करने मे समर्थ रहे।" (पृ० १५३)

ग्रामीण स्त्री की पति-भक्ति का विश्लेषण जितना सहानुभूति-पूर्ण है, उतना ही यथार्थ भी—

"ग्रामीण स्त्री की पति-भक्ति एक मिली-जुली भावना है। उसमें अनुराग, कृपा, माता बनने की इच्छा, पुत्र-वात्सल्य, अपने अनाथ होने की भीति, वस्त्राभरण पाने की उम्मीद,

लज्जा तथा भय आदि सभी भावनाओं का सम्मिश्रण रहता है।" (पृ० १५२)

और नगर की क्या स्थिति है। उपन्यासकार का मत है—

"नगर में गरीब स्त्री की तो बात क्या यदि मध्यम श्रेणी की भी कोई स्त्री सच्ची कीमती माला पहने हो, तो भी प्रायः सभी शक करते हैं कि गिल्ट की माला होगी। लेकिन दूसरी ओर कोई खानदानी स्त्री चाहे गिल्ट की माला ही पहने हो, सभी विश्वास करते है कि उसने सच्ची कीमती माला पहन रखी होगी। इसलिए झूठी शान बनाये रखने की कोशिश करनेवालो की शहरो मे कमी नही है।" (पृ० १८३)

मनोभावों को चित्रित करना और भी कठिन है। नन्दा को ही ले कर एक जगह लिखा है—"नन्दा के चेहरे पर परछाईं छा गई। मानों पतले असित्-वर्ण मेघ ने अपने ही जैसे श्वेत वर्ण मेघ को आछन्न कर दिया हो। इसका कारण शोक-स्वरूप मेघ नही था, बल्कि कोप स्वरूप मेघ का टुकडा था।" (पृ० १५७)

चेतन और अचेतन मन की प्रक्रिया की अभिव्यक्ति कितनी सुष्ठु बन पड़ी है।

"दिन मे हमारे चित्त मे उभर कर प्रकट हो सकनेवाली कुछ अला-बला भावनाएँ अपने नग्न-स्वरूप की वजह से लज्जा और भय के मारे मुँह छिपाये रहती हैं। घोर अन्धकार होने पर, आँखों के सामने अँधेरा छा जाने पर, चित्त भी कुछ अंधकारपूर्ण हो जाता है, इसीलिये हमारे अचेतन मे छिपी हुई अंधकार से प्रेम करनेवाली कुछ अला-बला भावनाएँ रात को अकेले रहने पर ही हमारे मन में प्रकट होती हैं।" (पृ० १७७)

कहीं-कहीं ऐसा भी लगता है कि किसी-किसी पात्र के मुँह से उपन्यासकार जैसे स्वयं बोल रहा हो। एक प्रकरण है।

"पचहत्तर प्रतिशत तरुण किसी भी तरुणी को स्वीकार कर लेते हैं और सौ मे से निन्यानवे तरुणियाँ किसी भी ऐसे तरुण को जिसके एक सिर हो, दो हाथ हो, तथा दो टाँगे हो—यह उस महानास्तिक जेम्ज का मत था।" (पृ० ८६)

किसी का भी मत हो, यह न तरुणों के लिए कोई अच्छा सर्टिफिकेट है, न तरुणियों के लिए।

यहीं-कही प्राकृतिक चरित्र-चित्रण भी बड़े अच्छे बन पड़े हैं, जैसे—

"बाई ओर की नीची भूमि मे धीरे-धीरे उतरने वाली नदी के बाई ओर के खेतों के नीचे से उठी पर्वत-शृङ्खलाओ को ढक रखनेवाले, क्षितिज तक फैले हुए आरण्य पर सफेद दागवाले बडे भारी चदौवे के समान विस्तृत आकाश की छाया पड़ रही थी, जिससे वह नील-वर्ण हरित-वर्ण जैसा प्रतीत हो रहा था।" (पृ० २४३)

सारा उपन्यास ऐसे लोगों पर जो या तो समय के अनुसार बदलते नही, या बदलने पर मजबूर होते है, तो भी उस अपेक्षित परिवर्त्तन को स्वीकारते नही—करारी चोट है। 'प्रगति-शील' शब्द के यथार्थ अर्थो मे यह एक 'प्रगतिशील' चिंतक की प्रगतिशील रचना है।

विद्यालकार विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष की हैसियत से श्रीलंका मे रहते समय ही नही उससे बहुत पहले मैंने एक योजना बनाई थी कि हिन्दी के कम-से-कम पाँच प्रति-निधि ग्रन्थ अपने देश की दस भाषाओ मे और कम-से-कम चार प्रमुख विदेशी भाषाओं में भी पहुँचने चहिएँ और इस प्रकार देश की दसो भाषाओ के और चार प्रमुख विदेशी भाषाओं के कम-से-कम पाँच ग्रन्थ हिन्दी में आने चाहिये। उन पाँच ग्रन्थों में से एक ग्रन्थ उन-उन भाषाओं का कोई न

कोई अच्छा उपन्यास हो, दूसरा कोई न कोई अच्छा प्रतिनिधि कहानी-सग्रह हो, तीसरा उन उन भाषाओ तथा उनके साहित्य से परिचित कराने वाला ग्रन्थ हो, चौथा उन उन भाषाओ के किसी प्रतिनिधि काव्य का अनुवाद हो और पांचवां हिन्दी का उन उन भाषाओ मे और उन उन भाषाओ का हिन्दी मे शब्दार्थ देनेवाला कोष हो। सिहल मे रहते समय जहाँ तक श्रीलका का सम्बन्ध है, मैने अपने उस पुराने संकल्प को पूरा करने का प्रयास किया। मुझे सन्तोष है कि १—'श्रीलंका और उसके निवासी' लिखा जा सका, और प्रकाशित भी हो गया।

२—भिक्षु मेधंकर जी द्वारा 'सिहल का प्रतिनिधि-कहानियो' का एक हिन्दी रूपान्तर उपस्थित किया जा सका।

३—'बुद्धगुणालंकार'—एक सिहल काव्य हिन्दी मे अनूदित हो सका।

४—'सिहल भाषा और साहित्य' जिसमें एक सक्षिप्त सिहल हिन्दी कोष भी है, प्रेस मे है।

५—सिहल उपन्यास का हिन्दी रूपान्तर पाठको के हाथ मे है।

यह उपन्यास श्रीलंका मे रहते समय ही अनूदित हो गया था। कुछ अनिवार्य कारणों से यह इतने अधिक विलम्ब से प्रकाशित हो रहा है, और मैं इस बीच अपने उन सिहल विद्यार्थियो से और अपने ऐसे सभी दूसरे सहयोगियो से भौगोलिक दृष्टि से इतना दूर हो गया हूँ कि जिन्होने इस अनुवाद-कार्य को नाना दृष्टियो से मेरे लिए सुगम बनाया था, उनमे से किसी का भी नामोल्लेख न कर, सभी का कृतज्ञतापूर्ण स्मरण कर लेता है।

हिन्दी-प्रचारक संस्थान के श्री कृष्णचन्द्र बेरी मार्ग मे आई अनेक बाधाओं के बावजूद देर से ही सही, इसे मुद्रित करा सके, यह उनके किसी पुण्य-प्रताप का ही फल है।

हिन्दी मे कदाचित् यह पहला ही उपन्यास है, जो सिंहल से अनूदित हुआ है।

इधर सूचना मिली है कि भगवती बाबू की बहुचर्चित 'चित्रलेखा' ने भी सिंहल-रूप अपना लिया है। यह आदान-प्रदान एक-तरफा नही ही होना चाहिये।

भिक्षु-निवास, दीक्षा भूमि
नागपुर

आनन्द कौसल्यायन
२४/२/७२

परिच्छेद/१

एक ओर समुद्र और दूसरी ओर एक सुन्दर नदी—दोनो के बीच जो स्थल-खण्ड है, वही कोग्गल है। सीधी पट्टी की तरह बढ़ी चली गई गालु-मातर सडक से यह समुद्र-तट उसी प्रकार पृथक जान पडता है, जैसे किसी घर का आगन वा बरामदा उस घर से। गालु-मातर सडक के साथ साथ, ऊँची उठी हुई मिट्टी पर ही सुला दी गई रेल की लाइन एक ओर-छोर-विहीन सीढ़ी के सदृश है। मिट्टी की ऊँचाई पर बिछी हुई रेल की सडक जमीन से और साथ साथ जानेवाली मोटर की सडक से भी कई फुट ऊँची है। मिट्टी काटने के परिणामस्वरूप बने गढे रेल की सड़क के दोनो ओर दिखाई देते है। छोटी पुलिया के पास के गढे तो कँवल और मछलियों के निवास-स्थान जलाशयों के समान है।

गाँव-रूप से कोगल्ल के सात-आठ हजार वर्ष पुराना होने का प्रमाण पृथ्वी के नीचे हो तो हो, किन्तु पृथ्वी के ऊपर एक भी नही है, किन्तु एक भूमि-खण्ड की हैसीयत से यह गाँव करोडो वर्ष पुराना भी हो सकता है—इसका साक्षी है रेल्वे-लाइन के पास का वह पर्वत, जिसे ग्राम-वासी 'हिटिगल-देवालय' अथवा 'देवाल-गल' कहते है। ऐसा यह पर्वत वृक्षों और लताओं की उत्पत्ति के समय से भी पहले से इस प्रदेश मे होनेवाले परिवर्तनो को बडे स्थिर भाव से निहारता रहा है। डाइनामाइट से भी जिसे उड़ाया न जा सके ऐसा वृक्ष-स्कन्ध-सा, पत्थर के छिलटों से निर्मित यह महापाषाण, आदमियो की बस्ती के आरम्भ होने के समय से उन के सुख-दुःख, उनके रोने-पीटने को, आँख और कानों के न होने के बावजूद, देखता और सुनता चला आ रहा है। पत्थर मे जगह-जगह पड़ी हुई दरारें हजारों वर्ष तक धूप-पानी से होनेवाले कष्ट की साक्षी-मात्र है। इन दरारों के बीच मे जो मिट्टी है और उस मिट्टी मे जो पौदों की

झाड़ियाँ-सी उग आई हैं जो निदाघ तथा वर्षा से इस पत्थर की रक्षा करती है, उस के मूल मे उनकी कृतज्ञता ही है। क्योंकि विवरों के बीच की यह मिट्टी भी धूप-पानी की मार खाये हुए इस पत्थर का चूर्ण मात्र ही है।

समस्त गाँव को एक ही बगीचा बना देनेवाले नारियल के पेड़ तथा दूसरे भी पेड़ बढ़ते हैं, फूल और फल धारण करते हैं तथा वार्धक्य को प्राप्त हो मरणोन्मुख होते हैं। प्राणी भी थोड़े समय तक जीवित रह कर मरण को प्राप्त होते हैं। मनुष्य अपने अज्ञान के कारण और भयानक दरिद्रता के कारण तथा अपनी गलतियों के कारण प्राकृतिक शक्तियो के शिकजे मे कसे जाकर दु.ख भोगते हुए मृत्यु को प्राप्त होते हैं। लाखों वर्ष पूर्व हुए परिवर्तनों की तरह ही जिस पर्वत ने मनुष्यो की बस्ती आरम्भ होने के बाद से हुए परिवर्तन तथा दूसरी विनाश-लीलाये देखी हों, ग्रामवासियो का उस पर्वत को 'देवालय-गल' कहना कितना समीचीन है !

अनुकूल प्रतिकूल दैव-शक्ति के बारे मे अनपढ लोगों की ही अपनी कुछ धारणाये हों—ऐसी बात नही है। इस मे साक्षर-निरक्षर सब बराबर हैं। कुछ ग्रामीण समझते हैं कि उस दैव-शक्ति का धातृ-देव वह पत्थर ही है। इसीलिये तो उन्होंने उस पत्थर को 'देवालय-गल' कहना उपयुक्त समझा है। कुछ पढे-लिखे लोगों को यह दैवी-शक्ति ग्रहों मे दिखाई देती है और दूसरे कुछ पढे-लिखों को यह दिखाई देती है 'कर्म-फल' मे। अपने सुख-दु:ख को देखने वाले तथा अपने रोने-धोने को सुननेवाले इस स्थिर पत्थर को यदि उस गाँव के लोग उस दैवी-शक्ति का धातृ-देवता मानते हैं, तो हम समझते हैं कि वह उतने कल्पनाशील नही है, जितने प्रत्यक्षवादी।

इस हिरि-गल के बाई ओर ग्राम-सभा की सडक की ओर जो उस की ठोडी-सी बढी हुई है, उसी ने अपने नीचे के एक पाषाण-निर्मित तल पर छाया कर रखी है। यह छाया वाला फर्श ही, वहाँ आकर उस 'देवालय-गल' की पूजा करनेवाले ग्रामीणों की पूजा-

स्थली है। वे उस पत्थर पर आरोपित किये हुए अपने देवता की प्रदीपों और पुष्पों से पूजा करते हैं। इस पूजा-स्थली पर अथवा उसके पास ही गाडी हुई चार छपरियों पर बनाये हुए प्रदीपाधार में प्रज्वलित, उस गुफा को अपने प्रकाश से प्रकाशित करनेवाले उस प्रदीप को सन्ध्या के समय उधर से गुजरने वाला कोई भी राही देख सकता है।

पपीते के खोल मे नारियल का तेल डालकर रोज-रोज इस दीपक को जलानेवाले ग्रामीण जन ही होते हैं, विशेष रूप से ग्रामीण-नारियाँ। अन्धेरा होते ही कभी कभी कोई ग्रामीण आ पहुँचता है और अपने रोग-ग्रस्त पुत्र के रोग-मुक्त होने की प्रार्थना करता है। कोई स्त्री व्यापार के निमित्त दूर गये हुए अपने पति के कुशल-क्षेम की कामना करती है। अपने शत्रु के विनाश की किसी ग्रामीण द्वारा की जानेवाली प्रार्थना उस सड़क से गुजरनेवाले किसी के भी कान मे पड जा सकती है। कभी वह गृहणी भी यहाँ दिखाई दे जा सकती है कि जो घुटने टेककर अपनी गौ अथवा अपने आंगन के केले के घवड को चुरा कर ले जानेवाले चोर के सर्वनाश की कामना कर रही है। हाँ, और वह, मध्यवयस्का भी जिसे किसी दूसरी स्त्री ने 'वांझ' कह दिया है और जो उस पत्थर पर मिर्च पीस-पीस कर यही याचना कर रही है कि उसे 'बाझ' कहनेवाली स्त्री भी इसी प्रकार पीसी जाय। ऐसी स्त्रियो को जिन्होंने अपनी आँखों देखा है, ऐसे वृद्धजन अभी भी उस गाँव मे है।

इस पत्थर के ठीक पीछे—कँदुरु आदि वृक्षों के झुड से भी परली तरफ एक विशल घर है। उसकी दीवारे ही लगभग दो फुट मोटी हैं। पुरानी पड जाने के कारण भूरी ही नही काली तक पड गई कटहल की लकडी की चौखट और खिडकी तक भी उस दीवार से वेमेल न होने की वजह से ऊँचाई तथा-आकार प्रकार की दृष्टि से विशाल है, मजबूत है। वराम्दे की छत को सिर पर उठाये हुए कटहल की ही लकड़ी के जो खम्भे हैं, उन्हें छोटी आयु का कोई

भी लड़का अँकवार नही भर सकता था। कड़ियाँ भी आजकल की हवेलियों के शहतीरो से छोटी न थी। हालैण्ड के लोगों के समुद्री-प्रदेश से प्रस्थान करने से पूर्व बना प्रतीत होनेवाला यह घर ही पुराना और दृढ नही है, इस में रहनेवाले लोगों की वंश-परम्परा भी प्राचीन है और सुदृढ है। धूप-बरसात, हवा और समय की मार से होने वाली पीड़ा को सहने की जितनी सामर्थ्य इस घर मे है, उतनी सामर्थ्य आजकल के बने किसी मकान में नही। एक लम्बे अर्से से इस प्रकार के आघातों को जिस स्थिरता से यह घर सहन करता चला आया है, उस के कई चिह्न इसकी चौखटो तथा दीवारों पर दृष्टिगोचर होते है।

यह घर ही नही उस के निवासी भी ऐसे ही है, जिनका किसी आधुनिक गाँव से मेल नही खाता। वे धीरे-धीरे विनाशोन्मुख जड-चेतन पदार्थो की अन्तिम कडियो के समान है। समय के परि-वर्तन से होनेवाली वेदनाओ को जिस प्रकार यह घर सहन करता चला आया है, उसी प्रकार समाज के परिवर्तन से होनेवाली पीडाओं को सहते चले आने की दृढ वंश-परम्परा का अभिमान उस घर के निवासियो को है। कितना ही बडा हो और कितना ही मजबूत हो, तो भी हर बुद्धिमान् को यही लगता था कि यह घर भी अब और पचास या साठ वर्ष से अधिक बना न रहेगा। जिस प्रकार पोलन्नरुव के किसी पुराने टूटे-फूटे विहार की मरम्मत उसे नवजीवन प्रदान नही कर सकती, उसी प्रकार किसी प्रकार की मरम्मत आदि से इस घर को भी नया जीवन नही ही प्रदान किया जा सकता। इतना होने पर भी केवल कोई ऐसा बुद्धिमान् ही जो इस गृह-वंश-परम्परा के साथ घटनेवाली घटनाओं की जानकारी रखता हो, यह कह सकता है कि इस घर की वंश-परम्परा भी एक दिन नाम-शेष ही रह जायगी।

जिस घर की ऊपर चर्चा की गई है, वह उस गाँववालो के लिये 'बड़ा घर' था और उस घर के आस-पास की दो एकड की जमीन थी,

'महागृह उद्यान'। उस घर के मालिक श्री० दोन् अदिरियन् -कयि-सारवत्ते मुहन्दिरम् उस गाँव के एक ऊँचे पुराने खानदान से सम्बन्ध रखते थे। घर मे भार्या थी, बड़ी आयु की दो लडकियाँ थीं, छोटी आयु का एक बच्चा था। इस घराने की ऐतिहासिक रूप-रेखा हम आरम्भ करने जा रहे हैं १९०४ के अप्रैल महीने से, सिंहल नव-वर्षारम्भ से ठीक एक दो दिन पहले से—जिस दिन इस 'महान् गृह' मे एक बड़ा उत्सव होता था। ऐसा महोत्सव इस गाँव मे अन्य किसी के घर भी न होता था, होता था तो कयिसारुवत्ते मुहन्दिरम् के घर ही, और वह भी वर्ष मे केवल एक बार।

'छोटे बरतनों की रसोई' नाम का जो यह पारिवारिक उत्सव था, उस मे मुहदिरम् की दो लड़कियाँ, उस के भाई की दोनों लड़कियाँ, विवाहित पुत्र तथा उन की स्त्रियाँ भी सम्मिलित होती थी। इन दोनों परिवारों की लड़कियों और लड़कों के सहभोज मे यदि कोई बाहर का व्यक्ति निमंत्रित रहता था, तो वह था केवल एक पच्चीस वर्ष का तरुण। उस का काम था सप्ताह मे दो-तीन दिन मुहदिरम् के घर आकर उस की दोनों लड़कियों को अग्रेजी पढा जाना। गाँव के अधिकाश लोग उसे 'मास्टर साहव' ही कहते, किन्तु मुहन्दिरम् की भार्या और दोनों लडकियों के लिये वह 'श्री० पियल' ही था।

पन्द्रह या बीस जनो के लिये बनाई जानेवाली इस रसोई के लिये 'छोटे-वरतनों की रसोई' नाम कैसे आरूढ हो गया? जिस प्रकार 'किञ्चित' अर्थ का बोध करानेवाला पुराना शब्द (सुङ्ग)[1] इस समय 'वहु' अर्थ का वोध कराने वाले 'हुगक्' शब्द मे वदल गया है, उसी प्रकार 'छोटे बरतनों की रसोई' प्रयोग भी 'वड़े वड़े बरतनों मे वननेवाली रसोई' का पर्याय बन गया है।

सिंहल नववर्षारम्भ के दो-तीन दिन पहले गाँव के दो-तीन मुख्य परिवारों के घर पर कुम्भकार का अपनी बँहगी पर लाद-लाद

---

१. सिंहल शब्द का यथार्थ अनुवाद होगा 'स्कूल श्रीमान्'।

कर वरतन पहुँचा जाना, वहुत दिन से चला आया पुराना रिवाज है। वरतनों की वँहगी लाने वाले कुम्हार को वदले मे भात और वाद मे मिष्ठान्न की प्राप्ति होती है। वरतनो की वँहगियां के वदले मे उन्हें वहुवा मिल जाते हैं—चावल, नारियल, मिर्च, निमक तथा मीठे गुलगुलो के समान मिष्ठान्न भी। वह खुशी-खुशी ये सभी चीजें ले जाकर अपने वाल-वच्चो सहित नववर्षारम्भ मनाता है। कुम्हार वरतनो की वँहगी के साथ छोटे-छोटे वरतनों को भी नीचे-ऊपर सजाकर ले आता है। ये छोटे वरतन छोटी वच्चियों के लिये होते हैं, क्योकि इस 'महा-गृह' मे कोई भी कम आयु की वच्ची नहीं है, इसलिये पिछले छ वर्ष से नन्दा ही उन छोटे वरतनों में जो हाण्डी रहती है, उस मे कोई पाव भर चावलो को धो-साफ कर, भात और दूसरे कई छोटे वरतनो मे नाना प्रकार के व्यञ्जन पकाती चली आ रही है। वह इस भात में से थोड़ा माँ को और थोडा चाचा की नववर्षारम्भ (की सौगात) लानेवाली दोनों लडकियो को भी देती है। इस प्रकार हर वर्ष 'छोटे वरतनो' मे भात पकाती है, किन्तु अगले वर्ष क्रमश. 'वड़े वरतनो' मे। दोनो परिवारों के 'वडों' से पचास सैंट (=सत) या एक-एक रुपया इकट्ठा करके जमा की हुई रकम से मनाया जानेवाला नववर्षारम्भ का यह सहभोज 'कयिसारुवत्त-परिवार' की पुरानी परिपाटी वन गया है।

मुहन्दिरम् के घर के उस वड़े भवन के वीचोंवीच विछी चटाई पर विछाई गई सफेद चादर के ऊपर भात की दो वडी देगचियाँ और कई तरह की तरकारियों से युक्त वहुत-सी तश्तरियाँ दिखाई दीं। मुहन्दिरम् और उस की भार्या, उसका भाई और उसकी भार्या के अतिरिक्त दोनों परिवारो के और जितने भी सदस्य थे, सभी उन वरतनों के गिर्द पालथी मार कर वैठे थे। उन्होने केले के पत्तों पर ही खाना खाया था। परिवार के वड़े-वूढे जो वच्चों के इस मङ्गल सहभोज मे सम्मिलित नहीं हुए थे, उस का मात्र कारण यही था कि उनका उन वच्चों के साथ खाना-पीना वच्चों के खेल और हँसी-

मजाक मे बाधक सिद्ध होता। माता-पिता की उपस्थिति मे खिलवाड़ और हँसी-मजाक करना गाँव के बच्चों को नही ही आता।

नन्दा तो दूसरे लोगों के साथ खाने बैठ गई किन्तु अनुला न बैठी। नौकर और नौकरानी की सहायता ले वह खाना खानेवालों को खाना खिलाती रही। सब्जी की तश्तरी और चमचा हाथ मे लिये खाना खानेवालो के गिर्द घूम-घूम कर, उनके पास झुक-झुक कर कभी-कभी घुटने टेक-टेक कर तरकारी परोसना अनुला के लिये स्वय खाना खाने से भी बढ़ कर अधिक संतोषदायक था।

खाना समाप्त होते ही माता-पिता के अतिरिक्त शेप सभी, दो दलों मे बँट पचकौडी खेलने लगे। एक बार मे दस शत या सेंट गिराने की यह क्रीड़ा नव-वर्षारम्भ होने पर गाँव के प्राय हर घर मे खेली जाती है। इस दिन एक दल की ओर से कौडी गिराने के फलक पर 'हिसाव' रखनेवाली थी अनुला; दूसरे दल की ओर से 'हिसाव' रखने का काम 'पियल' के जिम्मे था। कौड़ियों के फलक पर 'गोटी' आगे बढ़ाने के लिये दूर-दृष्टि ही नही कभी कभी कूट-नीति तक अपेक्षित होती है। अनुला ऐसी लड़की थी, जिसमे यह दोनो गुण थे। पियल को भी पढ़ाई का ज्ञान और कौडी-क्रीड़ा का अनुभव प्राप्त ही था। दो ओर के गोटी वढानेवालो के मददगार थे, दोनों दलों से सम्वन्धित ऐसे लोग जो अपने को अधिक जानकार समझते थे और सोच-विचार कर अपना अपना परामर्श देते और नुक्ताचीनी कर रहे थे।

नारियल के उस छोटे से चिकने ठूठे मे डालकर कौड़ियों के हिलाये जाने पर जो शब्द होता और उनके उस बड़े नारियल के शिखर पर गिर कर विखर जाने से जो शब्द होता, वह घर के वाहर खड़े लोगों तक को सुनायी देता था। दो दलों मे वँटी हुई मण्डली जब आपस मे विवाद करती, तो वाहर के लोगों को प्रतीत होता था कि जैसे भीतर कोई झगड़ा हो रहा हो।

अन्धेरा होने पर पचकोड़ी-क्रीडा समाप्त हुई। उस समय अविवाहित जनो को छोड मुहन्दिरम् के भाई के परिवार के शेष सदस्यगण तथा अन्य लोग भी वापस लौट कर अपने-अपने घर चले गये। तव जो लडके-लड़कियाँ वचे, उन्हे हँसी-मजाक करने और गप मारने की आजादी मिल गई।

"नववर्षारम्भ का उत्सव समाप्त हो जाने के तीन महीने वाद तक भी कत्तिरिना का पचकौडी खेल चालू ही रहेगा"—अनुला वोली।

"इस गृहणी ने पचकौड़ी-क्रीडा आरम्भ की थी, नववर्षारभ होने से भी कोई एक महीना पहले," कह कर सोमदास मुस्कराने लगा।

"कत्तिरिना की क्रीडा तो तव समाप्त होगी जव सिर के वालों मे लगाने की शलाकाये और कान की वालियाँ गिरवी रख कर लाया हुआ पैसा समाप्त हो जायगा।"

"गये साल तो यह गृहणी घर के नारियल के पेडो को भी गिरवी रखकर, पैसा प्राप्त कर हार गई थी," पियल ने कहा।

"किसी-किसी साल तो यह गृहणी पचास साठ रुपये तक जीत भी गई है," अनुला वोली।

"पचकौडी-क्रीड़ा कत्तिरिना के लिये खेल नही है, स्पष्ट रूप से जुआ है," पियल का मत था।

"यदि माता-पिता आज्ञा दे, तो इनका यह जुआ आगामी नव-वर्षारम्भ तक चलता रह सकता है"—कहते हुए छोटे तिस्स ने अपनी वहनो की ओर देखा।

"कत्तिरिना की तरह हम जुए के पीछे पगली नही है" अनुला वोली।

"नववर्षारम्भ के समय हमारी पचकौड़ी-क्रीड़ा मन-वहलाव भर के लिये होती है"—सोमा का कहना था।

"कत्तिरिना भी दॉव लगाती है मनबहलाव के लिये ही," यह तिस्स की व्यङ्ग भरी उक्ति थी।

"मनबहलाव के लिये नही, जुए के लिये हो।"

"तो क्या बड़ो बहने जुए मे जीता हुआ पैसा नही लेती ?"

"क्यों नही ? हम पैसा जीतने की ही आशा से दाँव नहीं लगाती !"

"यह झूठ है," पियल बोला।

"जीतने की लालसा न होने से ही तो इतना हल्ला-गुल्ला कर के दाँव लगाया जाता है," तिस्स ने तीर मारा।

"हम कत्तिरिना की बात क्यों करे ? उस औरत की तरह अपना सामान गिरवी रख-रख कर हम गॉव भर मे जुआ खेलती नही घूमती," सोमा तिस्स को टेढी नजर से देखती हुई बोली।

पियल, उठकर धीरे-धीरे बरामदे की ओर आगे बढ़ गया। यद्यपि बीच का बड़ा कमरा चार बत्तियोवाले नारियल-तेल के दीपक से प्रदीप्त था, तो भी बरामदे का प्रकाश दीवार पर लगे हुए मिट्टी के तेल के लैम्प की ही कृपा थी। जो गृहस्थ इतने सम्पन्न थे कि मिट्टी के तेल का लैम्प जला सके, वे ग्रामीण-गृहस्थ भी आरम्भ मे अपने बरामदो मे मिट्टी के तेल का लैम्प केवल इसलिये जलाते थे, क्योकि नारियल के तेल का दीपक हवा के झोकों के कारण बरामदे मे जलता न रह सकता था। दीवार पर टँगे लैम्प से प्रकाशित बरामदे मे नन्दा थोड़ी ठडी हवा खाने के लिये ही गई थी। माँने आँगन मे चमेली आदि के जो फूल लगा रखे थे, उनसे निकलनेवाली सुगन्धि से मिश्रित वायु के कारण नन्दा को ऐसा सुखद अनुभव हो रहा था, मानों उसके सिर पर कोई सुगन्धित पात्र रखा हो। काफी दूर पत्थर की चारदीवारी का ज़ो दरवाजा था उसके पास चॉद की चॉदनी से चमक रहे पत्तों वाला 'देल' का एक पेड़ था। उसकी छाया के नीचे बैठे दो

नौकर परस्पर वातचीत कर रहे थे । इस समय उन दोनों मे से एक का कहना ही नन्दा को सुनायी पडा । इतनी जोर से वोलनेवाला यह नौकर वचपन से उस वड़े घर ही मे पला था। इस समय उसकी आयु पैन्तालीस वर्ष की होगी। मुहन्दिरम के बाल-बच्चे उसे अपने परिवार का ही एक सदस्य समझते थे। इससे वह 'सादा' कभी कभी मुहन्दिरम् की दोनो लडकियो और कभी-कभी उस के छोटे लडके को भी झिड़क देता था। यद्यपि 'सादा' पन्तालीस वर्षका हो गया था, तो भी नववर्षारम्भ के दिन नई लुगी और बनियान पहन कर, कमर के चारों ओर चमड़े की पेटी लपेट कर, और गले मे रेशमका रूमाल बॉध कर, छोटे वच्चे की तरह ऑगन मे रक्खे हुए पटाखे के पलीते मे आग लगाने से, उसके छूटने पर, उसे वडा सन्तोष होता था।

उस देल-वृक्ष की छाया मे बैठ कर सादा जो वातचीत कर रहा था, वह—मुहन्दिरम् महाशय से इस नववर्षारभ के दिन उसे जो रेशमी लुगी, वनियान और रेशमी रूमाल मिला था, उसी के वारे मे थी—यह बरामदे मे बैठी नन्दा ने सुन लिया था। अभी कुछ ही दिन पहले काम पर लगे लडके को सादा के समान कीमती चीजे नही मिली और इसीलिये वह इतने जोर-शोर से नही वोलता है—नन्दा ने सोचा। यह वात समझ लेने पर नन्दा की इच्छा हुई कि उसे पटाखो की डिबिया देकर उस का मन छोटा न होने दे। नववर्षारभ के दिन गृहस्वामिनियां और आयु-प्राप्त लड़कियाँ केवल यह ही नही चाहती कि छोटे-छोटे वच्चे और उन के रिश्तेदार प्रसन्न-वदन दिखाई दे, वल्कि वे यह भी चाहती है कि उन के नौकरो-चाकरों के चेहरे भी खिले हुए हो।

"नन्दा ! यह ले हारे हुए पैसे," कहते हुए पियल ने एक रुपया नन्दा की ओर वढाया।

"मुझे नही चाहिएँ" कहते हुए नन्दा ने पियल के हाथ पर दे मारा। रुपया वरामदे मे गिरा तो उस मे से मधुर गीत स्वर की आवाज निकली। पियल नीचे झुका और रुपया उठा कर मुट्ठी बंद कर ली।

"नन्दा, हारी न ?"

"क्या जीतने के लिए ही खेल खेला जाता है ?"

"और क्या ! हमारी पाली मे रही होती, तो नन्दा एक रुपया न जीत लेती।"

"मै जिस ओर रहना चाहती थी रही । मै क्यो किसी दूसरे की इच्छा के अनुसार किसी पालो मे शामिल होऊँ ?"

पियल ने देखा कि नन्दा के चेहरे पर मुस्कराहट की एक रेखा भी नही है। उस की इच्छा दुवारा वह रुपया नन्दा को देने की हुई, किन्तु उस ने उस इच्छा को दवा लिया।

"वडी वहन और छोटी वहन यदि दोनो पृथक् पृथक् दो पालियो मे रहती, तो दोनो न हारती।"

"आज जो रुपया हारा है, वह फिर किसी दिन जीत लूँगी।"

"यदि उस दिन भी हार हो गई ?"

"तो फिर आगे वाजी नही लगा कर, यूँ ही वैठी रहूँगी।"

"यह ले नन्दा ! अपना रुपया," कहते हुए पियल ने फिर एक वार वह रुपया नन्दा की ओर वढाया।

"मुझे नही चाहिये," कह कर नन्दा ने गुस्से के अन्दाज मे पियल का हाथ झटक दिया। पियल ने रुपया जेव मे डाल लिया।

"पिताजी ! अभी तक घर क्यों नही लौटे ?" पूछते हुए पियल ने वातचीत का प्रकरण वदला।

"पिताजी, नये-वर्ष की भेट लेकर मातर-दादी के यहाँ गये है।"

"इतनी रात हो जाने तक भी घर नही लौटे ?"

"शायद पिताजी रात का खाना दादी के घर खा कर आने के लिये ही रुक गये होगे।"

"नन्दा को पिताजी से वर्ष-दिन का इनाम क्या मिला ?"

"दो रंगीन-वस्त्र और ऊपर पहनने के भी दो कपड़े मिले।"

"मैं यदि नन्दा को नये-वर्ष की भेट दूँ, तो उसे नन्दा क्यों नहीं स्वीकार करती ?"

"मैं पियल की भेंट क्यों स्वीकार करूँ !" कहते हुए नन्दा ने पियल की ओर इस तरह देखा, जैसे कोई कुलाभिमानी स्त्री किसी अपरिचित व्यक्ति की ओर देखती है।

"तो मैं जो पुस्तक ला कर देता हूँ, वह क्यो लेती हो ?"

"पढ कर वापिस लौटा देने के लिये।"

"मै ने जो पुस्तक दी थी, उसे पढा है ?"

"कौन-सी पुस्तक ?"

"रॉबिसन क्रूसो।"

"इस पुस्तक को समझने लायक मेरी अग्रेजी नही है। इस को समझ सकना थोड़ा कठिन है।"

"दूसरी किताब 'ग्रिम की परियों की कथाएँ' ?"

"उसे पढा है," कह नन्दा पत्थर की चार-दीवारी के दरवाजे की ओर देखने लगी।

"यदि थोडी मेहनत करके भी किताब पढ लो, तो अंग्रेजी सीखने मे आसानी होगी," पियल बोला।

उस का इरादा था, गुमसुम हुई नन्दा का ध्यान अपनी ओर आर्कषित करने का।

"माँ का कहना है कि हस्ताक्षर कर सकने लायक और टेलीग्राम पढ़ सकने लायक अग्रेजी सीख लेना पर्याप्त है।"

सभी हँस पडे।

"टेलीग्राम पढने के लिये तो थोड़ी-सी अग्रेजी ही बहुत है। लेकिन अग्रेजी सीखी जाती है, टेलीग्राम पढ़ने के लिये नही, बल्कि पुस्तक पढने के लिये।"

"पुस्तक पढ़ने का हमें अवकाश नही।"

नन्दा को भी हँसी आ गई।

"तो फिर माँ का कहना ठीक ही है न!"

"हाँ," नन्दा ने तुरन्त उत्तर दिया। यह व्यङ्गपूर्ण प्रश्न का व्यङ्गपूर्ण उत्तर था।

"अग्रेजी सीखना आरम्भ करने से पहले नन्दा ने भी तो अग्रेजी मे हस्ताक्षर करना सीखा था न?"

नन्दा समझ गई कि यह पियल की कटूक्ति है।

"हाँ, गाँव के सभी तरुणों ने अग्रेजी मे हस्ताक्षर करना सीखा है," नन्दा ने पियल को सीधा उत्तर दिया।

"सिंहल मे हस्ताक्षर करने मे क्या कुछ हेठी होती है?"

"तो पियल जो अग्रेजी मे हस्ताक्षर करता है, वह सिंहल मे हस्ताक्षर करने मे हेठी अनुभव करने के कारण ही न?"

पियल की इच्छा नही हुई कि नन्दा को तुर्की-बतुर्की जवाब दे कर बात को बढाये। इतनी देर तक उस का बातचीत करते रहने का उद्देश्य था, नन्दा से एक प्रश्न-विशेष का उत्तर पा सकने का अवसर खोजना। लेकिन जब जब पियल अपने उस प्रश्न का उत्तर पाने के लिये, उसे पूछने का रास्ता साफ करने को बातचीत आरम्भ करता, नन्दा हमेशा वाद-विवाद आरम्भ कर देती। यद्यपि पियल और नन्दा का जन्म एक ही कुल मे हुआ है, तो भी नन्दा के माता-पिता की मान्यता है कि पियल की वंश-परम्परा हेठी है। नन्दा ने औरों को कहते सुना था कि पियल के पिता कन्धे पर बहँगी लिये लिये सब्जी बेच कर जीविका चलाते थे। मुहन्दिरम् और उसकी पत्नी ने तो पियल के दादा को बहँगी मे सब्जी ढोते देखा था। पियल ने यह कभी नही सोचा था कि जब जब नन्दा उस से बातचीत करती है, तो उस की पृष्ठभूमि मे उस का वंश-परम्परा का

अभिमान छिपा रहता है। ऐसा होने पर भी जब भी नन्दा उस से अकेले मे बातचीत करती, तो वंश-परम्परा का अभिमान उस के सिर चढा रहता। लेकिन चार जनो के बीच मे बातचीत करती, तो हमेशा पियल का पक्ष ग्रहण करती। पियल यह जानता था कि नन्दा उस से दो तरह का व्यवहार करती है। लेकिन तो भी उसे कभी यह भासित नही हुआ था कि इसके मूल मे उस का वंश-परम्परा का अभिमान छिपा हुआ है। पियल समझता था कि चार जनो के बीच बातचीत करते समय नन्दा जो हमेशा उसका पक्ष ग्रहण करती है, उसका कारण है कि नन्दा के मन मे पियल के लिए स्थान है। इतना होने पर भी जब जब उसने इसका निश्चय करने की कोशिश की, तो जिस प्रकार किसी खतरे के उपस्थित होने पर कछुआ अपना सिर भीतर खीच लेता है, उसी तरह नन्दा अपनी स्वाभाविक प्रकृति को अपने वंश-परम्परा के अहकार के भीतर छिपा लेती थी।

"क्या नन्दा नही चाहती कि इतनी अंग्रेजी सीख ले कि अच्छी-अच्छी पुस्तके पढ सके?"

"नही," उसके स्वर मे खीझ थी। "थोडी अंग्रेजी जान लेना ही हमारे लिए पर्याप्त है।"

"नन्दा, क्यों मेरे अन्तिम पत्र का भी उत्तर नही दिया न?"

इतनी देर तक पियल यही कोशिश करता रहा था कि उसे इस प्रश्न के पूछने का कोई अच्छा मौका हाथ लग जाय। ऐसा अवसर न मिलते देख उसने अचानक ही उक्त प्रश्न पूछ लिया।

इस प्रश्न के पूछते ही नन्दा के चेहरे पर विकृति की सी झलक आ गई। दीवार पर टँगे लैम्प के प्रकाश मे पियल ने देखा कि जो नन्दा अभी तक उससे आमने-सामने बातचीत कर रही थी, अब उसने अपना मुँह फेर लिया था।

"अन्तिम पत्र! वही पत्र न जो किताब मे रखा था?" नन्दा ने सीधा प्रश्न किया।

"हाँ ।"

"क्या याद नही कि मै ने कहा था कि मै पत्रों का उत्तर नही देती ?"

"मैं ने जो प्रश्न पूछा है उसका उत्तर दे दोगी, तो फिर मैं पत्र नही लिखूँगा, मैं ने पूछा था कि मेरा वह पत्र पढा है ?"

"हाँ," नन्दा का उत्तर सर्वथा भावना-शून्य था ।

"मुँह से उत्तर नहीं दे सकती हो तो क्या लिख कर भेज दोगी ?"

"नही ।"

यह शब्द उसके मुँह से ऐसे ही फूट पडा जैसे किसी बच्चे की खेलने की बन्दूक मे से पटाखे की आवाज । इतना कह चुकने पर भी नन्दा आगे बोली—"माँ से पूछो ।"

"अच्छा मै माँ से ही पूछूँगा । लेकिन माँ से पूछने से पहले नन्दा की स्वीकृति चाहिए न ?"

"माँ को स्वीकार हो तो मुझे कोई आपत्ति नहीं ।"

पियल को यह उत्तर सुनने को मिला तो उसके चेहरे पर रौनक़ आ गई ।

"यदि माँ ने स्वीकृति न दी ? शायद माँ स्वीकृति नही देगी !"

"यदि माँ स्वीकृति नही देगी, तो मै ही क्यो राजी होऊँगी !" कराहते हुए की तरह नन्दा दूसरी ओर देखने लगी ।

"यदि मुझ से प्रेम है तो यह क्यों नही हो सकता ?"

पियल की यह बात सुनी तो नन्दा को गुस्सा आ गया । उसने उस गुस्से को दबा रखने की भी कोशिश नही की ।

"मै अपनी माँ से प्यार करती हूँ ।"

पियल की बुद्धि फिर चकरा गई । उसे डर था कि कही उसके मुँह से फिर कोई ऐसी बात न निकल जाय कि नन्दा को गुस्सा आ जाय । थोड़ी देर सोच कर बोला—

"अच्छा, यदि माँ स्वीकृति दे दें तो चिट्ठीमें मैंने जो प्रस्ताव किया है वह नन्दा को मजूर है ?"

"एक वार कहा न कि मंजूर है ?"

"यदि माँ को मंजूर न हो, तो क्या नन्दा मुझ से केवल इसी लिये शादी नही कर सकती कि वह मुझसे प्रेम करती है ?"

"मै नही जानती," उस ने कुछ आवेश मे कहा।

"चले, चले, छोटी मालकिन, रात हो गई। घर में चले।"

यह आवाज सादा की थी, जो पत्थर की चारदीवारी के फाटक के पास से उठ कर रसोई घर की तरफ जा रहा था। पियल और नन्दा के कानो मे जव सादा की आवाज़ पड़ी, तभी उन्हे पता लगा कि सादा उन के इतने समीप से गुजरा है।

"सादा वडी वहन का और मेरा वडा ख्याल रखता है। परसो रात को एक शरावी इस सडक से गुजरा। सादा दूर से दौड कर आया और चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगा—'चलो, चलो। घर के भीतर चलो!!" वडी वहन ने सादा का मज़ाक भर किया, लेकिन घर मे नही गई। नन्दा के मुँह पर हँसी थी।

"तो क्या सादा ने मुझे भी शरावी समझ कर, ऐसा कहा होगा ?"

"नही, तरुण समझ कर ही ऐसा कहा होगा,' कहती हुई और हँसती हुई नन्दा हाल-कमरे के भीतर दौड़ गई।

नन्दा के पीछे पीछे पियल भी उस हाल-कमरे मे गया। लेकिन पियल की अव यह इच्छा नही थी कि वहाँ उपस्थित लोगों के साथ अधिक वातचीत करता रहे।

"अव रात हो गई! हम चले," कह कर पियल विदा हुआ।

"वर्षारंभ समीप है। पियल वर्षारंभ के निमित्त क्या करने जा रहे हो ?" अनुला ने पूछा।

"जो मन मे आयेगा, करूँगा।"

"वर्पारंभ के दिन ताश खेले !" तिस्स का प्रस्ताव था।

तिस्स का प्रस्ताव सुना तो सभी के मुँह पर हँसी खेल गई। उन्हे हँसी इसीलिये आई कि दस वर्ष के उस बच्चे ने बडे-बूढों की तरह ताश खेलने का प्रस्ताव किया था।

"तिस्स, ताश खेलना तुमने कैसे सीखा ?" अनुला का प्रश्न था।

"गाल्ल के बोर्डिङ्ग-हाउस मे।"

"अरे ! तो तिस्स ने सीख लिया है जुआ खेलना। माँ की उपस्थिति मे कभी मत कहना कि बोर्डिङ्ग मे ताश खेला जाता है।"

"मै ने ताश नही खेला। दूसरे खेलते थे, मै देखता रहा।"

"देखता ही रहा सही। लेकिन, सीखा तो जुआ ही न ?" इस बार सोमा कह उठी।

"यह कौडी खेलना क्या जुआ नही है ?" पूछ कर तिस्स ने अपनी सभी बहनों को हँसा दिया।

"बिल्कुल सही," कहते हुए पियल वहाँ से चला गया।

"सही कैसे, कौड़ी खेलना खेल है, जुआ नही है।"

"तो ताश खेलना भी खेल है।"

"छोटे बच्चों के खेलने लायक खेल नही।"

"बडे हो कर जो कुछ करना हो, उसे बचपन मे ही सीखना चाहिये।"

"बड़े-बूढ़ों की तरह बात मत बना," अनुला ने डाँट दिया।

—:o:—

परिच्छेद/२

उस दिन कयिसारुवत्ते मुहन्दिरम रात के लगभग दस वजे घर वापिस लौटा। उस समय उसकी भार्या, सादा, तथा एक दूसरे प्रौढ पुरुष के अतिरिक्त शेष सब लोग सो गये थे। वर्षारंभ की भेंट लेकर सास के घर से मुहन्दिरम् रात का भोजन करके ही अपने घर की ओर विदा हुआ था। इसलिये जब वह घर पहुँचा, तो उस ने दीवार के सहारे सटी हुई लगभग दो फुट ऊँची तिपाई पर रखी मिट्टी की छोटी-सी चिलमची मे से गर्म पानी से मुँह धोया और अपनी लिखने की मेज के पास रखी कुर्सी पर जा बैठा।

कबूतरो के पालने के लिए जैसे खानोवाले घर बनाये जाते हैं, ठीक उसी तरह हिसाब की किताब, फुटरूल, और कलम-पेन्सिल रखने के लिए तीन खानोंवाली एक सदूकची मेज पर रखी थी। मुहन्दिरम ने ज्यो ही सदूकची खोली और उसका ढक्कन उठाया त्यों ही सादा दो बत्तियोवाला एक दीपक जला लाया और उसे मेज पर रख दिया। थोड़ी ही दूर पर जो दूसरा पीतल का दिया जल रहा था, वह उसने फूंक मार कर बुझा दिया।

"तुझे कई बार कहा है कि मुँह से फूंक मार कर दीपक मत बुझाया कर। लेकिन तू वही करता है जो तुझे करने से मना किया जाता है," कहते हुए श्रीमती मुहन्दिरम ने सादा की ओर थोडे रोषभरे नेत्रों से देखा। फिर बोली—"अब कभी मुँह से फूंक कर दीपक मत बुझाना।"

मुहन्दिरम् ने कॉफी का प्याला पिया और उसके बाद करोलिस द्वारा लाई गई दो बहियो मे से एक के पन्ने पलट-पलट कर उसे देखने लगा। मेज के ऊपर के नारियल के तेल के दीपक के प्रकाश से हॉल-कमरे का केवल वह कोना ही प्रकाशित हो रहा था जिसमे

लिखने की मेज रखी हुई थी। उसके गालों की सफेद दाढी और उस मे के काले बाल कोदो के ढेर के समान लगते थे। यह दाढी ऐसी थी कि इसे देख कर छोटे बच्चों को किसी बन्दर की याद आ जाती। किन्तु, तो भी इससे मुहन्दिरम् का प्रौढत्व और भी मुखरित हो उठता और यह उसकी बुद्धि की तीक्ष्णता को प्रकट करनेवाले उसके प्रशस्त ललाट को और भी भव्यता प्रदान करती। इतना ही नही, बन्द डिब्बे के अच्छी तरह बन्द किये गए ढक्कन के समान उसके पतले-पतले होंठ भी इस दाढी की कृपा से विशेष सुशोभित थे।

वही के पन्ने पलटते समय उसके होंठ और भी कस गये थे। उसने अपना चश्मा हाथ मे लिया और उसके दोनो शीशों को कपडे के टुकडे से पोंछ डाला। उसके पास नीचे आसन पर बैठी उसकी भार्या उठ कर अन्दर के कमरे की ओर चली गई। वह जानती थी कि जब-जब उसका स्वामी कुछ चचल होता है या उसे गुस्सा आता है, तब-तब वह चश्मा ले कर उसे साफ करने लगता है।

"करोलिस !" कुछ ऊँचे स्वर मे मुहन्दिरम चिल्लाया और अपने चश्मे को दुबारा अपनी नाक पर चढ़ा कर उसने बरामदे की ओर देखा—

"तुम्हे जो कुछ करने को कहते है, वह तुम नही करते !" कहते हुए उसने अपनी ओर आते हुए करोलिस को टेढी नजर से देखा। बोला—"तुझे मना किया था न कि गाँव की औरतों को सौदा उधार नही देना। इस बार इसीलिये सामान मँगवा दिया था, क्योंकि तूने वचन दिया था कि अबसे बिना उधार दिये ही दुकान चलाऊँगा। लेकिन इस बार भी लगभग साढ़े सात सौ का माल उधार दे दिया है न ?"

करोलिस हॉल मे प्रवेश करनेवाले दरवाजे की चौखट के सहारे सिर झुकाये खडा था।

"तू सीधा नहीं खड़ा रह सकता !" कहते हुए मुहन्दिरम ने फिर दुवारा वही के पन्ने पलटे। करोलिस चौखटे से थोड़ी दूर हट कर, डरके मारे, द्वार से सट कर खड़ा हो गया।

"दुकान मे कितना सामान वचा है ?" पूछते हुए मुहन्दिरम ने करोलिस की ओर सिर घुमा कर देखा।

"चावल की एक वोरी और थोड़ा खुदरा सामान।"

"इस वार तो कमाल ही कर दिया है। पहली वार कोई एक हजार रुपये का सामान खरीदवा कर तेरी दुकान खुलवाई। साल वीतते-बीतते तूने हजार रुपये की उधारी दे डाली ! दुकान मे सामान भी नही। दूसरी बार सात सौ रुपये का सामान मँगवा दिया, इसी शर्त पर कि 'अब उधारी नही दूँगा।"

"इस बार तो जो उधारी दी है, वह मैंने नही दी।"

"तूने नहीं ! तो . किसने ?" पूछते हुए मुहन्दिरम ने वही वन्द कर दी और दुवारा चश्मा उतार कर एक ओर रख दिया। करोलिस जानता था कि यह उसे पीटने की तैयारी नही है। तव भी उसने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक कहा—

"मैंने सौ रुपये से अधिक की उधारी नही दी। यह भी केवल इसलिये दी कि विना थोडा-बहुत उधार दिये दुकान नही चलाई जा सकती। वाकी जितनी भी उधरी दी गई है वह स्वामिनी के सकेत पर ही।"

अदिरियत कयिसारवत्ते को 'मुहदिरम्' की उपाधि मिलने से पूर्व उसके नौकर-चाकर, उस की भार्य्या को 'स्वामिनी' और उसके गॉव के लोग उसे मातर-स्वामिनी कहा करते थे। कयिसारवत्ते को उपाधि मिल गयी, तव भी वह उस की भार्य्या को उसी अभ्यस्त सम्बोधन से सम्बोधित करते रहे। इस का यही कारण था कि ये सभी लोग उस का आदर और उसे प्रेम करते थे। यद्यपि उस बड़े

घर के स्वामी ने कभी भी यह इच्छा नहीं की थी कि उस के नौकर-चाकर उसे हवेली का महानुभाव (=वलव्वे महात्या) कहे, लेकिन गाँव के लोग कभी-कभी उस की भार्य्या की इच्छा के अनुसार उसे 'हवेली का महानुभाव' कह कर ही याद करते थे। वह मुंहदिरम के घर की चर्चा उसे 'बड़ी हवेली' कह कर करते। लेकिन ऐसा होने पर भी उस के बहुत नजदीक के लोग, सच्चे दिल से प्रेम करनेवाले कुछ ग्रामीण-जन, अपने पुराने अभ्यास के अनुसार ही मुहदिरम् की भार्य्या को 'मातर-स्वामिनी' और उसके निवासस्थान को 'बड़ा घर' भर कहते थे। करोलिस छुटपन से नौकरी करता-करता उसी घर मे इतना बड़ा हुआ था। मुहदिरम ने उसे जो एक खुदरे की दुकान करा दी थी, उस का कारण मुहदिरम् के मन मे करोलिस की अभिवृद्धि और अपने लाभ की इच्छा थी। उसका अनुमान था कि उसे जो नफा होगा, उस का एक हिस्सा वह करोलिस को दे देगा, शेप इतना अवश्य बचेगा कि उस से वह घर के चावल, मिर्च, निमक आदि का खर्च चला सकेगा। इसी आशा से उस ने वह दुकान आरम्भ कराई थी। इतना सब होने पर भी उस की ऐसी सब आशाएँ पत्थर से टकराये शीशे के बरतन की तरह चूर्ण-विचूर्ण हो गयी।

"किसी के भी कहने से उधार दिया गया हो, तो भी इन दो वर्षो मे दो हजार रुपये चौपट हो गये।"

"इस बार घर के खाने-पीने सम्बन्धी खर्च में जो सामान लगा है, उस की कीमत लगाई जाय, तो नुकसान दिखाई नही देगा," करोलिस ने याद दिलाया।

"अरे! कमाल किया। घर पर खाने-पीने मे जो सामान लगा है, उसकी कीमत कम करने पर ही तो उतना नुकसान दिखाई देता है।" कहते हुए मुंहदिरम ने फिर एक बार वही पलटी, और उस की ओर देखा।

"स्वामिनी के कहने पर भी तू ने गाँव की औरतों को उधार क्यों दिया ? दुकान तो तेरी ही थी न ?"

"जब मैं इन औरतों को कहता कि उधार नही दिया जा सकता, तो ये स्वामिनी के पास जाती और वहाँ जा कर अपना दुखड़ा रोने लगती। स्वामिनी उन को एक पुर्जी लिख देती और वे फिर उधार लेने के लिये मेरे पास आ धमकती।"

करोलिस नही चाहता था कि वह स्वामिनी को दोष का भागी बनाये, इसलिये उसने साथ ही कहा—

"उन स्त्रियों का रोना-धोना सुन कर स्वामिनी का ही क्या, मेरा भी दिल पिघल जाता था।"

"क्या कमाल का दुकानदार मिला है हमे !" कहते हुए मुहदिरम ने एक बार फिर वही को उठा कर एक ओर रख दिया। बोला—"चावल की जो बोरी बची है और जितना भी खुदरा-सामान है, वह सब घर भेज दे और दुकान को ताला लगा दे। तुम लोगों से दुकानदारी नही हो सकती।"

करोलिस घर के दूसरी ओर आँगन मे चला गया। उस ओर दरवाजे के पास ही खडी मातर-स्वामीनि ने उस अन्धेरे मे से करोलिस को झाँक लिया। वह तुरन्त बोली—

"लगता है कि स्वामी कुछ गुस्से मे है।"

"हाँ !"

"क्या कहा ?"

"कहा कि दुकान को ताला लगा दो। उन का कहना भी ठीक है। हम इस गाँव मे स्त्रियो के साथ दुकानदारी नही चला सकते।"

"स्वामिनि !" शब्द कान मे पडा तो मुहदिरम् की भार्य्या तुरन्त भाग कर वहाँ पहुँची, जहाँ उस का पति मेज के पास बैठा था।

"गाँव की जिस-तिस औरत को उधारी देने के लिये 'स्वामिनी, पुर्जी लिख देती है, क्या कारोलिस का ऐसा कहना ठीक है!" मुहन्दिरम् ने अपने गुस्से को दबाये रख कर ही प्रश्न किया।

"हाँ, क्या करूँ. उन से जान बचानी मुश्किल हो जाती है, बिचारी गरीब।"

"इस बार भी कोई साढ़े सात सौ रुपये की उधारी दे दी है।"

"साढ़े सात सौ रुपये!"

"हाँ, साढे सात सौ से भी कुछ अधिक ही उधारी दी गई है। दो सौ रुपये की उधारी तो कत्तिरिना को ही दी गई है।"

"कत्तिरिना के सिर दो सौ रुपये की उधारी है!"—स्वामिनी स्तब्ध रह गई।

"हाँ, उस के सिर दो सौ बीस रुपये का कर्ज है।"

"मैं ने उस औरत को इतना कर्ज नही दिलवाया। मैं नहीं जानती। मैं ने इतनी ही पुर्जी लिखी होगी कि उसे एक बार में एक दो रुपये से अधिक का सामान उधार न देना।"

"ये सब इकट्ठा हो कर ही, तो यह हिसाब निकला है।"

"यह सब इकट्ठा होने के लिये मैंने इतनी पुर्जियां नही दी।"

अब मातर-स्वामिनी को उस की अपनी गलती समझ में आई। वह जानती थी कि उस के पति को कितना भी गुस्सा आये, लेकिन वह कभी भी उसे डाँटता-डपटता नहीं, यह भी उस के शोक-ग्रसित होने का अतिरिक्त कारण था। विवाह हुए बीस वर्ष हो गये, तब भी किसी एक भी दिन कयिसारुवत्ते ने, आज तक उसे डाँटने-डपटने की बात तो एक ओर, उस की ओर टेढी नजर तक से न देखा था। एकाध बार जब उसे अधिक गुस्सा आया था तो उसने इतना ही किया था कि चाबियों का गच्छा पटक कर. मेज से उठ खड़ा हुआ

आ कर अपना दुखड़ा सुनाती है, तो हर किसी का दिल पसीज जाता है ।"

अपनी पत्नी में कयिसारुवत्ते को केवल एक ही दोप दिखाई दिया था और वह यह कि उस का हृदय दया-करुणा से भरा था। तो भी वह ऐसा अश्रद्धावान् नही था कि वह इसे उस का दोप या मूर्खता ही समझता हो । वह यह भी जानता था कि उस की भार्य्या, यह जो किसी भूखे-रोगी बच्चे की माँ को अपने कानो के गहने तक उतार कर दे देती है और इस प्रकार उसे सान्त्वना देने का प्रयास करती है, यह किसी स्वर्ग-सुख की कामना से नही। वह पानी मे तैरने वाले हस की भाँति अनाथों की सहायता लोभ-रहित हो कर करती थी। उसे जैसा सन्तोप किसी से कुछ मिलने पर होता था, वैसा ही किसी को कुछ देने पर भी होता था। वास्तव मे दुखी बच्चे का चेहरा ही नही, बल्कि किसी भिखमगे का झूठ-मूठ बनाया हुआ चेहरा भी उस के हृदय को पिघला देता था। इस प्रकार उस का हृदय द्रवित करनेवाला कोई भी हो, उसे सान्त्वना दे सकने से उसे सुख मिलता था। यदि वह ऐसा न कर सकती, तो उसे दुख होता ।

घर के पिछवाड़े के आँगन मे कौओं को भात डालने के लिये नारियल की डण्डी के सिरे पर जुड़ी हुई नारियल की कटोरी मे बिना भात डाले वह भात खा चुकने पर कभी हाथ धोती ही न थी। ऐसे अवसर बहुत ही कम आये है कि उस के खाते समय कोई भिखमँगा चला आया हो और वह भूखा ही लौट गया हो। उस के समस्त जीवन मे ऐसी एक भी पूर्णिमा नही आई थी, जब उस ने साग-सब्जी से भरी एक तश्तरी और वैसी ही दूसरी भात की तश्तरी 'विहार' न भेजी हो। इतना होने पर भी वह 'भिक्षुओं' या 'धर्म' के प्रति अन्धी श्रद्धा रखनेवाली 'उपासिका' नही थी। वह अपने कुल की परिपाटी निभाने के लिये ही हर पूर्णिमा को भिक्षुओं को दान देती थी। असहायों का दुख दूर करने से उसे जैसा संतोप

प्राप्त होता, वैसा ही संतोष भिक्षुओं को 'दान' देने से भी होता था। वह केवल पूर्णिमा के दिन ही धर्म-देशना सुनने के लिये विहार जाती थी। अनपढ़ ग्रामीणों तक को मातर-स्वामिनी तथा रूढिवादी स्त्रियों मे जो भेद था, वह स्पष्ट दिखाई देता था। इसी लिये वे मातर-स्वामिनी को 'उपासिका-अम्मा' या 'उपासिका-स्वामिनी' के आदर-सूचक शब्द से याद नही करते थे।

जैसे किसी पौदे की जड़ को कितना भी आकाशाभिमुख करके रखो, वह हमेशा अधोमुख ही हो जाती है उसी प्रकार मातर-स्वामिनी, प्राय' अन्तर्मुख ही रहती थी। वह प्राय. बाह्य दुनिया की ओर नही, अपने हृदय के भीतर ही झाँकती रहती थी। इस लिये वह दूसरों की गलतियों को भी अपने ही द्वारा की गई गलतियाँ मानती थी। दूसरों के दुख दूर करने के लिये वह अपने दुख को दूर करने के समान ही सचेष्ट रहती थी। ग्रामीणों का विश्वास है कि कौवे को कितना भी भोजन मिले, उस की भूख कभी शान्त ही नहीं होती। मातर-स्वामिनी का चित्त भी ऐसा था कि अनन्त प्रीति और सुख भी उस के चित्त में व्याप्त दुख-ज्वाला को बुझाने मे असमर्थ सिद्ध होता था। इस का कारण था, उस के हृदय मे विराजमान उस का अचेतन-मन।

अपनी भार्य्या के चित्त का मानसिक-विश्लेषण करने जैसा व्यर्थ प्रयास कर सकनेवाला मुहन्दिरम् का चित्त नहीं था। तो भी उसने उस के व्यवहार का सूक्ष्म विश्लेषण किया था। लेने के बजाये, देने का ही अभ्यास रखनेवाले दोनों हाथों का होना कभी-कभी मुहन्दिरम् को अपनी भार्य्या का एक व्यसन मालूम देता था।

"स्वामिनी!",—कयिसारुवत्ते के स्वर मे शोक की ध्वनि थी, "यह ठीक है कि गरीबी के कारण गाँव की स्त्रियाँ कष्ट भोगती हैं लेकिन यदि तुम्हारा यही व्यवहार चालू रहा, तो हमे और हमारे बाल-बच्चो को भी सकट मे पड़ना पड़ेगा। इतनी बात हृदयङ्गम कर अपना लोक-व्यवहार चलाना चाहिये।"

सिर झुकाये खडी स्वामिनी ने निश्चय किया कि अब आगे वह अपने चित्त को कुछ कठोर बनाये रखने का प्रयास करेगी।

"तुम ने कहा था न कि कत्तिरिना को इतना उधार देने के लिये तुम ने कभी नही कहा ?" कयिसारुवत्ते मुहन्दिरम् ने फिर पूछा।

"हाँ, मुझे याद नही कि मै ने उस स्त्री को इतना उधार देने के लिये कहा हो।"

यदि बिना दूसरों के दोषों की ओर ध्यान दिये, केवल अपनी ही गलतियों पर नजर रखने वाली स्वामिनी के बजाये कोई दूसरी स्त्री होती, तो वह करोलिस के सम्बन्ध मे सन्देह करने लगती। कयिसारुवत्ते का स्वभाव अपनी भार्य्या के स्वभाव से सर्वथा भिन्न प्रकार का था। भार्य्या सर्वथा अन्तर्मुख रहनेवाली थी, तो कयिसारुवत्ते सूर्य्योदय के बाद उसी की दिशा मे खिलने और घूमनेवाले सूर्यमुखी फूल के समान बाह्य दुनिया पर ही नजर रखनेवाला था। इसलिये यदि उसे दूसरो के सम्बन्ध मे कोई जानकारी प्राप्त हो जाती, तो वह एक शल्य-चिकित्सक के एक फोड़े को चीरने-फाडने की तरह हाथ धो कर उसके पीछे पड़ जाता।

"कत्तिरिना को हर बार पुर्जी दी थी न ?" मुहन्दिरम् ने पूछा।

"नही, मैंने शायद कभी दो-तीन रुपये की उधारी दे देने के लिये मुँह से ही भले कह दिया हो।"

"याद आता है कि एक बार दस-बारह रुपये की उधारी देने के लिये कहा था ?"

"नही, एक ही बार इतनी उधारी देने की बात कही हो—ऐसा स्मरण नही।"

"अच्छी तरह याद करने की कोशिश करो !"

"मुझे अच्छी तरह याद है कि मै ने कभी नही कहा कि एक ही बार मे दस-बारह रुपये की उधारी दे देना।"

मुहन्दिरम् ने अपना बायाँ हाथ माथे पर फेरा, लिखने की सन्दूकची का ढक्कन बन्द किया, चटखनी लगाई, और कुर्सी से उठकर सोने के कमरे की ओर चला गया।

तीन दिन के बाद प्रात.काल के समय खा-पी चुकने के अनन्तर सादा ने नई रेशमी लुंगी और बनियान पहनी, कमर मे चमडे की पेटी लपेटी और बरामदे मे बैठ पटाखो को आग दिखा दी। उन के फटने से इस बात की घोषणा हो गई कि न केवल उस 'बडे-घर' के लिये, बल्कि गाँव भर के लिये 'नववर्षारंभ' का समय समीप आ गया है। पटाखो की आवाज सुनी, तो तिस्स की आँख खुली। वह अपनी चारपाई से कूदा, दौड़ा और पटाखों का बण्डल अपने हाथ मे ले लिया। सादा के पटाखे छूट चुके, तो तुरन्त नन्दा ने अपने पटाखो के दो बण्डल एक साथ ही आँगन मे रख, उन्हे आग दिखा दी।

"यह लड़की भी बच्ची बनना चाहती है," अनुला बोली।

दूसरो के पटाखों को छूटते देख-सुन तिस्स को बड़ी खुशी हुई। उसने अपने पटाखो के बण्डल को और भी मजबूती के साथ अपने दोनों हाथो मे थाम लिया। ऐसा लगता था कि जैसे उसे इस बात का डर लग गया हो कि कही उसके पटाखे, उस के हाथ मे से निकल कर आँगन मे न पहुँच जाये और वहाँ स्वय फट पड़े।

वर्षारंभ का भात खाने का शुभ मुहूर्त मध्यान्होत्तर दो बजे के बाद था। शुभ मुहूर्त पास आने पर मुहन्दिरम्, उसकी भार्य्या, बच्चे, और उन के पास घुटने टेक कर बैठे हुए उनके नौकरों तथा नौकरानियों ने, श्वेत चादर पर रखे केलों के पत्तो मे परोसा दूध-भात खाया। शुभ-मुहूर्त पर दूध-भात खा चुकने के अनन्तर नौकर तथा नौकरानियाँ उठ कर रसोईघर मे चली गईं। मुहन्दिरम् और उस की भार्य्या के अतिरिक्त शेष सभी लोगो ने कोरे श्वेत वस्त्र पहन कर ही दूध-भात खाया। भात खा चुकने पर उन लोगो ने शेष सारा दिन मनोविनोद मे ही बिताया।

मातर-स्वामिनी के हाथ से पहला 'नया-पैसा' लेने की इच्छा रखनेवाली वहुत-सी स्त्रियाॅ थी। इन स्त्रियों मे वहुत सी स्त्रियाँ ऐसी ही थी कि जिन का विश्वास था कि 'वर्षारंभ' के दिन 'मातर-स्वामिनी' के हाथ से पैसा मिलना 'शुभ' है। लेकिन ऐसी स्त्रियों की भी कमी नही थी, जो पैसा इकट्ठा करने की नीयत से ही माॅगने आई थी। यद्यपि सभी 'नया-पैसा' ही माॅगने आती थी, तो भी मातर-स्वामिनी के हाथ से यदि किसी को चान्दी का सिक्का नही मिला था, तो केवल छोटी वच्चियो को।

"मै तेरी प्रतीक्षा ही कर रही थी," कहते हुए मातर-स्वामिनी ने पान के पत्ते मे लपेटा हुआ पच्चीस 'नये-पैसो' का सिक्का कत्तिरिना के हाथ मे दिया।

कत्तिरिना मातर-स्वामिनी की अपेक्षा आयु मे पाॅच वर्ष छोटी थी। दरिद्र! दरिद्र होने पर भी सफाई से रहने का प्रयत्न करनेवाली सच्चे-स्वभाव की स्त्री थी। उस का स्वामी शरावी होने के वावजूद अच्छा ग्रामीण गृहस्थ था। मातर-स्वामिनी जानती थी कि अपने स्वामी की वजह से ही कत्तिरना को इतना कष्ट भोगना पड़ता है। भले ही वह कितनी ही गरीव हो और कितना ही दुख सहती रही हो, लेकिन तव भी कत्तिरिना को मैले-कुचैले कपड़े पहने घर से वाहर आते-जाते कभी किसी ने नही देखा। कत्तिरिना 'मातर-स्वामिनी' को 'स्वामिनी' की तरह, माता की तरह, अपनी हितचिन्तका की तरह मानती थी। चाहे वह इस समय चालीस वर्ष की ग्रामीण स्त्री हो गई थी, तो भी उस की तरुणाई का सौन्दर्य्य अभी तक कत्तिरिना का साथ दे रहा था।

"स्वामिनी! मै कुछ समय से इधर नही आ सकी, इस का कारण मेरी लडकी की वीमारी ही थी।"

"अव वह अच्छी हो गई?"

"हाॅ, स्वामिनी को पुण्य लाभ हो। इस वार मेरी लडकी के प्राण वच गये। स्वामिनी का उपकार मै जन्म-जन्मान्तर तक याद रखूंगी।"

कत्तिरिना ने यह बात कुछ खुशामद करने के लिये नही कही थी। कत्तिरिना जानती थी कि इस प्रकार के शब्दों से पोपित होने वाला अहकार स्वामिनी के चित्त मे निवास नही करता। इतना होने पर भी यह नही कहा जा सकता कि, कत्तिरिना यह भी नही समझती थी कि इस प्रकार की 'खुशामद' करने से जहाँ एक ओर उस का चित्त हलका हो जा सकता है, वहाँ दूसरी ओर ऐसी 'खुशामद' स्वामिनी को भी भली लग सकती है।

"वर्षारभ के दिन लड़की को भी क्यों साथ लेकर नही आई ?"

"स्वामिनी ! अभी लयिसा पूर्णरूप से स्वस्थ नही हुई। वैद्य ने कहा है कि बहुत सार-सभाल रखने की जरूरत है। लापरवाही का बड़ा खराब परिणाम हो सकता है। लयिसा तो स्वामिनी और बेटियो को देखने के लिये बहुत लालायित है।"

"कत्तिरिना ! क्या मै ने तुझे कोई दो सौ रुपये का सामान उधार लेने के लिये कहा था ?"

"दो सौ रुपये !" ये दो शब्द कत्तिरिना आश्चर्य से गूँगी होने से पहले कह सकी।

"हाँ करोलिस का कहना है कि उस ने तुझे दो सौ रुपये का सामान उधार दिया है।"

जैसे किसी बक्से मे से बाहर आई हुई स्त्री बडी कठिनाई से बोलती है, उसी तरह कत्तिरिना ने उत्तर दिया—

"स्वामिनी ! नहीं। मै ने स्वामिनी के कहने से अधिक दस 'नये पैसे' का भी सामान नही लिया। जहाँ तक मुझे याद है, सब मिलाकर मैं ने साठ-सत्तर रुपये का सामान लिया होगा।"

"पहले दुकान का कितना देना था ?"

"क्या गये साल के आरम्भिक महीनों मे ली गई उधारी ?"

"हाँ, करोलिस का कहना है कि परार साल का तो जो बाकी था, वह छोड़ दिया।"

"मैं ठीक-ठीक नहीं कह सकती। थोड़ा-थोड़ा करके जो कुछ चुकता करती रही हूँ वह सब मिला कर दस-पन्द्रह रुपये से अधिक नहीं हो सकता।"

"क्या कहा? तुझे अच्छी तरह याद है?" स्वामिनी ने यह प्रश्न इसलिये नहीं दोहराया कि उस पर उसे किसी तरह का शक था, बल्कि इसलिये कि शायद कत्तिरिना की भूल से ही यह 'रकम' इतनी कम हो गई हो।

"हाँ स्वामिनी! मुझे अच्छी तरह याद है। हो सकता है कि करोलिस से कुछ गलती हो गई हो। किसी दूसरे का कर्ज़ा मेरे नाम लिख दिया हो।"

इस के बाद स्वामिनी ने जो कर्जे की बातचीत बन्द कर दी, वह इसलिये नहीं कि वह किसी निश्चय पर पहुँच गई थी, बल्कि इसलिये, क्योंकि उसने समझ लिया था कि बिना करोलिस से कुछ पूछ-ताछ किये कत्तिरिना से आगे जिरह करना बेकार है।

सिंहल 'वर्षारंभ' पर स्वामिनी के हाथ से चान्दी का सिक्का लेने के लिये, १५ वर्ष से भी अधिक समय से कत्तिरिना हर वर्ष आती है। लेकिन इस बार 'सिक्का' लेने आने के साथ-साथ, कुछ दूसरा संकल्प भी ले कर आई है। 'कर्जे' की झंझट की बातचीत रुकते ही कत्तिरिना बोली—

"स्वामिनी को एक महत्वपूर्ण बात कहने के लिये मैं आज आई हूँ।"

"महत्वपूर्ण बात!" शब्द के उच्चारण करने के साथ साथ ही मातर-स्वामिनी ने नन्दा को आवाज दी—

"ले! यह बची हुई 'रेजगारी' आलमारी में रख दे।"

नन्दा ने अम्मा के हाथ से चाबियों का गुच्छा और बची हुई 'रेजगारी' ली और कमरे की ओर गई। वह कहती गई—

"शायद अब 'रेजगारी' बाँटने का काम समाप्त हो गया!"

मुस्कराती हुई मातर-स्वामिनी, कत्तिरिना को सम्बोधित कर बोली—

"छोटी लड़की गुस्से होती है कि हर आनेवाली स्त्री को पैसे देती हूँ।"

"गाँव के हर किसी का कहना है कि वर्षारंभ के दिन स्वामिनी के हाथ से एक पैसा भी मिल जाय, तो साल अच्छा गुजरता है। हर कोई स्वामिनी की सराहना करता है," कहते हुए कत्तिरिना ने स्वामिनी के पक्ष का समर्थन किया।

"यह झूठी बात है।"

"हो सकता है कि कुछ लोग झूठ-मूठ भी ऐसा कहते हों, लेकिन ऐसे ही लोगों की संख्या अधिक है जो सचमुच ऐसा विश्वास करते हैं।" इतना कह कत्तिरिना ने स्वामिनी को और कुछ कहने का अवकाश न दे, अपनी बात जारी रखी—

"मैं ने 'महत्वपूर्ण बात' स्कूल-मास्टर की बात को ही कहा है।"

"कौन स्कूल-मास्टर ?"

"पियल स्कूल मास्टर।"

"क्या बात ?"—इस जिज्ञासा में स्वामिनी का कौतूहल छिपा था।

"छोटी लड़की के बारे में।"

"किस छोटी लड़की के बारे में?"

"स्वामिनी की ही छोटी लड़की के बारे में।"

"नन्दावती के बारे में ?"

"हाँ।"

स्वामिनी को यह बात अब समझ में आई कि कत्तिरिना इधर-उधर की बातचीत लाकर क्या कहना चाह रही थी। उसे यह बात समझने में इसीलिये देर लगी कि उस ने स्वप्न में भी कभी इस बात की कल्पना न की थी।

"उन से कौन शादी करता है ?" स्वामिनी के इन शब्दों के मूल मे उस का कुलाभिमान था। इस में सन्देह नही कि वह कुलाभिमानिनी थी, लेकिन अपने इस अहकार के कारण उस ने कभी किसी दूसरे की निन्दा या अपमान नही किया था। यदि यह प्रस्ताव स्वय पियल या उसके माता-पिता द्वारा ही उपस्थित किया जाता, तो स्वामिनी कुछ-न-कुछ बात बनाकर कनी काट जाती। ऐसा अवसर मुश्किल से आता था, जब वह किसी का भी दिल दुखाये। 'बडे-घर' के बडे-बूढे लोग जो कुलाभिमान की रक्षा करते चले आये थे, वह दूसरो को अपना बडप्पन दिखाने की भावना से नही बल्कि केवल आत्म-रक्षा की ही भावना से। कुलाभिमान से उत्पन्न यह आत्म-सरक्षण की भावना उन के पतन का कारण हुई। कुछ जानवर, जिन्होने बदली हुई परिस्थिति मे जी सकने की सामर्थ्य सम्पादित नही की, वे मर ही तो गये हैं।

मातर-स्वामिनी का उत्तर कोई ऐसा न था कि जिसकी कतिरिना ने पहले से आशका न की हो। वह 'बडे-घर' के कुलाभिमान से सुपरिचित थी और इसलिये उसे यह आशङ्का थी कि पियल सम्बन्धी प्रस्ताव सुनने पर मातर-स्वामिनी कोपित तक हो सकती है। देश-काल समझ कर उसे बात का रुख बदल देना आता था। इसलिये बोली—

"हाँ, इस दृष्टि से विचार किया जाय, तो उन लोगों की बिसात ही क्या है ? स्वामिनी के परिवार से सम्बन्ध जोड़ने की बात तो दरकिनार, वे इस का स्वप्न तक नही देख सकते। स्कूल-मास्टर की भलमनसाहत और पढाई-लिखाई की ओर ध्यान जाने से यूँ ही मेरे मन मे ख्याल आया कि स्वामिनी के सामने यह प्रस्ताव रखकर देखना चाहिये। उसने यदि ऐसा करने को न कहा होता, तो क्या मै ऐसी बात मुँह से निकालती ? ऐसे वे कौन-से नादूशाह हैं कि मैं उन के बारे मे स्वय ऐसा सोचती ?"

"तो पियल ने छोटी लड़की के बारे मे बात करने को तुम से कहा था ?"

"हाँ स्वामिनी ! मै ने कहा था कि मै ऐसा नही कर सकती, लेकिन एक तो उसने मुझ पर बहुत जोर डाला, दूसरे......" कत्तरिना ने मुँह मे आई बात बाहर न होने दी ।

प्रायः अन्तर्मुख रहनेवाली मातर-स्वामिनी को इस बात का अभ्यास था । वह अपनी सूक्ष्म बुद्धि से असली बात का अंदाजा कर लेती थी । तो भी उसे इस बात की इच्छा हुई कि जिस वाक्य को कत्तिरिना खा गई थी, वह उस से उगलवाये ।

"स्कूल मास्टर का आग्रह होने से भी, इतना ही कह कर तू ने बात अधूरी क्यों रहने दी ?"

जमीन पर नजर गडाये बैठी कत्तिरिना थोड़ी सकपकाई । निगली हुई बात को उगलने मे वह कुछ आनाकानी करने लगी ।

"कत्तिरिना, बोल ! जो बात कहने के लिये तू आई थी, वह पूरी बात कह डाल ।"

"छोटी मालकिन को भी स्वीकार है, इसलिये भी", कह कर कत्तिरिना ने एक बार निगली हुई बात उगल दी । उसकी आँख अभी भी जमीन पर गडी थी ।

"क्या कहा, छोटी मालकिन को भी मजूर है ?" यह प्रश्न मातर-स्वामिनी ने कत्तिरिना से ऐसे पूछा, जैसे वह उसे साथ-साथ डॉट भी देना चाहती हो । उसे जो क्रोध चढ आया था, और जो विस्मय हो आया था, उसे दबाये रखने की मातर-स्वामिनी ने चेष्टा नही की ।

"स्वामिनी ! गुस्से न हो । जो बात मुझे स्कूल-मास्टर ने कही थी, वही बात मै ने वैसे ही दोहरा दी, ताकि स्वामिनी को जानकारी रहे । कुछ भी हो, यदि हमे कोई ऐसी जानकारी मिले तो उसे स्वामिनी के कानों तक पहुँचा देना, हमारा कर्तव्य है ।"

इस से मातर-स्वामिनी के कोप और कौतूहल मे किसी प्रकार की कमी नही हुई । वह उसी समय वहाँ से उठ, जाकर, लडकी से

पूंछ, उसे भला-बुरा कहना चाहती थी। लेकिन उसने अपने इस आवेग को दवा लिया।

"उन्हे कौन अपनी लडकी देगा,' यह वात पियल को कहने की नही। उस से दोनो लडकियो ने अग्रेजी पढी है।"

पियल के हृदय को अकारण न दुखाने की इच्छा से ही मातर-स्वामिनी ने ऐसा कहा था। पियल से जो अपनी दोनों लडकियो को मातर-स्वामिनी ने अग्रेजी पढवाई थी, वह तनखाह देकर किसी से भी कोई काम करा लेने जैसा ही था। उस मे कोई दूसरी भावना नही थी। लेकिन तव भी यदि वदला लेने की नीयत से ही पियल ने उसकी लड़की को ले कर यूँ ही झूठ-मूठ वात उडा दी, तो लोग उस के झूठ को सत्य मान ले सकते थे, क्योंकि उस ने उसे अग्रेजी पढाई थी।

"स्वामिनी जो कुछ मुझे कहती है, क्या मै वह सव दूसरो को कह देनेवाली हूँ? स्कूल-मास्टर को वुरा भी न लगे और स्वामिनी की अस्वीकृति भी स्पष्ट हो जाय—ऐसे वात वना कर कहना मै जानती हूँ। लेकिन एक वात जरूर है—स्कूल मास्टर है एक सुसस्कृत तरुण।"

यद्यपि इस पर मातर-स्वामिनी चुप ही रही, तव भी कर्त्तिरिना कहती चली गई—

"उस के पिता की इच्छा थी कि स्कूल-मास्टर एडवोकेट वने!"

"तू कैसे जानती है?'

"उस के पिता ने अपने जीवन-काल मे ऐसे कहा था।"

"क्या तुझे कहा था?

"मुझ से तो नही कहा था। लेकिन स्कूल-मास्टर ने ही एक दिन कहा था कि यदि मेरे पिता का देहान्त न हो गया होता तो मै एडवोकेट वनने तक की पढाई करता। पिता लडके के लिये काफी पैसा छोड कर ही मरा है। नन्दियस अफसर का घर और जमीन गिरवी रख

कर, पिता के जीवन-काल मे ही उसे तीन हजार रुपये कर्ज दे रखे थे। अब सूद और मूल-धन की रकम मिला कर कोई दस हजार रुपये तक पहुँची हुई है।"

"कत्तिरिना, यह सब कहते हुए तेरा मुँह भी नही दुखता," मातर-स्वामिनी ने व्यङ्ग-भरी मुस्कान से कहा।

"यह सब तो मै ने यूँ ही कह दिया है, कोई इसलिये नही कि मै स्कूल-मास्टर को स्वामिनी के परिवार से सम्बन्ध जोड़ने लायक व्यक्ति मानती होऊँ," इतना कह कत्तिरिना बैठे हुए पीढ़े पर से उठ खडी हुई।

"यदि कोई दूसरा मातर-स्वामिनी के सामने यह प्रस्ताव रखता, तो मै जानती हूँ कि मातर-स्वामिनी उसे दुत्कार कर भगा देती। स्कूल-मास्टर ने भी यह बात समझी रहने के कारण ही मेरे सामने मुँह खोला था," कहती हुई कत्तिरिना चल देने के लिये तैयार हुई।

"उन को लडकी कौन देगा? यह बात पियल से मत कहना। हमे क्या जरूरत कि हम किसी को बिना-मतलब असन्तुष्ट करे?"

"हाँ स्वामिनी! मै उसे जो कुछ भी कहूँगी, इसी ढंग से कहूँगी कि उस के मन मे स्वामिनी के लिये जो कद्र है, वह और भी बढ जाय।"

"अच्छा फिर जा (कर आ)!"[१] कहती हुई मातर-स्वामिनी भी अपनी कुर्सी पर से उठ खड़ी हुई।

—:o:—

१. 'जाकर आ' सिंहल का एक मुहावरा है, जिस का मतलब 'जा' ही होता है।

परिच्छेद/३

मातर-स्वामिनी ने पियल सम्वन्धी वार्ता के वारे मे अपनी वेटी से तव पूछ-ताछ की जव 'नव-वर्ष' के उल्लास को समाप्त हुए तीन दिन वीत गये थे। कत्तिरिना के जाते ही उस की इच्छा हुई थी कि वह अपनी वेटी से पूछ-ताछ करे। लेकिन मातर-स्वामिनी ने अपनी उस इच्छा को दवा दिया। क्योकि यदि वह ऐसा न करती तो 'नव-वर्षारभ' से उत्पन्न हर्षोल्लास मे वाधा पड़ जाती।

"पियल ने तुम से कुछ वातचीत की थी ?" मातर-स्वामिनी का प्रश्न था। उसने यह प्रश्न उस समय किया, जव वह अनुला तथा नन्दा के सोने के कमरे मे थी। शीशम की लकडी और हाथी-दाँत की पच्चीकारी से युक्त वुरुत की वनी हुई एक अलमारी दीवार से सटी रखी थी। अलमारी के दोनो दरवाजो मे चार-चार चौखटों के वीच, हाथीदान्त की पच्चीकारी से युक्त शीशम की लकडी के चार फूल वने थे। वुरुत लकडी के दरवाजो को खराद कर उन मे जमाये हुए ये चारो फूल ऐसे लगते थे, जैसे वे वुरुत लकडी मे से ही अप्रयास उग आये हो। पीतल के घड़ो के समान शीशम की लकडी से बने पावो पर खडी अलमारी के निचले खाने का चौखटा भी शीशम की लकडी से वना था। अलमारी का शीशम की लकड़ी से वना शिखर और निचले खाने का चौखटा वरावर मेल खाते थे। शीशम की लकडी की पच्चीकारी युक्त पट्टी से ढकी वह अलमारी ऐसी मालूम देती थी, जैसे किसी वडे वुरुत-वृक्ष को खोखला कर, उसे पालिश कर दिया गया हो और उसी पर पच्चीकारी कर दी गई हो। एक दम समीप से यदि उस अलमारी को कोई छूकर देखता और उस के दोनो पल्लो को पकड़ता, तो उसे पीतल के कब्जों की जगह के अतिरिक्त और कही कोई छिद्र या विवर न दिखाई देता।

नन्दा इसी अलमारी के सहारे खड़ी थी। मातर-स्वामिनी अलमारी से थोड़ी ही दूर पर दीवार के पास विछे एक पलंग पर बैठी थी। पलंग पर विछी वढ़िया चटाई भले ही पुरानी थी, लेकिन तकिये पर का गिलाफ एक दम नया था। कोई भी अजनवी उस कमरे मे प्रवेश करता, तो उसे असंदिग्व रूप से यह स्पष्ट हो जाता था कि ये कमरा दो सफाई-पसन्द लड़कियों के सोने का कमरा है।

नन्दा तुरन्त ताड़ गई कि माँ ने उक्त प्रश्न क्यों पूछा है ? पियल से जो उस ने यह कह दिया था कि 'मां राजी तो मैं राजी !' वह यह समझ कर नही कहा था कि पियल जा कर माँ से पूछेगा। नन्दा को स्वप्न मे भी यह ख्याल नही था कि पियल कत्तिरिना को माँ से पूछने भेज देगा। उस ने उस समय पियल द्वारा पूछे गये प्रश्न को एक मजाक-मात्र समझा था।

"हाँ, माँ !" कह कर नन्दा ने मा के द्वारा पूछे गये प्रश्न का सीधा जवाव दिया।

"तू ने कहा था कि यदि मैं राजी हो जाऊँगी, तो तू भी राजी हो जायगी ?"

"हाँ।"

"पियल के साथ ऐसी वात-चीत करने क्यों गई ? उन के साथ कौन सम्वन्ध स्थापित करने जाता है ?"

"माँ, मैं ने इतनी दूर तक नही सोचा था। उस समय जो वात जवान पर आई, कह दी। यह वात मेरे मुँह से इसी लिये निकली कि जिसे माँ पसन्द करेगी, मैं भी उसे ही पसन्द करूँगी।"

"तो पियल ने इस से पहले भी तुम से वातचीत की होगी ?"

"पियल ने चिट्ठी जैसी दी थी।"

विजली की कड़क की आवाज से विचलित हुई की तरह मातर-स्वामिनी ने अपनी दोनों आँखें खोली। उस के माथे की त्योरियाँ चढ़ी हुई थी।

"हमारी वश-परम्परा में जो काम किसी ने नही किया, वही तू करने गई न ? पियल की तो दूर की बात है, वह भी कोई लड़की है, जो अपने ही गोत्र के, अपने ही परिवार के लोगो से भी पत्र-व्यवहार करती है ?" मातर-स्वामिनी क्रोधाग्नि तथा शोकाग्नि से जल रही थी ।

"माँ, मै ने पत्र नही लिखे । तू मेरे वारे मे इस तरह क्यों सोचती है ?" नन्दा ने सफाई पेश की । उस का स्वर भयाक्रात था ।

"तो तू ने अभी कहा न कि पियल ने चिट्ठी दी थी !"

"उस ने चिट्ठी दी थी, तो क्या मै ने उसे चिट्ठी लिखी थी, पियल ने शायद दो चिट्ठियाँ मुझे दी थी । मै ने उन्हे फेक दिया--अलमारी के पीछे । मै ने पियल को कभी भी चिट्ठी नही लिखी ।"

"पियल से प्राप्त चिट्ठी फेक दी", ऐसा कहने का नन्दा का उद्देश्य था किसी-न-किसी तरह माँ को शान्त करना । लेकिन उस के साथ ही जो उस ने 'अलमारी के पीछे' जोड़ दिया था, वह इस लिये कि इस कथन के विना पहला कथन मृपा हो सकता था ।

यह वात सत्य ही थी कि नन्दा पियल से प्रेम नही करती थी। इतना होने पर भी अपने रूप, अपने स्वभाव की प्रशसा से भरे पत्र को पढ कर उसे एक प्रकार का सतोप प्राप्त हुआ था । इसीलिए कदाचित उसने वह चिट्ठी विना फाडे अल्मारी के पीछे रख दी थी। ऊपर का ऐसा होठ, जिसकी मसें जैसे तैसे भीगी थी, उस से मेल खाता हुआ नीचे का होठ, दोनो से ढका हुआ मुँह और सव के ऊपर काजू की डठल जैसी नाक--यही पियल का रूप-रग था । पियल का चेहरा यूँ इतना सुन्दर न था, तो भी उस की मुस्कराहट आकर्पक थी । सिर पर जूडा रखनेवाले ग्रामीण तरुणो मे कुल सात या आठ ही ऐसे थे, जिन्होंने अपने वाल कटवा कर छोटे कर लिए थे । पियल उनमे से एक था ।

पियल की पढाई गाल्ले के अंग्रेजी विद्यालय मे हुई थी। निस्सन्देह वह नगर मे पतलून पहनता था, लेकिन गाँव मे नही। गाँव मे वह अभी भी लुगी और बनियान ही पहनता था। किसी रेदूस गाँव जाना होता, तो लुगी के ऊपर ही कोट भी पहन लेता। गाल्ल या कहीं दूर शादी-विवाह मे जाना होता, तो ही पतलून और कोट पहनता। इसीलिए कुछ ग्रामीण स्त्रियाँ उसे ठाट-बाट से रहने-वाला 'जन्टलमैन' समझती थी।

किसी तरुण से प्रेम करने की इच्छा रखनेवाली तरुणी, यदि एक बार पियल को देख लेती, तो उस की इच्छा उसे दुबारा देखने की भी होती ही थी। क्योंकि मातर-स्वामिनी पियल के बारे में यह बात जानती थी, इसीलिये उसे नन्दा के बारे मे और भी सन्देह होता था। और इसीलिये उस ने अपनी बेटी के इस कथन पर कि उस ने पियल को चिट्ठी नही भेजी, शीघ्र विश्वास नही किया। तरुणियों की सामान्य प्रवृत्ति से परिचित मातर-स्वामिनी मे इतना सूक्ष्म विवेक नही था कि वह यह सोच सके कि उन मे से कुछ किसी दूसरी प्रवृत्तिवाली भी हो सकती है। अपनी तरुणाई के दिनों मे उसने जो कुछ सोचा था, जो कुछ किया था, वही सब वह अब भी सोचती रहती थी। अपने कँवारपन मे जो कुछ उस ने सोचा था, किया था, कहा था, उसी के हिसाब से वह नन्दा के बारे मे सोचती थी। अपनी तरुणाई के दिनो मे यदि मातर-स्वामिनी को किसी तरुण की कोई चिट्ठी मिल जाती तो वह उसे अवश्य चञ्चल कर देती। इसीलिये मातर-स्वामिनी ने सोचा कि पियल की चिट्ठी पा कर नन्दा भी अवश्य चंचल हो उठी होगी। यदि किसी तरुण का पत्र पा कर कोई तरुणी चचल हो उठे, तो वह दो बातो मे से एक ही बात कर सकती थी—या तो तरुण से छिपे-छिपे प्रेम करना आरम्भ कर दे, या उस का पत्र फाड फेंके और उस से भरसक दूर-दूर रहने की कोशिश करे। मातर-स्वामिनी का विश्वास था

कि यदि कोई तरुण किसी तरुणी से प्रेम करना आरम्भ कर देता है, तो फिर उस तरुणी के लिये और कोई तीसरा मार्ग ही नही रहता।

उस के छुटपन का समाज अब वैसा समाज नही रहा, गाँव वैसा गाँव नही रहा, यह बात मातर-स्वामिनी के ध्यान मे नहीं आती थी। राष्ट्र मे परिवर्तन आने पर उस राष्ट्र के निवासी भी बदल जाते है—यह बात न तो उस को मिली शिक्षा का ही विषय था और न उस के प्रत्यक्ष अनुभव मे ही आई थी।

'सुन्दर तरुण' समझे जानेवाले पियल के लिये नन्दा के मन में कोई राग उत्पन्न नही हुआ था। इस का एक कारण उस का कुलाभिमान हो सकता है, पियल के दादा के बारे मे उस की जानकारी हो सकती है, और पियल का प्राय. भेंट होते रहना हो सकता है।

"तुम ने जो यह कहा कि तुमने पियल को चिट्ठी नही भेजी, क्या यह बात सत्य है ?" माँ ने फिर प्रश्न ताजा किया।

"अम्मा नही,' नन्दा ने कुछ रोष भरे लहजे में उत्तर दिया।

"तो पियल की दी हुई चिट्ठी तुमने ली ही क्यो ?"

"अम्मा जहाँ तक सोचने लग गई है, मैंने वहाँ तक नही सोचा था। चिट्ठी ली, पढी और फेंक दी ."

"फेंक दी ?"

"हाँ, अलमारी के पीछे—मैं जो कहना चाहती हूँ, माँ उसे पूरा पूरा कहने भी नही देती और प्रश्न पूछ लेती है।" कहते हुए नन्दा ने मुँह फुला लिया।

"हो सकता है कि पियल ने तुम्हे चिट्ठी देने की बात कत्तिरिना सें भी कही हो।"

माँ की यह बात सुनी तो नन्दा का चेहरा काला पड़ गया।

यदि उस के मन का कोप और अहंकार उसके दोनो नेत्रो के मार्ग से बाहर न निकल गया होता, तो नन्दा का चेहरा और भी अधिक काला पड़ गया होता।

"मैं पियल से यह बात पूछूँगी," नन्दा के स्वर मे पियल के लिये तर्जना का भाव था।

पियल सम्बन्धी बात-चीत को मातर-स्वामिनी एक मरी चुहिया की तरह दफना देना चाहती थी। उसने नन्दा के शब्द सुने तो उसे मर्माहत वेदना हुई। उस ने बेटी का क्रोध शान्त करने के लिये कहना शुरू किया—

"इस बात को कत्तिरिना जानती ही है, यह बात मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकती। पियल ने कत्तिरिना से यह अवश्य कहा था कि यदि मुझे (माँ को) मजूर होगा, तो तुझे भी मजूर होगा। इतनी बात कही तो सभवतः चिट्ठी की बात भी कही होगी, यह मेरा अनुमान मात्र था। कुछ भी हो, अब पियल को बुरा-भला कहने जाने की जरूरत नही। उसे क्रोध आ गया, तो यूँ ही कोई मिथ्या-अपलाप प्रचार कर देगा।"

नन्दा का क्रोध शान्त हो गया।

"माँ, मैं नही सोचती कि उसने चिट्ठी की बात कत्तिरिना को कही होगी। मैं जानती हूँ कि उस से कैसे बात का पता निकालना चाहिए। उस से मुझे तीन चिट्ठियाँ मिली थी। उन्हे मैं अब जला डालती हूँ।"

आबनूस की नक्काशीवाली सुन्दर अलमारी को खोल नन्दा ने उसके बिचले खाने के एक कोने मे रखे कपडों को छू छा कर देखा। अलमारी खोलने के साथ ही उसमे से जो सुगन्ध निकली, उस से सारा कमरा सुगन्धित हो गया। यह सुगन्धी उस कागज मे से नही आ रही थी, जिसका उपयोग अपने प्रेमपात्र को पत्र लिखने मे किया जाता है। ग्रामीण तरुणो मे अभी इतनी विकृति नही आई थी कि वे अपनी प्रेमिका के पास अपना सदेश पहुँचाने के लिए सुगन्धित कागज का उपयोग करने की बात सोच सके। ग्रामीण लोग अलमारी में जो खशखश की डंठलें रखते थे, वह कुछ कपड़ों को सुगन्धित करने के लिए नहीं, बल्कि उन्हे सुरक्षित रखने के लिए।

नन्दा ने माँ की नजरो के सामने ही, अल्मारी से निकाले तीनो पत्रो को जला कर ख़ाक कर दिया।

इस वार सिंहल वर्षारभ के वाद दो सप्ताह वीतते-वीतते विद्यालय की ईस्टर की छुट्टियाँ भी समाप्त होने को आई थीं। इसलिये तिस्स का अपने विद्यालय को वापिस जाने का दिन भी नजदीक आ गया था। मातर-स्वामिनी की कोशिश थी कि विद्यालय आरम्भ होने के दो दिन पूर्व ही तिस्स को वोर्डिग-हाउस मे भेज दिया जाय। लेकिन गाँव के लडको के साथ खेल-कूद मे मस्त रहनेवाले तिस्स ने कहा—"मै स्कूल खुलने के केवल एक ही दिन पहले यहाँ से जाऊँगा।"

जव-जव तिस्स को विद्यालय से लम्बी छुट्टी या एक माह मे दो दिन की साप्ताहिक छुट्टी के अवसर पर घर आना मिला है, तिस्स कभी भी खुशी-खुशी वोर्डिङ्ग मे वापिस नही गया है। खेल-कूद और घर को भूल कर पढने के लिये वोर्डिङ्ग को वापस लौटना तिस्स के लिये दण्डित किये जाने के समान था। गाल्ले के वोर्डिङ्ग मे रह कर अग्रेजी पढते हुए उसे तीन साल वीत गये थे, तव भी उसे वोर्डिङ्ग-हाउस मे रहना अच्छा नही लगता था। यह वोर्डिङ्ग विद्यालय के अहाते मे का वोर्डिङ्ग नही था। विद्यालय के पास ही कचहरी मे काम करनेवाले किसी क्लर्क का घर, तिस्स का 'वोर्डिङ्ग' था। वह क्लर्क, उस की भार्य्या, उस की जवान वेटी के अतिरिक्त एक नौकर और एक नौकरानी भी उसी 'वोर्डिङ्ग' मे रहते थे। गृहस्वामी अपने सुपरिचित कयिसारुवत्ते के पुत्र और अपने एक रिशतेदार के लड़के को जो अपने घर पर रखने मे राजी हो गया था, वह उनसे कुछ विशेष आर्थिक-लाभ की आशा से नही, वल्कि अपने एक मित्र और एक सम्वन्धी की सहायता करने की दृष्टि से ही। स्कूल के वोर्डिङ्ग-हाउस मे लडके को भर्ती कराने मे उन्हे जितना खर्चा देना पडता उसका दो-तिहाई ही लेकर वह, इन दोनो लड़कों को अपने घर पर रखे हुए था।

यद्यपि तिस्स को बोर्डिङ्ग का जीवन अप्रिय था, लेकिन विद्यालय का जीवन अप्रिय नही था। विद्यालय आरभ होने से आधा घण्टा पहले पहुँचकर अपनी समान-आयु के लडको के साथ खेलना-कूदना मिलने से ही उसे विद्यालय का जीवन अप्रिय नही था। विद्यालय की पढाई समाप्त होने पर भी आधे घण्टे तक बिना खेले-कूदे तिस्स कभी 'बोर्डिङ्ग' मे वापस नही जाता था। छुट्टियों मे घर आने पर उसे अपनी माता तथा बहनों से जो स्नेह प्राप्त होता और साथियो के साथ जो खेलना मिलता, उस के कारण विद्यालय के प्रिय जीवन से भी उसका मन उचाट हो गया था। इसी वजह से उसे वापिस बोर्डिङ्ग में भेजने मे कठिनाई होती थी।

रविवार की रात को जब तिस्स सोने गया, तो यही सोचता हुआ कि बडा अच्छा होगा यदि सोमवार के दिन प्रातःकाल के समय जोर की वर्षा हो। यदि ऐसा हो तो वह एक दिन और घर पर रह सकता था। सोमवार के दिन प्रातःकाल के समय तिस्स की आँख खुली तो उसने दुबारा सोने के लिये फिर अपनी आँखो को जोर से बन्द कर लिया। उसे लगता था कि आकाश मे बादल घिरे है।

"तिस्स, उठ! आज बोर्डिङ्ग जाने का दिन है न" कहते हुए अनुला ने भैया के शरीर को हाथ लगाकर, हिलाया-डुलाया। तिस्स ने अपनी आँखे और भी जोर से बन्द कर ली।

"चोर कही का, उठ खडा हो,' कहते हुए उसने उसे फिर जगाने की कोशिश की।

"पानी बरसते मे कोई कैसे जा सकता है ?"

"नाम-मात्र को जरा-सा बरस रहा है। क्या इतनी ही बूँदा-बाँदी के कारण तू नही जा सकता ? ले, माँ ने तुझे स्टेशन तक पहुँचा आने के लिये घोडागाड़ी जोतने को कहा है", कहते हुए अनुला ने तिस्स को सीधा खड़ा कर उसके दोनों पाँव जमीन से छुवा दिये।

बहन को मन मे बुरा-भला कहते हुए तिस्स ने, कोयला चबा, दांत साफ कर, मुँह धोया।

तिस्स को स्टेशन तक पहुँचा आने के लिये, उसकी माँ भी घोडागाडी मे साथ गई। उस के साथ तिस्स का सकेला भाई सोमदास भी गया। तिस्स को गाडी मे बिठा चुकने के बाद मातर-स्वामिनी का अकेले वापिस आना अनुचित होने से ही वह साथ गया था। उन दिनो ऐसी कोई भी गृहिणी जो मध्य-आयु पार कर चुकी हो, घर से दो फर्लाङ्ग की दूरी पर भी जाती, तो या तो किसी दूसरी स्त्री को साथ लेकर, या किसी लडके को अथवा किसी नौकर-चाकर को।

जिस बग्घी मे तिस्स स्टेशन गया था, उस मे मुहन्दिरम् भी कभी-कभी आता जाता था। इस से पहले वह इसी गाड़ी से आना-जाना करता था, लेकिन अब कभी ही। गाडी पुरानी हो गई थी और घोडा बूढा, इसीलिये मुहन्दिरम् ने इस गाड़ी का उपयोग कम कर दिया था। घोडे की पीठ पर हड्डी उभर आई थी; इसलिये इस घोडे को कोई खरीदता भी नही था। घोडे की खुराक का खर्चा और साईस की तनख्वाह—दोनो व्यर्थ के खर्च सिर लदे थे।

दो बम्बुओं के बीच मे बाँधी गई 'सीट' पर चलानेवाला बैठता था। शायद इसीलिये गाँववालो ने उस गाडी का नाम 'डिक्की-कार्ट' रखा था। रथ चलानेवाले का आसन 'डिक्की' कहलाता था। रथ के दोनों आसनो के बीच दो लोहे की सलाखे थीं। उन पर बिना मूठ के चप्पुओ जैसे लकडी के दो फट्टे थे। तीनों जने मोम-जामे से ढकी हुई इन सीटों पर दोनों ओर मुँह करके बैठ गये। तिस्स और उसकी माँ आगे की सीट पर बैठे थे।

लोहे की हाल वाले चारो पहिये घूमते थे, तो 'कर-कर' की आवाज करते थे। रस्सियाँ पिरोयी हुई, चमड़े की पट्टी वाली काठी, घोड़े की पीठ पर अच्छी तरह कसी हुई नही थी। टूटी हुई चमडे

की पट्टीवाली काठी के दोनों उभरे हुए सिरे, चौहरी की हुई सन की रस्सी से बँधे थे। नाना रस्सियो से एक साथ जोड़ी हुई इस वर्दी को पहन कर, अगर वह घोडा तीन चार मील भी कही जाता, तो दो चार जख्म लेकर ही वापिस लौटता। यह जख्म अच्छे होने तक फिर घोडा जोता नहीं जाता था। कितना ही वडा घोडा हो, यदि पुराने लोहे जैसी इस गाडी को छह महीने भी खींचे, तो उसे समाप्त हुआ समझो। करुणाद्र हृदय मातर-स्वामिनी को भी यह बात नही सूझती थी कि उस लोहे के ढेर को उस घोड़े से खिचवाना, उस के साथ हिंसा करना है।

गाँव मे लडकों के साथ किये गये खेल-कूद को याद करते हुए, गाड़ी मे बैठे जा रहे तिस्स को बडी सडक के किनारे के नारियल के पेड और जगह-जगह वसे हुए घरों वाली भूमि-पट्टी, उस के पीछे पीछे घूमती आती प्रतीत हो रही थी। जिस मैदान मे तिस्स दूसरे लडको के साथ खेला करता था, उस क्रीडा-भूमि की ओर उस ने तीन-चार वार देखा। अभी लडके वहाँ खेलने के लिये इकट्ठे नही हुए थे, इसलिये वह उजाड पडी थी। गॉव मे उत्पन्न होनेवाले आलू-वालू और दूसरे साग-पात जगह जगह रखकर वेचनेवाली ग्रामीण स्त्रियो, आदमियो और लडको से शाम के समय चहचहाने-वाला कटुकुरुन्द का वाजार, इस समय उस क्रीडा-भूमि की तरह उजाड पडा था। शाम को तो वहाँ इतनी भीड हो जाती है कि कही तिल धरने को जगह नही रहती और उस समय वहाँ से आती है—सामान की कीमत सुनानेवाले, मोल-भाव करनेवाले, वात-चीत करनेवाले स्त्री-वच्चों की आवाज। लेकिन स्टेशन की ओर जाते हुए तिस्स को इस समय सुनाई दे रही थी, पहले दिन मछली वेचनेवालों द्वारा काटकर फेंकी गई मछलियो की पूँछ और दूसरे हिस्सों को खाने के लिये झगड़नेवाले कौओं की कायँ-कायँ !

दुकानें पीछे रह जाने पर आगे जानेवाली एक बैलगाडी से आगे बढ़ा देने के लिये साईस ने घोड़े को जोर से दो चावुक लगाये।

कष्ट से तिलमिलाया हुआ घोड़ा उस लोहे के ढेर जैसी गाड़ी को खींच कर जब जोर से भागने लगा, तब ऐसी आवाज हुई कि सुनने-वाले के कान सुन्न पड़ जायें।

"उस प्राणी को पीट मत," मातर-स्वामिनी ने कोचवान को कहा--"गाड़ी के लिये भी काफी समय होगा। उस बैलगाड़ी में आनेवाला तंदियस सेठ भी 'सिहल-ग्राम'[1] जाने के लिये ही रेल पकड़ने जा रहा है। घोड़े को धीरे हांक।"

स्टेशन पर घोड़ागाड़ी पहुँचते ही तिरस माँ से भी पहले जमीन पर कूद पड़ा। ज्यों ही स्टेशन के भीतर घुसे, करोलिस दूर से दौड़ता हुआ आया और मातर-स्वामिनी के पास पहुँचते ही आँसू बहाता हुआ जोर-जोर से रोने लगा।

"करोलिस! रोता क्यों है, रे?" मातर-स्वामिनी ने पूछा।

"मैं 'सिहल-ग्राम' जा रहा हूं। स्वामिनी को पूर्व-सूचना देने नहीं आ सका," करोलिस ने जोर-जोर से रोते हुए उत्तर दिया।

"'सिहल-ग्राम' जा रहे हो!" स्वामिनी ने चकित हो कर पूछा।

"हाँ, स्वामी ने जाने को कहा। 'गाँव में ही रहोगे, तो पेट न पाल सकोगे'—कहा।"

"मुहन्दिरम् स्वामी ने कहा?"

"हाँ, मुझे क्षमा करें!" कहते हुए करोलिस और भी अधिक आँसू बहाने लगा।

'बचपन से अपने घर में पला, बड़ा हुआ करोलिस अचानक अलग हो रहा है, जान मातर-स्वामिनी की भी आँखें सजल हो आईं।

---

१. प्रदेश-विशेष के लिये पुराना प्रयोग।

"करोलिस ! तुम ने अचानक ही हमे छोड जाने का विचार क्यों किया ?"

"स्वामी ने मुझे अचानक ही चले जाने को कहा। मुझे क्षमा करे। मेरे हाथ से जो अपराध हुआ, उसे क्षमा करे।"

मातरस्वामिनी नही समझ सकी कि करोलिस किस बात की क्षमा माँग रहा है ? मातरस्वामिनी ने यह भी नही सोचा कि वह उन्हे छोड कर जाने के कारण ही ऐसा कह रहा है।

"करोलिस ! तुम ने कोई गलती नही की।"

"तो स्वामिनी को मालूम नही। स्वामी ने बताया नही है। मैं जा कर लिख कर भेजूंगा। गाडी आ गई !"—इतना कह करोलिस गाडी पर चढने की तैयारी करने लगा।

गाल्ले जानेवाली गाड़ी पास आई, तो जिस डिब्बे मे करोलिस चढा था, उस से कुछ ही दूर के डिब्बे मे तिस्स जा बैठा। माँ ने तिस्स का सिर पकड़, उसे पास ले कर, दो बार चूमा।

"बेटा, सभल कर रहना। रेल छुटने पर दरवाजे के सहारे नही खडे रहना," कहते हुए मातरस्वामिनी ने अपने बेटे को एक अठन्नी दी। गार्ड के सीटी बजाने पर रेल के इजन ने भी धुक-धुक शुरू कर दी।

"तिस्स ! अब गाँव किस दिन आओगे ?" सोमदास ने कुछ शोकाकुल स्वर से पूछा।

"आगामी शनिवार को आने की बात सोच रहा था, किन्तु माँ का कहना है कि अब चौथे सप्ताह के शनिवार से पहले घर न आना ."

"हाँ, हाँ, उस दिन आ जाना पर्याप्त होगा," सोमदास बोला। मातरस्वामिनी गाडी छुटने तक स्टेशन पर ही रहनेवाली थी।

गाडी छूटने पर तिस्स ने खिडकी से सिर निकाला तथा माँ और सोमदास की ओर हाथ हिलाने लगा। सोमदास ने भी हाथ हिला कर प्रत्युत्तर दिया। अपने लाडले बेटे के वियोग मे आँखें गीली किये मातरस्वामिनी जब तक उस का बेटा आँख से ओझल नही हो गया, तब तक जाती हुई रेल की ओर देखती रही। इसीलिये दूसरे डिब्बे मे बैठे शोकातुर करोलिस के चेहरे की ओर उसका ध्यान नही गया।

जब माँ और सोमदास दोनों आँखों से ओझल हो गये, तो तिस्स भी अपने आसन पर आ बैठा। उसे उस समय नारिल के पेडों के बीच से शान्त समुद्र के दर्शन हो रहे थे। गोलाकार चक्कर खानेवाले बहुत से प्रस्तर-स्तम्भों की तरह चक्कर खाते हुए और पीछे छूट जाते हुए नारियल के पेडो के तनो को देखते रहने से तिस्स की गर्दन और आँखे थक गई थी। उस ने नजर दूसरी ओर घुमा ली। उसके डिब्बे के दूसरे सिरे की सीट पर 'सिहल-ग्राम' जानेवाला ही एक ग्रामीण, मुकद्दमे के लिये गाल्ले जानेवाला एक ग्रामीण वकील तथा उस की सुपरिचित एक ग्रामीण स्त्री बैठी थी। अपनी सुपरिचित ग्रमीण स्त्री और उस ग्रामीण-वकील को देखने से तिस्स को फिर अपना घर याद आ गया।

कई सालों से गाल्ल के 'बोर्डिङ्ग-हाउस' मे रह कर पढ़ाई-लिखाई करते रहने के बावजूद तिस्स के लिये अपने गाँव तथा घर को भूल जाना सम्भव न हुआ। माँ के स्तनो को न छोड सकनेवाले बच्चे की तरह तिस्स अभी भी अपने गाँव तथा घर से चिपटा हुआ था। ग्राम और घर के प्रति उस की आसक्ति मे किसी भी प्रकार की कमी न होने का कारण था, बोर्डिङ्ग या विद्यालय मे उस के किसी घनिष्ट मित्र का न होना। गाल्ल-विद्यालय मे पढ़ते हुए उसे चार वर्ष हो गये थे, लेकिन अभी तक भी, कोई एक भी उस का घनिष्ट मित्र न बना था।

विद्यालय मे सभी तिस्स से प्रसन्न थे, उस की अपनी कक्षा के विद्यार्थियों मे से एक विद्यार्थी के अतिरिक्त शेप सभी उसे चाहते थे। लेकिन तव भी उन मे एक भी ऐसा नही था, जिसे तिस्स अपना 'मित्र' कह सके। उसकी अपनी कक्षा मे कई ऐसे लड़के थे, जो तिस्स को अपना 'मित्र' वनाना चाहते थे। लेकिन अत्यधिक लज्जा-भयवाले तिस्स की ओर से ही कुछ भी बढ़ावा न मिलने के कारण वे ऐसा न कर सके। अपनी कक्षा के विद्यार्थियो मे से एक विद्यार्थी के प्रति ति.स विशेप रूप से आकृष्ट हुआ, लेकिन उस ने यह वात कभी किसी दूसरे लड़के की तो कौन कहे, जिस विद्यार्थी के प्रति वह आकृष्ट था, उस पर भी प्रकट होने न दी। तिस्स ने ऐसा इसीलिये किया, क्योंकि उसे इस का विश्वास न था कि वह विद्यार्थी तिस्स को अपना 'मित्र' वनाना चाहेगा। इस अविश्वास का कारण तिस्स का अत्यधिक शर्मीला होना था, यह अविश्वास लज्जा-जनित था।

तिस्स अपनी माता की तरह ही अन्तर्मुख प्रवृत्ति का लडका था। किसी विषय मे भी विशेषता रखनेवाला कोई भी तिस्स को अपनी ओर आकर्षित कर लेता था। तिस्स पढने-लिखने तथा खेलने मे भी तेज था। उसी की तरह, उसी की कक्षा के पढने-लिखने और खेलने मे भी तेज दो-तीन लडकों की ओर उस का मन आकर्षित हुआ था। ऐसा होने पर भी तिस्स ने उन में से किसी एक की भी घनिष्ठता प्राप्त नहीं की थी। विद्यालय में रहते समय वह उनसे मित्रवत् व्यवहार करता, घर जाता तो उन्हें भूल जाता। कोई भी घनिष्ठ मित्र न होने से, साप्ताहिक-छुट्टी के दो दिन पहले से ही तिस्स को अपना गाँव-घर और गाँव के लड़के याद आने लगते। उक्त कारणों से ही तिस्स के मन मे अपने गाँव, घर, माँ, तथा वहनों के प्रति क्रमशः आसक्ति वढ़ गई थी।

गाल्ल का स्टेशन पास आने तक तिस्स सोचता रहा, गाँव के

वारे मे, घर के वारे मे, माँ के वारे में, वहनों के वारे में और फिर वापस गाँव जाने के दिन के वारे मे ।

सिहल 'नव-वर्ष' समीप आने पर तिस्स को प्रति सप्ताह घर हो आना अच्छा लगता था। लगातार दो सप्ताह तक गाँव आने के कारण एक वार अनुला ने उसे लिख दिया थ, कि इस शनीचर को घर न आन । इस लिये उस सप्ताह उसे घर आने के लिये रेल का भाडा भी न मिला था। उस सप्ताह तिस्स प्रात.काल पैदल ही निकल गाँव पहुँचा। दस मील पैदल चलकर आनेवाले तिस्स की थकावट-जनित पीडा को देख उस की मा की आँखे भीग आईं । रेल का भाड़ा न भेजने के लिये उस ने अनुला से कहा-सुनी की।

प्रात काल तिस्स विस्तर पर गठड़ी वना पड़ा था और मन-मन जप रहा था—'देव ! वर्षो।' तो भी गाड़ी गाल्ल स्टेशन के पास पहुँचने पर मेघ-रहित सूर्य की रश्मियों से प्रकाशित आकाश को देखकर उसे प्रसन्नता हुई। विद्यालय के लडको के साथ खेलने-कूदने के लिये वह लालायित था। इसलिये गाँव-घर की याद से तिस्स के मन मे जो शोक की भावना घर कर गई थी, उसे चित्त से दूर हटा, वह गाड़ी के डिब्बे मे से वाहर आया।

—:०:—

परिच्छेद/४

जब मातर-स्वामिनी स्टेशन से लौटकर घर पहुँची, उस समय मुहन्दिरम् लिखने की मेज के पास कुर्सी पर वैठा, नाक पर चश्मा चढाये हिसाव की वही देख रहा था।

"इस वार तिस्स ने विद्यालय जाते समय वहुत ननुनच किया था न?" वडे कमरे मे प्रविष्ट हुई अपनी भार्या से मुहन्दिरम् ने पूछा। इस समय उस ने अपनी ऐनक उतार कर मेज पर रख ली थी।

"हाँ, कुछ ननुनच तो की थी।"

"मै विद्यालय के क्लर्क को लिख दूँगा कि उसे घर आने के लिये वहुत छुट्टी न दिया करे।"

"ऐसा न लिखे। तिस्स घर आने के लिये लालायित रहता है। खेल-कूद से भी अधिक उस की घर आने की इच्छा रहती है।"

"स्वामिनी और वडी वहनों के लाड़-प्यार के कारण।"

"मैंने तिस्स को कह दिया था कि इस वार महीना समाप्त होने से पहले घर न आना। रविवार, शनि के दिन घर आना; एक-वारगी ही रोक देना अच्छा नही।"

"मैंने एक दम रोक देने के लिये नही कहा। महीने दो महीने मे एकाध वार, रविवार-शनिवार के दिनों मे, तथा स्कूल वन्द होने पर घर आना पर्याप्त होगा।"

"करोलिस भी 'सिहल-ग्राम' जाता हूँ" कह कर उसी गाडी में गया है, जिस से तिस्स गया है," यह वात मातर-स्वामिनी ने वडे आश्चर्य के साथ कही। लेकिन इस वात को सुनकर मुहन्दिरम् को किसी भी तरह का आश्चर्य नही हुआ। करोलिस का समाचार सुनने पर मुहन्दिरम् ने फिर वही उठा ली और पन्ने उलट-पलट कर उसे देखने लगा।

"करोलिस बहुत अफसोस के साथ गया। मुझे देखते ही उसे रोना आ गया।"

पत्नी की यह बात सुनी, तब भी मुहन्दिरम् ने अपना मौन नही भंग किया। तब पति का मुँह खुलवाने की इच्छा से ही पत्नी ने पूछा—

"करोलिस को अचानक 'सिहलग्राम' जाने को कहा!"

"हाँ," कह मुहन्दिरम् ने उसे कुर्सी की ओर सकेत किया। "स्वामिनी! बैठ जाओ।"

जब कभी विशेष बात चीत करनी होती थी, तभी मुहन्दिरम् इस प्रकार का सकेत करता था। स्वामिनी उसकी इस आदत से परिचित थी। वह एक छोटी कुर्सी ले आई और उस पर बैठ गई। बाहर भले ही बैठे, लेकिन घर पर वह अपने स्वामी के आसन के समना ऊँचे आसन पर नही बैठती थी।

"करोलिस चार पाँच सौ रुपये को चूना लगा गया है," मुहन्दिरम् ने कहा।

"दुकान से चोरी की है?" मातरस्वामिनी ने अत्यन्त विस्मय से पूछा। 'वर्षारंभ' के दिन कत्तिरिना की कही बात क्षण भर के लिये उस के दिमाग मे कौंध गई।

"मैं नही कहता कि उस ने चोरी की है। लेकिन जो-जो सामान कर्ज़ दिया, लिखा है, वह बहुत-सा झूठा हिसाव-किताब है।"

"सचमुच! मैंने कभी करोलिस पर शक नही किया। वर्षारंभ के दिन जब कत्तिरिना से पूछा कि दो सौ का कर्ज क्यों सिर चढ़ा लिया, तो वह औरत चकित हो गई। उस औरत ने क़सम खाई कि उसने पचास-साठ से अधिक का उधार नही लिया। लेकिन तब भी मैंने करोलिस पर किसी तरह का शक नहीं किया।"

मातरस्वामिनी को अपने पति की बुद्धि पर आश्चर्य था कि करोलिस के बारे मे सन्देह करने के कारणों की जानकारी होने पर भी, वह उस पर चोरी करने का सन्देह नही कर रहा है।

"वर्षारंभ के दो-तीन दिन पहले मैंने करोलिस का हिसाब-किताब देख स्वामिनी से पूछा था, तो स्वामिनी ने कहा था न कि कत्तिरिना को दो-तीन रुपये से अधिक का सामान उधार देने के लिये कभी पुर्जी नही दी।"

"हाँ।"

"मेरे मन मे इस के बाद ही सन्देह उत्पन्न हुआ। एक बार चार-पाँच रुपये की, दो-तीन बार बारह-पन्द्रह रुपये की उधारी कत्तिरिना को दी है—ऐसा करोलिस की वही मे लिखा था। इस सन्देह के कारण मुझे करोलिस की जाँच-पडताल करने की सूझी। चौकसी करने पर मुझे पता लगा कि कत्तिरिना का आदमी, पुची अप्पु, रात के समय सब की नज़र बचा कर दुकान मे आता-जाता है। अधिक खोज करने पर पता लगा कि करोलिस समय-असमय कत्तिरिना के घर आता-जाता है, लयिसा के साथ कुछ उलझा है।"

"लयिसा के साथ ?"

"क्यों, क्या वह अच्छी औरत नही ?"

"लयिसा, अच्छी नही है। अपनी माँ की तरह नही है। वह मुस्करा कर, आँखे मटका कर आदमियों को फँसाना खूब जानती है।"

"मुझे एक तरीका सूझा। एक दिन जब वह रास्ते मे मिला तो मैंने पूछा—'अरे पुची अप्पु ! करोलिस की हिसाब-किताब की वही मे लिखा है कि तुझे पच्चीस रुपये की उधारी दी। वह कर्ज तू ने क्यों नही चुकाया ?' वह बोला—'स्वामी ! असमर्थ होने के कारण ही उस ऋण से उऋण नही हो सका। अब उसे शीघ्र उतार दूंगा।' मै ने जान लिया कि मेरा सन्देह ठीक है। मैंने नन्दियस

अफसर को सदेश भिजवा कर बुलवाया। उसे सारी वत समझाई और कहा कि करोलिस को पकड कर, डरा-धमका कर सच्ची वात का पता लगाये। अफसर ने करोलिस को पकड कर उस से पूछ-ताछ की, तो उस ने स्वीकार नही किया। अफसर ने उसे पुलिस को सौप देने की तैयारी दिखा, अच्छी तरह से डराया-धमकाया, तव उस ने कुछ सत्य उगला। तव अफस ने मेरे पास सूचना भिजवाई। मैंने जा कर जेल भिजवाने की धमकी दी, तो पूरी वात साफ-साफ कह दी। लयिसा के चक्कर मे पड कर ही उस ने यह सव कुछ किया है। पुची अप्पु ने करोलिस को चकमा दे कर उस से 'पीने' के लिये भी पैसे लिये है।"

"इस से तो मालूम होता है कि कत्तिरिना भी वडी चण्ट औरत है। मुझ से भी सहायता माँगती रही और लड़की दिखा कर करोलिस को फुसला कर दुकान भी खाली कर दी।"

"मै नही समझता कि इस मे कत्तिरिना का कुछ हाथ रहा है," कयिसाख्वत्ते वोला।

"करोलिस ही पहले कत्तिरिना के घर आने-जाने और लयिसा से वात आरम्भ करने लगा। कत्तिरिना को उस का आना-जाना पसन्द नही था। उस ने करोलिस को बुरा-भला कहा। तव करोलिस ने पुची अप्पू से दोस्ती जमाई और लयिसा को देखने आने-जाने लगा। पुची अप्पु करोलिस से पैसा और सामान पाने लगा। कभी-कभी करोलिस पुची अप्पु को जो पैसा या सामान देता था, वह लिखता नही था। कभी-कभी कत्तिरिना के हिसाव मे लिख देता। शुरू-शुरू मे कत्तिरिना अपनी असहमति के कारण पुची अप्पु के साथ झगड़ भी चुकी है। उस का आदमी ही उसे वुरा-भला कहने लगा, तो वह औरत भी चुप्पी साध कर वैठ गई। लड़की वीमार पडी तो उस औरत की जवान ही वन्द हो गई। करोलिस से मिली सहायता से ही वह लड़की को चगा कर सकी।"

"यह सब होने पर भी उस औरत ने मेरे कान मे इस की भनक तक नही पड़ने दी," मातरस्वामिनी ने कत्तिरिना पर दोषारोपण किया।

"हाँ, यह तो ऐसा ही है। औरत कितनी भी अच्छी हो, अन्त मे अपने नफे की बात ही सोचती है। करोलिस औरत के चक्कर मे आ जानेवाला आदमी ! इसी गाँव मे रह तो उस के लिये भविष्य नही है, सोच मैं ने उस से पूछा—तुझ पर मुकद्दमा चला, तुम्हे जेल भिजवाऊँ ? अथवा इस की बजाय तू यह पसन्द करता है कि सिंहलग्राम जा कर वहाँ दुकानदारी करना सीखे ? करोलिस ने सिंहलग्राम जाने की बात स्वीकारी। मैं ने तेदिस दुकानदार से बात-चीत कर करोलिस को उसकी दुकान पर भेजने की व्यवस्था की। मैं ने उसे जब यह बात स्पष्ट समझा दी कि करोलिस चोर नही है, हमे जो नुकसान हुआ है, वह उस के औरत के चक्कर मे पड़ जाने के कारण हुआ है, तो तेदिस सेठ राजी हो गया। करोलिस सात-आठ वर्ष सिंहलग्राम मे रहा, तो सुधर जायगा।"

"करोलिस के बारे मे, क्यों मुझे कभी कुछ भी नही बताया ?" मातरस्वामिनी ने थोड़ी खीझ के साथ प्रश्न किया।

"स्वामिनी को कह दिया होता, तो चोरी नही पकड़ी जा सकती थी। करोलिस को सिंहलग्राम भी नही भेजा जा सकता था। इसीलिये मैं ने इस से पहले स्वामिनी को कोई बात नही बताई।"

"मैं भी स्वामी को एक बात नही बता सकी। पियल ने कत्तिरिना के हाथ एक प्रस्ताव भिजवाया था।"

"प्रस्ताव ?"

"हाँ, नन्दा को ले कर।"

"नन्दा को ले कर पियल ने प्रस्ताव भिजवाया था ?"

"हाँ।"

"उन को लडकी कौन देगा ?"

"मैने भी यही कहा,"—यह वात मातरस्वामिनी ने हार्दिक सन्तोप के साथ कही।

मुहन्दिरम् ने पियल को ले कर और कुछ पूछ-ताछ नही की। मातरस्वामिनी ने भी वात आगे नही बढाई।

नववर्ष को दो महीने मे बीचते-बीचते पियल गाँव से बाहर चला गया। इन दो महीनो मे पियल 'बडे घर' दो-तीन वार ही गया। मुहन्दिरम् की लड़कियों की पढाई अपने-आप रुक गई। मातरस्वामिनी द्वारा उसका प्रस्ताव अस्वीकृत होने की वात कत्तिरिना ने पियल को ऐसे ढँग से कही कि उस का दिल न दुखे। इस का एक कारण यह भी हो सकता है कि कत्तिरिना पियल को सर्वथा निराश न करना चाहती हो। पियल का दिल न दुखाने की नीयत के साथ-साथ नन्दा को लेकर पियल के मन में मातरस्वामिनी के वारे में कोई बुरा विचार पैदा न हो, इस सावधानी के साथ-साथ, यह कहना भी असम्भव है कि कत्तिरिना को इस वात का ध्यान न था कि यदि पियल सम्पूर्ण रूप से निराश हो जायेगा, तो इस से कत्तिरिना को हो सकनेवाला लाभ नहीं हो सकेगा।

पियल गाँव से अचानक ही वाहर क्यो चला गया है, यह असंदिग्ध रूप से उसकी माँ भी नही जानती थी। वह घर से गया तो यही कह कर गया कि 'कोलम्बो जाकर आता हूँ।' वहाँ नौकरी लग जाने के कारण पियल कोलम्बो में रुक गया। दो सप्ताह के वाद पियल की माँ को चिट्ठी मिली, जिसमे लिखा था कि तीन-चार महीने तक गाँव वापस लौटूंगा। इसलिए पियल की माँ जो कोई भी पियल के वारे में पूछता, उसे यही उत्तर देती कि पियल कोलम्बो नौकरी के लिये गया है।

पियल के गाँव छोड कर चले जाने के दो सप्ताह वाद नन्दा को एक विचित्र रोग हो गया। पहले पेट मे दर्द आरम्भ हुआ।

पेट का दर्द बन्द हुआ तो मुँह में कफ आने लगा। कफ आधिक्य की अवस्था मे कभी-कभी उस के लिए साँस लेना तक कठिन हो जाता। कफ मे कमी होती तो वह आसानी से साँस ले सकती, लेकिन उस समय वह उबाइयाँ लेती।

वैद्य द्वारा चिकित्सा कराने के साथ-साथ गाँव के लोग ओझाओं से झाडफूँक भी कराते रहते है। 'बडे घर' से भी यह बात अभी दूर नहीं हुई थी। इसलिए वैद्यों द्वारा कराई गई चिकित्सा के साथ-साथ ओझाओं द्वारा झाडफूँक भी कराई गई।

रोगी होने के दिन ही कत्तिरिना ने नन्दा को देखा, तो उसे ख्याल आया कि इस का यह रोग वियोगजनित हो सकता है। एक दिन मातरस्वामिनी के साथ बात-चीत करते समय अनजाने मे ही कत्तिरिना के मुँह से उसका वह विचार प्रकट हो गया। मातरस्वामिनी ने रोष भरे स्वर मे कत्तिरिना को डाँटा—

"अब फिर ऐसी बेहूदा बात मुँह से मत निकालना। मेरे सामने कहा तो कहा, अब और किसी के सामने मुँह न खोलना कत्तिरिना, सुना न? यदि स्वामी को पता लग गया, तो उन्हे बहुत क्रोध आयेगा। तू गाँव मे भी न रह सकेगी। स्वामी के स्वभाव से तू परिचित है न?"

"स्वामिनी; मैंने और किसी से भी यह बात नहीं कही। स्वामिनी के सामने यूँही मेरे मुँह से यह बात निकल गई। मैं अब स्वप्न मे भी इस के बारे मे नही सोचूँगी।" कहते हुए कत्तिरिना ने वचन दिया।

तीन महीने तक दवाई चलती रही। तो भी नन्दा पूर्णरूप से नीरोग नहीं हुई। मातरस्वामिनी से राहखर्च और 'शास्तर' बतानेवाले की फीस लेकर कत्तिरिना हीनटिगल गई और नन्दा के रोग के बारे मे 'शास्तर' पूछा। मातरस्वामिनी की आज्ञा से एक

और औरत एक अदृश्य-वक्ता के पास गई। वडे घर के लोग अपने लिए शास्तर पुछवाना या अदृश्य दिखलवाना कत्तिरिना जैसी विश्वास-पात्र स्त्रियो के माध्यम से ही करते थे।

नन्दा प्रेत-आवाधा से पीडित है, यह मत जो गाँववालोमे फैला हुआ था वह कत्तिरिना के 'शास्तर' पूछने जाने अथवा दूसरी औरत के अदृश्य-वक्ता के पास हो आने के वाद से ही नही। यह मत नन्दा के रोगिनी होने के साथ-साथ ही फैल गया था। शास्तर पुछवाने और अदृश्य दिखवाने के वाद से यह मत ग्रामीणोंमे और भी जड पकड गया। नब्बे प्रतिशत लोगो का यह विश्वास हो गया कि यह पिशाच-आवाधा ही है। 'इस रोग का कारण है कि स्कूल-मास्टर ने उसे अपनी ओर आकर्षित करने के लिए कुछ करवा दिया है,' यह वात थोडी सी ग्रामीण औरतों मे पहले कानाफूँसी का विषय थी; लेकिन अव यह मत गाँव मे एक प्रकट रहस्य था। आरम्भ मे यदि कोई ऐसा मत व्यक्त करता तो मातरस्वामिनी उसे वुरा-भला कहती। लेकिन अब वह किसी के साथ तर्क करने नही जाती थी। यह सव कुछ होने पर भी वह ऐसी किसी भी वात मे तभी विश्वास करती, जव उसका स्वामी भी विश्वास करता।

यह वात नही थी कि कैसारुवत्ते मुहन्दिरम् जन्तर-मन्तर मे विश्वास ही न रखता हो। शायद उसके मन मे कभी यह जानने की जिज्ञासा ही उत्पन्न नही हुई कि यह सव सत्य है अथवा मिथ्या है?

वह अल्पभाषी तो था ही, ग्रामवासी प्राय यह भी कहते सुने जाते थे कि वह जोर-ज़ोर से हँसता तक नही। भले ही उस की हँसी आवाज-रहित रही हो, लेकिन न केवल मातरस्वामिनी वल्कि गाँववाले भी यह विश्वास करते थे कि उस की मुस्कराहट उसके चेहरे को एक विशेष सौन्दर्य्य प्रदान करती है। कोई नही जानता कि कोई-कोई गाँववाले आँख मारकर ऐसा क्यों कहते थे कि कत्तिरिना की इस मुस्कराहट की सर्वाधिक प्रशंसा करनेवाली कत्ति-रिना है।

अपने बच्चों के बीमार होने पर मुहन्दिरम् वैद्य को कोई इस लिये नही बुलवाता था कि उस का केवल वैद्यक मे विश्वास था, यह एक पडा हुआ अभ्यास था। दूसरों ने कहा कि ओझा को भी बुलवाना रोगी के लिये हितकर होगा, इस लिये उस ने ओझा को भी बुलवा लिया। वह विहार मे भी कभी ही जाता था। धर्म, चिकित्सा तथा ओझाई—तीनों के प्रति उस की समान उपेक्षा थी। इस उदासीनता का यही कारण था कि इन मे से किसी के बारे मे भी उस के मन मे कुछ भी सोचने-विचारने की इच्छा न थी। वह अपने बच्चों के बारे मे सोचता था, अपनी भार्य्या के बारे में सोचता था। बच्चों की पढाई, उन के खाने-पीने की व्यवस्था करना, उन का भविष्य बनाने की बात सोचना—यही सब उस की चिन्ता के विषय थे। इतना सब होने पर भी वह स्वार्थी स्वभाव का न था।

मातरस्वामिनी तिस्स को अधिक प्यार करती थी। सभी बच्चों के लिये समान ममत्व रखनेवाले मुहन्दिरम् के हृदय मे नन्दा के लिये विशेष स्थान था।

अदृश्य-वक्ता के अदृश्य बताने के बाद से मुहन्दिरम् का भी यह पक्का विश्वास हो गया था कि पियल ने नन्दा को कुछ करवा दिया है। इस के बाद मातरस्वामिनी भी इस बात को प्रत्यक्ष-सत्य की तरह मानने लगी। इतना होने पर भी उन्होने नन्दा के चाचा-तायों के परिवार के अतिरिक्त और किसी से भी इस विषय मे चर्चा नही की।

जैसे ही मुहन्दिरम् के मन मे यह बात बैठ गई, तैसे ही वह ओझा लोगो की अधिकाधिक सहायता खोजने लगा। लेकिन साथ ही गाल्ल से डाक्टर बुला उस से नन्दा की चिकित्सा भी वह कराता रहा। गाल्ल से आनेवाले डाक्टर की एक-एक बार की फीस पच्चीस-तीस रुपये होती थी। मुहन्दिरम् बिना फीस की परवाह किये एक महीने तक प्रति सप्ताह एक या दो बार डाक्टर को बुलवाता

रहा। डाक्टर ने 'स्त्रियों को होनेवाली मूर्च्छा-विशेष' कह कर रोग का निदान किया और 'बिना दवाई के भी समय पाकर यह रोग अच्छा हो जा सकता है,' कहकर नन्दा की चिकित्सा आरम्भ की। ओझाई के साथ-साथ चलनेवाले इलाज से नन्दा को लाभ हुआ।

"अब और दवाई की आवश्यकता नहीं, समय पाकर पूर्ण नीरोग लाभ कर लेगी'—कह डाक्टर ने अपनी आखिरी बार आने की फीस पन्द्रह रुपये जेब मे डाल ली।

नन्दा के रोग को पूर्णरूप से अच्छा करने के लिये मुहन्दिरम् ओझाओं के कहने के अनुसार पूजा-पाठ करवाने लगा। अब से चार महीने तक ऐसा कोई एक भी सप्ताह नहीं बीता, जब उसे बडे-घर मे कुछ न कुछ टूना-टटका न हुआ हो। ओझाओं ने इस से पहले किसी भी ग्रामीण के सुनने मे न आये नामोंवाले नये-नये अनुष्ठान करवाये। अनुष्ठान पूरा होने तक श्वेत वस्त्र धारण कर ओझा को दिखाई देनेवाली पूजाओ के सामने बैठे रहना नन्दा के लिये प्रियकर न था। आरम्भ मे अपनी इस विरोधी-भावना को वह जैसे-तैसे दबाये रही, लेकिन बाद मे धीरे-धीरे उस ने अपनी उस भावना को प्रकट होने दिया।

'बडे-घर' के प्रति ग्रामीणों के मन मे जो आदर-भक्ति का भाव था, वह इन चार महीनो मे ही प्रकट हुआ। अनुष्ठान के लिये आवश्यक चीजे ला-ला कर उपस्थित करनेवाले ग्रामीण-जनों तथा ग्रामीण-स्त्रियो से 'बडा-घर' भरा रहता था। एक आदमी जिन मशालो को लपेट सकता था, उस मे सात-आठ जने लिपटे रहते थे। केलो के स्तम्भ तथा नारियल की कोंपले लाने के लिये चार-पॉच जने जाते। मास, मछली तथा फूल लाने के लिये भी सात-आठ जने कष्ट करते। ओझा लोग किसी-किसी अनुष्ठान मे केवल श्वेत-वर्ण पुष्प काम मे लाते। किसी दूसरे अनुष्ठान मे पाँचों वर्णों के वन-पुष्प मात्र। इस लिये इन पुष्पों को ला-ला कर उपस्थित करने के लिये ग्रामीण-जन पास के गाँवों के जगलो मे विचरते रहते।

अनुष्ठान के लिये इतना कष्ट उठानेवाले ये ग्रामीण जन अपने परिश्रम के वदले मे एक पैसा भी नही लेते। तो भी उन को भोजन कराना तो गाँव की प्रथा थी। कुछ ग्रामीण 'बड़े-घर' के लोगों को विना पता लगने दिये भोजन करने के लिये भी अपने-अपने घर जाते। ऐसा होने पर भी अनुष्ठान के दिन 'वड़े-घर' मे आवी वोरी चावल का भात, उतने भात के लिये अपेक्षित व्यञ्जन, तरकारी तथा मछली आदि पकती ही थी। डाक्टर के इलाज पर जितना पैसा खर्च हुआ था, उस का कई गुना पैसा मुहन्दिरम् ने इन चार महीनों मे अनुष्ठानों पर खर्च कर दिया। चार महीनों की समाप्ति पर नन्दा पूरी तरह से स्वस्थ हो गई। इस के वाद वह पहले की तरह सुखपूर्वक रहने लगी, लेकिन किसी-किसी दिन-रात के समय उस का व्यवहार विचित्र हो जाता। आस-पास के किसी घर मे होनेवाले किसी अनुष्ठान या किसी और मत्र-जत्र की कार्रवाई की उसे जानकारी मिलती, तो वह लेट कर उबाइयाँ लेने लगती। सोने के समय तक उबाइयाँ लेती रहती, लेकिन दूसरे दिन प्रात.काल के समय वह उठकर और दिनों की तरह ही काम-काज मे लग जाती। किसी ने इस वात का कष्ट नही उठाया कि इस वात का पता लगाये कि पूरे चार महीने तक अनुष्ठानों से घिरे रहने का उस के अचेतन मन पर जो प्रभाव पड़ा है, उसी का यह परिणाम है। ओझाओं तथा ग्रामीणों ने उस के व्यवहार मे दिखाई देनेवाली इस विचित्रता को उस के 'प्रेत-आबाधा' से ग्रसित होने का प्रत्यक्ष प्रमाण समझा। अव उन को इस का भी पूरा-पूरा विश्वास हो गया कि पियल ने नन्दा को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये ही कुछ करवा दिया होगा।

नन्दा अच्छी हुई तो मुहन्दिरम् को अर्थ-कष्ट रहने लगा।

"चाहे कितना ही खर्च हुआ, नन्दा अच्छी हो गई—यह हमारे लिये बडे संतोष की वात है," एक दिन शाम के समय मुहन्दिरम् ने अपनी पत्नी से कहा।

"अरे हाँ, पिछले सात महीनों मे मेरी छाती मे आग-सी दहकती रही है।"

"सतान बीमार पड जाय, तो उस का अपने मन पर अत्यधिक प्रभाव नही पडने देना चाहिये, मै ने स्वामिनी को पहले ही कहा था। किन्तु, सुना जो नही। अब इन सात-आठ महीनो मे स्वामिनी ही नही दुबला गई है।"

"मै जरा दुबला गई, तो इस से क्या ? मेरे लिये यह बहुत है कि नन्दा बच गई। देव-कृपा से हो, अथवा अन्य कारण से हो नन्दा के अङ्ग छीजे नही है," यह बात स्वामिनी ने देवताओं को पुण्य देने के ढँग से कही।

"स्वामिनी को सूचित नही कर सका, इम्बुल-गह बगीचा भी बेचकर रुपये की व्यवस्था करनी पडी।"

मातरस्वामिनी ने ठण्डी साँस भर ली, लेकिन मुख से कुछ नहीं बोली। वह यह जानती थी कि इम्बुल-गह बगीचा बेचने से पूर्व उस का स्वामी अपने पास के कई जमीन के टुकडों को गिरवी रख रख कर, रुपये की व्यवस्था कर नन्दा की बीमारी पर खर्च कर चुका है। अब उन के पास रहने का घर और आस-पास का बगीचा छोड और कुछ नही रह गया है।

"निकट भविष्य मे ही नन्दा से विमुक्ति लेनी चाहिये,' मातर-स्वामिनी ने प्रस्ताव किया। यह नही कहा जा सकता कि इस प्रस्ताव के मूल मे उस की यह धारणा भी नही थी कि नन्दा के रोग का कारण 'प्रेम' से उत्पन्न 'शङ्का' भी रही होगी।"

"जेमिस ने पूछा था कि मातर-कचहरी के क्लर्क से बातचीत करूँ ? मैंने उसे कह दिया कि बातचीत करके देखे।"

"हमारे जैसी पद-प्रतिष्ठा रखनेवाले किसी भी परिवार का कोई भी तरुण हो," मातरस्वामिनी बोली।

मातर-कचहरी के क्लर्क की जन्म-पत्री मँगवा, नन्दा की जन्म-पत्री के साथ दो-दो ज्योतिषियों से जँचवाई। दोनों का निर्णय था—जन्म-पत्रियाँ वेमेल हैं।

"रालहामि (=स्वामि!) यह सम्बन्ध नही ही करना," एक ज्योतिपी ने मुहन्दिरम् को वैसे ही जोर देकर कहा कि जैसे सेवक ने विदेह के राजा को उपदेश किया था।

इस के वाद नन्दा की जन्म-पत्री के साथ गाल्ल विवाह-रजिस्ट्रार के लडके की जन्म-पत्री, पुराने खानदानी परिवार के अव ठन-ठन गोपाल लडके की जन्म-पत्री तथा एक जमीदार तरुण की जन्म-पत्री ज्योतिषियों से जँचवाई। ज्योतिषियों का निर्णय था कि तीनों जन्म-पत्रियों मे से एक छोड शेष दोनों जन्म-पत्रियाँ नन्दा की जन्म-पत्री से मेल नहीं खाती। मुहन्दिरम् को रजिस्ट्रार के वेटे से शादी करना प्रिय था। लेकिन एक ज्योतिषी ने कसम खा कर कहा कि यदि उस से शादी की गई तो नन्दा विधवा हो जायगी। नन्दा की जन्म-पत्री से केवल धनी जमीदार तरुण की जन्मपत्री मेल खाती थी; लेकिन उस का पिता नानवाई था। वह वगीचे मे काम करने-वाले लोगों के हाथ पाव-रोटी, मछली आदि वेचनेवाला छोटे खान-दान का आदमी था। उसका पितामह पान वेचकर गुजारा चलाता था। इसलिये मुहन्दिरम् उस तरुण को अपनी लडकी देने के लिये राजी नही हुआ।

नन्दा का विवाह न हो सकने का जितना शोक मातरस्वामिनी को था, उस से कही अधिक मुहन्दिरम् को। स्वयं दिनो-दिन दरिद्रता की ओर पग वढ़ाता हुआ वह भविष्य से वहुत भयभीत था, चिन्तित था। इस लिये किसी भी तरह हो नन्दा से मुक्ति-लाभ करना आवश्यक था। यदि उन की दरिद्रता का लोगों को ज्ञान हो गया, तो नन्दा के लिये योग्य वर मिलना और भी कठिन हो जायगा।

"पिछले छह महीने से तिस्स का माहवारी खर्च भी नही भेजा जा सका," अपनी अभाव-ग्रस्त अवस्था को याद कर मुहन्दिरम् ने

कहा। "स्कूल की फीस तो जैसे-तैसे भिजवा सका। क्लर्क महाशय ने वोर्डिङ्ग के खर्च की वात लिख कर चिट्ठी भेजी है। जैसे भी वने आजकल मे कोई नव्वे रुपये की व्यवस्था करनी होगी।"

"अरे! क्या उसे वोर्डिङ्ग छोड़ कर आना पड़ेगा?" मातर-स्वामिनी ने चिन्तित हो पूछा।

"नही, क्लर्क महाशय मेरे साथ ऐसा व्यवहार नही करेगे। तो भी जैसे भी वने आज या कल मे रुपया भिजवाना ही होगा। क्लर्क महाशय जानते है कि नन्दा की वीमारी पर वहुत खर्च हो गया है। तो भी हमारे लिये यह वडी लज्जा की ही वात है कि हम पैसा नही भिजवा सके। यदि पैसा नही पहुँचेगा, तो सम्भव है कि छुट्टियो के वाद वह तिस्स को अपने घर पर रखने को राजी न हो।"

"हाँ, वाहरी लोग ही है न! पैसा तो जैसे भी वने भिजवाना ही होगा।"

"निकट भविष्य मे ही इतना पैसा कही से मिलने की संभावना नही।" मुहन्दिरम् ने यह वात इस लिये कही ताकि उसे अपनी पत्नी द्वारा किया जानेवाला प्रस्ताव सुनने को मिल सके।

"अनुला की कोई सोने की चीज गिरवी रख कर कुछ पैसा प्राप्त करने के सिवा दूसरा उपाय नही।"

"अनुला, गुस्से नही होगी?"

"नही वह गुस्से नही होगी। तिस्स की पढाई के लिये हम सव से अधिक इच्छुक वही है।"

आकाश मे वादलों के साथ वूंदा-वाँदी के लक्षण दिखाई दिये। वरामदे मे छोटे पीढ़े पर वैठी मातरस्वामिनी उठ कर घर के भीतर चली गई। घर के भीतर घुसने के थोडी देर वाद ही उस ने देखा कि वडे कमरे के एक कोने मे वर्षा की वूँदों के टपकने से फर्श भीग रहा है। ऊपर देखने से उस ने जाना कि खपरैल का एक हिस्सा

टूट गया है, और वहीं से पानी चू रहा है। फर्श को भीगने से बचाने के लिये, वह एक खाली पड़ा पीतल का उगालदान उठा लाई और उसे जहाँ वर्षा की बूंदे टपक रही थी, ठीक उसी जगह सीधा करके रख दिया।

तिडकी हुई खपरैल मे से टपकनेवाली बूंदो से केवल एक यही जगह भीगने नही जा रही थी। पिछले पाँचो वर्षो से खपरैल नही बदली जा सकी है। यह 'बड़ा-घर' जो इस प्रकार चू रहा है, इस का एक कारण इस का पुराना मकान होना है—समय की मार खाया हुआ जरा-जीर्ण! अधिक पुराना घर न हो तो पाँच वर्ष तक यदि उस की कुछ भी मरम्मत न हो तो वह ऐसी जरा-जीर्ण अवस्था को प्राप्त नही होता। हालैण्डवालों के राज्य करने के समय बनवाये हुए इस घर के बारे मे ग्रामीणो की राय थी कि यदि दो वर्ष तक इस की लीपा-पोती न हो, तो इस की दीवारे गिरने लगें। घर की विशालता और मजबूती के हिसाब से उस की मरम्मत दो-तीन हजार से कम मे न हो सकती थी। अब से कोई पन्द्रह वर्ष पहले इतना ही खर्च करके घर की मरम्मत कराई गई थी। इस के बाद 'बडे-घर' के लोगो के लिये इतना अधिक खर्च करके घर की मरम्मत करा सकना सभव न हुआ। इस लिये जहाँ कहीं से सीमेंट उखड जाता, उतनी जगह पर सीमेंट लगवा और जहाँ कही चूना पुतवाना होता, उतनी ही जगह पर चूना पुतवा 'बडे-घर' के लोग अपने भवन को किसी न किसी प्रकार गिरने से बचाये हुए है।

—:०:—

परिच्छेद/५

नन्दा को निरोगी हुए दो साल बीत गये, तो भी मुहन्दिरम् अभी तक उस का विवाह नही कर सका। जेम्ज गाल्ल, मातर और वैलीगम के सात-आठ तरुणो की जन्म-पत्रियाँ लाया, तो भी नन्दा अभी तक क्वाँरी ही रही। नन्दा की जन्म-पत्री से मेल नही खाती, ज्योतिषियों के ऐसा कह देने के कारण जेम्ज की लाई हुई कई जन्म-पत्रियाँ बेकार हो गई। उस की जन्म-पत्री मे एक तरुण की जन्म-पत्री मेल खाती थी, लेकिन क्योंकि उस ने दहेज के तीन-हजार रुपये माँगे, इसलिये उस की जन्म-पत्री भी एक ओर रख देनी पडी। अपनी वश-परम्परा की हैसियत से कम हैसियतवाले किसी भी तरुण से शादी कर देने के लिये न मुहन्दिरम् ही राजी हुआ और न उस की पत्नी ही रजामन्द हुई।

"मै तो जहाँ-जहाँ खोज सकता था, हर जगह खोज चुका," जेम्ज बोला—"अब दो मे से एक चुनाव कर लेने का है। यदि इन दोनों प्रस्तावो मे से भी, एक भी प्रस्ताव स्वीकार नही, तो फिर मै उस के लिये अब और अधिक हैरान नही होऊँगा।"

यह ठीक है कि शादी कराने मे बिचौलिया बनना जेम्ज की जीविका का साधन था, लेकिन वह हर किसी के लिये यह काम न करता था। वह अच्छे खानदान से था। उस का दादा इतना सम्पत्तिशाली अवश्य था कि वह अर्जी-नवीस बन सके। जेम्ज के पिताने भी उस समय शादी की थी, जब उसे मिली जायदाद से वह हर महीने तीस-चालीस रुपये की आय कर सकता था। क्योंकि उस की आय का और दूसरा कोई साधन न था, और वह इतनी ही आय से अपने बीवी-बच्चो को पालता था, इस लिये धीरे-धीरे वह दरिद्र हो गया। इस प्रकार गरीब बने हुए परिवार मे जन्म लेने के कारण, बड़े होने पर भी जेम्ज का जीवन बडे कष्ट से ही कट रहा था।

जब उस का विवाह हो चुका और उसे दो सन्तानें भी हो चुकी, तभी जेम्ज ने यह शादी-विवाह में बीच-बिचौलिया बनने की जीविका अपनाई। अपनी तरुणाई के दिनों मे जेम्ज कोई खास काम न कर, रिश्तेदारों-मित्रो को खोज उन से गप्प लडाता रहता था अथवा गाँवों के ही खाते-पीते घरों मे जा, उन घरों के बड़े-बूढ़ो से बात-चीत करते रह कर अपना समय व्यर्थ गँवाता था। इसी लिये, इस-उस के बारे मे कुछ भी कहने-सुनने का अभ्यासी जेम्ज आर्थिक स्थिति खराब होने पर शादी-विवाह के मामले मे बीच-बिचौलियापन करने लगा। यही उस की जीविका थी।

सिर के पिछली तरफ गर्दन से कुछ ही ऊपर एक बड़े गुलगुले के आकार-प्रकार की बालों की जोड़ी, बालों के बीच कमान की तरह मुडा हुआ एक पुराना, पतला कघा—यह जेम्ज की विशेषता थी। वह अभी पूरे पचास वर्ष का नही हुआ था। पान खाने से काले हुए उस के दाँत और ऊपर तथा नीचे के दाँतों की दोनों पक्तियों मे दाँतों के मध्य श्वेत दुग्ध के समान सफेद लकीरे, जेम्ज के हँसने के समय हर किसी को दिखाई देती थी। अँगूठे और उस के पास की अँगुली से मरोड़ी हुई उस की नोकदार मूँछों के कारण उस की दोनों आँखे और चेहरा कुछ भय-भीत करनेवाला सा प्रतीत होता था। लेकिन मुहन्दिरम् जानता था कि जेम्ज कोई दुस्साहसी आदमी नही है।

सात-आठ महीने तक जेम्ज जो गाल्ल तथा मातर को एक किये रहा, वह उस के अपने खर्च से नही। वह मुहन्दिरम् से ही अपना मार्ग-व्यय प्राप्त करता रहा। मार्ग-व्यय के अतिरिक्त उसे और कुछ मुहन्दिरम् से नही प्राप्त हुआ। दूल्हा बनने की आशा रखनेवाले तरुणों से अथवा उन के माता-पिता से कभी-कभी जेम्ज को खासा 'मार्ग-व्यय' मिल जाता था। अपने परिश्रम का अन्तिम फल मिलने की आशा तो वह उसी दिन कर सकता था, जिस दिन वह एक

अदृष्ट-पूर्व तरुण और तरुणी को विवाह-मण्डप मे एक साथ वेदिका पर चढ़ाने मे सफल हो जाता।

'जेम्ज! तुम्हारे दोनों प्रस्ताव क्या थे?' मुहन्दिरम् न पूछा।

"गाल्ले का हैण्डी महानाम--वह रोज-रोज वढता हुआ तरुण है। जमीन-जायदाद है। निकट भविष्य मे ही कोई वड़ा व्यापार आरम्भ करने जा रहा है। पैसा कमाने मे तो शूर है ."

"जेम्ज! हम इस प्रस्ताव को कैसे स्वीकार कर सकते है? इन्ही लोगों का नाना मार्केट मे सब्जी का ठेला घसीटता फिरता था। अभी भी कुछ लोग हैण्डी का परिचय यही कह कर देते है कि पान वेचनेवाले का नाती। इस का वाप पाव-रोटी सेकने के तन्दूर का मालिक था और (चाय के) वगीचो मे काम करनेवाले मजदूरों के हाथ पाव-रोटी, मास-मछली वेच कर ही पैसा कमाता था। हमारी स्वामिनी की अम्मा का कहना है कि इस हैसियत के लोगों के हाथ से तो पहले पानी तक नही पिया जाता था।"

'हॉ' कह कर मातरस्वामिनी ने अपने स्वामी को सहारा दिया--"हैण्डिल के नाना का मूल-ग्राम हमारा गॉव ही था। वहॉ कोई जीविका का साधन न रहने से, वहॉ से भाग आकर गाल्ल मे वस गया। अपनी अम्मा से यह वात मैने वहुत पहले सुनी है।"

"अरे स्वामिनी! अव ये सव देखते-फिरने का समय नही रहा है। जो अव पैसा कमा कर धनी वन गये है, उन सव का 'मूल' खोजो तो ऐसा ही है। पहले जो परिवार अच्छी तरह खाते-पीते थे, अव लगभग सभी की हालत अच्छी नही है। उन सभी का यह ह्रास का काल है। यह सव खोजने न जाकर अव यह रिश्ता कर डालो। मुहन्दिरम् रालहामी का जामाता वनने की वात उसे तो सिर-माथे मंजूर है। रालहामी राजी हो जाये, तो वह ऐसा आदमी है कि विवाह का सारा खर्च भी अपने सिर ओढ कर लडकी के साथ शादी करेगा। वह कहता है कि उसे कोई सोने का गहना भी नही चाहिये।"

जेम्ज ने यह बात इसलिये कही थी कि आर्थिक कष्ट के समय मुहन्दिरम् के चित्त से कुलाभिमान की बात दूर हो जाय। जेम्ज का इस प्रकार बोलना और उस तरुण का ऐसी आशा रखना, मुहन्दिरम् को लगा कि उस के परिवार का किया गया बड़े से बड़ा उपहास है। इस लिये जैसे कभी-कभी बड़ों की लाड़-प्यार की बातों से बच्चे और भी सिर चढ़ जाते है, उसी प्रकार मुहन्दिरम् का कुलाभिमान और भी उस के सिर पर सवार हो गया।

"जेम्ज ! इस बारे में और मुँह खोलने की जरूरत नहीं। इस प्रस्ताव को हम अपनी विचार-कोटि मे से ही निकाल बाहर करे।"

"अच्छा तो दूसरे प्रस्ताव पर विचार करे," कहते हुए जेम्ज ने बड़े कमरे मे झाँक कर देखा--"अरे अच्छा है। छोटी स्वामिनी भी सब सुन रही है।"

"जेम्ज झूठ बोल रहा है," नन्दा ने हँसते-हँसते कहा--"मै अभी बड़े कमरे मे आई भर हूँ। मुझे सुनाई पड़ा है कि अम्मा ने जेमिस के लिये कॉफी का एक प्याला तैयार कर देने के लिये कहा है। इस के झूठ बोलने के कारण मै कहती हूँ कि इसे कॉफी न पिलाई जाय।"

इस प्रकार बोलती हुई नन्दा बड़े कमरे से चली गई।

"मैने मजाक़ किया था,"—जल्दी से कॉफी पीने की इच्छा से जेम्ज बोला।

पचास वर्ष की आयु मे ही जेम्ज कॉफी ऐसे पीता है, जैसे कुछ लोग अफीम खाते है। बिना कॉफी के पानी से जबान भिगोये घण्टे भर तक बात-चीत करते रहना जेम्ज के लिये कठिन कार्य है। एक पहर भर तक बात-चीत करते रहने के लिये उसे कम से कम कॉफी के चार प्याले तो मिलने ही चाहिये।

"जेम्ज ! तो दूसरा प्रस्ताव क्या है?" मुहन्दिरम् ने पूछा।

"पियदिगम बड़े अप्पु आरच्ची महाशय का लड़का—जिनदास लमाहेवा महाशय.."

"मैंने भी इस प्रस्ताव पर बहुत विचार किया है। आदमी भले है। उन के रिश्तेदार भी भले हैं। लेकिन इस सब से क्या? पिता के मरने पर उन की सम्पत्ति नष्ट हो गई है न? अब वे लोग बडी ही कठिनाई से दिन बिता रहे हैं न? दी हुई लड़की भी घर पर आई हुई बैठी है।"

"कुछ सम्पत्ति नष्ट हो गई, तो भी अभी उन लोगों के पास कितना कुछ है। अभी भी अपने खेत का ही धान खाते है। विदेशी चावल का दाना भी घर मे घुसने नही देते।"

"जेम्ज! थोडा धान मिल गया, तो कौन बडी बात है। भात पकाने के लिये और बहुत सी चीजे चाहिये। उन्ही में अधिक खर्च होता है न?"

"और स्वामी! जमीन से जो उन की आय है?"

"अरे जेम्ज जमीन क्या! मै जानता हूँ, जितनी आय उन्हे जमीन से होती है। यह सारी आय बडी मुश्किल से खाने-पीने भर को पुराती है। शादी करने पर आदमी को और बहुत से खर्च करने पडते है।"

"जिनदास महाशय अब रोजगार आरम्भ करनेवाला है। शादी होने तक ही उस ने इसे स्थगित कर रखा है।"

जेम्ज ने प्याली मे बची कॉफी की थोडी-सी माण्ड भी पी डाली और प्याली को एक ओर रख अपने दोनों हाथ की अंगुलियों को फैला कर अपनी मूंछों को ऊपर की ओर मरोडा।

"रोजगार करने जा रहा है?" यह शब्द मुहन्दिरम ने पहले की अपेक्षा बड़ी सावधानी से कहे। जिनदास के विरुद्ध यह एक दोषारोपण किया जा सकता था कि वह स्वयं कुछ न कर माता-

पिता से जो कुछ प्राप्त हुआ है, उसी से जैसे-तैसे अपना गुजारा चला रहा है। जेम्ज जानता था कि यदि जिनदास के रोजगार करने की वात कही जाय, तो खानदानी जिनदास से नन्दा की शादी करने के लिये मुहन्दिरम और मातरस्वामिनी दोनों तैयार हो जायेंगे। इसीलिये उसने यह बात कही कि शादी करते ही जिनदास रोजगार करने की तैयारी में है। जिनदास ने उसे रोजगार के वारे मे कुछ कहा हो—ऐसी वात नही थी।

"यदि रोजगार करे तो फिर ऐसी कोई वजह नही है कि हम जिनदास के लिये राजी न हो। एक मात्र दोप है रोजगार का न करना। एक दूसरा दोप हे कि उस की विवाहित वडी वहन घर पर आकर बैठी हुई है। पति का देहान्त हो चुकने के वाद से उसे मैके मे रहते चार वर्ष हो गये।"—मातरस्वामिनी ने अपना मत व्यक्त किया।

"जिनदास महाशय की शादी होते ही वह देवी भी अपने घर स्थायी रूप से रहने के लिये चली जायगी।"

"क्या उस ने कहा है कि वह चली जायगी?"

"स्वामिनी! यह उस से मै करा दूंगा।"

कॉफी के दो कप खाली कर चुका, तव ही जेम्ज उस वडे घर से वाहर निकला। वड़े-घर के आँगन और चारों ओर के वगीचे मे दो-तीन महीने पहले न दिखाई देनेवाला 'खुलापन' दिखाई देने से जेम्ज ने इधर-उधर देखा। वडे-घर के बगीचे के वाई ओर वडे-घर के प्रवेश-मार्ग के दोनों ओर जो घना जगल-सा था, वह उसे अव नही दिखाई दिया। झाडियों और कई तरह के वृक्षों पर बैठ कर चहचहानेवाल पक्षियों की चहचहाट उसे नही सुनाई दी। काट कर और जला कर जिन वृक्षों को राख कर दिया गया था, उन की जडे उसे कोयलों के ढेर जैसी लगी। जगह जगह खोदे गये गढों मे से उभरे हुए कोंपलोंवाले नारियल के छोटे पेड़ देखने पर जेम्ज को

ख्याल आया कि जमीन का इतना टुकड़ा थोड़े ही समय पूर्व किसी से प्राप्त हुआ होगा। फेंके गये सूखे पत्तों और घासवाली जो जमीन वडे-घर के वगीचे पर हावी हो गई थी, उस पर सूर्य की रश्मियाँ पड़ रही थी। जेम्ज को कुतूहलवश चारों ओर देखने पर वह जमीन ऐसी लगी जैसी चौकोर धारियोंवाली चटाई हो। नारियल के पेडों की छाया में अच्छी तरह उगी हुई घास से ढकी हुई जमीनवाले इस वगीचे मे कभी कोई पशु चरता नही दिखाई देता। इस का कारण है चारो ओर उठी हुई पत्थर की दीवार। वगीचे मे एक ओर जहाँ नारियल के पेडों की छाया नही थी, पत्थर की चार-दीवारी के पास ही आम का एक विशाल वृक्ष था। उसके पत्ते इतने घने थे कि कैसी ही वर्षा हो उस के नीचे वैठा हुआ आदमी भीग नही सकता था। एक समय इस पेड पर पत्तो से अधिक फल लगते थे। लेकिन अव उस पर फल आने वन्द हो गये थे। जेम्ज इसे 'वडे-घर' के ह्रासकाल का लक्षण मानता था। दक्षिण की ओर की चारदीवारी के पास के दोनो केट्ट वृक्ष, विना पत्तो के वृक्ष-विशेप से लगते थे। जेम्ज जानता था कि इस का यही कारण है कि ग्रामीण स्त्रियाँ चटनी वनाने के लिये उस के पत्तो को मुट्ठी भर-भर कर नोच ले जाती है। पत्थर की चारदीवारी और घर के वीच जो 'लोवी' वृक्ष उगा है, वह सूर्य की रश्मियो से चमकनेवाले फलों से लदा है। वे फल ऐसे प्रतीत होते है, मानो लाल रग की कॉच की गोलियाँ हो।

पत्थर की चारदीवारी के द्वार के पास कटहल के पेड के नीचे उगी घास पर वैठ, आगन के जामुन के पेड पर लगे फलों को खाने-वाले पक्षियों को भगानेवाले सादा को जेम्ज ने कहा—"गड़े हुए खजाने पर वैठे साँप की तरह तेरा काम है पत्थर की चारदीवारी के पास वैठे वैठे 'वड़े-घर' के 'महल' की रक्षा करना।" कभी भी पान न खानेवाला सादा, नारियल की गरी के समान अपने श्वेत दाँतों को प्रकट करता हुआ, केवल हँस दिया; लेकिन वोला कुछ

नही। यद्यपि वह अडतालीस वर्ष का हो चुका था, तो भी उसे के सिर पर काले केशों की लटे थी, दाढ़ी नही थी और दो बालों सहित तिलवाला स्त्रियों का सा चेहरा था। अपनी शक्ल-सूरत से सादा पैंतीस वर्ष से अधिक का नही जँचता था।

"सादा ! इस अहाते से जो लगा हुआ अहाता है, उस मे इतना प्रकाश कहाँ से आ गया ?" जेम्ज़ ने पूछा।

"स्कूल-मास्टर की अम्मा ने जंगल कटवा नारियल नही लगवाये है ?"

"ओह ! तो स्कूल-मास्टर की अम्मा ने ही यह जमीन खरीदी है। इस जमीन का एक हिस्सा मुहन्दिरम् रालहामी का भी था न ?"

"दूसरे आदमियो के हिस्से बिकने के साथ-साथ यह हिस्सा भी बिक गया।"

"थोड़ा ही समय हुआ न ?"

"हाँ।"

"अरे ! स्कूल-मास्टर की माँ के पास इतना पैसा कहाँ से आ गया ?"

"कहते है कि स्कूल-मास्टर ने ही पैसा भेजा है ?"

"कोलम्बो पहुँचने से भी पहले स्कूल-मास्टर पैसा कैसे कमाने लग गया ?"

"स्कूल-मास्टर को गाँव से गये, अब लगभग एक साल हो गया !"

"तो वह भी अपने बाप की तरह ही पैसा कमाने मे हुश्यार है," कहता हुआ जेम्ज वहाँ से चला गया। लेकिन जाते-जाते उसने अपने मन मे कहा—'ऋणी कही का ?' 'ऋणी कही का,' उस ने

सादा को लेकर ही कहा। सादा के वारे मे जेम्ज की धारणा थी कि एक कुत्ते की वफादारी से वह पिछले तीस वर्ष से 'वडे-घर' की सेवा मे रत है। उस ने पूर्व जन्म मे मुहन्दिरम् से अथवा उस की भार्य्या से ऋण अवश्य लिया होगा और उसे चुकता नही किया होगा। पियल भी पैसा कमाने मे शूर है, यह विचार जेम्ज के मन मे इस लिये आया, क्योंकि उस ने सोचा कि पियल के साथ शादी करने की वात भी विचाराधीन लाई जा सकती है।

लगभग दो महीने के वाद जेम्ज का फिर 'वड़े-घर' पर आगमन हुआ। इस वार उस के साथ दो वडे-वूढे और एक तरुण था। यह तरुण लमाहेवा जिनदास के अतिरिक्त और कोई दूसरा न था। वह आया था दुलहिन अथवा नन्दा को देखने के लिये। जव आगन्तुको का मुहन्दिरम् और उस की पत्नी की ओर से पान, सिग्रेट और चाय से सत्कार हो चुका, तो अच्छे-से-अच्छे कपडे-गहने धारण किये नन्दा के साथ मातरस्वामीनि वडे कमरे के एक सुदूर कोने मे जा वैठी।

शरीर का ऊपरी भाग छोटे छोट फूलोंवाले रेशमी वस्त्र से और निचला भाग लहरदार श्वेत वस्त्र से ढके नन्दा अपनी माँ के पास कुर्सी पर वैठी थी। उस के गले मे सुनहरी माला थी, दोनों हाथों मे स्वर्ण-तारो को तेहरा कर वटी हुई चूड़ियाँ थी, दो कानों में दो मोती थे। दो तारो की तरह चमकनेवाले दोनों मोतियों के कारण उस की दोनो आँखो मे भी अद्भुत दीप्ति थी। पतले-पतले होंठों से ढका हुआ मुँह भी वडा मारक रूप धारण किये था।

अव से सात आठ वर्ष पहले ग्रामीण लोग इस से कुछ भिन्न तरह से ही दुलहिन को दिखाते थे। दूसरे मेहमानो के साथ आये हुए 'दूल्हे' के सामने रखी हुई तिपाई पर, 'दुल्हन' पान-सुपारी रखती और पलट कर चली जाती। सात-आठ वर्ष से यह प्रथा लुप्त हो गई है और इस की जगह नई पद्धति ने ले ली है।

नन्दा ने अधिकतया बैठे हुए जिनदास के वस्त्रों की ओर ही देखा। यह निर्णय करना कठिन है कि वह उस के चेहरे को अधिक ध्यान से देखना चाहती थी अथवा उस के वस्त्रों को। परिवार के सभी लोग जानते थे कि उस की आँखे तरुण-तरुणियो के पहनावे मे मीन-मेख निकालना खूब जानती है। शरीर का निचला हिस्सा 'ट्विड' वस्त्र से ढका हुआ और ऊपरी भाग मे भी एक कमीज और 'ट्विड' का ही कोट सटा हुआ था। जिनदास आयु के हिसाब से कोई पैंतीस वर्ष का था।

मेहमानों के विदा होते ही नन्दा ने अनुला से जिनदास के पहनावे पर मुस्कराते हुए टिप्पणी की—

"कमीज के कालर का एक सिरा बाहर निकला हुआ था!"

"अम्मा! नन्दा को 'दुल्हे' के पहनावे की कमी-बेशी भर दिखाई दी है," अनुला ने माँ को सम्बोधित कर कहा।

"इसे हमेशा लोगों के पहनावे मे ही मीन-मेख निकालनी आती है न," कहते हुए अम्मा भी मुस्करा उठी।

"कोट का पिछला हिस्सा एक दम कुचर-मुचर था," नन्दा ने माँ को भी सुना कर कहा।

"और कुछ?"

"जूते पाँवों से बड़े थे," नन्दा ने मुस्कराहट को दबाते हुए कहा।

"कितनी अच्छी तरह देखा-भाला है!"

"चेहरे के टेढ़े होने की बात नही कह रही है, चेहरा शायद ठीक लगा होगा," बडी बहन अनुला ने नन्दा पर फब्ती कसी।

"तो अनुला ने चेहरा देखा होगा!"

नन्दा जानती थी कि अनुला का कहना ठीक है। ज्यों ही नन्दा ने जिनदास के चेहरे की ओर देखा था, उसे यह भास गया था कि

परिच्छेद/६

गांव छोड़कर जाने के बाद पियल छह महीने मे केवल एक ही बार घर आया। नन्दा को पियल ने कुछ खिला-पिला दिया है, इस दोषारोपण को उस ने सुना, तो उसे आक्रोशपूर्ण हँसी आई और उसने लज्जा का अनुभव किया। यह दोषारोपण सर्वथा मिथ्या है, पियल ने एक ग्रामीण से अत्यन्त कटुवचनो का व्यवहार करके कहा। दूरदर्शी बुद्धिमान माता ने पियल को आज्ञा दी कि वह इस बारे मे किसी को कुछ भी न कहे। उस का विचार था कि लगभग दो साल तक वह पियल को घर पर न आने दे। वह सोचती थी कि पियल के बार-बार घर आने-जाने से मुहन्दिरम् और भी अधिक कुपित हो जा सकता है।

पियल की माँ जानती थी कि यदि मुहन्दिरम् कयिसारुवत्त को किसी से कुछ हानि पहुँच जाये, तो वह उस से कठोरतापूर्वक उस का बदला लेकर ही रहता है। ग्रामीण लोग भी इसे मुहन्दिरम् के स्वभाव का एक बडा अवगुण मानते थे। मातरस्वामिनी से प्रेम करनेवाले बहुत से ग्रामीण, जो मुहन्दिरम् से भयभीत रहते थे, वह मुहन्दिरम् के स्वभाव की इसी भयानक दुर्बलता के कारण।

यदि कोई मुहन्दिरम् के साथ शत्रुता का व्यवहार करता, तो मुहन्दिरम् बहुत सोच-विचार कर, उसे किसी मामले मे फँसा कर ही उस से बदला लेता था। सात-आठ साल तक दबा कर रखने के बावजूद बदला लेने की भावना उस के चित्त से दूर नही होती थी। उसे यदि किसी ने हानि पहुँचाई हो, तो अवसर मिलने पर सात-आठ वर्ष बीत जाने पर भी वह उस से बदला लेता ही था। जानवर को अपने जाल मे फँसा सकने पर जैसे शिकारी को सतोष होता है, उसी प्रकार अपने शत्रु को किसी मामले मे फँसा सकने पर मुहन्दिरम् को प्रसन्नता होती थी। उस का जाल बहुत करके अपने

शत्रु को किसी झूठे मुकद्दमे मे फँसा लेना ही होता था। क्योंकि पुलिस कर्मचारी उसके कहने से बाहर नही था, इसीलिये वह यह सब कर सकता था। जिस किसी ने उसे असाधारण हानि पहुँचाई हो, ऐसे व्यक्ति को छोड और किसी से भी मुहन्दिरम् बदला नही लेता था।

अब से लगभग दस वर्ष पहले की बात है। एक दिन घर से बाहर निकल, वापिस घर लौटते समय मातरस्वामिनी और उस की बेटी को शराब के नशे मे चूर नोनिस मिला। वह नन्दा के शरीर से छू-सा गया और उस ने साथ ही मजाक भी किया। मातर-स्वामिनी ने उसे डाँटा, तो वह भी बकने-झकने लगा। मुहन्दिरम् मातर गया हुआ था। दूसरे दिन शाम को जब वह वापिस 'बड़े-घर' लौटा तो उसे पता लगा कि नोनिस ने उस की भार्या और बेटी को छेडा था। नशा उतरने पर नोनिस क्षमा माँगने के लिये 'बडे-घर' आया, लेकिन मुहन्दिरम् ने उसे बाहर निकलवा दिया। दो साल के बाद, नशे के चक्कर मे नोनिस से जो कुछ हो गया था, मानो उसी की सजा भुगतने के लिये, वह साल भर के लिये जेल गया। गाँव के सभी लोग इस बात को जानते थे कि यह मुहन्दिरम् द्वारा बिछाये गये जाल मे फँसने का परिणाम है।

मुहन्दिरम् के स्वभाव की इस खराब आदत से परिचित पियल की माँ चाहती थी कि पियल गाँव मे न आये जाये। वह गाँव आया भी, तो एक दिन से अधिक गाँव मे नही रहा। माँ जैसे-तैसे उसे घर से विदा कर देती।

'पियल ने नन्दा को कुछ खिला-पिला दिया है,' मुहन्दिरम् ने कभी अपने मुँह से उस पर यह दोषारोपण नही किया था। इस से पियल की माता की समझ थी कि मुहन्दिरम् का शक घटने की बजाय बढ़ रहा है। गाँव के लोग समझ रहे थे कि नोनिस ने मुहन्दिरम् की भार्या और उस की बेटी के साथ जो दुर्व्यवहार किया,

उसे मुहन्दिरम् भूल गया। लेकिन जब एक झूठे मुकद्दमे मे फँस कर नोनिस जेल-खाने पहुँच गया तो गाँव के लोगों ने समझा कि बिल मे घुसे साँप की तरह मुहन्दिरम् अपने मन मे बदला लेने का भाव छिपाये हुए था।

पियल को गाँव छोड़े दो वर्ष पाँच महीने बीत गये। इस बीच वह केवल तीन बार ही गाँव आया-गया। पहली बार आया था, तो गाँव मे केवल एक दिन रुका था। तीसरी बार आया तो तीन दिन रुक सका था। नन्दा एक दम अच्छी हो गई, तो 'पियल ने उसे कुछ खिला पिला दिया है,' यह आलोचना भी बहुत कम हो गई। इसी लिये पियल की माँ ने पियल के तीसरी बार गाँव आने पर, उसे तीन दिन तक गाँव मे रहने दिया।

पियल को जब जब टोने-टटके की बात सुनने को मिलती, तो वह हमेशा यही कहता कि यह वज्र-मूर्खों की बातचीत है। मन्तर-जन्तर मूर्खों के मिथ्या-विश्वास के अतिरिक्त और कुछ नही, यही कह कर पियल ग्रामीणों के साथ तर्क करता। कभी कभी, वह ओझा लोगों को 'सिंहल तक से अज्ञ मूर्ख-समूह' कहकर याद करता। उस की इस प्रकार की बाते सुननेवाले ग्रामीणो मे से कोई-कोई कहते—"स्कूल-मास्टर ने कुछ टोना-टटका अवश्य किया है!" उन की यह धारणा अधिक बलवती हो गई। मन्तर-जन्तर के खिलाफ पियल द्वारा किये जानेवाले तर्कों ने ग्रामीणों को और भी अधिक विश्वस्त कर दिया।

पियल कोलम्बो पहुँचा, तो उसे वहाँ एक बड़े होटल की 'मधु-शाला' मे क्लर्क का काम मिल गया। जिस पाठशाला मे वह पढा था, उसी का एक अध्यापक उसे यह नौकरी दिलाने मे सहायक सिद्ध हुआ था। क्लर्की करते समय होटल के लिये अण्डे और फल आदि सप्लाई करने का काम भी पियल के हाथ लग गया। यह चीजें सप्लाई करने से उसे अपनी तनख्वाह की अपेक्षा तिगुनी-चौगुनी

अधिक आमदनी होने लगी। सीधे वेलिअत्त, तिहुव प्रदेश से साग-सब्जी-फल और मीगमुव, लुनाव आदि जगहों से अण्डे मँगवा कर सप्लाई करने से उस की आमदनी और भी कई गुणा अधिक बढ़ गई।

होटल की मधुशाला मे क्लर्की करते समय पियल का परिचय सात-आठ अग्रेजों से हो गया। उसे अग्रेजी बोलने का अच्छा अभ्यास था और स्वभाव से था विनम्र। इसलिये वह इन सात-आठ अग्रेजो का अत्यन्त 'प्रिय पात्र' बन गया। पियल दो अग्रेजो के साथ वैली-गम गया। वहाँ से उस ने दो कमाइयों को साथ लिया और सब मिल कर समुद्र मे मछली पकडने निकले। तब से वे दोनों अग्रेज पियल को अपना हितचिंतक-मित्र समझने लगे। उन दोनों की मदद से पियल को बैरकों तथा एक दूसरे बडे होटल को भी खाने-पीने की चीजे सप्लाई करने का ठेका मिल गया। यह ठेका मिलने पर पियल ने क्लर्की से त्यागपत्र दे दिया।

दो साल बीतते-बीतते पियल पन्द्रह हजार की पूँजीवाला ठेकेदार हो गया। कोलम्बो किले के बाहरी प्रदेश मे एक बडा घर उस का दफ्तर था, जिस का एक हिस्सा खाने-पीने की चीजो से भरा था। एक दिन जो स्वय क्लर्क था, वह अब दो-तीन दूसरे क्लर्कों और कई कुलियों का स्वामी बन गया था। रुपया कमाने मे शूर पियल एक बार ही तीन-तीन, चार-चार हजार रुपये का चावल-आटा खरीद कर अपना गोदाम भरने लगा। इस प्रकार चावल और आटा खरीद कर रख लेने से, उसे कभी कभी बहुत-सा मुनाफा होने लगा।

कुछ ही समय से क्रमश: सम्पत्तिशाली होनेवाले पियल के घर में ऐसे शानदार पलग, कुर्सी और मेज दिखाई देने लगे थे, जैसे 'बडे-घर' मे भी न दिखाई देते थे। नई-नई प्लेटे-प्याले और फूलदान 'पियल' की माँ बडे सन्दूक मे बन्द रखती, लेकिन कोई मेहमान आ

जाता तो कुछ चीजे बाहर भी आ ही जाती। चूना और रंग पुता रहने से और हमेशा मरम्मत होती रहने से वह घर छोटा होने पर भी अपने 'नयेपन' के कारण चमकनेवाले दो-तीन घरो मे से एक था। अभी चार ही महीने पहले उस के घर के चारो ओर एक सफेद चहारदीवारी उठ खडी हुई थी। चहारदीवारी के बीच दोनों खम्भों पर लगे हुए लोहे के कब्जों पर टँगे हुए झरोखेदार दरवाजों मे से एक पर जो 'श्री-निवास' नाम की पीतल की पट्टी लगी थी, वह सूर्य-रश्मियों के प्रकाश मे ऐसे चमकती थी, जैसे कोई सोने की पट्टी हो।

जब जब पियल गाँव आता, हर बार गरीब ग्रामीण पुरुष और स्त्री उस के घर आते-जाते। उस के घर से पचास या पच्चीस प्राय सब आने-जानेवाले गरीबों को मिलते थे। नही मिलते थे, तो केवल ऐसे ही लोगों को जो गरीब नही होते थे। वहाँ आने जानेवाले ग्रामीणों को पियल द्वारा लाई गई मिठाइयों मे से भी थोडा-थोडा हिस्सा मिलता। पियल की माँ, पियल के घर आने पर हर बार कुछ मिठाई और कपड़ा अफसर के यहाँ भिजवाती। ऐसी बात नही थी कि अफसर इस बात को न समझता हो कि उसे जो यह भेंटे मिलती है, वह इसीलिये कि पियल की मा को भय है कि मुहदिरम किसी भी दिन 'पियल' को किसी मामले मे फँसा सकता है। यदि मुहदिरम् 'पियल' को किसी मामले मे फॅसाना चाहे तो अब 'पियल' इतनी उन्नति कर गया है कि उसे बड़े अफसरों की मदद मिल सकती है, इस बात को न जानने-समझनेवाली पियल की माँ न केवल अफसर को भेंट पहुँचाती रहती, बल्कि भातरस्वामिनी के प्रति भी पहले की अपेक्षा विशेष गौरव का भाव प्रदर्शित करती थी।

चौथी बार पियल उस समय गाँव आया था, जब जिनदास लमाहेवा नन्दा को देखने आकर तीन महीने बीत चुके थे। जैसे उसे उडती खबर मिली हो, इस ढँग से, पियल के आगमन की सूचना

पाकर, सोमवार के दिन, सुबह होते होते ही जेम्ज 'श्री-निवास' पहुँचा।

'स्कूल-मास्टर' को देखने की इच्छा से चला आया, कहते हुए जेम्ज बरामदे मे पड़ी हुई आराम-कुर्सी पर बैठने के साथ ही फैल गया। 'बड़े-घर' पर कभी 'आराम-कुर्सी' मे न बैठनेवाला जेम्ज जब कभी पियल के यहाँ आता, तो सब से अच्छी आराम-कुर्सी पर ही बैठता। जेम्ज की धारणा थी कि धनी होने की बात के अति-रिक्त वश-परम्परा आदि के विचार से जेम्ज 'पियल' और उस की माँ की अपेक्षा ऊँचा स्थान रखता है। पियल के पितामह को तो साग-सब्जी की बँहगी कंधे पर ढोते स्वय जेम्ज ने देखा था। इसीलिये जेम्ज समझता था कि पियल का दादा भी जेम्ज की अपेक्षा कम दर्जे के खानदान का था।

काँच की तश्तरी मे चुरुट का एक बण्डल रख, जिस आराम-कुर्सी पर जेम्ज बैठा था 'पियल' ने उसे उसके पास की एक तिपाई पर रख दिया। उस ने वह बण्डल खोल 'चुरुटों' को घुमा फिरा कर देखा।

"अब याद नही कि कोलम्बो की चुरुट इस से पहले कब पी थी?" कहते हुए जेम्ज ने चुरुट सुलगाने की कोशिश की। जब चार दिया-सलाई खर्च करके भी वह चुरुट न सुलगा सका, तो बोला—

"चुरुट कुछ नमदार है।"

पियल ने अपने हाथ से दियासलाई घिसी और जेम्ज की चुरुट सुलगा दी।

मुँह का धुआँ बाहर छोडकर जेम्ज बोला—"स्कूल-मास्टर का इस बार एक वर्ष के बाद ही गाँव आना हुआ है।"

"नही, आठ महीने पहले भी एक बार आया था।"

"हमे जानकारी नहीं मिली।"

"आने के अगले दिन ही कोलम्बो वापिस चला गया।"

"तो इसी वजह से हमे खबर नही लगी! क्या अव कुछ दिन गाँव पर ही बने रहने का समय नही है?"

"अब तो तीन-चार दिन भी गाँव में नही रहा जा सकता।"

"क्यों?"

"काम की वजह से।"

"काम? किसी और को देख-भाल करते रहने के लिये नहीं कहा जा सकता क्या?"

"अभी कोई इस योग्य आदमी नहीं मिला है।"

"क्या यह बात सत्य है कि स्कूल-मास्टर इन दिनों ठेके लेते है?"

"हाँ।"

"हमे सुनने को मिलता है कि वड़ी मौज़ है।"

"हाँ कुछ घाटा नहीं है," कहते हुए पियल, जो अभी तक खड़ा ही था, एक कुर्सी लेकर बैठ गया।

"अब ठीक यही समय है, जब 'स्कूल-मास्टर को गाँव में बना रहना चाहिये।"

"क्यों?"

"क्यों पूछते हो? क्या लगन करने का ठीक यही समय नहीं है? इस समय आयु कितनी है?"

"अट्ठाइस-वर्ष!" कहते हुए पियल जरा मुस्कराया। 'जेम्ज इसी विषय मे कुछ बातचीत करने के लिये आया है,' भले ही यह बात पियल की समझ मे न आई हो, लेकिन उस की माँ ताड गई।

मुस्कराहट से पियल के चेहरे पर नवीन सौन्दर्य छा गया था। उस की ओर देखा तो जेम्ज सोचने लगा कि छोटी मालकिन के अतिरिक्त और कोई भी तरुणी हो, पियल को पसन्द करेगी ही।

मुँह से निकला हुआ धुआँ बादल की तरह ऊपर आकाश की ओर चढा चला जा रहा था। जेम्ज बोला—"मैं स्कूल-मास्टर के सामने अव्वल दर्जे का प्रस्ताव रखने जा रहा हूँ।"

पियल ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—"विवाह करने का विचार नही है।"

"तो क्या प्रव्रजित होने का विचार है?"

'नन्दा का पाणि-ग्रहण न हो सकने के कारण ही, इसने अविवाहित रहने की कल्पना कर ली होगी,' जेम्ज ने सोचा।

"मातरस्वामिनी की लडकी के साथ बात नही बनी, क्या इसी लिये यह विचार किया है?" स्कूल-मास्टर के उत्तर देने से भी पहले जेम्ज ने दुबारा प्रश्न कर दिया।

"नही, नही, ऐसी बात नही है।"

"मैं स्कूलमास्टर के सामने इस से भी बढ कर प्रस्ताव रखने जा रहा हूँ। मातरस्वामिनी की लड़की का ही विचार था, तो मुझे पहले क्यों नही कहा? मै जैसे भी बनता इस विचार को भी इष्ट करवाने की कोशिश करता। मुझे कहा क्यो नहीं?"

पियल ने उत्तर नही दिया। वह मन ही मन सोचने लगा कि क्या जेम्ज द्वारा पुन. नन्दा के लिये प्रस्ताव उपस्थित कराया जा सकता है। जेम्ज की बात कान मे पडते ही पियल की माँ बरामदे मे चली आई।

"जेम्ज भाई! पियल ने यह प्रस्ताव मुझ से पूछ कर भी नही किया था। स्वय ही कत्तिरिना को कह दिया था। ऐसा प्रस्ताव किसी योग्य व्यक्ति के द्वारा कराया जाता है न?"

"और क्या नहीं ?" जेम्ज की आँखे गर्व के भार से अवनत थीं।

हो सकता है कि नन्दा के सम्बन्ध मे पियल के मन मे जो राग उद्दीप्त हो उठा था, उसी को शान्त करने के प्रयास मे संलग्न रहने के कारण वह मौन रहा हो।

"मातरस्वामिनी की बेटी पियदिगम लोलु अप्पु आरच्ची महाशय के बेटे को देने की बात स्थिर हो चुकी है, क्या यह सत्य है ?" पियल की माँ ने जेम्ज से प्रश्न किया।

"हाँ, आगामी महीने दसवी तारीख को 'लगन' निश्चित हो चुका है।"

उस का कथन पियल की हार्दिक मर्म-वेदना का कारण होगा, यह बात स्वप्न मे भी जेम्ज के ध्यान मे नही आई थी। अब से दो वर्ष पहले कत्तिरिना के कथन से पियल के हृदय को जो आघात पहुँचा था, उसे 'समय' के मलहम ने ही जैसे-तैसे अच्छा किया था। अपने तारुण्य के दिनों मे उसे इतना अनुभव नही था कि नन्दा को लेकर उस के मन मे जो तीव्र राग पैदा हुआ था, उसे वह आसानी से दबा सकता। दो-तीन दिन तक उस का 'भोजन' बिना दूध की चाय, अथवा दूधवाली चाय भर था। हृदय की आग ने उस के मस्तिष्क को सर्वथा शुष्क बना दिया था। जब वह आग क्रमश. शान्त हो गई और उस का मस्तिष्क भी ठण्डा हो गया, तभी उस ने दुबारा अपना अभ्यस्त आहार ग्रहण करना आरम्भ किया। उसे पूरी शान्ति तो मिली कोलम्बो पहुँचने के तीन-चार महीने बाद। उस दिन से आज तक नन्दा को लेकर उस का चित्त कभी चञ्चल नही हुआ था। नन्दा की याद आने से उस के हृदय को जो हलका आघात पहुँचता, वह शनै-शनै. दुर्बल हो गया।

ज्योंही पियल ने सुना कि नन्दा का विवाह किसी दूसरे से होने जा रहा है, तो समयरूपी शीतल जल से शान्त हुई उस की रागाग्नि

पुनः प्रज्वलित हो उठी। इस वार उस के हृदय मे जो रागाग्नि प्रज्वलित हुई, उस मे ईर्षा और शङ्कारूपी ईंधन पडने से, उस की साँस की गति तीव्र हो गई।

"जिनदास मेरी अपेक्षा अधिक योग्य कैसे हो सकता है?" पियल के मन मे उठे, इस प्रश्न के मूल में उस के हृदय की ईर्षा थी। जहाँ तक पढाई-लिखाई की वात थी जिनदास की पियल के साथ कोई तुलना ही नही थी। कपड़े-लत्ते पहनने के मामले मे जिनदास अभी गँवार ही था। ज़मीन से उसे जो थोड़ी सी आमदनी हो जाती थी, उसी से वह जैसे-तैसे अपना गुजारा करता था। 'खानदान' को पियल कुछ महत्व ही न देता था। इसीलिये पियल के ध्यान मे भी यह वात नही आई कि जिनदास 'पियल' की अपेक्षा ऊँचे खानदान का है।

जिनदास का पिता 'विदान-आरच्ची' पदवी-धारी था। 'विदान-आरच्ची' का पिता विवाहों का रजिस्ट्रार था। विवाह-रजिस्ट्रार का पिता 'मोतारिस' था। इस तरह जिनदास के 'खानदान' की थाह लेने पर गत सौ वर्षो मे एक भी आदमी ऐसा नही दिखाई देता था, जिस ने कोई हलका पेशा किया हो। इतना होने पर भी पियल के लिये यह समझना दुष्कर था कि मातरस्वामिनी और सभी वातों की उपेक्षा करके 'खानदान' को ही इतना महत्व क्यों देती है? यह वात पियल के ध्यान मे नही आई कि मातरस्वामिनी उसे लेकर जो रजामन्द नही हुई, उस की कोई दूसरी वजह न हो कर एक ही वजह थी कि कुछ समय पूर्व पियल का दादा साग-सब्जी की वैहँगी कधे पर ढो कर, साग-सब्जी वेच कर अपनी जीविका चलाता था। अपने दादा के वारे मे उसे वचपन मे एक या दो वार से अधिक यह वात सुनने को नही मिली थी। उस का जन्म दादा की मृत्यु के वाद हुआ था। इसलिये 'पियल' को अपने 'पिता' के ही वारे मे जानकारी थी, 'दादा' के वारे मे नही। वह अपने 'पिता' को ही लेकर विचार करता था, 'दादा' को लेकर नही। पियल नही जानता

था कि मातरस्वामिनी उस के दादा तक पहुँची थी। कत्तिरिना ने उस के प्रस्ताव के अस्वीकृत होने का कारण पियल से छिपा कर रखा था।

प्रौढ़ अवस्था को पहुँचा हुआ जेम्ज तो इस बात को नहीं समझ सका कि नन्दा-सम्बन्धी जानकारी पियल के संतोष का कारण नहीं हो सकती, लेकिन उस की माँ समझ गई थी। इसलिये उस ने अपने बेटे के चित्त को आश्वस्त करने के लिये कहा—

"जिनदास मातरस्वामिनी की बेटी के लिये बेमेल आदमी है। आयु भी अधिक है। कहते है छत्तीस भी पार कर गया है।"

"आयु पैंतीस है। बहुत-सी जन्म-पत्रियाँ देखी। मेल नही मिला। 'फैशन' में कुछ कम होने पर भी 'जिनदास' महाशय में और कोई ऐसी कमी नही है कि वह 'बे-मेल' हो। मातरस्वामिनी के घरवाले निस्सन्देह 'फैशन' मे कुछ बढ़िया है," जेम्ज का तर्क था।

"ये लोग क्या इधर ही 'फैशन-परस्त' बने है? कई पीढियों से ये लोग अच्छी तरह से खाते-पीते चले आ रहे है। इस के अतिरिक्त मातरस्वामिनी के परिवारवालों मे और कोई अहंकार की बात नही है न?"

उस के यह सब कहने का उद्देश्य था, अपने बेटे को कुछ सान्त्वना देना। उस ने यह नही सोचा था कि उसका यह कथन उस के बेटे के शोक को दुगुना, तिगुना कर देगा।

"धन-सम्पत्ति कम हो जाने पर भी 'फैशन-परस्ती' मे किसी भी प्रकार की कमी न होने देना, इन लोगों का दोप है।"

पियल उठ कर कमरे मे चला गया और जा कर चारपाई पर लेट गया। जेम्ज ने झाँक कर देखा। उसे पियरा नही दिखाई दिया। तब वह बोला—

"मैने मातरस्वामिनी के परिवार के लोगों की थोड़ी आलोचना की स्कूल-मास्टर के चित्त को कुछ सान्त्वना देने के लिये। लेकिन प्रतीत होता है कि स्कूल-मास्टर के चित्त मे अभी तक नन्दा के लिये स्थान है।"

"नही, अब ऐसी कोई बात नही है", पियल की माता ने इसे असत्य समझते हुए भी कहा—"वह घर के भीतर इसीलिये चला गया है कि उसे अब बीती-बात याद कराना अच्छा नहीं लगता।"

"मै इस से भी बढ कर प्रस्ताव स्कूल-मास्टर के सामने रखनेवाला हूँ। मै चाहता हूँ कि किसी-न-किसी तरह 'स्कूल-मास्टर' को वह लडकी दिखा दूँ। यदि एक बार स्कूल-मास्टर उस लडकी को देख लेगा, तो फिर किसी भी दूसरी लडकी की ओर उस का चित्त आकर्पित नही होगा। पैसा भी है। लडकी पढी-लिखी भी है। अग्रेजी भी अच्छी तरह जानती है, और उस का अग्रेजी मे बोलना तो ऐसा है, जैसे पानी बहता चला जा रहा हो।"

किसी तरुणी के प्रति आकर्पित हुए तरुण के चित्त की मीमासा कर सकने लायक किताबी-ज्ञान जेग्ज को नही था। वह तजर्बे की पाठशाला मे पढा था। जब वह स्वय तरुण था तो उस ने एक ही ग्रामीणबालिका से नही, बल्कि दो-तीन कुमारियो से समय-समय पर प्रेम किया था। लेकिन अन्त मे उन मे से किसी एक से भी शादी नही की। अपनी प्रेमिकाओं से प्रेम करने के कारण शायद उस के चित्त मे भी वेदना हुई थी; लेकिन वह एक चीटे के काटने से जितना शारीरिक कष्ट होता है, उस से कुछ विशेप नही थी। उसे न जाने कितने तरुण-तरुणियो को परस्पर एक दूसरे से परिचित कराकर उन का पाणि-ग्रहण कराने का अनुभव था। इसीलिये वह बहुत कुछ 'अविश्वासी'-सा बन गया था।

'पचहत्तर प्रतिशत तरुण किसी भी तरुणी को स्वीकार कर लेते हैं, और सौ मे से निन्यानवे तरुणियाँ किसी भी ऐसे तरुण को, जिस

के एक सिर हो, दो हाथ हों तथा दो टाँगे हों'—यह उस महा-नास्तिक जेम्ज का मत था। यदि माता-पिता आडे न आये, तो किसी भी तरुण और तरुणी का गठ-बधन किया जा सकता है, यह उस के पक्के विश्वासों मे से एक था। 'जिसे मै चाहता हूँ, उसे छोड अन्य किसी से भी विवाह न करूँगा,' ऐसी जिद्द करनेवाले कई तरुणों को जेम्ज ने दूसरी दूसरी तरुणियों का हाथ थमा दिया था। उस के द्वारा गठ-बन्धन कराये हुए तरुण तथा तरुणियाँ जो परस्पर तलाक देकर एक दूसरे से पृथक् नही हुई, इस का कारण कुछ उन का 'प्रेम' नही था, बल्कि यह सब ग्रामीण-तरुणियो मे कुछ परम्परा-गत भलमनसाहत का परिणाम था।

जिन जिन की शादी जेम्ज ने कराई थी, उन मे से कुछ ऐसे भी थे, जिन्हो ने अपनी विवाहित स्त्रियो के अतिरिक्त एक-एक दो-दो उपपत्नियाँ भी पाली हुई थी। ऐसा होने पर भी, उन की विवाहित स्त्रियाँ अपने अपने स्वामी के इस दूषण को, इस दुश्चरित्रता को सहन करने की अभ्यस्त हो गई थी। वे जो इस तरह सहन करने की अभ्यस्त हो गई थी, उस की यह वजह नही थी कि उन मे 'सच्चरित्रता' को लेकर आग्रह की भावना का अभाव था, बल्कि इसलिये क्योंकि धन-सम्पत्ति के बारे मे जो कानून और परम्परा है, वे उस के लोह-बन्धनो से बुरी तरह जकडी हुई थी। विवाहित ग्रामीण स्त्री खाना-कपडा पाती है, मात्र अपने स्वामी से। खाने-पीने का खर्च चलाने के लिये उन के पास आय का कोई दूसरा साधन नही होता। 'स्वामी' को छोड कर यदि वह अपने माता-पिता के पास वापिस चली जाय, तो उसे वहाँ जो कुछ भी मिलता है, वह व्यङ्गपूर्ण तीक्ष्ण बाणो से छिदा हुआ।

'नन्दा हाथ नही लगी, तो पियल अब अविवाहित ही रहेगा'—इस पर जेम्ज का तनिक विश्वास न था। 'जिसे चाहा था, वह नही मिली, तो अब दूसरी किसी से विवाह नही करेगे,' कहनेवाले सात-आठ तरुणों के लिये जब तीन-चार महीने के भीतर ही कोई दूसरी

लडकी जेम्ज ने खोज दी, तो उन्हों ने उस से विवाह कर लिया।

"स्कूल-मास्टर की जन्म-पत्री मुझे दे, मै यह काम करूँगा," आरामकुर्सी से उठते-उठते जेम्ज ने कहा।

"अच्छा, अच्छा! अव की वार जिस दिन आना हो, जन्म-पत्री ले जाना। मै इसे खोजकर रखूँगी।"

"जन्म-पत्री खोजकर रखना। मै दो सप्ताह तक फिर इस तरफ चक्कर लगाऊँगा," कहते हुए जेम्ज उठकर चला गया।

दूसरे दिन सुवह होते ही पियल कोलम्वो जाने की तैयारी करने लगा।

"आज ही जा रहा है! कल जानेवाला था न? कल नही जा सकता? आज रुक जा!" माँ ने पियल से कहा।

"अम्मा रुकना सम्भव नही। यहाँ कोई काम भी नही। वड़ा आलस्य मालूम होता है। कोलम्वो कभी भी पहुँचूं, वहाँ करने के लिये काम है। आज चला गया तो यह काम निपटाने मे कुछ सुविधा रहेगी।" कहते हुए पियल ने कुर्सी पर वैठ, गुड के एक टुकडे के साथ, दो 'आप्प', और एक केला खा चाय का प्याला पिया।

"माँ, मै आज ही जाता हूँ। आज चले जाने से अपना काम आसानी से पूरा कर सकूंगा।"

"अच्छा तो अव वह पुरानी वात भूल जा।"

"नही माँ, मेरे दिल मे अव कोई ऐसी-वैसी वात नही है। मेरी शादी के लिये कोशिश करने की वात जेम्ज से कहने की जरूरत भी नही। वह समझता है कि यदि मै ने शीघ्र शादी नही की, तो शायद मै पागल हो जाऊँगा," कहते हुए पियल मुस्करा दिया।

"क्या मै विना तुझ से पूछे, तेरी शादी की वातचीत करने को कहनेवाली हूँ? वंह, कुछ भी हो, जल्दी ही फिर गाँव आ कर जाने की वात ध्यान मे रखना।"

"अच्छा, तो आना असम्भव नहीं है," कहते हुए पियल बाहर आँगन में आया। वहाँ एक किराये की गाड़ी खडी थी। वह उस पर सवार हो गया।

उसी समय बैल के गले मे बँधी हुई घण्टियों की आवाज तथा पत्थर पर से गुज़रनेवाले गाड़ी के पहिये की 'आवाज, पियल की माता को सुनाई दी। पत्थर पर से पहिये का गुजरना और उस की आवाज़, पियल की माता की दृष्टि से अशुभ लक्षण था। सुदूर वृक्ष पर बैठे हुए 'कठफोड़े' की आवाज ने पियल के माता के भय मे वृद्धि कर दी।

परिच्छेद ७

नन्दा और जिनदास का विवाह हो चुकने के छह महीने के बाद कथिसारुवत्ते मुहदिरम् की मृत्यु हो गई। गाँव के लोग तथा वैद्यगण जिस बीमारी को उभराव (=मैंविलिल्ल) के नाम से जानते-पहचानते है, उसी बीमारी से उस की अचानक मृत्यु हो गई। पिछले दिनों मे चार महीनों मे कोई तीन बार मुहदिरम् पर इस 'उभराव' का आक्रमण हुआ था। हर बार मातरस्वामिनी तथा उस की बेटी ने मुहदिरम् की छाती पर सिद्धार्थ तैल लगा मालिश की थी। उसे लाभ हुआ था। दुशान्दा उबाल कर पिलानेवाले वैद्य ने भी "यह 'पेट की वायु' का विकार है, स्वय अच्छा हो जायगा," कहा था। चौथी बार भी रोग का आक्रमण होने पर, पहले ही की तरह मातरस्वामिनी और अनुला ने मुहदिरम् की छाती की मालिश की। जब पान के पत्ते को गर्म करके उस से सेकने से भी कोई लाभ न हुआ, तो बालू की 'पोटली' को गर्म करके उस से छाती सेकी गई। अचानक मुहदिरम् को साँस लेने मे कठिनाई होने से, मातरस्वामिनी तथा अनुला दोनो डर गयी। वैद्य को दौडकर बुलाने जानेवाले सादा को देख, गाँव के लोग कतार बाँधकर 'बडे-घर' पर आ जुटे। दो-तीन ग्रामीण 'ओझा' को लिवा लाने के लिये, और दूसरे दो-तीन ग्रामीण वैद्य को लिवा लाने के लिये दौड गये। लेकिन 'वैद्य' अथवा 'ओझा' किसी एक के भी 'बडे-घर' पहुँचने से पहले पहले मुहदिरम् चल बसा।

शोक से सतप्त मातरस्वामिनी तथा उस की लडकी के विलाप करने के साथ साथ वहाँ एकत्र हुई ग्रामीण स्त्रियाँ भी विलाप करने लगी। कत्तिरिना के विलाप के स्वर ने उन सब के स्वर को दबा दिया। मुहन्दिरम् की अर्थी के पास इकट्ठे हुए कुछ ग्रामीणों का

कहना था कि किसी के मरने पर इतने ग्रामीणों ने एक जगह इकट्ठे हो कर इस से पूर्व इतना अधिक विलाप कभी नही किया।

पिता के मरने के कोई छह घण्टे बाद तिस्स 'बडे-घर' पहुँच सका। पिता की मृत देह को देखकर तिस्स को जितना शोक हुआ, जितना भय लगा, जितने सूने पन का अवबोध हुआ, उस से कही अधिक शोक, भय और सूनेपन का अवबोध तिस्स को अपनी माँ, दोनों बहनों, तथा रिश्तेदारों के विलाप को सुन कर तथा शोक से म्लान हुए उन के चेहरो को देख कर हुआ। वह भी अपनी बहनो के साथ जोर-जोर से विलाप करने लगा। उस का रोना-धोना तभी बन्द हुआ, जब पिता की अन्त्येष्टि हो चुकी।

मुहृदिरम् को हुई बीमारी का आधुनिक नाम 'हृदय-रोग' अथवा 'हृदय की धड़कन का रुक जाना' है।

इस समय तिस्स अट्ठारह वर्ष का तरुण है। इस वर्ष उस ने आठवी अग्रेजी पास कर ली है। वह पढ़ाई-लिखाई मे अच्छा है, लेकिन मेहनती नही ही है। इधर कुछ समय से उस का पिता बडी कठिनाई से उस का खर्च चला रहा था। कभी-कभी उस की स्कूल-फीस चुकाने के लिये उस की बहन का कोई सोने का गहना गिरवी रखना पडा है। गिरवी रखी हुई चीज छुडा लेने के बाद जो स्कूल-फीस और बोर्डिङ्ग-हाउस का खर्च भेजना पडा, उस के लिये उस ने अपनी जमीन का एक छोटा-सा टुकडा पाँच वर्ष तक के लिये 'जुताई' पर दिया था।

चाहे वह पढने-लिखने मे विशेष परिश्रम नही करता था, तो भी तिस्स हर वर्ष अपनी जमात मे 'प्रथम' या 'द्वितीय' रहता था। बचपन से ही उसे खेलने-कूदने का जो शौक था, उस मे किसी तरह की कमी नही हुई थी। पढने-लिखने मे उस के अधिक परिश्रम न करने का प्रधान कारण उस का यह खेल-कूद का शौक भी था। बिना विशेप परिश्रम के भी जब वह 'द्वितीय' से नीचे कही पहुँचा ही

नहीं, तो तिस्स को विशेष परिश्रम करने की जरूरत भी क्या थी? जब इतनी आसानी से दूसरे लड़कों को हराया जा सकता था, तो फिर अधिक परिश्रम किसलिये? इसलिये न केवल खेल-कूद बल्कि कुछ कलाओं के प्रति भी रुचि उत्पन्न हो जाने के कारण उस ने पढ़ने-लिखने में विशेष परिश्रम नहीं किया।

वह जिस बोर्डिङ्ग-गृह में रहता था, उस से सटा हुआ ही एक चित्रकार का घर था। अपने परिश्रम से ही चित्रकला का अभ्यास करनेवाले उस चित्र-शिल्पी को चित्र बनाते देख कर तिस्स को खेलने-कूदने से भी अधिक आनन्द प्राप्त होता था। विद्यालय से लौटने पर वह खेलने न जा कर चित्र बनाने का अभ्यास करने लगा। धीरे धीरे वह उस पड़ोसी चित्रकार द्वारा बनाये चित्रों की नकल करने में समर्थ हो गया। पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करने के लिये अथवा चित्र-शिल्पी बनने के लिये ही सहज-सामर्थ्य रखनेवाले तिस्स को किसी का मार्ग-दर्शन न प्राप्त था।

पिता को मरे छह मास हो गये, तो भी तिस्स अभी तक विद्यालय में पढ़ने के लिये वापिस नहीं लौटा। गाँव के लड़कों के साथ खेल-कूद में मस्त हो जाने के कारण उसे फिर विद्यालय लौटने की चिन्ता नहीं हुई। मातरस्वामिनी ने भी उसे बोर्डिङ्ग में दाखिल कराने के लिये विशेष तरद्दुद नहीं किया। सोचा 'हाथ की तंगी' किसी हद तक दूर हो जाये, तब भर्ती करा देंगे।

ग्रामीण लड़कों के साथ खेल-कूद में मस्त रहनेवाले तिस्स के चरित्र में भी क्रमश परिवर्तन आने लगा। वह यार-दोस्तों के साथ घूमने जाता तो शाम से पहले घर न लौटता। कभी-कभी उसे घर लौटते-लौटते आठ या नौ बज जाते। माँ और बहनों के प्रश्न पूछने पर वह जैसे-तैसे आठ बजे से पहले घर आने की कोशिश करने लगा।

कभी कोई नशीला पेय-पदार्थ न पीनेवाले तिस्स ने एक बार यार-दोस्तों के जबर्दस्ती करने पर थोड़ी-सी शराब पी ली। जिस ने

कभी शराब की एक बूँद भी मुँह को नही लगाई थी, वह यार-दोस्तों के चक्कर में आ गया। अब वही यार-दोस्त उस पर फिक़रे कसने लगे।

"तिस्स ! आज शराब पी है। घर पहुँचने पर माँ और बहनो को इस का पता लग जायगा।" बलदास बोला।

"यह कैसे ? क्या मैं ने इतनी ही पी है कि मैं होश-हवास गँवा बैठा होऊँ ?"

"मुँह से दुर्गन्ध आती है। थोड़ा सा धनिया खा ले।" नही तो इस मे तनिक भी सन्देह नही है कि अम्मा और बहनों को इस का पता लग जायगा।"

एक और मित्र ने थोडा-सा धनिया ला कर तिस्स को दिया। तिस्स ने मुट्ठी मे थोडा धनिया लिया, मुँह मे डाला, चाबा, उस का रस निगला और फोक बाहर फेक दिया।

"क्या अब भी दुर्गन्ध आती है ?" पूछ तिस्स ने मुँह से साँस बाहर निकाला।

"अब एक दम बढ़िया मामला है। धनिये की सुगंधि के अतिरिक्त किसी बात का पता नही लगता।" बलदास ने कहा।

"आज बलदास को भी थोडी पीनी चाहिये", तिस्स ने प्रस्ताव किया—"पीकर थोडा धनिया खा लेना।"

"ओह ! तिस्स तुम वही बात करने जा रहे हो, जो उस गीदड ने की थी। मै नही पी सकता। मै ने कभी न पीने की कसम खा रखी है।"

"हाँ ! यह बात ठीक है। आज बलदास को भी थोडी पीनी चाहिय।" विजय ने तिस्स के प्रस्ताव का समर्थन किया।

"किस के सामने कसम खाई है ?" तिस्स ने प्रश्न पूछा।

"किसी दूसरे के सामने नही, अपने ही सामने।"

"यह वात सर्वथा झूठ है।"

"तिस्स! झूठ नही है। यह ले थोडा धनिया और खा ले। यदि माँ और वडी वहन को पता लग गया, तो आगे के लिये मेरा विश्वास भी जाता रहेगा। मेरे ही कारण तिस्स को यह 'मौज-मेले' का भोजन करने आने की छुट्टी मिलती है।"

तिस्स और उस के मित्रों ने भी उस दिन एक मछुवे द्वारा नदी मे से मछली पकड़वा कर, उसे पकवा, मंयूका नामक जगली-जड़ के साथ खाया। उस दिन घर पहुँचते पहुँचते तिस्स को रात के दस वज गये।

दूसरे दिन शाम को जव वलदास तिस्स से भेंट करने के लिये 'वडे-घर' गया, तो वह मातर-स्वामिनी और अनुला की उपस्थिति में ही तिस्स को डाँटने-डपटने सा लगा।

"मातरस्वामिनी! कल तिस्स कितने वजे घर लौटा था?" वलदास ने प्रश्न किया।

"लगभग रात के दस वजे! क्योंकि उस ने कहा कि वलदास के साथ ही मौज-मेले का भोजन किया, इसीलिये मै ने इसे कुछ नही कहा; लेकिन इस के वाद इस तरह आने-जाने से मै ने इसे मना कर दिया।"

"केवल मौज-मेले का भोजन ही नही किया है," कहते हुए वलदास ने तिस्स की ओर देखा।

भय और लज्जा से दुहरा होता हुआ तिस्स वोला—

"वलदास! वेकार झूठ मत वोल। माँ विश्वास कर लेगी।"

"और क्या खाया?" कुतूहल के वशीभूत हुई स्वामिनी ने पूछा।

"धनिया!"

"क्यों धनिया खाया? क्या पेट-दर्द होने लगा था?"

"हाँ," कह बलदास ने तिस्स को आँख मारी।

"मैं जानती हूँ, इस बार तिस्स अनभ्यस्त चीजे खा कर कोई नया रोग पकड़ लेगा। इस के बाद अब 'मौज-मेले' का भोजन खाने जाने की जरूरत नहीं।"

इस के तुरन्त बाद मातरस्वामिनी ने बलदास की ओर देखा और थोडे गुस्से से बोली—

"बलदास ! तिस्स को साथ ले कर अब और ऐसी जगहों पर नही जाना। ऐसी जगहों पर साथ ले जायगा, तो मैं उसे बलदास के साथ भी घूमने-फिरने जाने से रोक दूँगी।"

"नहीं, अब से हम 'मौज-मेले' का भोजन करने नही जायेंगे," कह, बलदास तिस्स को साथ ले ग्राम-सभा द्वारा निर्मित सड़क पर चला आया।

"अरे ! बलदास तुम कैसे अजीब आदमी हो ?"

"क्यों ?"

"क्या तू मेरे शराब पीने की बात माँ को नहीं कहने जा रहा था ? यदि कह दी होती, तो यह मामूली बात न होती।"

"क्या मैं ऐसी बात कह सकता था ? मैं ने सोचा कि जरा मजाक करके तिस्स को थोड़ा डरा दूँ।"

"मैं ने सोचा कि तू शराब पीने की बात कहने ही जा रहा है।"

"यदि कहता, तो तिस्स से भी अधिक मुझे ही सुननी पडती।"

उस दिन शाम को बलदास और तिस्स दोनों जने कत्तिरिना के घर गये। सुन्दर कुमारी की तरह हाव-भाव वाली लयिसा को न केवल देखने के लिये, बल्कि उस के साथ बातचीत करने के लिये भी, लयिसा की बीमारी के बाद ही बलदास ने कत्तिरिना के घर

आना-जाना आरम्भ किया था। विवाह-रजिस्ट्रार का बेटा जो कत्तिरिना के घर आता जाता है, वह केवल उस से भेंट करने के लिये नही, बल्कि उस की बेटी को भी देखने तथा उस से बातचीत करके के लिये भी, इस बात से कत्तिरिना अवगत थी। इसलिये वह उस के आने-जाने को कुछ बडी खुशी के साथ सहन नही करती थी। गाँव के ऊँचे कुल के एक तरुण के दिल को दुखा कर, वह उसे क्रोधित नही करना चाहती थी। जिस समय पुंची अप्पु घर होता केवल उस समय कत्तिरिना के घर जाने पर, बलदास को लयिसा से बातचीत करने का अवसर न मिलता। पिता घर रहते समय भले ही लयिसा उस से बातचीत नही करती थी, लेकिन कत्तिरिना के घर पर रहते समय तो बातचीत करती ही थी। कभी थोड़ी देर के लिये भी कत्तिरिना बाहर चली जाती, तो बलदास को लयिसा से हँसी-मजाक करने का अवसर भी हाथ लग जाता। बलदास कत्ति-रिना के घर केवल इतनी बात के लिये ही नही जाता था, गप्पं मारने मे सिद्धहस्त कत्तिरिना के साथ उसे गाँव की 'कच्ची-पक्की' चर्चा करने मे भी बड़ा आनन्द आता था।

यह तीसरी दफा थी, जब बलदास के साथ तिस्स कत्तिरिना के घर गया था। कत्तिरिना अपने बच्चे की तरह तिस्स से प्यार करती थी, और साथ ही मातरस्वामिनी का पुत्र होने के कारण उस का आदर भी करती थी। कभी-कभी वह यह भी सोचती थी कि बलदास के साथ घूमने-फिरने से कही तिस्स का चाल-चलन न बिगड जाय।

तिस्स की तरुणियों के सम्बन्ध मे अभी ऐसी ही धारणा है जैसी पाठशाला के बच्चों की होती है। तरुणियों के साथ अकेले मे बातचीत करते उसे शर्म आती है। तरुणियों को लेकर अभी उसके मन मे कोई ऐसी भावना पैदा नही हुई है, जिसे प्रेम का पर्याय कहा जा सके। पाठशाला मे पढने जानेवाली लड़कियों के बारे मे लडकों की जैसी धारणा होती है, उस की वैसी ही धारणा तरुणियों के बारे

मे थी। प्रेम करने की इच्छा से किसी तरुणी का चिन्तन करना अभी उस के लिये लज्जा का विषय था। कोई तरुणी कभी तिस्स से प्रेम करने लगे, यह बात तिस्स के ध्यान मे भी नहीं आती थी। उस की धारणा थी कि तरुणियाँ उस की आयु से अधिक आयु के, बलदास की आयु के अथवा उस की आयु से भी अधिक ऐसे पुरुषों के साथ प्रेम करती है, जिन के ऊपर के होंठ के ऊपर मूँछ उग आई हो। इसीलिये वह स्त्रियों को समझता था कि वह उस की आयु के लोगों से प्रेम न करनेवाली तथा एक ही पुरुष से प्रेम करनेवाली 'सीता' होती है। भिखमगों के साथ प्रेम करनेवाली और बाद मे राजकुमारो के साथ भी विवाह करने के लिये तैयार न रहनेवाली स्त्रियाँ उस के लिये ऐतिहासिक सत्य थी।

तिस्स का विचार था कि बलदास जो कत्तिरिना के घर जाता है, वह इसीलिये कि वह लथिसा को अपने प्राणों से भी अधिक चाहता है। बलदास के अतिरिक्त लथिसा किसी दूसरे की ओर देखने के लिये स्वप्न में भी तैयार होगी, यह बात तिस्स ने कभी स्वप्न में भी नही सोची थी। पहली बार जब-जब तिस्स बलदास के साथ कत्तिरिना के घर गया था, तो बलदास और लथिसा के बीच होनेवाले हँसी-मजाक और कभी-कभी उस की समझ मे भी न आनेवाली पहेलियो को सुन कर वह गूँगे की तरह बैठा रहा था। तिस्स की समझ थी कि लथिसा के मुँह की ओर भी देखना अनुचित हैं। वह समझता था कि बलदास के अतिरिक्त किसी भी और व्यक्ति से प्रेम न करनेवाली लथिसा, यदि वह उस के मुँह की ओर भी देखेगा तो गुस्सा हो जायगी। उस की मसे भीग आई है, तो भी उस ने यह नही सोचा कि कोई तरुणी उस से प्रेम करेगी, क्योंकि वह समझता था कि उस की शक्ल-सूरत ही इतनी सुन्दर नही है कि कोई उस से प्रेम करे। बलदास से कही अधिक सुन्दर तिस्स की अपने बारे मे ऐसी धारणा थी, इसी से मालूम देता है कि वह कितना अबोध था। जब कभी तिस्स को यह सुनने को

मिलता कि किसी सुन्दर तरुणी ने किसी असुन्दर तरुण को भी चाहा है, तो तिस्स के मन में एक रहस्यपूर्ण सतोष का भाव उदय होता। स्त्रियों की वात सोचने पर या तो उसे अपनी माँ की याद आती थी, या कभी-कभी वहनों की। इसलिये उस के मन मे स्त्रियों के प्रति या तो गौरव का भाव था, या भय का अथवा लज्जा का।

"अंगो देवी की लड़की शादी के तीन ही दिन वाद अपने पति से रुष्ट हो कर मायके लौट आयी, जो कहा जा रहा है, क्या यह सत्य है?" गाँव की नई कच्ची-पक्की वात सुनने की इच्छा रखनेवाले वलदास ने पूछा।

"महाशय, यदि यहाँ पास आ जायें, तो मै सारा वृत्तान्त सुना सकती हूँ," वरामदे में वैठी हुई, पान चवाती हुई कत्तिरिना वोली।

वडे कमरे की चारपाई के एक सिरे पर पडा हुआ वलदास उठा और वरामदे मे जाकर एक छोटी कुर्सी ले, कत्तिरिना के पास वैठ गया।

"अगो की लडकी रात को स्वामी के आने पर छिप जाती है, यह कहा जा रहा है न?" कत्तिरिना ने वलदास के कान के पास मुँह ले जाकर धीरे से कहा। वरामदे मे खडी लयिसा वड़े-कमरे मे चली गई। कत्तिरिना नही चाहती थी कि जिस समय वह वलदास के साथ अपने गाँव की 'कच्ची-पक्की' वात कर रही है, उस समय लयिसा भी कही ऐसी जगह खड़ी रहे, जहाँ से उसे यह सव सुनाई दे सके।

"क्या कहा? क्या यह सत्य है?"

"और क्या? स्वामी पास आता है, इससे डर कर, वह लड़की घर चली आई है।"

"तो यह तो 'पिंगुत्तर की कथा'[1] का प्रतिरूप है!"

---

१. देखो—महाउम्मग जातक (५४६)

"हाँ, हाँ, बिल्कुल ठीक ! राजकुमारी के पास आने पर पिंगुत्तर चारपाई के नीचे घुस कर सो गया था। यह कुमार के पास जाने पर कुमारी का छिप जाना हुआ !"

"दुल्हन की माँ का कहना है कि किसी ने दुल्हन पर कुछ 'टोना-टोटका' कर दिया है, इसीलिये दुल्हन इस प्रकार छिप जाती है।"

"अनुष्ठान करवाकर 'टोने-टोटके' के प्रभाव को दूर करने जा रहे हैं न ? अंगो श्रीमती के घर आगामी सप्ताह बडी पूजा होने जा रही है।"

"तो कुछ अच्छे नाच देखने को मिल सकते हैं। तिस्स की बीमारी के समय जो पूजा कराई गई थी, उस अवसर के बाद कही भी अच्छे नाच देखने के लिये नही मिले।"

"ऐसा क्यों कहते हो ? बड़ी मुश्किल से तो ऐसा सप्ताह आता है, जिस मे राष्ट्र-यक्ष या शन्ति-यक्ष का नाच नही होता।"

"राष्ट्र-यक्षों के नाच से अब मेरा मन भर गया," कहते हुए बलदास ने कत्तिरिना के दिये हुए पान को चबा, आगन मे पीक की पिचकारी दे मारी।

वड़े कमरे मे वैठी हुई लयिसा जब कमरे के भीतर गई, तो तो जाती-जाती चारपाई के दूसरे सिरे पर बैठे तिस्स का हाथ दवा गई। तिस्स जान गया कि लयिसा जान-बूझ कर ही उस का हाथ दवा कर कमरे के भीतर गई है, तो भी तिस्स ने यह नही सोचा कि लयिसा जैसी रूपवती सुन्दरी उस से प्यार करने लगेगी। इसीलिये वह अपने को यह समझाने की चेष्टा करने लगा कि सम्भवत उस का हाथ गलती से ही मेरे हाथ से छू गया है, लेकिन क्योंकि मेरे मन मे उस के प्रति लालसा है, इसीलिये मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि उस ने जान-बूझ कर मेरे हाथ को दवाया है। इतना होने पर भी, जब तिस्स ने देखा कि कमरे के अन्दर चारपाई पर वैठी हुई लयिसा उस की ओर देख रही है, साथ-साथ जोर से

मुस्करा रही है, तो तिस्स ने यह निश्चय कर लिया कि लयिसा ने उस का हाथ जान-बूझ कर ही दबाया है।

लयिसा के कोमल-स्पर्श से शीतल हुए स्थान से ही प्रविष्ट होनेवाली एक अकथनीय सुखद वेदना तिस्स के शरीर तथा मन मे व्याप्त हो गई। लयिसा के हाथ का स्पर्श हो जाने से और उस के चेहरे की ओर देखने से तिस्स के मन मे वडी लालसा जग उठी, इसलिये वह भी वार वार लयिसा की ओर देखने लगा। लयिसा के एक वार उस की ओर देखने और फिर दुवारा देखने के वीच तिस्स दो-तीन वार उस की ओर देख लेता। जो दोनों जने वरामदे मे वैठे गाँव की 'कच्ची-पक्की' चर्चा मे लीन थे, उन से छिपा कर ही तिस्स यह सव कर रहा था।

"तिस्स महाशय, हमारे घर अकेले क्यों नही आते?" कमरे के द्वार पर खड़ी लयिसा ने पूछा।

तिस्स के उत्तर दे सकने से भी पहले लयिसा ने अपना दाहिना हाथ चारपाई की वाँही पर रखते हुए दूसरा प्रश्न पूछा—"क्या वलदास महाशय के आने के कारण ही आना होता है?"

तिस्स ने अपना हाथ इतना नजदीक किया कि वह लयिसा के हाथ से छू जाय, लेकिन लयिसा ने अपना हाथ नही हटाया।

"अनभ्यस्त होने के कारण ही आना नहीं होता," तिस्स ने वड़ी कठिनाई से उत्तर दिया।

"अव तो तीन वार आ चुके हो न?"

"हर वार वलदास के साथ ही।"

"तो क्या इस से यहाँ आने का अभ्यास नही हुआ?"

"और कुछ दिन वीतने पर अकेला भी आजाऊँगा। यदि मैं अकेला आऊँगा, तो क्या वलदास इस से अप्रसन्न नहीं होगा?" पूछते हुए तिस्स ने लयिसा के चेहरे की ओर देखा।

"उसे बुरा नही लगेगा।"

"तू कैसे जानती है ?"

"यदि उसे बुरा भी लगे, तो भी क्या ?"

"तो वह गुस्सा हो जायगा।"

"वह गुस्से भी हो जाय, तो भी क्या ? वलदास आदि से परिचित होने के बहुत पहले से क्या हम आप लोगों से परिचित नही है ?"

"यदि वलदास महाशय अकेले आये, तो क्या लथिसा इसे पसन्द करती है ?"

"नही !" कह कर लथिसा हँस दी।

"तो वलदास महाशय का आगमन क्यों होता है ?"

"हो सकता है, माँ के साथ वातचीत करते रहने के लिये।"

"नही, लथिसा के ही साथ वातचीत करने के लिये," तिस्स का प्रतिवाद था।

"वलदास महाशय के वातचीत करने के कारण मै भी वातचीत करती हूँ।"

'तिस्स ! अब शाम हो गई, चलें।' अपनी चर्चा समाप्त कर वड़े-कमरे मे प्रविष्ट हुए वलदास ने प्रस्ताव किया। लथिसा के साथ अकेले मे हो रही वातचीत मे वाधा पडने से तिस्स को प्रसन्नता नही हुई।

लथिसा की ओर देखते हुए वलदास ने तिस्स से पूछा—"लथिसा क्या कहती है ?"

लथिसा ने वलदास की ओर अपनी आँख की कोर फेरी और अपनी वनियान के कॉलर को ठीक किया।

"तिस्स महाशय [illegible] वु-स्वभाव के है !" कहते हुए लथिसा

"साधु-स्वभाव ढोंगी बिल्ले ही चूहों को पकड़ते हैं। अच्छा, तिस्स चले," कहते हुए बलदास ने तिस्स के कँधे पर हाथ रख दिया।

"अरे नही ! तिस्स महाशय ऐसे नही हैं।"

तिस्स ने नहीं सोचा था कि लयिसा ऐसी बातें करने लगेगी। तिस्स ऐसी तरुणियों की बात सोचता था, जिन्हे एक तरुण के अतिरिक्त किसी दूसरे की ओर देखना तक गवारा नही। तरुण और तरुणी की बातचीत अकेले मे ही होनी चाहिये। आपस में की गई बातचीत किसी तीसरे के सामने प्रकट नहीं की जानी चाहिये। इसलिये लयिसा ने जो कुछ बलदास से कहा, वह उस के असंतोष का कारण हुआ।

और दिनों की तरह नही, उस दिन जब लयिसा ने तिस्स का हाथ दबाया था और उस की ओर बार-बार देखा था, तो तिस्स के हृदय मे जो भाव पैदा हुआ था, वह किसी सकुचित-प्रेम का न था। किसी सुन्दरी के लिये अपने प्राण तक न्योछावर करने के लिय तैयार एक कवि के हृदय मे जो भाव पैदा होता है, वैसा ही भाव तिस्स के हृदय में पैदा हुआ था। लेकिन अब उसे लगने लगा कि लयिसा वैसे शुद्ध प्रेम की अधिकारिणी नही है। वह चाहता था कि लयिसा उसे केवल एक ही तरुण से प्रेम करनेवाली सुविनीत तरुणी के रूप मे दिखाई दे। तिस्स सोचने लगा कि कितना अच्छा होगा कि यदि लयिसा को एक साथ दो-तीन तरुणों के साथ हँसी-मज़ाक करते हुए सभी से प्रेम करने की सदोषता समझाई जा सके।

उस दिन सोने गया, तो तिस्स लयिसा के ही बारे मे सोचता रहा। विपत्ति मे पड़ी हुई किसी रूपवती तरुणी की रक्षा कर सकने की सामर्थ्य होना कितनी बडी बात है। चाल-ढाल ऐसी होनी चाहिये कि तरुणियाँ आकर्षित हो जाये। बातचीत ऐसी होनी

चाहिये कि तरुणियाँ खिंची चली आये। पहनावा भी ऐसा ही होना चाहिये। उस के मन मे यह भी प्रश्न पैदा हुआ कि किसी तरुणी का चित्त आकर्षित कर सकने लायक सौन्दर्य भी उस के पास है या नही? यदि रात न होती, तो तिस्स कदाचित् चारपाई से उठकर सीधा शीशे के पास पहुँचता। तिस्स सोया तो अपनी टाँगों, हाथों और सिर को ऐसे इधर-उधर डुलाता हुआ सोया कि उसके सोने के ढंग को देख कर ही कोई तरुणी उसे 'वीर' समझे।

सीता जैसी निर्मल रूपवती स्त्री के साथ जैसा प्यार करना योग्य है, मात्र वैसा ही प्यार लयिसा के साथ कर ने की इच्छा तिस्स के मन मे जगी थी। इस प्रेम-भावना मे जलन न थी, बल्कि उस के चित्त के लिये अनुपम शीतलता थी। सात आठ दिन बीतते-बीतते वह लयिसा की ओर से उदासीन हो गया; क्योंकि उसने देखा कि लयिसा जैसे उस के साथ हँसी-मजाक करती है तथा हाव-भाव बनाती है, ठीक उसी प्रकार वह बलदास के साथ भी व्यवहार करती है। लयिसा को ले कर उस के मन मे जो कुछ भी थोडी भावना बच गई थी, वह उस दिन सम्पूर्ण रूप से नष्ट हो गई, जिस दिन उस ने बलदास से यह बात सुनी। सभी लोगों के सो जाने पर रात के समय बलदास झरोखे से लयिसा के साथ दो-तीन घण्टे तक बातचीत करता रहा था।

"क्या उस दिन पुची-अप्पु घर पर नही था?" उक्त वृत्तान्त सुनानेवाले बलदास से तिस्स ने प्रश्न किया। बलदास द्वारा कही गई बात सुन कर तिस्स का मन घृणा से भर गया।

"तो क्या लयिसा को चूमा भी था?" तिस्स ने ईर्षा-मिश्रित क्रोध से पूछा।

"अरे, चूमने का वहाँ कहाँ अवकाश था! खिडकी के लकडी के जंगले में से बडी मुश्किल से चार अंगुलियों का अगला सिरा भर भीतर घुसाया जा सकता है। मै ने नारियल की एक शाखा को

दीवार के सहारे खड़ा किया और उस के सिर पर खड़ा हो कर लयिसा के साथ यूं ही बात-चीत करके लौट आया।

जिस दिन तिस्स ने यह बात सुनी, उस दिन से तिस्स का लयिसा के यहाँ आना-जाना कम हो गया। बलदास के जोर-जबर्दस्ती करने पर यदि साथ चला भी जाता, तो अब वह पहले की तरह लयिसा से बातचीत न करता था।

जब मातरस्वामिनी को यह मालूम हुआ कि तिस्स बलदास के साथ कत्तिरिना के घर आया-जाया करता है, तो वह डरी कि यदि और कुछ दिन गांव मे रह गया, तो बदचलन हो जा सकता है। यदि तिस्स को पढने के लिये गाल्ले बोर्डिंग न भेजा जा सके, तो कम-से-कम उसे कुछ काम करने के लिये कोलम्बो ही भेज दिया जाय।

"तिस्स! अब तू कुछ अधिक मटर-गश्ती करने लग गया है," मातरस्वामिनी बोली।—"तू दोपहर का भात खाने के दो घण्टे के भीतर ही घर से निकल जाता है और फिर वापिस लौट कर आता रात के खाने के समय के आस-पास! बलदास के साथ इतनी अधिक मटर-गश्ती करने न जाया कर।"

"अम्मा! काम नही रहने से, घर पर मन नहीं लगता।"

"आलस्य लगता है, तो पुस्तक देखा कर।"

"क्या हर समय बैठ कर पुस्तक पढी जा सकती है?"

"तू कत्तिरिना के घर किसलिये आता जाता है?"

"बलदास बुला कर ले जाता है।"

"मत जाया कर। बलदास बुलाये तो भी 'नहीं आ सकता' कह दिया कर। उसे कह देना कि मैं ने जाने के लिये मना किया है। सुना न?"

'हाँ, अम्मा।"

परिच्छेद/८

विवाह के कोई डेढ साल बाद अपने पति सहित नन्दा कुछ समय बिताने के लिये 'बडे-घर' चली आई। नन्दा अपने मायके आई थी, क्योंकि उसे बच्चा होनेवाला था। विवाह के बाद जिनदास पहले की अपेक्षा निस्सन्देह अच्छा आदमी हो गया था, लेकिन साथ ही उतना ही दरिद्र भी। विवाह पर जो उस ने खर्च किया था वह उधार लिया हुआ पैसा था। क्योंकि उसे दहेज में कुछ नही मिला था, इसलिये उस ने वह कर्जा उतारा अपनी कुछ जमीन गिरवी रख कर, उसी से प्राप्त हुए धन से। शेष जमीन से जो कुछ आमदनी होती थी, उस से बडी मुश्किल से उन दोनों का खाने-पीने का खर्च चलता था। उन्हे कपडा-लत्ता खरीदने के लिये कर्जा ही लेना पडता था। माता-पिता की जायदाद से जो आमदनी थी, जिस समय जिनदास अकेला था, वह आमदनी उस के लिये पर्याप्त थी।

पहले से ही 'बडे-घर' की स्त्रियाँ कुछ ढंग से पहनने-ओढ़ने की अभ्यस्त थी। वस्त्रों आदि पर खुले हाथ खर्च करती। नन्दा के लिये वस्त्र आदि खरीदने पर निस्सदेह कुछ अधिक खर्च होता था, लेकिन जिनदास कभी मन मे नही कुढा। यद्यपि नन्दा अपने वस्त्र आदि पर एक पैसा भी व्यर्थ नही खर्च होने देती थी, तो भी वशानुगत अभ्यास के कारण जरा साफ-सफाई से रहती थी। कही आती जाती, तो जरा बढिया कपडा पहन कर ही। भले ही वह घर पर रहने के समय कम कीमत का कपडा पहने रहे, लेकिन जब घर से बाहर पैर रखना होता तो जरा कीमती कपडा ही आवश्यक होता। जब नन्दा को यह मालूम हो गया कि उस का पति उस के लिये रुपया कर्ज ले-ले कर कपडों की व्यवस्था करता है, तो उस ने रिश्तेदारों के यहाँ आना-जाना एक दम कम कर दिया।

जिनदास की शादी होने पर उस की वहन अपने स्वामी के यहाँ चली जायगी, यह वात जेम्ज ने कही तो थी; लेकिन तव भी उस का जाना नही हुआ। क्योंकि वह और उस के दोनों वच्चे वहाँ रहते थे, इसलिये नारियल तोडे जाने के समय उसे भी एक हिस्सा देना ही पड़ता था। देल, कटहल तथा सुपारी आदि में से भी वह एक हिस्सा ले लेती थी। उस के घर पर रहने के कारण नन्दा तथा जिनदास को केवल यही थोडी-सी हानि सहन करनी पड़ती थी। क्योंकि ननद नन्दा के साथ कभी नही झगड़ी, इसलिये जिनदास को भी अपनी वहन के प्रति कभी गुस्सा प्रकट करने का अवसर नहीं आया।

नन्दा के घर पर आने के दो महीने वाद उस के निमित्त 'परित्राण-धर्म-देशना'[1] करवाने के लिये मातरस्वामिनी ने घर की साफ-सफाई करवाई। कई ग्रामीण स्त्रियों द्वारा घर के मेज़-कुर्सी आदि वाहर करवा घर की सफाई करवाई गई। अपने जीवन-काल मे उस का पति जिस वक्से और मेज़ का उपयोग करता था, वह जहाँ की तहाँ रखी थी। साठ-सत्तर रुपये तक देकर गाँव का मुखिया उस वक्से तथा मेज को खरीद लेना चाहता था। हाथ तंग रहने के वावजूद मातरस्वामिनी ने उन्हे वेचना स्वीकार नहीं किया। लिखने-पढने के उस वक्से और मेज को मातरस्वामिनी अपने पति की कीमती यादगार समझती थी। एक वार नन्दिय अफसर ने वह वक्सा और मेज़ ले लेने की नीयत से ही पचास रुपये मातर स्वामिनी के हाथ पर रख दिये, लेकिन उस ने वे रुपये लौटा दिये। वोली—"पति की इतनी ही यादगार वची है।"

घर के भीतर की सफाई कराने के समय मातरस्वामिनी ने पति के लिखने-पढने के वक्से और मेज की झाड-पोंछ कराकर, लिखने-पढने के वक्से मे रखे हुए कागज, पुराने तमस्सुक आदि की

---

१. वौद्ध सूत्रों का पाठ।

भी धूल झाड़, उन्हे सुखा कर, फिर पूर्ववत् ही रख दिया। उस ने लिखने-पढने के बक्से के एक दराज को खोल, उस मे रखी चिट्ठियों को पृथक्-पृथक् झाड फिर पूर्ववत् ही रख दिया। उन चिट्ठियों मे किसी स्त्री के हाथ की लिखावट जैसी लिखावटवाली एक विशेष चिट्ठी उसे दिखाई दी। उसे यह जानने का स्वाभाविक कौतूहल हुआ कि यह चिट्ठी किस के हाथ की लिखी हुई है? वह शीघ्र ही लिखावट पहचान गई। हस्ताक्षर पहचान लेने पर उस ने वह चिट्ठी बड़ी ही उत्सुकता से पढ़ी। चिट्ठी पढ़ते ही उस के सिर पर सब से पहले क्रोध सवार हुआ, फिर हृदय शोक-ग्रस्त हो उठा और अन्त मे उस ने मर्माहत वेदना का अनुभव किया। उस ने उस चिट्ठी को अण्टी मे रखा और देखा कि क्या इसी प्रकार की और भी कोई चिट्ठी है? वैसी ही और दो चिट्ठियाँ उस के हाथ लग गई। वह उन तीनों चिट्ठियों को रसोईघर मे ले गई और इधर-उधर देख कर उसने उन्हे चूल्हे मे डाल दिया। जब तक वे चिट्ठियाँ जलकर राख नही हो गईं, वह चूल्हे के पास से नही हिली।

जिन तीन चिट्ठियों को मातर स्वामिनी ने जलाया था, वे कत्तिरिना द्वारा कयिसारुवत्ते मुहदिरम् को लिखी गई थी। इन में से एक चिट्ठी का अंतिम वाक्य था—'पुची अप्पु देउँदर गया है। परसों ही वापस आयगा।' चिट्ठियों के ऊपर जो तिथि आदि दर्ज थी, उस से यह बात स्पष्ट हो जाती थी कि कत्तिरिना ने जो ये तीन चिट्ठियाँ लिखी थी, वे लिखी थी कयिसारुवत्ते मुहंदिरम् के साथ मातरस्वामिनी का विवाह होने से केवल सात या आठ महीने पहले ही। इन तीनों चिट्ठियों को जला चुकने के बाद मातर-स्वामिनी की कोशिश थी कि वह पता लगाये कि कत्तिरिना ने इन के बाद भी उस के पति को पत्र लिखे है या नहीं? उस ने तमाम दराजों को खोलकर उन मे रखे हर काग़ज के टुकडे की जाँच-पड़ताल की तो भी उसे और कोई चिट्ठी नही ही मिली।

मातरस्वामिनी को अव इस वात मे कोई सन्देह नहीं रह गया था कि उस से विवाह करने से पूर्व ही कथिसारुवत्ते कत्तिरिना के स्नेह-सूत्र मे वँधा था; लेकिन कत्तिरिना कथिसारुवत्ते से स्नेह-सम्वन्ध वनाये हुए थी, पुची अप्पु से शादी कर चुकने के वाद भी। मुहदिरम् को घर पर वुलाने के विचार से ही उस ने अपनी चिट्ठी मे लिखा था कि 'पुची अप्पु देउँदर गया है, परसों ही आयेगा।' उस से शादी हो चुकने के वाद भी मुहंदिरम् कत्तिरिना के पास गया या नही ?—यह स्वाभाविक प्रश्न मातरस्वामिनी के मन मे उठा। शादी हो चुकने के वाद से मुहंदिरम् कव कहाँ आया-गया, उस ने कव क्या कहा-सुना—इस सव पर मतरस्वामिनी विचार करने लगी। वडी वारीकी से हीरे-मोती धोनेवाले की तरह उस ने भूत-काल की सभी छोटी-वडी घटनाओं पर विचार किया, लेकिन उसे कोई भी ऐसी वात नही मिली, जिस से उस के इस सन्देह का समर्थन होता कि उस से विवाह कर चुकने के वाद भी मुहदिरम् कत्तिरिना के पास आता-जाता रहा है।

मातरस्वामिनी के साथ विवाह हो चुकने के वाद मुहदिरम् कभी असमय घर से वाहर नही गया। वह एक दो दिन के लिये मातर गया है, लेकिन हर वार सीधा घर ही वापस आया है। मातरस्वामिनी इस वात से परिचित हो चुकी थी कि उस से शादी होने से पूर्व ही मुहदिरम् तथा कत्तिरिना की दोस्ती रही है। लेकिन तव भी उसे अपने स्वामी के इस 'कलुषित' चरित्र पर क्रोध ही उत्पन्न होता था, उस का हृदय शोक-ग्रस्त हो ही जाता था; उसे मर्माहत वेदना की ही अनुभूति होती थी।

कत्तिरिना की वेटी की याद आ जाती, तो मातरस्वामिनी का कोप और भी अधिक वढ जाता। लयिसा हँसती तो उस की ठोडी के ऊपर गढा-सा पड जाता। उस के दोनों होंठ कत्तिरिना के होंठों जैसे न थे, वल्कि मुहदिरम् के होंठों जैसे थे। हँसने के समय गढ़ा पड जानेवाली पतली ठोडी मुहंदिरम् की ही थी। लयिसा की नाक

मुहंदिरम् की ही नाक से मिलती थी, न कत्तिरिना की नाक से और न पुंची अप्पु की नाक से। लयिसा का अंग-संचालन और उस की दोनों आखें भी कत्तिरिना की अपेक्षा मुहंदिरम् से ही अधिक समानता रखती थी। गढा पडनेवाली उस की थोड़ी, लम्बी-ऊँची नाक तथा दोनों पतले होठ आँख के सामने आते ही मातरस्वामिनि का चित्त गुस्से से, तथा हृदय शोक से भर जाता।

सजी-धजी लयिसा के साथ जो कभी-कभी कत्तिरिना 'बडे-घर' आई है, तो क्या इसलिये कि वह मुहंदिरम् के साथ के अपने पूर्व-सम्बन्ध को बडे गर्व से याद करती रही है? क्या वह असम्भव है कि इसी कारण से कत्तिरिना और लयिसा अनुला और नन्दा के साथ ही नही, उस के साथ भी बडे ममत्व का भाव प्रकट करती रही है? कत्तिरिना जो कभी-कभी लयिसा की कुर्ती के लिये नये फैशन की काट कटवाने के लिये नन्दा के पास आती रही है, क्या इसीलिये कि ये लोग कथिसारुवत्ते के परिवार के साथ किसी प्रकार की रिशतेदारी का अनुभव करते रहे है?

आयु अधिक हो जाने पर और खाने-पीने को उतना न मिलने पर अब कत्तिरिना कोई वैसी सुन्दर स्त्री नही प्रतीत होती थी, लेकिन उस के सौन्दर्य के नष्टावशेष अभी भी उस की दोनों आँखों में, उस की उभरी हुई छाती मे तथा उस के हाव-भाव मे दिखाई दे रहे थे। मुहदिरम् की पत्नी बन कर मातरस्वामिनी जब कोग्गल आई थी, उस समय उसे कत्तिरिना का जो सुन्दर रूप दिखाई दिया था, उस के प्रति उसे ईर्षा होने लगी। मातरस्वामिनी सोचने लगी कि उन दिनों कत्तिरिना जो प्राय. 'बडे-घर' आती जाती रहती थी, वह केवल उसे ही देखने के लिये नही, बल्कि असंदिग्ध रूप से मुहदिरम् को भी देखने के लिये। इतना होने पर भी उस ने यह नही सोचा कि उस से शादी हो चुकने के बाद भी मुहंदिरम् कत्तिरिना के लिये दिल मे जगह बनाये थी।

जब मातरस्वामिनी ने प्रथम बार यह सुना था कि तिस्स बलदास के साथ लयिसा को देखने गया है, तो उसे केवल यह डर था कि इस से कही तिस्स का चाल-चलन न बिगड जाय। लेकिन अब उस के मन में कोप है, घृणा है और साथ-साथ भय भी।

इस विचारधारा के कारण और भी अधिक कुपित हुई मातरस्वामिनी ने बरामदे मे खडे तिस्स को बुलाया। क्योंकि इस से पहले कभी भी तिस्स ने अपनी माँ के चेहरे पर इतने अधिक कोप और शोक के भाव नही देखे थे, इसलिये माँ के पास पहुँचने पर तिस्स को बड़ा डर लगने लगा। तिस्स ने कभी स्वप्न मे भी यह नही सोचा था कि उस की माँ को भी कभी इतना गुस्सा आ सकता है।

पुत्र को धमकाती हुई सी माँ बोली—"तिस्स ! इस के बाद से अब यदि तू कभी भी कत्तिरिना की तरफ गया, तो तू जाने। अब कभी मत जाना। उन के घर के आँगन मे पैर नही रखना। सुना न ?"

"माँ, उस दिन जो मना कर दिया था, उस के बाद से मै कभी नही गया," माँ का हाव-भाव देख बहुत अधिक भयभीत हुए तिस्स ने उत्तर दिया।

"उन के घर की ओर झाँकने भी नहीं जाना। तुझे फिर पढने के लिये जाना चाहिये। यह सम्भव न हो तो फिर कोई काम करने के लिये कोलम्बो ही जाना चाहिये। सुना न ?"

तिस्स पढने के लिये विद्यालय जाने की अपेक्षा कुछ काम करने के लिये कोलम्बो जाना अधिक पसन्द करता था। उस ने काम करने के लिये कोलम्बो जाना पसन्द किया; क्योंकि वह जान गया था कि उस की माँ तथा अनुला—दोनों का हाथ तंग है।

"माँ, काम करने जाना ही मै अधिक पसन्द करता हूँ," तिस्स ने उत्तर दिया।

मातर-स्वामिनी फिर बड़े कमरे में गई और मूहंदरिम् के लिखने-पढने के बक्से को बन्द कर, चाबी ले, रसोई घर मे जा घुसी। माँ को गुस्से में बोलता सुन अनुला बरामदे मे आ पहुँची।

"अनु! आज मां को बड़ा गुस्सा आया है। इतना गुस्सा माँ को कभी नही आया--तिस्स बोला।"

"तिस्स के मटर-गश्ती करने के कारण ही गुस्सा आया होगा। सात-आठ दिन पहले सुनने को मिला था कि तू कत्तिरिना के घर गया था। तभी से माँ भरी हुई है।"

"माँ के मना करने के बाद मैं कभी कत्तिरिना के घर नही गया। माँ को किसी दूसरी वजह से ही गुस्सा आ गया होगा।"

"माँ को लयिसा अच्छी नही लगती। उन दिनों लयिसा का कभी-कभी यहाँ आना जाना भी माँ को प्रिय नही था। हम यदि लयिसा के साथ जरा भी बोलने की चेष्टा करें, तब भी माँ को गुस्सा आता है। उन दिनों भी माँ कहती थी, उसके साथ बातचीत मत किया करो।'

"अनु! मै लयिसा को देखने नही गया था। बलदास के बुलाने पर गया था।"

तुम्हारी मटर-गश्ती इधर अधिक बढ़ गई है। कुसंगति मे पड़ कर तेरे बिगड जाने का डर है। माँ को सदा यही भय लगा रहता है। इस समय माँ बहुत दुबला गई है। उसका चित्त भी शान्त नही रहता। तिस्स! माँ को अब और अधिक हैरान न किया कर।" अनुला के मन में मां के लिये अनुकम्पा थी।

"अनु! क्या मैंने कभी भी माँ को हैरान किया है?

"मैंने किसी और हैरानी की बात नही कही। तुम्हारे अत्यधिक मटर-गश्ती करने से ही माँ को कष्ट होता है।"

"अनुला क्या कोई सुबह से शाम तक बेकार घर बैठा रह सकता है?

8

रहने और बीच-बीच मे 'हामी-भरते रहने से अधिक कुछ बातचीत कर सकने लायक आयुर्वेदीय जानकारी जिनदास को न थी। तिस्स बीच-बीच मे वैद्यराज से प्रश्न पूछता हुआ, उसके साथ शास्त्रार्थ-सा करने लगा। नाडी-विद्या के बारे मे वैद्य-राज का कथन सुना, तो तिस्स ने पूछा—'रोगी की नब्ज पर हाथ रखने से उसके हृदय की धडकन की जानकारी होने के अतिरिक्त और किस बात का पता चल सकता है ?"

"नाडी-विद्या बडा गम्भीर शास्त्र है।"

"नाडी देखकर कुछ वैद्यराज रोगी का खाया पिया भी बता देते है न ?'

"मै यह नही कहता कि नाडी से रोगी के खाये-पीये का पता लग सकता है। लेकिन तब भी नाड़ी से बहुत-सी बातो का पता लग सकता है 'कहते हुए वैद्यराज ने चुरुट का टोटा आंगन मे फेंक दिया।

"हां जो गो-मांस खाने से मना किया करते है, वह किसलिये ? खाना है तो गो-मांस ही खाना चाहिये। लेकिन हाँ उन्ही लोगो को जो उसे हज्म कर सकते हों।"

"गो-मांस गर्म होता है, और अस्वास्थ्यकर होता है।"

सिंहल वैद्य जो गो-मांस खाने का निषेध करते है, वह दूसरे ही कारण से। संस्कृत वैद्य-पुस्तको के लेखक हिन्दू है। वे लोग 'गो-को देवता' की तरह पूजा करते है, वे लोग गो-मांस नही खाते। यदि सस्कृत वैद्य-ग्रन्थों के लेखक 'मुस्लिम ऋषि' होते तो क्या वे सूअर के मांस को निषिद्ध नही ठहराते।'

"इस्लाम-धर्म मानने वाले लोग कभी भी 'ऋषि' नही हो सकते !"

"इस्लाम-धर्म माननेवाले कहेगे कि हिन्दू-धर्म माननेवाले कभी भी 'खलीफा' नही हो सकते।"

'खलीफा ?"

"हां, इस्लाम-धर्म मानने वाले ऋषियो को ही 'खलीफा' कहते है।"

तिस्स की जिग्ह से वीर-श्री वैद्य को गुस्सा आ सकता है, सोच, जिनदास बोला—

"मैं कभी भी गो-माँस नही खाता। मुझसे इसका मेल नही बैठता। खा लूँ तो कुछ-न-कुछ 'शिकायत' हो जाती है।"

'यह 'बडे भाई को हो जा सकती है। लेकिन कितने लोग है जिन के लिये गो-माँस स्वास्थ्य-प्रद सिद्ध होता है? मणिमेल प्रति सप्ताह तीन-चार बार गो-माँस खाता है। परसो रात रेलवे-लाइन पर एक बछडा कट गया, मणिमेल तथा और दो जने उसके मरने से पूर्व ही उसकी टाँग काट कर ले भागे। अफसर महाशय उन्हे पकड़ने की कोशिश करने लगे, तो इससे पहले ही वे उस माँस को पका-खाकर खत्म भी कर चुके थे। मनेल को कोई रोग नही हुआ। वह आदमी एक साथ पाँच आदमियो को पीट सकता है।"

"वे लोग खाने-पीनेवाले राक्षस है!" जिनदास का तर्क था।

"तो क्या भले-आदमियो को ही गो माँस रास नही आता?

"भले आदमी गो-माँस खाते ही नही।"

'हमारा विवाद इस विषय पर नही है कि भले आदमी माँस खाते है या नही? शास्त्रार्थ का विषय है कि गो-मास स्वास्थ्य के लिये हानिकर है या नही?"

"जिन नये लड़कों ने अंग्रेजी" स्कूलों मे पढना शुरू किया है, उनके विचार ऐसे ही है, जिनदास वैद्यराज की ओर देखता हुआ कहने लगा।

इसके बाद उन लोगो मे प्रेत-पिशाचो के बारे मे बातचीत होने लगी। भूत-प्रेत भगानेवाले के बारे मे वैद्य राज ने भी तिस्स की तरह भूत-प्रेत भगाने वालों की निन्दा की। लेकिन जब तिस्स ने प्रेत-विद्या को 'एक झूठी-विद्या' ठहराया तो वैद्य तिस्स के साथ यह कहकर शास्त्रार्थ करने लगा कि प्रेत-विद्या 'एक गम्भीर-विद्या' है। मन्त्र-शास्त्र की बात करते करते वे समुद्र मे रहने वाली मछलियो की बात करने लगे।

"समुद्र की मछली यदि स्थल पर आ जाय, तो वह जल-मूर्छा के कारण मर जाती है' वीर श्री ने कहा।

"जल-मूर्छा!" तिस्स ने चकित होकर प्रश्न किया। "पानी में से मछली बाहर आती है, तो वह सांस न ले सकने के कारण मर जाती है।'

"सास न ले सकने के कारण! 'जिनदास ने भी चकित होकर प्रश्न किया।' क्या सास लेने के लिए मछलियो को नथने होते है ?"

"मछलियाँ मुँह से सांस लेती है। जो पानी मुँह से पिया जाता है, वे उसमें से गले की झिल्ली के सहारे 'आक्सीजन' को पृथक कर लेती है, वे साँस लेती है, यह इसी अर्थ मे कहा है। मछली केवल पानी मे से ही 'आक्सीजन' खीच सकती है, क्योकि उसके नथने नही होते, इसलिए वह स्थल पर सांस नही ले सकती।"

यद्यपि वीर श्री पुरान-पन्थी ही था, लेकिन तो भी बुद्धिमान था। इसलिए वह तिस्से के तर्क को सावधानी से सुनता रहा। वीर श्री ने भी सोचा कि यह बात ठीक ही हो सकती है कि हिन्दु "ऋपियो" ने 'हिन्दु' होने के कारण ही गो-मास का निपेध किया हो। इतना होने पर भी तिस्स का 'तर्क' सुनने मात्र से ही उसने अपना मत नही बदला।

"आज कल पढने लिखने वाले लडके हर पुरानी बात को मिथ्या कहते है। लेकिन इससे क्या ? यदि तिस्स को भी कोई बिमारी हो जाय, तो फिर वैद्य-राज से ही इलाज कराना होगा, "जिनदास बोला।

"यह सारा दोष ईसाई-स्कूलो की पढाई का है।" वैद्यराज ने अपना मत प्रकट किया।

"ईसाई-स्कूलो में पढने जाने का दोष! मैने सत्य-मिथ्या बात का विवेचन किया है, धर्म की चर्चा नही की।"

"इसाई स्कूल में पढने जाने वाले लड़के बहुधा ईसाई पक्ष का ही समर्थन करते हैं।"

"इन लड़को को पादरी आसानी से उल्लू बना देते हैं। वे मिठाई खिलाकर लड़कों को उल्लू बनाने की कला जानते है," कहते हुए जिन-दास ने वैद्य-राज के मत का समर्थन किया।

"पुराने ग्रन्थों मे जो झूठी —भयानक रूप से झूठी बातें भरी पड़ी है, उनमे यदि विश्वास नही किया जाता तो इसका कारण ईसाई-स्कूलों मे जाना नही, बल्कि सच्ची यथार्थ बात की जानकारी होना है।"

रात के आठ बज चुके थे, लेकिन अभी तक नन्दा के गर्भ के 'शिशु' ने इस लोक का प्रकाश नही देखा था। जब वीर श्री ने समझा कि अब उसे अगले दिन सुबह तक यही रहना पडेगा तो उसने 'बडे घर' पर ही खाना खा, फिर बरामदे मे बिछी आराम-कुर्सी पर पसर एक चुरुट सुलगा ली। बलदास और विजय भी 'बडे घर' पर ही वह रात बिताने के लिए चले आये। तिस्स ने फिर वैद्य-राज से शास्त्रार्थ नही किया।

मेघाच्छन्न आकाश में तारे ऐसे चमक रहे थे, मानो धूम्रयुक्त नील वर्ण वस्त्र से बिजली के बल्ब आच्छादित हों। यद्यपि थोड़ी भी हवा नही चल रही थी, तो भी न केवल आंगन के वायु-मण्डल मे बल्कि बरामदे मे भी नमी और शीतलता थी। 'बडे घर' के पीछे की ओर जो जामुन का पेड़ था, उसके पके फल खाने के लिए जो चिमगादड आते थे, उनके परो की आवाज, बरामदे मे आराम-कुर्सी पर लेटे वैद्य को भी सुनाई दे रही थी। क्योकि आकाश मे वर्षा के बादल थे, इसलिए दूसरे दिनों अहाते मे से तेलियों-पतङ्गो द्वारा वीणा-बाँसुरी तथा खड़ताल का किया जाने वाला वादन आज नही सुनाई दे रहा था। दीवार पर टंगे लैम्प के द्वारा आंगन और बरामदे का प्रकाश कुछ कम हो गया था सही, लेकिन आंगन मे जो देव और नारियल के पेड़ खड़े थे, उनकी छाया जहाँ जहाँ भी पड़ रही थी, वह सारा प्रदेश, अन्धकार पूर्ण था। 'बडे-घर' से थोड़ी दूरी पर उस अन्धकार में ग्राम-सभा-सड़क के ऊपर चढ़ती उतरती रोशनी वैद्य-राज के आश्चर्य का विषय न थी।

क्योंकि वह यह जानता था कि हाथ में सूखी डण्ठलों की मशाल लिये कोई न कोई ग्रामीण उसी के घर की ओर जा रहा होगा। मेघान्धकार के कारण उस दिन की हवा अन्य दिनों की अपेक्षा भारी थी। रात्रि के समय में भी इस निश्चलता में थोड़ी सी चञ्चलता उस समय आई, जब घर का कुत्ता बीच बीच में भौंकने लगा और जब बाड़े में बँधा हुआ बच्छा रभाने लगा।

परिच्छेद/९

रात के लगभग एक बजे नन्दा ने एक बालक को जन्म दिया।

प्रात.काल चाय पी चुकने के बाद वीर श्री वैद्य भी बड़े-घर से चला गया। नन्दा सुख पूर्वक थी, किन्तु 'शिशु' को तकलीफ हो रही थी। तीन दिन गुजरने पर जब शिशु का चेहरा कुछ विकृत होने लगा, तब गाल्ला से डाक्टर को बुलवाया गया। वह 'बडे-घर' पहुँचा, तब तक शिशु को मरे पाँच घण्टे बीत चुके थे। रो रोकर कुछ रुग्ण सी हो गई नन्दा के लिए दवाई तजबीज कर चुकने के बाद डाक्टर ने मृत-शिशु के शव की परीक्षा की। उसके बाद वह नन्दा के कमरे मे गया। वहाँ मेज पर एक भोथरी कैंची पड़ी हुई थी। डाक्टर हाथ मे उठा कर उसकी परीक्षा करने लगा।

"शिशु की नाड़ इसी कैंची से काटी गई होगी," डाक्टर गुण वर्धन बोला।

"हाँ," मातर-स्वामिनी ने उत्तर दिया।

कैंची जहाँ पडी थी, उसी जगह रख कर डाक्टर वड़े कमरे मे गया। उसने जिन-दास के दिये हुए पच्चीस रुपयो को संभाल, उन्हे पतलून की जेब मे डालकर ही इधर उधर देखा। उसी समय कमरे से बाहर आई मातर-स्वमिनी डाक्टर के कुछ समीप थी।

"दाई की गलती से ही शिशु की मृत्यु हो गई होगी। भोथरी कैंची ने नाड़ काटने की कोशिश करते समय नाड खिंच गई। उसी दर्द के कारण बच्चे को ज्वर आ गया होगा और उसी से यह रोग उत्पन्न हुआ, जिसने शिशु की जान ही ले ली। यह कैंची एक दम भोथरी पड़ गई है--किसी मुर्दे की नाक काटने के योग्य है।"

डाक्टर के चले जाने के वाद जिनदास दाई के साथ झगड़ने के लिये तैयार हुआ। मातर-स्वामिनी ने उसे शान्त करने के लिये कहा--

"केवल उस औरत की ही नही, गलती हमारी भी है। अच्छी केंची उसी मेज पर पड़ी थी। पुरानी कैंची पता नही उसी मेज पर लाकर किसने रख दी! दाई ने विना पूछे विना खोजे, जो भी कैंची हाथ लगी, उसी से नाड काट दी।"

क्योंकि उसका रोग बढा नही था, इसलिये नन्दा कुछ ही दिन मे चगी हो गई, और छः महीने वीतते वीतते वह पूर्व की तरह सुन्दर रूपवती लगने लगी। लेकिन उसका पति पहले की अपेक्षा वहुत दुबला हो गया था। उसके चेहरे पर का संतोप भी वहुत करके जाता रहा था। नन्दा जानती थी कि इसका कारण 'शिशु' का मरण ही नही है, वल्कि गरीवी की वजह से हमेशा हाथ का तंग रहना है। जव से नन्दा 'वडे-घर' आई थी, खाने-पीने का सारा खर्च जिन दास ही वहन कर रहा था। नन्दा की वीमारी के निमित्त जो खर्च उसे करना पडा, वह इतना अधिक नही था, लेकिन इस अवस्था मे उतना खर्च भी उसके लिये दुर्वह था। इसीलिये उसने नन्दा के स्वर्णाभरण गिरवी रखकर पैसा लाकर खर्च किया था। उसके अपने घर के बगीचे से जो थोडी आमदनी हो जाती थी, 'वडे-घर' आकर रहने के वाद से वह भी उसके हाथ नही लगी थी। उसकी वहन वही नारियल आदि सभी फल तुडवा कर उन्हे वेच लेती।

क्योंकि जिनदास को अव और कोई दूसरी आमदमी नही थी, इस इसलिये उसने अपनी दो छोटी-छोटी जमीनो की टुकड़ियो को 'जुताई' पर दे देने से उसे जो पैसा मिला, पहले वह ही खर्च किया। उसके वाद जो कर्ज लिया था, उसे खर्च किया। डाक्टर को लिवा-लाने पर जो पैसा खर्च हुआ वह नन्दा के ही सोने के गहनो को वेचकर प्राप्त किया गया था। अव वह वडे-घर' नही रहना चाहता था, तो भी नन्दा को लेकर उसने जो अपने घर वापिस लौटने का विचार नही किया, उसका कारण था कि अव वह जमीन से पहले जितनी आमदनी की भी आशा नही कर सकता था।

हाथ तग हो जाने से, अब कोई दो महीने से, जिनदास खाने पीने के लिये शायद ही कभी कुछ खर्च करता हो। इसलिये जैसे भी कतर-व्यूत करके सभी के खाने-पीने की व्यवस्था अनुला ही कर रही थी। 'वडे-घर' के वगीचे से हो सकने वाली आमदनी किसी भी तरह यह सारा खर्च चलाने के लिये पर्याप्त नही थी। नन्दा कभी-कभी कुछ सिलाई-बुनाई का काम कर लेती। उस सिलाई-बुनाई के काम को वह सादा के हाथ या तो दूसरे गाँव या गाल्ल बेच आने लिये भिजवा कर उससे जो कुछ प्राप्त करती, वह घर का खर्च चलाने के लिये अनुला के हाथ पर रख देती। इतना होने पर भी तरह तरह की हैरानियो से परेशान अनुला गुस्से के मारे नन्दा पर जो व्यङ्ग-बाण छोडती वह इसीलिये कि वह जिनदास को कुछ न कह सकती थी।

शायद इसीलिये, क्योकि अनुला जिनदास को सीधे कुछ कह-सुन नही सकती थी, एक दिन उसने सकेत से चले जाने के लिये कहने' जैसी बात की। उसने बिना उम्बल-कड[1] की नारियल की चटनी के साथ सादा के हाथ भात भिजवा दिया। नन्दा ने मेज की ओर देखा तो सादा को कहा कि 'उन्हे' अभी भोजन की तैयारी की सूचना न दे और स्वय रसोई-घर की ओर गई। उसने सादा के द्वारा 'गहल' के दो पोधे उखड़वाये, उनकी जड़ मे से अपेक्षित हिस्सा कटवा, धोया, उबाला और बाद मे उस से सब्जी पकाई। लहसुन की एक गाँठ मँगा, उसकी फाँके कर, उस पर काली मिर्च का चूर्ण छिडक, उसके साथ 'गहल' की सब्जी खाने की मेज पर भिजवाई।

"सारा विधि विधान पूरा होना चाहिए। थोडी भी कमी नही रहनी चाहिये।" रसोई-घर मे घुसी अनुला ने बहन पर व्यङ्ग किया।

---

१. सूखी मछली के छोटे छोटे टुकडे, जो मिर्च मसाले की तरह हर साग-सब्जी मे डाले जाते है और जिनके बिना सिहल वासियो को भोजन रुचता ही नही।

"लाकर देने के समय तक सब अच्छा है। असमर्थ होने पर झूठ मूठ दरिद्रता का प्रदर्शन किया जाता है।"

"हाँ, वहुत कुछ लाकर दिया है और मैंने उसे स्वार्थ-वुद्धि से छिपा लिया है।"

"छिपा लिया है, किसने कहा? इतना अधिक लाकर देने के लिये हमारे पास रखा कहाँ है! उन्होंने सामर्थ्य भर ला दिया।"

"तो हमको ला लाकर देने के ही कारण तुम्हारे 'पति-देव' का हाथ तंग हो गया है।"

"उनका हाथ तंग रहने की वात हम किसी से कहने नही जाते।"

"हम भी अपनी 'तंग-दस्ती' की वात किसी से कहने नही जाते।"

"तो अभी अभी जो कही?"

"हमने जो कहा, वह यही जानने के लिये कि कभी थोडी कमी रह जाने से क्या कुछ खरावी है!"

"यह हमे दिखाई देता है कि इस सव का कारण 'तंग-दस्ती" नही है।"

जो कुछ हमारी सामर्थ्य मे है, वह इतना भर ही है, "कहते हुए अनुला ने चूल्हे मे जल रही लकडी को वाहर खीच, राख के नीचे दवा कर वुझा दिया।

नन्दा और अनुला की वात-चीत सुनकर रसोई-घर में चली आई मातर-स्वामिनी वोली—'क्या है यह वार्तालाप! दोनो वहनें झगड़ने जा रही हैं। अनु, वाहर जा।"

मा की आज्ञा सुन कमरे से तुरन्त वाहर गई अनुला आँगन मे पहुँच हँसने लगी और उसी समय चहारदीवारी के दरवाजे की ओर वढ़ गई। वह वहाँ सादा के साथ वात चीत करने गई थी। चहारदीवारी के दरवाजे के पास पहुँचने पर उस की भेंट सादा की वजाय पत्थरों की ढेरी पर वैठे हुए तिस्स से हुई।

"तिस्स! इस प्रकार मुँह लटकाये क्यो वैठा है।"

"अनु ! मैं उदास नही हूँ ।"

"तो क्या किसी गम्भीर चिन्तन मे निमग्न है ।"

"विजय ने मुझे अपना 'शहबाला' बन कर चलने के लिये कहा है । मैंने बड़ी कोशिश की कि इससे जान बचा लूँ, लेकिन वह माना नही । न गया तो वह गुस्से हो जायगा ।"

"क्या विजय का विवाह शीघ्र ही होने वाला है ?"

"अगले महीने की दस तारीख को ।"

"इसका मतलब है कि अब केवल तीन सप्ताह शेष हैं ।"

"मैंने पहनने के लिये कपडे न होने के कारण ही असमर्थता प्रगट की ।"

'विजय तिस्स के हर किसी काम मे सहयोग देता है ? न जाने से वह गुस्से होगा ?"

"यह ठीक होने पर भी अनुला, मैं कैसे जा सकूँगा ?" क्या मेरे पास जाने के लिये कपडे है ? यदि उसे कहूँ कि कपडे नही है तो वह कपडे सिलवा देगा । लेकिन इस बात का उसे पता लगने देना, तो हमारे लिये लज्जा की बात है ।"

"कपड़े न होने की बात उसे मत कहना । बन पडे तो किसी तरह च निकलने की कोशिश करना । अपनी 'तंग-दस्ती' की बात उन लोगो को भी पता लगने देना अच्छा नही ।"

"मैंने भर सक बच निकलने की ही कोशिश की । लेकिन विजय से जान बचानी मुश्किल है । कहता है—चलना ही पडेगा ।"

"कपड़ों के लिये कितने—कुछ रुपये दरकार होंगे ?"

"एक सूट बनवाना पडेगा । जूते चाहिये, टोपी पुरानी है, तो भी उसी से काम चल जायगा ।"

"सूट और जूतो के लिये कितना-कुछ लगेगा ।"

"लगभग तीस रुपयों मे पुरा जायगा ।"

"किसी भी तरह बच निकलना असम्भव है, तो मै अपना स्वर्णाभरण गिरवी रखकर, रुपया मँगया कर दे दूँगी ।"

नये नये कपडे पहन कर शहबाला की हैसियत से जाने की लालसा तिस्स के मन मे भी थी । नये कपडो के अभाव मे उसने विजय के प्रस्ताव को अस्वीकार करने की कोशिश की थी, इस लालसा को जैसे-तैसे दबाकर ही ।

"दूसरो की चीज गिरवी रखने पर मै उसे कैसे छुडाऊँगा ? मेरे पास कहाँ से आयेगा ?"

"किसी न किसी सम्भव उपाय से मै छुडा लूँगी । कठिनाई है कि कोई गिरवी रखने जाने के लिये ही नही है । माँ की गालियाँ सुन चुकने के बाद से अब कत्तिरिना हमारे घर के आस-पास से भी नही गुजरती । पहले जरूरत पडने पर हम कत्तिरिना के हाथो ही कोई चीज गिरवी रखने के लिये भिजवा देते थे ।'

"पियल की माँ ही न चीजें गिरवी रखती है ?"

"उनके यहाँ कौन अपनी चीज गिरवी रखने जाता है ! ऐसा करने से हमारी सब हालत उन पर प्रकट हो जायगी ।"

"तो फिर किस तरह इस कार्य को निपटाया जायगा ?"

"मै सादा के हाथ गाल्ला भेज कर सेठ-दुकानदार के यहाँ गिरवी रखवा दूँगी । तिस्स तू सादा के साथ गाल्ला जाकर, उस से मिले रुपये लेकर, वस्त्र सिलवा लेना ।"

जिनदास नही जानता था कि एक दिन अनुला ने 'सकेत से चले जाने की बात' कहने के समान, उसे बिना 'डम्बल-कड' की चटनी भिजवा दी थी । नन्दा ने भी यह बात उसे कभी नही कही । ऐसा होने पर भी वह जानता था कि अनुला तथा नन्दा परस्पर प्रसन्नता पूर्वक नहीं रह रही है । इससे दो महीने पहले ही जिनदास विचार कर रहा था कि तग-दस्त हो जाने के कारण अब उसे उत्तर-प्रदेश (=सिंहल) जाकर कोई रोजगार करना चाहिये ।

"नन्दा, यदि इस तरह मै घर पर यूँ ही बैठा रहूँ, तो कैसे चलेगा ? मैं सोच रहा हूँ कि कोई छोटी-मोटी दुकानदारी करने के लिये ही, मैं 'सिहल' चला जाऊँ ।"

नन्दा ने आलमारी के नीचे रखी हुई नारियल के तेल की बोतल ली और उसमे से कुछ तेल बुझने जा रहे दीपक मे डाल दिया। इसके बाद उँगली के सिरो से पकड़ कर दीपक की बत्ती थोड़ी आगे बढा दी। नये तेल से सीची गई बत्ती मे से सुकोमल नया प्रकाश प्रगट हुआ।

"दुकानदारी करने जाने के लिये पास रुपया-पैसा होना चाहिये न ?" नन्दा ने प्रश्न किया।

"घर पर के बगीचे का अपना हिस्सा गिरवी रख कर मैंने साढे सात सौ रुपये प्राप्त किये थे। उनमे से दो सौ कर्ज उतारने मे गये। बाकी साढे पाँच सौ रुपये पास है। मैंने उनमे से एक भी पैसा ख़र्च नही किया।"

"खर्च नही किये, यही अच्छा किया। गाँव मे रहे, तो ये रुपये भी धीरे-धीरे समाप्त हो जायेंगे। मैं नही चाहती कि तुम किसी दूर की जगह पर चले जाओ। लेकिन बिना बाहर गये भी चारा नही।"

"मैंने 'सिंहल' के लिये प्रस्थान करने को शुभ-दिन और शुभ-मुहूर्त भी पूछवा लिया है।"

"किस दिन ?"

"परसो।"

"परसो ?" का शब्द उच्चारण करते समय शोक के भार से दबा हुआ नन्दा का सिर नीचे झुका था। फिर उसने सिर उठाकर अपने पति को निहारा।

"अच्छा तो जायें। टालने से क्या फायदा ? जाकर संभल कर, सोच विचार कर काम करें। मैं जैसे बनेगा वैसे अपनी गुजर चला लूँगी।"

नन्दा की दोनो आँखें सजल थी। उन्हे देख जिनदास की आँखें भी भर आईं।

"मैं जाकर हर महीने थोडा-थोडा पैसे भेजने का प्रयत्न करूँगा।"

"पैसा मत भेजना। जब व्यापार में कुछ तरक्की हो जाय, तब भेजना। तब तक मै जैसे बनेगा, चलाती रहूँगी। दुकानदारी किस जगह करने का विचार है?"

"बिबिले-ग्राम में।"

"बिबिले मलेरिया-प्रदेश में है न? क्यो क्या किसी दूसरी ओर नही जा सकते?"

"किसी दूसरे प्रदेश में जाकर व्योपार करने के लिये पास मे अधिक पूँजी होनी चाहिये। 'बिबिले' अच्छी जगह है। कम खर्च मे गुजारा हो सकता है। पास मे अधिक पूँजी न भी हो, तो भी उस प्रदेश में दुकान-दारी की जा सकती है।"

"यदि कही बुखार आ जाय?"

"नन्दा, ज्वर से डरे रहकर काम नही चल सकता। मै सावधानी रखूँगा कि ज्वर से बचा रहूँ।"

"माँ को भी कह देना। माँ ने उस प्रदेश के बारे में सुन रखा होगा," कहती हुई नन्दा आसन से उठी और उसने अपने कमरे का दरवाजा आधा बन्द कर दिया। जिस समय उन दोनों के बीच यह बात चीत चल रही थी, उस समय 'बड़े-घर' के दूसरे सभी लोग सो रहे थे।

फूटी हुई खपरैलों के बीच में से आने वाली वर्षा की बूँदें, बरामदे मे, बक्से पर तथा जब तब चटाई पर भी पड़ रही थी। उनकी आवाज रात के समय जागते रहे जिनदास तथा नन्दा को भी सुनाई दे रही थी। उनके कमरे मे की अलमारी पर भी वर्षा की बूँदें पड़ रही थी। नन्दा ने एक पुरानी बोरी लेकर उसकी गेण्डुरी बनाई और उसे अलमारी पर ठीक उस जगह रख दिया, जहाँ वर्षा की बूँदें टप टप कर रही थी। वर्षा

आरम्भ होते ही जो 'बडे-घर' की छत चूने लग जाती थी, वह इस बात की सूचना देती थी कि कई वर्षों से छत की मरम्मत नहीं हुई है और वह क्रमशः जीर्ण होती जा रही है। छत के नीचे इकट्ठी हुई धूल-धक्कड़ हवा चलने पर घर भर मे फैल जाती है। यद्यपि सादा ने नारियल की छड़ मे बाँधी हुई लकड़ी से कई बार मकड़ी के जाले हटा कर छत की सफाई की थी, लेकिन हवा चलने पर धूल-धक्कड़ का गिरना होता ही था। घर और छत की मरम्मत होने से ही इनका गिरना रुक सकता था।

इधर कुछ समय से जिस 'बड़े-घर' मे चूने की पुताई तक न हुई थी, उसकी जमीन से सटी दीवारे, यदि किसी उजाड़-घर की-सी नही लग रही थी, तो इसका कारण था उस घर मे रहने वालो का परिश्रम। दोपहर के समय यदि कोई भी उस 'बड़े-घर' की दीवारो पर नजर डालता तो उसे यह बात स्पष्ट हो जाती कि न केवल एक बार बल्कि कई बार नारियल के छिलके से रगड़ रगड़ कर दीवारो पर की काई साफ की गई है। यद्यपि चूना नही पोता गया था तो भी बाहर की दीवार की मरम्मत जगह-जगह की गई थी। वह ऐसी प्रतीत होती थी जैसे कोई ऐसी चादर हो जिसमे जगह जगह थेगली लगी हो। न जाने घर की दीवार की ओर देखकर कितने लोग यह समझ सकते थे कि 'बडे-घर' के अधिवासी बाहर के लोगो से अपनी 'तंग-दस्ती' छिपाये रखने का कितना प्रयास करते है।

फूटी हुई खपरैलो मे से चारपाई और चटाई पर 'टप-टप' करके गिरने वाली बूँदों की आवाज नन्दा को सुनाई देती थी। वह अपने कमरे मे से निकल थोड़ी दूर के एक कमरे मे चली गई। वहाँ अपने कमरे और छत के बीच में के छिद्र मे से आने वाले थोड़े से प्रकाश मे, दीवार के पास सोता हुआ तिस्स दिखाई दिया। नन्दा जान गई कि 'टप-टप' आवाज करती हुई पानी की बूँदें तिस्स की चारपाई और चटाई पर ही गिर रही है और तिस पर भी तिस्स घोर-निद्रा मे निमग्न है। तिस्स की ऊपर नीचे आने जाने वाली गहरी साँस इसका प्रमाण थी। उसे

जगाना अच्छा नही, सोचा नन्दा ने, उसकी चारपाई एक ओर खींची। तब पानी की बूँदें चारपाई की बजाय जमीन पर गिरने लगीं।

कमरे मे आई हुई नन्दा से जिनदास ने पूछा—'क्या तिस्स की चारपाई भीग रही है ?'

"हाँ, तिस्स गाढ निद्रा में है।"

"घर की दीवार भी भीग रही होगी। दीवार का भीगना अच्छा नहीं।"

"दीवार नही भीग रही है। काफी समय से खपरैल नही बदलवायी जा सकी है," कहते हुए नन्दा अपने स्वामी की चारपाई पर ही बैठ गई।

"यदि खपरैल न बदली जाये तो छत के शहतीर और कड़ियाँ भीग भीग कर सड़ जा सकती हैं।"

"शहतीर और कडियाँ यद्यपि पुरानी है, लेकिन लकड़ी बहुत अच्छी है। केवल खपरैल ही बदलवाने की जरूरत है। घर बड़ा होने से खपरैल बदलवाने में भी काफी खर्च होगा।"

"तिस्स को गाँव में ही रहने देना अच्छा नही। कुसंगति में पड़कर खराब हो जा सकता है।"

"माँ ने तो तिस्स को कुछ काम करने के लिये भेजना चाहा था, हम ही ने नही जाने दिया। हमारा कहना था कि अभी कुछ और पढ-लिखने के लिये भेजा जाना चाहिये। लेकिन अब स्कूल में और नही भेजा जा सकता। तिस्स भी चाहता है कुछ 'काम' करना।"

'कुछ' 'काम' करने के लिये भेजना अच्छा है। बलदास के पास कुछ पैसा है। बेकार भी बैठा रहे तो भी उसकी कुछ हानि नही है। कही तिस्स भी ऐसा कर सकता है ?'

"विजय के विवाह के बाद तिस्स 'काम' करने के लिए जाने ही वाला है। उसका दिल अब गाँव में नही लगता।"

चारपाई पर लेटने के थोडी देर बाद ही जिनदास को नीद आ गई। लेकिन भविष्य की चिंता मे संलग्न नन्दा को एक घण्टे के बाद नीद आई।

जिनदास के 'सिंहल' जाने के चार सप्ताह के बाद तिस्स भी काम करने के लिये कोलम्बो चला गया।

शुभ-मुहूर्त पर कोलम्बु के लिए प्रस्थान करने से पूर्व अनुला तथा नन्दा ने पान के पत्तों मे दो दो रुपये लपेट कर तिस्स के हाथ में रखे। माँ ने भी तिस्स को दो रुपय दिये और उसका मुँह चूम साश्रु नेत्रों से बोली—

बेटा! अच्छी तरह रहना। गाँव की तरह रात मे कही मटर-गश्ती करने न जाना। कुसंगति से बचे रहना। 'काम' करते समय 'पढ़ाई' की भी फिकर करना।

तिस्स बड़े-घर से विदा हुआ तो उसका हृदय शोक से भारी था और दोनो आँखे साश्रु थी। तिस्स को स्टेशन तक पहुँचा आने के लिए बलदास और विजय भी साथ गए। बलदास ने रेल-गाड़ी के आने की प्रतीक्षा करते रहे खड़े तिस्स के हाथ मे पाँच रुपये का नोट दिया। तिस्स ने वह वापिस बलदास को दे दिया लेकिन उसने जोर-जबर्दस्ती करके वह पाँच रुपये का नोट तिस्स की जेब मे डाल दिया। जिस समय तिस्स गाडी के अन्दर बैठा था, विजय ने कागज मे लिपटी हुई कोई चीज उसकी गोद मे रख दी। उसी समय गाड़ी के चल देने की 'झक-झक' हुई।

"विजय, यह भेंट किस लिये!" तिस्स ने शोकाकुल स्वर मे पूछा।

गाड़ी के चल देने पर तिस्स ने प्लेट-फार्म पर खडे अपने दोनो मित्रों की ओर हाथ हिलाकर उनसे विदा ली।

"पहुँचते ही हमको चिट्ठी भेजना' बलदास ने चिल्लाकर कहा।

"पहुँचते ही चिट्ठी भेजूँगा।

"कोलम्बु की लडकियो के चक्कर मे न आ जाना। वह बड़ी चण्ट होती हैं", कहते हुए बलदास जोर जोर से हँसा।

तिस्स भी मुस्कराया, लेकिन कुछ बोला नहो।

बलदास और विजय दोनो वापिस लौट आए। उनका हृदय एक मित्र की विदाई के दुख से बोझल था।

"अरे ! उसका दिल बड़ा ही अच्छा है।"

"उसकी साथ चलने की इच्छा न रहने पर भी, हमारे बुलाने पर साथ हो लेता है। अहंकार छू नही गया है। हमे जहाँ कही जाना हो साथ चलता है, कोई भी काम करें उसमे हाथ बटाता है। हमे कहीं जाने से रोकने की कोशिश करने पर उसमे असमर्थ होने पर भी हमारे साथ आ जाता है।"

"बडी बहनो मे तो कुछ अहंकार है, लेकिन तिस्स को जरा भी नही छू गया है। उसके अपने मुँह से ही मुझे यह बात प्रकट हो गई कि शाह-बाला बनने के लिये उसने जो सूट सिलाया था, वह पैसा कर्ज लेकर।"

"क्यो, तुमने ही सूट क्यो नही सिलवा दिया ?"

"मुझे बाद मे पता लगा। मैंने पहले भी पूछा था, तो मना किया।"

"तिस्स बड़ा शर्मीला है। उसे शर्माने वाली एक बात भी सुनने को मिले तो उसे बड़ी तकलीफ होती है। वह घर से बाहर होने पर जो एक "भक्त' की तरह व्यवहार करता है, वह लज्जा-भय के कारण हो।"

"हमारे घर आने पर तिस्स या तो मेरे साथ बातचीत करता है, या माँ के साथ। छोटी बहन तक के साथ अधिक बात चीत नही करता। मेरी पत्नि के साथ तो और भी कम।"

"तिस्स के मन मे रूपवती स्त्रियो के साथ बात चीत करने की लालसा पूरी है," बलदास बोला। "तिस्स उन से प्रेम भी करता है। लेकिन लज्जा के कारण, जब वह स्त्रियो के बीच रहता है, गूँगा बना रहता है।'

"क्या तिस्स लयिसा के साथ भी बातचीत नही करता ?"

"नही न। लयिसा के साथ भी 'कदाचि कर्हिचि' ही बातचीत की है। क्योकि तिस्स लयिसा से अधिक बातचीत नही करता था, इसलिये लयिसा भी उससे वातचीत करती हुई डरती थी। न केवल लयिसा, बल्कि मेरा विचार है कि गाँव की सभी षोडशियाँ तिस्स से घबराती हैं।"

"घबराती हैं?"

"हाँ, घवराती हैं, क्योकि वे समझती है कि तिस्स 'भक्त' है, लेकिन तिस्स 'भक्त' नही है।'

"तिस्स ने वाद मे लयिसा के घर आना-जाना क्यों छोड़ दिया?"

"माँ ने मना कर दिया। अब मातर-स्वामिनी का, पहले की तरह कत्तिरिना के साथ उठना-बैठना नही है। एक दिन लयिसा के ही मुँह से यह वात प्रगट हो गई कि यदि कत्तिरिना 'बडे-घर' की ओर पैर भी रखे तो भी मातर-स्वामिनी अप्रसन्न होती है।"

"शायद यह वात तभी हुई हो, जब मातर-स्वामिनी ने यह सुना हो कि तिस्स लयिसा को देखने जाता है, विजय ने अपना मत प्रगट किया।

"यही कारण नहीं हो सकता। शायद इसका कारण कत्तिरिना का पियल के घर प्राय आना-जाना हो।"

"इससे मातर-स्वामिनी को क्यो गुस्सा आता है?"

"पियल ने नन्दा को 'कुछ' खिला दिया था—इस प्रवाद को क्या विजय भूल गया? सम्भवत. उसके मन मे शक हो कि कत्तिरिना के माध्यम से ही उसे 'कुछ' खिलवाया होगा। क्योकि अब उस स्त्री का पियल के साथ बडा-मेल-जोल है, इसलिये हो सकता कि उसे डर लगता हो कि फिर कुछ न खिला दे।"

"बहुत ठीक। अब बात मेरी समझ मे आई" कहते हुए विजय ने बलदास के मत को अपना लिया।

"अभी तक पियल के दिल मे मातर-स्वामिनी की बेटी के लिये जगह है। मुहदिरम-महाशय की मृत्यु के बाद से पियल का गाँव मे आना

जाना बढ गया है। मातर-स्वामिनी की बेटी जब से 'बडे-घर' आकर रहने लगी है, तब से पियल प्रति सप्ताह गाँव आने लगा है।"

"अब पियल हमेशा 'बडे-घर' जाता है न ?"

"हाँ, अनुला और मातर-स्वामिनी के साथ उसकी बोल-चाल रहने पर भी, वह बातचीत नही करती। उसके अहंकार का ठिकाना नही।"

"मातर-स्वामिनी की बेटी विवाहित है न ? इसलिये पियल के मन मे अनुला का पाणि-ग्रहण करने की इच्छा होगी।"

"नही बलदास ने तुरन्त उत्तर दिया।" अनुला विवाह नही करेगी। इससे पहले से भी कई प्रस्ताव किये जा चुके है। लेकिन उसने एक भी स्वीकार नही किया। अब अनुला की विवाह करने की आयु भी बीत गई है।"

"तो फिर पियल नन्दा से ही दोस्ती करने जाता है।"

"हो सकता है कि दिल मे यही रहस्य हो। लेकिन नन्दा इतनी आसानी से चकमे में आनेवाली स्त्री नही है।"

बलदास और विजय सीधे 'बड़े-घर' पहुँचे। जैसे ही मातर-स्वामिनी को उन पर नजर पड़ी, उसने तुरन्त तिस्स के बारे मे ही प्रश्न किया—

"तिस्स बहुत खेद के साथ घर से विदा हुआ है। रेल मे चढ जाने पर भी उसे कुछ संतोष था या नही।?"

"संतोष काहे का ! तिस्स की दोनो आँखें सजल थी। बडी मुश्किल से वह अपना रोना रोके हुए था", बलदास बोला।

"मैं यदि उसे पहुँचाने स्टेशन गई होती तो उसका शोक बढ जाता। इसीलिये मै स्टेशन नही गई।"

"खरगोश के बच्चे की फिकर रखना, यह बात तिस्स ने दो बार दोहराई," विजय ने कहा।

"उसे हमारी याद नही आई, याद आई खरगोश के बच्चे की, नन्दा ने मुस्कराते हुए कहा।

"नन्दा की याद रखने के लिये 'वह' है न ?" बदलदास ने चुटकी काटी।

"वह, कौन 'वह' ?" नन्दा ने आँखें तरेर कर कहा।

"श्रीमान जिनदास—पियल"

"बलदास ! मेरे साथ ऐसा वेहूदा मजाक करने की जरूरत नही," नन्दा ने डाँटा।

"मैने मजाक नही किया। न केवल जिनदास बल्कि पियल के मन मे भी अभी तक याद बनी होगी।"

"पियल को मुझे याद करने की क्या जरूरत है। मैंने बलदास को कहा न कि इस प्रकार का बेकार मजाक करने की जरूरत नही है।"

"मै मजाक नही कर रहा हूँ। मैंने सच्ची बात कही है। जेम्ज ने पियल के सामने कई प्रस्ताव रखे। लेकिन उसे उनमे से एक भी प्रस्ताव स्वीकृत नहीं।"

"यह बात मुझे कहने की जरूरत नही। यह बात पियल की माँ को कहने की है।"

"तो भी, नन्दा को भी यह जानकारी रहनी ही चाहिये।"

"मुझे जरूरत नही कि मै औरों की बातें जाना करूँ।"

"पियल नया-घर बनवा रहे है, सम्भवतः इसीलिये ताकि नन्दा को दिखाई देता रहे।"

"बलदास, बकवास बन्द कर।"

"पियल कितना अच्छा आदमी है। पैसा खूब है। निकट-भविष्य में ही एक मोटर-कार भी लाने वाला है।"

"बलदास की कोई हो तो उससे पियल की शादी कराई हो जा सकती है।"

"हमारी कोई हो भी, तो पियल उसे पसन्द नही करेगा।"

"क्यों ?"

"तुम्हारी वजह से...." कह कर वलदास नन्दा से कुछ दूरी पर खिसक गया।

नन्दा ने आराम कुर्सी पर पड़ा छोटा-तकिया उठाया और वलदास के मुँह पर दे मारा। तब वह वहाँ से भाग गई।

"वलदास जब भी आता है, तो नन्दा से मजाक करने जाकर गालियाँ ही खाता है," अनुला वोली।

"वलदास मुँह बन्द नही रख सकता। बड़बड़ाता रहता है।"

"नन्दा को बुलाना चाहिये।" विजय का प्रस्ताव था।

"मै यह नही कर सकती, वह मुझसे ही झगड़ने लगेगी"--अनुला ने उत्तर दिया।

"यदि नन्दा राजी नही है, तो अनुला तू राजी हो जा।" वलदास ने सुझाव दिया।

"क्यो वलदास! क्या अब मुझे बनाने की बारी है?"

"मै मजाक नही कर रहा हूँ। मै सच्ची बात कह रहा हूँ। पियल के पास पैसा खूब है।"

"अब वलदास ने 'शादी' में बीच-बचौलिया बनने का पेशा अपना लिया है।"

"नन्दा! जरा देर के लिये बहन तुझे बुला रही है," यह बात विजय ने कमरे मे बैठी नन्दा को सुनाई दे सकने वाले ऊँचे स्वर में कही।

'विजय! झूठ मत बोल, मैने नही बुलाया है, अनुला ने थोड़ा डाँटा।

"पियल कितना भी पैसा कमाये, उसकी माँ दिन-रात पैसा कमाने के ही पीछे पडी रहती है।" वलदास ने कहा।

"पियल की मां के लिये धन बटोरने में क्या कठिनाई है? वह लोगो की चीजें गिरवी रखती है, नारियल के छिलके (पानी में) डलवाती है, तथा जमीन का लगान वसूल करती है। अब फ्लन पर के

नारियल के छिलको के सभी बाड़ों पर उस औरत का ही अधिकार है। आज वह औरत नारियल के छिलके अलग करवा रही है।"

"ओहो! इसीलिये यह नारियल के छिलकों को कूटने की आवाज है। आज पत्तन पर औरतें ही औरतें होगी। विजय, चलो पत्तन की ओर चलें। आज मछलियो को भी घेरा जायगा।"

"यदि मछली मिले, तो हमारे लिये भी कुछ लेते आना" कहते हुए अनुला ने बलदास को पचास पैसे का सिक्का दिया।

"पैसा रखो। यदि मछली मिली तो हम लेते आयेंगे," कहते हुए बलदास विजय के साथ पत्तन की ओर गया।

पत्तन 'बडे-घर' की पत्थर की चार-दीवारी से कोई दो फरलाग की दूरी पर नदी के बीच मे प्रतिष्ठित था। वहाँ जाने के लिये यद्यपि 'बडे-घर' के दक्षिण की ओर ग्राम-सभा-सडक थी, तो भी बलदास और विजय दोनो 'बड़े-घर' के पिछवाडे से पत्थर की चार-दीवारी लांघकर, वहाँ से पत्तन तक जंगल के बीचो-बीच जो पगडण्डी थी, उसी से वहाँ पहुँचे। किरि-तिल्ल और तैल्ल-कोल आदि लताओ से ढँकी हुई तथा कदुरू और मिदेल वृक्षो की छाया वाली उस सडक पर सूखे-दिनो मे भी जोकों की कमी नही थी। सूखे पत्तो पर चलने से उत्पन्न होने वाली आवाज को सुनकर जंगल मे प्रविष्ट होने वाली बत्तखो की आवाज भी उन्होने सुनी। 'किरल' और 'कडोल' पेडो से आच्छादित, कीचड़ से युक्त किनारे पर आघात करने वाली लहरों से जो आवाज निरन्तर आ रही थी, उससे बलदास और विजय के कान भली प्रकार सुपरिचित थे। नारियल के छिलको के बालो को कूटने वाली स्त्रियो के हाथो मे जो कितुल की लकडी के मूसल थे, उनके द्वारा उन बालो को कूटने की आवाज अब उन दोनों के और भी अधिक समीप आ गई थी। वे दोनों छोटी नाली पर से कूद एक ओर नाले पर रखे हुए शहतीर पर से उसे पार कर पत्तन पर पहुँचे।

छतरी की छाया के नीचे बैठी पियल की मां तेपानिस नाम के नौकर द्वारा नारियल के छिलके गिनवा कर स्त्रियों को जो पैसा दिया जाता

था, उसका हिसाब जाँच रही थी। कुछ स्त्रियाँ पहले से कूट कर धूप मे डाले गये नारियल के वालो को इकट्ठा कर, रस्सियों से बने बोरो में दबा दबा कर डाल, उन्हे सिर पर रख अपने अपने घर की ओर जा रही थी। दूसरी स्त्रियाँ कंचुकी बाँधे, नारियल के पेड़ के नीचे बैठी हुई अभी भी नारियल के छिलके कूट रही थीं।

"बलदास महाशय क्या मछलियो का पकड़ना देखने के लिये ही इधर आये है," पियल की माता ने पूछा।

"हाँ, हम इसी के लिये आये हैं। नारियल के छिलके क्या स्थल पर ढो लिये गये है?"

"हाँ, सब ढो लिये गये है। तेपानिस के ये बचे हुए नारियल के थोडे से छिलके गिन लेने तक खड़ी देख रही हूँ।"

डोगी को पानी में धकेल कर 'मछलियो का वाडा' देखने जाने की इच्छा से बलदास डोंगी खोजने गया।

"क्यो व्यर्थ पाप इकट्ठा करने जा रहे हो। क्या मछलियो का पकडे जाना देखते रहना भी पाप नही है?"

"थोड़ा सा 'पाप' भी हुआ तो भी कोई हर्ज नही," कहते हुए बलदास ने डोगी को पानी मे धकेला और उस पर सवार हो गया।

"अरे थोड़ा नही, बहुत पाप होगा। व्यर्थ में 'पाप' न कमा, घर जा। अम्मा जान गई तो गालियाँ देंगी," पियल की माँ ने जिरह की।

उसके धर्मोपदेश को सर्वथा अनसुना कर बलदास ने विजय के भी डोंगी पर आ बैठने पर, डोगी को 'मछलियों के वाड़े की ओर खेया।

मछली-मारो ने सात आठ महीने पूर्व नदी मे जहाँ शाखायें गाडो थी, उस जगह को घेर कर, रात के समय सरकण्डों की सिरकी खीच दी थी। सुबह के समय उन्होने शाखायें अथवा पत्र-विहीन टहनिया उखाड़ उखाड कर एक ओर फेंकते हुए, उस बाड़े को क्रमशः छोटा करते हुए, अन्त मे एक सरकण्डे की बनी हुई सिरकी के पिंजरे में

मछलियो को फँसा लिया। जाल को लेकर एक मछली-मार उस पिंजरे में उतरा और उसने वहाँ फँसी हुई कोलिय, कट्ट मस्स, पैना, गोडय, लील, बढोर आदि मछलियों को छान कर डोंगी मे डाल देने के लिये दिया। बलदास और विजय दोनो ही इन मछलियों का पकडना देखने के लिये ही आये थे। मछली-मारों द्वारा बाड़े मे प्रविष्ट हुई मछलियों का पकड़े जाना समाप्त होने तक देखते रहने वाले बलदास और विजय ने कोई एक रुपये की मछली खरीदी और अपनी डोंगी को वापस ले लाये।

परिच्छेद/१०

एक दिन मित्र-मण्डली के साथ नदी मे डोंगी की सैर करके जब वलदास वापिस पत्तन पर लौटा तो दोपहर हो गई थी। जब मित्र-मण्डली अपने अपने घर वापिस लौट गई, तो वलदास नदी-तट से आरम्भ होने वाली पग-डण्डी से चलकर, पत्थर की चहार-दीवारी लाँघ 'वडे-घर' के पीछे के दरवाजे से आँगन मे आ पहुँचा।

"तिस्स के जाने के दिन के वाद से वलदास का आज ही इधर आना हुआ है," दरवाजे पर खडी अनुला वोली।

"लगभग एक महीने से मुझे तिस्स से चिट्ठी नही मिली। क्या इधर उसकी कोई चिट्ठी आई है?"

"हाँ, परसो ही एक चिट्ठी मिली है। वलदास के वारे मे भी पूछा है। उस दिन जो मछली भिजवाई, उसके लिये अनेक धन्यवाद। वह मछली कितने की थी?"

"कौन सी मछली?"

"जिस दिन तिस्स कोलम्बु गया था, उस दिन जो मछली भिजवाई थी।"

'अरे! वह मछली?"

"हाँ।'

"वह मछली पियल की माँ ने ले दी थी। नन्दा को देने के लिये कहा था," वलदास ने नन्दा को भी सुनाई दे सकने वाले ऊँचे स्वर में मजाक किया।

अनुला ने घर से वाहर निकल, केवल वलदास को ही सुनाई देने लायक आवाज मे धीरे से कहा—

"पियल सामने के वरामदे में वैठा माँ के साथ वातचीत कर रहा है। मजाक न कर, वह सुन लेगा।"

"पियल गाँव कब आया है ?" बलदास ने आश्चर्य से पूछा ।

"कल ।"

"पियल की माँ से कल मेरी भेंट हुई थी । उसने मुझे यह जानकारी नही दी ।"

"उसको पैसा ही पैसा कमाने की धुन है । अब ठीक ठीक वता दो कि मछली के लिये कितने पैसे दिये ?"

"एक रुपया । लेकिन मुझे वह चाहिये नही," कहता हुआ बलदास पिछवाड़े के दरवाजे से घर मे आ घुसा ।

"कीमत नही लेते, तो हम अब आगे से कोई भी चीज लाकर देने के लिये नही कहेगे ।"

"कीमत क्या बाद मे नही ली जा सकती ?" कहते हुए बलदास बरामदे मे चला गया ।

"पियल गाँव कब आया ?"

"कल ।"

"सुनते है पानी न होने से पियल को घर बनाने का काम रोक देना पडा," मातर-स्वामिनी बोली ।

"क्या कुआँ सूख गया !" पूछते हुए बलदास कुर्सी पर बैठ गया ।

"हाँ, कुँए मे इतना पानी भी नही कि एक छोटा घडा भरा जा सके । पानी बरसने तक घर बनाने का काम स्थगित करना पड़ा ।"

"अब सभी कुओं का पानी सूख गया है । पत्तन के पास का जो कुआँ है, उसके पास घड़े लिये खड़ी औरतो की भीड़ लगी रहती है ।"

"इसी तरह सूखा पड़ता रहा तो वृक्षो के पत्ते तक नही बचेंगे । घास जल गई है । पशुओ के खाने के लिये कुछ नही रहा है, तो पेड़ों की जड़ें खुर्च-खुर्च कर चाट रहे है ।" मातर-स्वामिनी बोली ।

"हमने तो समझ रखा था कि पियल के गृह-निर्माण का कार्य समाप्त हो गया ।" बलदास ने कहा ।

"घर के फर्श को सीमेंट करना बाकी है। घर की बाहरी दीवार पर छपाई करना शेप है। केवल दस बारह दिन का और काम है।"

"क्या कोलम्ब मे भी पानी की कमी है?" मातर-स्वामिनी ने पूछा।

"पानी के नल होने के कारण कोलम्बु मे इस कष्ट का अनुभव नहीं होता। लेकिन इससे क्या! इन दिनों कोलम्ब रहना कष्टप्रद है। सब से बडी कठिनाई है कि रात को सोना मुश्किल है।"

"घर बनाने मे बहुत रुपया लग गया होगा" बलदास बोला।

"कुछ खर्च हुआ है।"

"कितना भी हो, पन्द्रह हजार से कम तो नही लगा होगा" कहते हुए बलदास ने इधर-उधर नजर घुमाई। वह जानना चाहता था कि नन्दा के कानो तक उसकी बात पहुँच रही है या नही?

"इतना पैसा नही लगा।"

"अकेले आदमी के लिये क्या यह घर अधिक बड़ा नही है?"

"क्यो, अम्मा?"

"मेरा मतलब है छडे-छटाँक से।"

"पियल यदि भिक्षु बनने नही जा रहा है, तो क्या छड़ा-छटाँक ही रहेगा?" मातर-स्वामिनी बोली।

पियल बिना कुछ बोले खामोश बना रहा।

"पियल! वापिस कोलम्ब कब जा रहे हो?" पूछते हुए बलदास अपनी जगह से उठ खडा हुआ।

"दो तीन दिन मे।"

"देर हो गई है। हम जाते है" कहते हुए बलदास आँगन मे आया और अपने घर की ओर चल दिया।

बलदास के चले जाने के बाद अनुला बरामदे मे आई।

"मै बलदास के कारण ही इधर नही आई, वह बड़बड़ाता रहता है। मजाक करने लगता है, तो उसके मुँह मे लगाम नही रहती" कहते हुए अनुला अपनी माँ के पास रखी हुई कुर्सी पर आ बैठी।

"अभ्यास पड़ जाने से उपेक्षा-भाव है।"

"पियल से तिस्स की कभी भेंट नही होती ?"

"कभी कभी होती है।"

"क्या वह प्रसन्नता पूर्वक रहता है ?"

"कोलम्ब पहुँच जाने पर प्रसन्नता पूर्वक रहा जा सकता है। कुछ दिनों के बाद हर किसी को गाँव भूल जाता है। अभी मातर-स्वामिनी को तिस्स के बारे में बताया है।"

"हाँ, अनु! इनका कहना है कि तिस्स अच्छी तरह रहता है, लेकिन खेल-तमाशे देखने के लिये कुछ अधिक ही जाता है।"

"नही।" पियल ने प्रतिवाद किया। "कोलम्ब सरकस आता है, तो सभी कोई देखने जाते है। उसे देखने जाने मे हर्ज नही। सरकस साल मे एक बार आता है।"

न केवल तिस्स का समाचार जानने की इच्छा से नन्दा बरामदे मे चली आई, बल्कि सम्भवत: उसे ऐसा भी लगा कि घर के भीतर ही बैठे रहना ठीक नही।

पियल देर तक बैठा बातचीत करता रहा। उसके मन मे नन्दा को देखने की लालसा थी। जब नन्दा ने देखा कि पियल उसकी ओर देख कर मुस्करा रहा है, तो नन्दा जमीन की ओर देखने लगी। नन्दा नही जानती थी कि वह पियल के साथ चार आँखे होने से बचने की कोशिश क्यो करती है ?

विवाह से पहले जब पियल ने नन्दा की ओर देखा था तो उसके मन में किसी कवि के मन मे पैदा होने वाली भावना जैसी ही भावना पैदा हुई थी। 'नन्दा मुझे प्यार करती है' भावना उसके असीम सतोष का कारण हुई। उस समय जो 'लालसा', जो 'सतोष की भावना' पियल के मन मे पैदा हुई, वह उस 'लालसा' या 'संतोष की भावना' से किसी भी प्रकार-भिन्न न थी जो उस बालक के मन मे पैदा होती है, जिसे कही से एक चमकदार परों वाला पक्षी मिल गया हो। लेकिन अब 'पियल' के

मन में जाग उठी है उससे सर्वथा भिन्न प्रकार की प्रचण्ड लालसा। उस समय नन्दा के अपनी मां के पास बैठे रहने को याद करके भी पियल प्रसन्न होता। लेकिन अब वह नन्दा को बड़े जोर से अपने बाहु-पाश में बाँधने की लालसा से पीड़ित है। 'नन्दा मुझे प्यार करती है' भावना से प्रसन्न रहने वाले पियल को अब चाहिये कि वह कह सके कि 'नन्दा मेरी है'। पियल के मन की पहले वाली उदार भावना में जो यह परिवर्तन आ गया था, उसका कारण पियल का ही कुछ और बड़ा हो जाना नहीं था, बल्कि नन्दा का किसी दूसरे के अधिकार में चले जाना भी था। नन्दा के स्वरूप और शरीर में हुए परिवर्तन भी इसके कारण थे।

नन्दा के स्वरूप और शरीर में हुए परिवर्तन पियल को तुरन्त दिखाई दे गये। उसकी आँख और उसके चित्त ने इन परिवर्तनों को सम्पूर्ण रूप से भाँप लिया। नन्दा अब षोड़शी कुमारी नहीं थी, अब वह सम्पूर्ण स्त्री थी। उसका चेहरा पहले की अपेक्षा कुछ पतला पड़ गया था, गर्दन थोड़ी लम्बी हो गई थी, विवाह के पूर्व जैसे नहीं, अब होठ कुछ अधिक रक्त-वर्ण थे। पूर्व की अपेक्षा कुछ ढीले करके बाँधे हुए केश उसके थके चेहरे की ओर इङ्गित कर रहे थे। पहले की अपेक्षा कुछ बढ़े हुए उसके उरोज पियल की आँख से ओझल न हुए। छाती के कुछ बढ़ जाने के कारण और जाँघों के कुछ फैल जाने के कारण, उसकी कमर काफी पतली दिखाई देने लगी थी। पियल को स्त्रियों के शरीर-परिवर्तन के बारे में इतना सूक्ष्म-ज्ञान न था कि वह यह जान सके कि नन्दा की जाँघों का यह फैलाव उसे 'बच्चा' हो चुकने के कारण हुआ है। नन्दा 'बच्चेवाली' स्त्री है, इस भावना से पियल उद्विग्न हो उठता था। बच्चे का जाते रहना उसके सन्तोष का कारण था सही, लेकिन उसे अधिक शान्ति तभी मिलती थी, जब वह इन दोनों बातों को भुलाये रख सकता था।

"तिस्स सरकस देखने गया था और सरकस का सारा हाल-चाल उसने मेरी चिट्ठी में लिखा है," कहते हुए नन्दा एक कुर्सी पर बैठ गई।

"तो तिस्स ये तीनों सरकस देखने गया होगा," मातर-स्वामिनी ने सखेद स्वर में कहा।

"केवल तिस्स ही नही, मै भी गया था। उनमे से एक सरकस तो साल भर मे एक बार कोलम्ब आता है। दूसरे दो तो, कहते हैं, पन्द्रह वर्ष के बाद इस बार कोलम्ब आये। ये दोनो ही दो अलग प्रसिद्ध अंग्रेज़ी सरकस हैं। जब तक ये कोलम्ब रहे, लोग बराबर इन्हे देखने जाते रहे। सरकस वालों के चले जाने तक टिकट बेचने की जगह पर हर समय मनुष्यों की भीड़ लगी रहती थी। ऐसा कोई नही बचा होगा, जो ये खेल देखने नही गया हो।"

अपनी मां की ओर देखते हुए नन्दा ने पियल को सुना कर कहा—"तिस्स 'हाम्स्टन' सरकस देखने गया था। चिट्ठी मे लिखा है कि ऐसे अद्‌भुत खेल उसने कभी नही देखे।"

"इस बार आये तीनो सरकसो मे से एक था 'वोरन' सरकस। लेकिन उनमें अच्छा तो 'हाम्स्टन' सरकस ही था। उसमे जानवरों के अनेक खेल थे। वहाँ सिंह, चीते, भालु, व्याघ्र, बन्दर बहुत से थे।"

"तिस्स की ही क्या बात, वर्णन सुनने पर, हमारी इच्छा भी देखने जाने की होती है," अनुला ने विनोद करते हुए कहा।

"कोलम्ब चलें तो एक दिन देखना हो सकता है," प्रस्ताव करते हुए पीयल ने पहले अनुला और फिर नन्दा की ओर देखा।

"हमारा कोलम्ब जाना कहाँ हो सकता है?"

"क्यों? चलना हो तो सारा खर्च मेरे सिर। तिस्स को देख ले सकेंगी।"

"ये लोग कहाँ कोलम्ब जा सकती है!" मातर-स्वामिनी बोली। "जायेंगी तो रहेगी कहाँ? कितना खर्च है! यहाँ घर की सार-सँभाल कौन रखेगा? ऐसा काम कहाँ हो सकता है?"

"कोलम्ब चलने की इच्छा बाद में अनुला के मन मे उत्पन्न कर देने की आशा से पियल ने अब मातर-स्वामिनी के साथ और तर्क नही किया।

"तिस्स अकेला ही खेल-तमाशा देखने जाता है ?" मातर-स्वामिनो ने प्रश्न किया।

"दुकान पर रहने वाले एक मित्र के साथ जाता होगा।"

"जाते ही जाते तिस्स को 'मातारानी' कैसे निकल आई !"

"छूत लग गई होगी।"

"वह वेकार वहुत घूमता है, इसलिये छूत लग गई होगी।"

"नही, मेरा विचार है दुकान पर आये किसी आदमी से छूत लगी होगी।"

"उन दिनों तिस्स ने अपनी चिट्ठी मे एक अद्भुत बात लिख भेजी थी," अनुला ने कहा।

"क्या भूत[1] की वात ?" पूछते हुए नन्दा मुस्करा दी।

"वह क्या वात है ?" कुतूहल वश पियल ने पूछा।

"'कम्पनी-वीथि' जाने के लिये क्या नौका से जाना होता है ?"

"हाँ, वाष्प-नौका मे, दस पैसे देकर वेरे-झील से उस पार होना होता है।"

"रविवार शाम को तिस्स अकेला ही नौका से कम्पनी-वीथि गया। नौका से उतरने पर, सुनसान गली मे से गुजरने पर, आस प स एक भी आदमी न दिखाई देने पर उसे डर सा लगा। भयभीत तिस्स ने देखा कि भारी टाँग वाला भिखमँगा चला आ रहा है। भिखमँगा पास आने पर, उसे रास्ता देने के लिये तिस्स एक ओर हट गया। उसने तिस्स के पीछे आ, अपने भारी पैर से तिस्स के दोनों पैरो को एक ठोकर मारी। तिस्स के दोनो घुटने झुक गये, लेकिन तिस्स गिरा नही। भयभीत तिस्स ने थोडी दूर जाकर, पीछे घूमकर देखा, उसे कोई दिखाई नही दिया।" कहकर अनुला हँस दी।

"यह सव तिस्स ने लिख भेजा है ?"

---

१. सिंहल मे 'अवतार' शब्द 'भूत' का पर्याय है।

"हाँ।"

"गाँव मे रहते समय तिस्स यक्षों और भूत-प्रेतो पर विश्वास नहीं करता था।"

"अब भी वह विश्वास नही करता। उसने यह वृत्तान्त लिखकर आगे लिखा है 'यह सब मेरे भयाकुल हृदय की ही सन्तान होगी," नन्दा ने समाधान किया।

"तिस्स को 'माता-रानी' इस घटना के बाद ही हुई न? यह सब यक्ष-दृष्टि का कुपरिणाम रहा होगा," मातर-स्वामिनी ने कहा। "छुट-पन मे तिस्स रोज रात के समय स्वप्न देखकर डर जाता था। 'जंतर' बँधवा देने की बात पर वह राजी नही हुआ। बडे होने पर स्वप्नो से भयभीत होने की आदत अपने ही छूट गई।"

पियल जानता था कि तिस्स बडा शर्मीला है और उस शर्म से उत्पन्न भय तथा शोक के कारण दुःखित रहता है। तिस्स उन लोगो मे से था कि जिनके लिये न केवल उनकी भावनायें कष्ट-प्रद होती हैं, बल्कि उनकी बुद्धि भी उन्हे कष्ट देती है। भावनाओं की तीव्रता उसे अपनी माता से मिला प्रसाद था, बुद्धि की कुशाग्रता पिता की कृपा थी। क्योंकि इन दोनो का पृथक-पृथक विकास हुआ था, इसलिये वह अपनी भावनाओं पर अपनी बुद्धि का अंकुश न रख सकता था। तर्क प्रिय तिस्स ने बचपन मे आर्थिक शास्त्रार्थो की पुस्तकें पढी थी, इसलिये उसकी बुद्धि और भी तीक्षण हो गई थी। उसको इसका अभ्यास न था कि भावनाओ को बुद्धि-बल के वशीभूत रख सके। जैसे जमे हुए घी मे सूई की नोक आसानी मे घुस जाती है, इसी प्रकार उसकी भावनागत अनुभूति उसकी बुद्धि मे से रास्ता बना लेती थी। तो भी अधिक लज्जा-शील होने के कारण वह प्राय अपनी भावनाओ को क्रियात्मक स्वरूप न दे सकता था, इसलिये उसके मन मे उठने वाली भावनायें उसके लिये बहुधा 'आत्म-दमन' बनकर रह जाती थी। पुस्तक आदि पढने की या खेल-तमाशे देखने की लालसा को वह बहुत करके 'प्रीति' का स्वरूप दे देता था। दूसरी बहुत

सी 'लालसाओ' को जो वह क्रियात्मक स्वरूप नही देता था, उसका यह कारण नही था कि वह उन्हे अपने 'वश' मे रखता था, बल्कि यही कि वह अधिक शर्मीला था। यह कभी-कभी 'आत्मदमन' ही होता था। यदि किसी तितली के साथ बातचीत करने की 'लालसा' उसके मन मे पैदा होती तो वह उसे भी क्रियात्मक नही करता था—आत्म-सयम के कारण नही, बल्कि लज्जा-शील होने के कारण ही। लज्जा के आवरण मे छिपी हुई लालसाओ की याद उसे कभी आनन्द देती, कभी शोकाकुल बना देती। तिस्स अपनी माँ की तरह ही अन्तर्मुख प्रवृत्ति का था।

'भूत-प्रेत की बात कौन कहे, तिस्स जन्म-पत्री तक पर विश्वास नही करता, पियलने कहा। हो सकता है कि गाल्ल स्कूल मे पढने के समय से ही तिस्स ने सभी बाता पर अविश्वास करना आरम्भ कर दिया हो।

'नही, अनुला ने प्रतिवाद किया। तिस्स बचपन से ही कई बातो पर विश्वास नही करता था, यह स्कूल से सीखी कोई नई बात नही है। हो सकता है कि पुस्तकें पढने लगने पर वह कुछ अधिक अविश्वासी बन गया हो।

इन दोनो ने ही तिस्स को बिगाड दिया, मातरस्वामिनी बोली।' तिस्स चाहे जितनी झूठी बात कहे ये दोनो उसी का पक्ष ग्रहण करती है। जन्म-पत्री दिखलवाने लगी तो तिस्स बोला—मेरी जन्म-पत्री मत दिखलावो। ये दोनो भी उसका अनुमोदन करती है। ज्योतिषी लोग छली होते हैं कहने पर ये भी उसी का समर्थन करती है। मैने उसकी अनु-परिस्थिति मे ही उसकी जन्म-पत्री दिखलवाई है। कोलम्ब रहते समय तिस्स विहार जाता है या नही ?

विहार जाता है सही, लेकिन कोलम्ब रहने वाले तरुण विहार मनो-विनोद के लिये जाते है, पूजा वन्दना के लिये नही। इस आयु मे सभी कोई ऐसा ही करते है।

गाँव मे रहते समय जब कभी बिहार मे परित्राण धर्म-के बाना रूपी पुण्य-कर्म होता तभी तिस्स बिहार जाता।

"बचपन में ही कोई अभ्यास पड जाय, तो बडे होने पर भी वह कैसे छूट सकता है ? इन दोनो ने ही उसे बिगाडा है।"

"तिस्स यदि 'भूत-प्रेत' को नही मानता, तो क्या ? सिर मे दर्द होने पर उसने तेल को अभिमन्त्रित करवा-लिया था" कहते हुए नन्दा हँस दी।

अनुला भी मुस्कराती हुई बोली—"तिस्स ने तेल इसलिए अभिमंत्रित करवाया, क्योकि आलोलिस सिर पर तेल लगा कर, देर तक थप थपाकर, फूँक मार मार कर, देर तक अभिमन्त्रित करता रहता। 'वह धीरे-धीरे सिर पर हाथ फेरता है और फूँक मारता रहता है, इससे तिस्स को नीद आ जाती है। 'मैने इसीलिये तेल को अभिमंत्रित करवाया है' हमारे मजाक करने पर तिस्स ने कहा। तिस्स ने केवल अरवोलिस ओझा से तेल अभिमंत्रित करवाया है और किसी मे भी वह कभी तेल अभिमंत्रित कराने के लिये राजी नही हुआ। तिस्स का कहना था कि कोई दूसरा सिर पर हाथ फेरना नही जानता।"

"क्या पियल अब चले जाने के लिए उठ खडा हुआ है ?" मातर-स्वामिनी ने पूछा।

"वह माँ का सन्देश-वाहक चला आ रहा है, कहते हुए 'बडे-घर' की पत्थर की चार दीवारी के दरवाजे से भीतर आने वाली कोयल की ओर संकेत किया। 'मा मेरे आने तक बिना भोजन किये बैठी होगी।"

"जाने से पहले फिर भी यहाँ आना। तिस्स के लिए कुछ भेजना है।" अनुला ने आँगन मे आकर पियल को कहा।

"दो तीन बार भी आया हो जा सकता है, कहते हुए पियल ने नन्दा की ओर दृष्टिपात की।

"तिस्स के लिये बम्बई-हलवे जैसे दो दाल-पट्ट बनाकर भेजना है। तिस्स को दोदोल अच्छा लगता है," पियल के चले जाने पर अनुला ने कहा।

★ ★

परिच्छेद/११

व्योपार के लिये विवल गया हुआ जिनदास प्रथम तीन महीनों मे प्रति सप्ताह पत्र भेजता रहा। इसके साथ ही हर महीने एक पत्र के साथ दस रुपये का मनी-आर्डर भी भिजवाता रहा। तीन महीने की समाप्ति पर जिनदास से पूर्ववत् पत्रो का मिलना वन्द हो गया। कभी-कभी दो सप्ताह मे एक बार, कभी कभी तीन सप्ताह मे भी एक बार उसके पत्र मिले। छ. महीने के बाद नन्दा को जिनदास से दो दो महीने मे एक एक पत्र मिलने लगा। एक साल के बाद वह दो महीने मे एक बार मिलने वाली चिट्ठी भी रुक गई। दो साल के बाद नन्दा की ओर से भेजे गये एक भी पत्र का जिनदास की ओर से उत्तर नही आया।

दो तीन महीने तक जिनदास ने वडी कठिनाई से दुकान चलाई। दोपहर बारह वजे तक दुकान पर वैठे रहने के बाद वह दुकान का दरवाजा आधा बन्द कर रसोई-घर मे जा, चावलो को साफ कर, चूल्हे पर रख, फिर दुकान पर आ वैठता। डेढ वजे के लगभग फिर जाकर नारियल की चटनी तैयार करता और मछली के एक टुकड़े को भून कर, भात खा, दो वजे के आस पास फिर दुकान पर आ वैठता। पूरे तीन महीने तक जिनदास जो इसी तरह खीचता रहा, वह इसीलिये कि यदि किसी नौकर को रखेगा तो दुकान से 'फायदे के वजाय' 'नुकसान' हो जायगा। जब जिनदास को ज्वर ने जकड लिया तभी उसने एक लडके को दुकान पर रखा। नन्दा को यह सारी जानकारी जिनदास की एक चिट्ठी से ही मिली। जिनदास ने वहुत थोडी सी तनख्वाह देकर जो इस लड़के को नौकर रख लिया था, उसका यही कारण था कि नन्दा अपनी हर चिट्ठी मे उसे ऐसा करने के लिये लिखती थी।

विवल से आने वाले एक आदमी ने नन्दा को सूचना दी कि मलेरिया के चक्कर मे आकर जिनदास ने दुकानदारी छोड़ दी है और अव देहात

मे बड़े दुख से दिन काट रहा है। मातर-स्वामिनी ने करोलिस को एक चिट्ठी लिखी कि जिनदास के हालचाल का पता लगाकर उसके बारे मे लिखे। करोलिस से मिली चिट्ठी मे लिखा था कि जिनदास एक देहात मे बहुत मामूली कारोबार करते हुए अपने दिन काट रहा है। नन्दा ने कारोलिस को लिखा कि जिनदास जहाँ भी है, वहाँ जाकर जैसे भी बने वह उसे घर भिजवाने की कोशिश करे। करोलिस जिनदास का पता नही लगा सका। जिनदास के बारे मे उसे परस्पर विरोधी बातें सुनने को मिलीं। किसी ने करोलिस को बताया कि उसे व्यापार मे नुकसान हुआ है, वह मलेरिया का शिकार हुआ है और अब वह एक भिखमंगे जैसा दरिद्र हो गया है। इसलिये अब गाँव लौटने का विचार छोड़, देहात मे चला गया है। वहाँ पता नही, वह किस हालत मे है। एक दूसरे आदमी ने करोलिस को बताया कि जिनदास मीगहक्यूल-गाँव मे खेती कर, जैसे तैसे प्राण बचाये रहा है। इसके बाद उसने एक ग्रामीण तरुणी को अपना लिया है और अपनी ससुराल मे ही रहा रहा है।

करोलिस अपने स्वामी से छुट्टी लेकर एक रविवार के दिन मीगहक्यूल पहुँचा, वहाँ उसे सुनने को मिला कि जिनदास नाम का एक आदमी चार महीने तक तुच्छ खेती करते रहकर जैकिरियन कुम्बुर पहुँचा। वहाँ वह एक ग्रामीण-स्त्री को अपनी भार्या बनाकर रह रहा है। जिनदास को पकड़ने के लिये जैकिरियन-कुम्बुर जाने की अनिच्छा से करोलिस ने आगे जिनदास की खोज-खबर लेने का प्रयास नही किया। वह वापस बिबिन चला आया और नन्दा तथा मातर-स्वामिनी को एक एक, चिट्ठी लिख दी।

मातर-स्वामिनी को उसने लिखा था, जिनदास बिमितैन गाँव मे तुच्छ खेती कर रहा है और नन्दा को, घर-गाँव लौटने का विचार एक दम नही। बुखार के कारण उसमे इतना परिवर्तन आ गया है कि अब उसको पहिचानना कठिन है।

करोलिस ने खाली जगहो को कल्पना से भर कर ऐसा इसलिये लिखा, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि जिनदास के सम्बन्ध में दूसरी दूसरी बातो की जानकारी दी जाय। करोलिस की चिट्ठी मिलने पर नन्दा और भी अधिक व्याकुल हुई। शोक अधिक बढ़ा तो वह जिनदास को खोजने के लिये विविल जाने का विचार करने लगी। उसके दिल मे जो यह विचार पैदा हुआ, उसका कारण वियोग-दुख का असह्य होना नही था, बल्कि लज्जा की उस अनुभूति के कारण जो उसे यह सोचकर हो रही थी कि गाँव के लोग सोच सकते है कि उसके स्वामी ने उसे छोड दिया है।

जिस 'प्रेम' का 'तुक्कड' कवि इतना गुण गान करते रहते है, नन्दा के मन में जिनदास के लिये वैसा 'प्रेम' न था। तो भी वह अपने स्वामी जिनदास से निर्व्याज-प्रेम करती थी। गाँव में रहते समय जिनदास को देखना; उसके पास बैठे रहना, उसके लिये आनन्द-दायक था। जब जिनदास कही बाहर गया रहता तो वह उसकी अत्यन्त उत्सुकता से प्रतीक्षा करती रहती। जिनदास के साथ रिश्तेदारो से भेंट मुलाकात करने जाने में उसे बडी खुशी होती। वह अच्छे कपडे लत्ते पहनता तो यह आनन्दित होती। कोई जिनदास की बुराई करता तो उसे अच्छा न लगता। जिनदास के लिये नन्दा के मन मे जो यह भावना उत्पन्न हुई थी, उसका कारण अज्ञ कवियो द्वारा प्रशंसित प्रेम नही था, बल्कि पति-भक्ति की शुद्ध भावना थी। उसके मन में उठी इस पति-भक्ति का कारण, उसके स्वामी का सौन्दर्य, वीरता अथवा विद्वत्ता आदि भी नही थी।

ग्रामीण स्त्री की पति-भक्ति एक मिली जुली भावना है। उसमें अनुराग, दया, कृपा, माता बनने की इच्छा, पुत्र-वात्सल्य, अपने अनाथ होने की भावना, वस्त्र-आभरण पाने की उम्मीद, लज्जा तथा भय आदि सभी भावनाओं का मिश्रण रहता है। नन्दा को केवल वियोग का ही कष्ट नही था, अपने भविष्य की दुश्चिन्ताओ से भी वह चिन्तित थी।

न केवल नन्दा बल्कि अनुला तथा मातर-स्वामिनी का जीवन भी बड़ा कष्टमय था। नारियल के बगीचे से जो थोडी आमदनी होती थी, उससे उन तीनो जनों का गुजारा नही चलता था। जिनदास से जो दस रुपये मासिक की सहायता मिल जाती थी, उसका मिलना बन्द हो जाने से उनकी सौ रुपये मासिक आमदनी की सी हानि हो गई। अनुला और नन्दा जो कुछ बुन-बुना लेती, उसे सादा के हाथ गाल्ल भिजवा देती। उनकी बिक्री से जो कुछ प्राप्त हो जाता, उसी से 'बडे-घर' के सभी लोगों की जीवन-नौका खेयी जा रही थी। न केवल गाँव के लोग ही 'बडे-घर' के लोगों की 'तंग-दस्ती' से अपरिचित थे, बल्कि प्राय. घर पर आने जाने वाले पियल आदि को भी इस का कुछ पता न था। अपनी 'तंग-दस्ती' दूसरो से छिपाये रखने के लिये उन्हे भूखे भी रहना पडता तो भी वे अपने वंशाभिमान के कारण ऐसा कर सकने मे समर्थ रहे।

आयु की अधिकता के कारण नही बल्कि इसी तंग-दस्ती के कारण मातर-स्वामिनी क्रमशः दुर्बल हो चली। जिसका हृदय दया तथा करुणा से भरा था उसके चेहरे पर शोक के चिन्ह क्रमशः और धीरे-धीरे हो प्रगट हुए। इतना होने पर भी हमेशा 'बडे-घर' आने जाने वालों को उसके चेहरे के इस परिवर्तन का पता नही चला। अनुला का शरीर पहले से ही दुबला-पतला था, वह और भी दुबलाने लगी, लेकिन उसका यह परिवर्तन भी न केवल रोज उसे देखने वालो की आँख से ओझल रहा बल्कि उसे कभी-कभी देखने वाले भी उस परिवर्तन को न देख सके। अनुला तथा मातर-स्वामिनी मे हुए ये सूक्ष्म परिवर्तन भले ही किसी को दिखाई न दिये हो, किन्तु नन्दा मे हुआ परिवर्तन उन लोगों की आँख से भी ओझल न रहा, जो उसे दिन मे एक ही बार देखते थे। नन्दा की पहली शक्ल, शरीर, हाथ-पाँव इतने भरे-पूरे थे कि उनमे अब तिल के दाने के लिये भी और जगह न थी। अब केवल उसका चेहरा ही भरा-पूरा' दिखाई देता था। सप्ताह में एक या दो बार नन्दा को देखने वाले पियल को नन्दा मे हुआ यह परिवर्तन बिल्कुल नही दिखाई दिया।

विविल व्योपार के लिये गये जिनदास का पता नही चल रहा था। इस समाचार को जान पियल ने अपना 'अफसोस' प्रगट किया, किन्तु इस 'अफसोस' की तह मे उसकी खुशी छिपी हुई थी। नन्दा की भी अपेक्षा अधिक कोशिश पियल ने की थी, जिनदास के वारे में यथार्थ जानकारी प्राप्त करने के लिये। नन्दा इसे खोजती थी, वापिस गाँव वुला लेने के लिये और पियल उसे खोजता था, उसके अन्तर्धान हो जाने के वारे में असन्दिग्ध हो जाने के लिये। जिनदास के अन्तर्धान हो जाने का समाचार 'वडे-घर' के किसी भी जन से नही मिला। 'वडे-घर' वालो ने किसी को भी इसकी जानकारी नही दी। क्योकि पिपल को अव ऐसी जानकारी मिली थी जिससे जिनदास के वापिस गाँव न लौट सकने की वात का असंदिग्ध रूप से समर्थन होता, इसलिये पियल के मन में नन्दा के प्रति जो भावना थी, वह उग्र रूप से वढ़ गई। अव उसे नन्दा मे एक अभूतपूर्व सौन्दर्य के दर्शन होने लगे। अब वह किसी मामूली वजह से प्रति सप्ताह ही नही, एक एक सप्ताह में दो दो वार भी गाँव आने-जाने लगा। पिछले सप्ताह वह कत्तिरिना की बीमारी का हाल-चाल जानने के लिये गाँव आया था। इस सप्ताह आया, तो कत्तिरिना की मृत्यु इसका निमित्त-कारण थी।

कत्तिरिना की अन्त्येष्टि के समाप्त होते ही, अपने पहने हुए वस्त्रो को धोने के लिये डाल, नये-वस्त्र पहन पियल 'वड़े-घर' पहुँचा।

"पियल परसो ही कोलम्बु गया था न? पियल के लिये कोलम्बु अव एकदम नजदीक हो गया है," अनुला वोली।

"मै कत्तिरिना की अन्त्येष्टि के लिये आया। अम्मा कहाँ है? वह अन्त्येष्टि के लिये नही गई?"

"क्यो नही? माँ जाकर लौट आई है। अव कपड़े वदल कर हाथ मुँह धो रही है।"

"मैने मातर स्वामिनी को वहाँ नही देखा। मैने सोचा कि वह कत्तिरिना के मरने पर भी नही जायगी।"

' ऐसा क्यों ?"

"क्या याद नही कि अनुला ने एक दिन कहा था कि वह कत्तिरिना से बड़ी अप्रसन्न है ?"

"माँ कत्तिरिना से अप्रसन्न हो रही। बीमारी की हालत मे उसे देखने नही गईं। मृत्यु का समाचार मिलते ही अम्मा को अफसोस हुआ। दोनों आँखे साश्रु हो गई। माँ बोली कि 'पिता' की याद आ जाने से ही आँखें सजल हो गई। अम्मा कभी भी गुस्से की गाँठ नही बांधे रहती। लेकिन तब भी कत्तिरिना के प्रति जो उसका रोष था, वह कत्तिरिना की मृत्यु होने तक बराबर बना रहा। माँ कल भी कत्तिरिना के घर गई थी। आज गई थी कत्तिरिना को दफनाने के लिये।"

"कत्तिरिना को मृत्यु बड़ी अफसोसजनक मृत्यु है। गरीबी के कारण ही उसकी अभी मृत्यु हो गई। समय रहते मुझे उसकी सहायता करने की बात नही सूझी। पिछले सोमवार को जब मै गाँव आया था, तो मैने पुंची-अप्पु को पच्चीस रुपये दिये थे ताकि वह डाक्टर को बुलवा कर दवा-दारू करवाये। इससे पहले दिये होते, तो कदाचित् वह निरोग हो गई होती।"

"पुची-अप्पु के हाथ मे पैसा क्यो दिया ? वह शराबी है। वह बिना पिये नही रह सकता।'

"माँ ने भी मुझे कहा था कि जो रुपया उसे दिये गये है उसमे से पन्द्रह रुपये वह स्त्री के इलाज पर खर्च करेगा और शेष की शराब पी जायगा।"

"क्या यह कोई हैरान होने को बात है कि पियल ने पुंचो अप्पु को जो पैसा दिया, वह उसने शराब पीने पर खर्च कर डाला।' कहकर अनुला हँस पडी।

"पुंची अप्पु ने अभी कोई तीन सप्ताह पहले जो कमाल दिखाया है, वह शायद पियल ने नही सुना ? सुना होता तो उसके हाथ मे पैसा न सौंपता।"

"मैंने नही सुना, किया क्या ?"

"कत्तिरिना की दवा-दारू के लिये पैसा नही है, कह कर, पुंची अप्पु ने घरके भीतर के दरवाजों को बेचकर पैसा प्राप्त किया। घर के भीतर के जो दरवाजे कभी बन्द नही किये जाते हैं, उन्हें रखने से क्या फायदा, कह कर उसने कत्तिरिना से शास्त्रार्थ किया। दरवाजे बेच देने से जो पैसा मिला, उसमें से आधा कत्तिरिना की बीमारी पर खर्च किया, शेष आधे पैसे की शराब पी गया।"

"पुची अप्पु सचमुच बडा अजीब आदमी है। यदि मैं इसे पहचानता तो इसके हाथ मे पांच सेंट भी नही देता।"

"दरवाजे बेच चुकने पर पुंची अप्पु ने जो कुछ किया, वह भी जानते हो ?"

"नही, मुझे अम्मा ने कुछ नही बताया।"

"निष्प्रयोजन टाण्ड पर की लकडी बेकार है।" वहाँ की पट्टियाँ उतार 'मुर्दो की पेटियाँ' बनाने वाले बढ़ई के हाथ बेंच दीं।"

"पुची अप्पु हामा सचमुच अजीब आदमी है !"

हाथ पांव धोकर, नयी धोती और कुर्ती पहने हुई मातर स्वामिनी के साथ नन्दा भी बरामदे मे आई। प्रसन्नता से प्रफुल्लित पियल का चेहरा चन्द्र-रश्मि से खिलने वाले फूल की तरह खिल गया।

"पियल कत्तिरिना के 'मरण' पर ही गाँव आया होगा।" कहती हुई मातर-स्वामिनी आराम कुर्सी पर बैठ गई।

"हाँ, अम्मा ने मुझे तार भेजा था। यद्यपि उसमें लिखा था कि न आने से भी कोई हर्ज नही, तब भी मैं आया।"

"पियल 'मरण-गृह' मे था, वहाँ मैंने देखा भी था, लेकिन बातचीत करने का मौका नही मिला।"

"मैंने नही देखा कि मातर-स्वामिनी वहाँ है। दिखाई दे जाती; तो मैं आकर बातचीत करता।"

"क्या तिस्स से इधर भेंट हुई ही नही ?"

"परसों मुझे मिला था। आज कल तिस्स बोरैल्ल के एक भिक्षु[१] से सिंहल सीख रहा है। सम्भवतः अर्जी-नवीसी की परीक्षा पास करना चाहता है।"

"हमे भी लिखा था कि वह सिंहल सीख रहा है। लेकिन यह नही लिखा था कि वह अर्जी नवीसी की परीक्षा मे बैठना चाहता है।"

"तिस्स पढने-लिखने मे होशियार है। एक दिन मैंने भिक्षु-वर से पूछा था। उन्होने भी कहा कि तिस्स पढ़े-लिखने मे अच्छी तरह समर्थ है।"

"तिस्स को शीघ्र याद हो जाता है। कुछ भी कहो, तिस्स तुरन्त समझ लेता है। उसकी भूल यही है कि गाँव मे रहते समय उसने पढाई लिखाई की ओर विशेष ध्यान नही दिया।" अनुला बोली।

"गाँव पर रहते समय मन लगा कर पढ़ने की अनिच्छा के कारण ही तिस्स को नौकरी करने के लिये कोलम्ब जाने दिया। यदि ऐसा न होता तो हम और कुछ समय के लिये उसे गाल्ल-स्कूल में पढ़ाने के लिये कोशिश करती।"

"क्या पियल को कोलम्ब रहते समय जिनदास महाशय के बारे मे कुछ सुनना नही मिलता? सिंहल जाने वाले आदमी क्या हमेशा कोलम्ब नही आते जाते?" मातर-स्वामिनी की जिज्ञासा थी।

नन्दा के चेहरे पर परछाइँ छा गईं, मानो पतले असित-वर्ण मेघ ने अपने ही जैसे श्वेत-वर्ण मेघ को आच्छन्न कर लिया हो। इसका कारण शोक-स्वरूप मेघ नही था, बलिक कोप-स्वरूप मेघ का टुकड़ा था।

"उनके बारे मे पियल को कोई भी जानकारी कैसे मिल सकती है?"

पियल जानता था कि जिनदास की चर्चा नन्दा के लिये प्रिय कर नही है। इससे कुछ दिन पहले जब उसने जिनदास की बात चलाई थी तो नन्दा के मन पर शोक तथा कोप सवार हो गये थे। जिनदास के बारे

१. भिक्षु के लिये सिंहल शब्द है 'हाम्दुरु', जिसकी व्युत्पत्ति 'स्वामी-दारव:' से मानी जाती है।

मे पियल को नन्दा की भी अपेक्षा अधिक जानकारी थी। इसका कारण था। वह नन्दा की भी अपेक्षा अधिक कुतूहल से जिनदास की खोज-खबर लेता रहता था। कोलम्ब-दफ्तर में उसके अधीनस्थ कर्मचारी भी इस वात को नही जानते थे कि वह जिनदास का पता निकालने के लिये दो वार विविल गया था। एक वर्ष में दो वार पियल विविल आकर चला गया है, इसे करोलिस तक भी नही जानता था। पियल ने यह कभी प्रगट नहीं होने दिया कि वह जिनदास के वारे में विविल मे रहने वाले करोलिस की भी अपेक्षा अधिक जानकारी रखता है। न केवल नन्दा की ही वल्कि मातर-स्वामिनी तथा अनुला की भी यही कोशिश थी कि जिनदास के सम्वन्ध मे गाँव में किसी को भी कोई जानकारी न मिले। उन्होने पियल को केवल इतनी ही जानकारी दी कि कुछ समय से जिनदास के यहाँ से कोई चिट्ठी-पत्री नही आई है। मातर-स्वामिनी तथा अनुला दोनो यही समझती थी कि अन्य गाँव वालो की तरह पियल को भी जिनदास के वारे में केवल उतनी ही जानकारी है, जितनी उन्होने उसे दी है। मातर-स्वामिनी ने जो उक्त प्रश्न पूछा था वह जिनदास के वारे में कुछ जानकारी मिलने की ही आशा से नही, वल्कि पियल को कुरेद कर यह पता लगाने के लिये भी कि कही वह कुछ अधिक जानकारी तो नही रखता?

पियल ने पलट कर मातर-स्वामिनी से ही पूछा कि क्या अभी तक जिनदास महाशय से कोई चिट्ठी नही मिली?

"अभी तक नही।"

"आवश्यकता होने पर क्या वे स्वय पत्र न भेजेंगे? मां उनके पीछे न पडकर आराम से रहे," यह वात नन्दा ने थोडे कोप से कही।

"उसका पत्र न मिलने के कारण नन्दा हमारे साथ भी गुस्से सी है।"

"मै किसी के साथ क्यो गुस्से होऊँगी।"

"पियल ने झूठ नही कहा। नन्दा अब पहले जैसी नही रही। अब उसे वात वात मे क्रोध आ जाता है।"

"यह जैसा दूसरे समझें।"

"नन्दा को बुरा लगने के कारण अब हम जिनदास का प्रकरण छोड़ कोई दूसरी चर्चा चलायें," पियल का प्रस्ताव था।

"मैं भी यही प्रस्ताव करने जा रही थी," कहते हुए अनुला मुस्करा दी।

"आगामी पूर्णिमा को हम परगोड जाने का विचार कर रहे हैं। क्या मातर-स्वामिनी के घर के लोग भी चलना पसन्द करेंगे ?"

"कौन कौन चलेगा ?" बडी लालसा से मातर-स्वामिनी ने पूछा।

"बलदास महाशय और उसकी पत्नी भी जायगी।'

"और कौन ?"

"मै भी जाऊँगा और मा भी चलेगी। बलदास महाशय ने कहा है कि वह ऐसी बैलगाड़ी का प्रबन्ध कर रहा है कि उसमें पन्द्रह जने तक बैठ कर जा सकते हैं। उस दिन खाने-पीने का सारा खर्च मेरे सिर। बलदास कल या परसो आयेगा, यहाँ के सभी लोगो को निमंत्रण देने।"

"मै तो नाग-पुष्प पूजा करने जाने की इच्छुक हूँ।"

"इच्छा है तो तैयारी करो," मातर-स्वामिनी बोली।

"हम भी इच्छुक हैं," अनुला का प्रत्युत्तर था।

"यदि उस दिन चलने की इच्छा हुई, तो चलूँगी," नन्दा का कहना था।

'इस बार परगोड मे वृक्ष नाग-पुष्पों से लदे हैं। बलदास महाशय का कहना है कि बैलिगम के समर-तुग की हवेली के सभी लोग पूर्णिमा के दिन नाग-पुष्प पूजा करने के लिये परगोड जायेंगे।"

पियल ने यह बात नन्दा को प्रेरित करने के ही उद्देश्य से कही थी।

"मध्याह्न-भोजन के लिये हम भी कुछ बना लेगी,' अनुला बोली।

"न दोपहर के भोजन के लिये और न शाम की चाय के लिये ही किसी चीज की जरूरत है। मै कोलम्बु से आते समय लेता आऊँगा।"

"शाम की चाय पीकर लौटेंगे तो क्या घर पहुँचते पहुँचते रात नही हो जायगी ?" मातर-स्वामिनी ने पूछा।

"चान्दनी के रहते थोड़ी रात हो जाने में भी क्या हर्ज है ?"

"क्या विजय की छोटी बहनें नही आयेंगी ?" नन्दा ने पूछा।

"यदि चलने के लिये कहेंगे, तो आयेंगी। बलदास ने उन्हें कहा नही है।"

"क्या बलदास उनका आना पसन्द नही करता ?"

"नही, गाड़ी में अधिक जगह न रहने से, तंगी में यात्रा कष्टकर हो सकने के कारण।"

"यदि पन्द्रह जनों के जाने लायक बैल-गाड़ी है, तो उसमे जगह क्यों नही रहेगी ?"

"विजय की चारो बहनें चलने की कोशिश करेंगी। उनमे से एक भी घर पर रुकना न चाहेगी। बलदास ने इसीलिये उन्हें नही कहा। नन्दा तो चलेगी न ?"

"अभी निश्चय करने के लिये समय है न ?"

"आठ ही दिन शेष है।"

"उस दिन जाने की इच्छा हुई, तो चलूँगी।"

"यदि इच्छा न हुई ?"

"घर पर रहूँगी," कह कर नन्दा मुस्करा उठी।

"मैं गई तो फिर यह अकेली घर पर नही रहेगी," अनुला बोली।

*

परिच्छेद/१२

आषाढ़ महीने की पूर्णिमा से पहले पियल घर लौटा तो वह साथ मे इतनी मिठाई लाया था, जितनी इससे पहले कभी नहीं। बड़े बड़े बैलो की जोडी जुते हुए रथ में मातर-स्वामिनी, अनुला, नन्दा, पियल की मां तथा दूसरे छह जनो ने अगले दिन सूर्योदय से पूर्व नाग-पुष्प चढ़ाने के लिये परगोड़ विहार की ओर प्रस्थान किया। सजाई हुई गाडी मे दो वैच रखे गये थे। स्त्रियाँ उन्ही पर बैठी। मर्द लोग गाडी के पीछे पीछे पैदल चलने लगे। गाडी के महराव के सामने ऊपर की ओर तथा जुये के नीचे लटकने वाली दोनों लालटेनों से जो जरा जरा सी रोशनी आ रही थी, उससे गाडी के भीतर और नीचे के अन्धेरे मे कुछ कमी हो गई थी। अभी रोशनी होने मे देर थी, इसीलिये चारो ओर गहरा अन्धकार था।

अन्धकार के कारण न गाड़ी के भीतर बैठे रहने वालों को और न गाड़ी के पीछे पीछे चलने वालों को ही लगा कि उनकी गाड़ी ऐसे रास्ते पर से गुजर रही है कि जिसके दोनों ओर घर तथा दुकानें है। समुद्र की लहरों की आवाज, धीरे धीरे चली जा रही रेलगाड़ी की आवाज़ के समान थी। बीच बीच मे चलने वाली हवा से पैदा होने वाली आवाज से गाड़ी के भीतर बैठे हुओ को सड़क के दोनो ओर के नारियल के पेड़ों की याद आती थी। रात को घूमने फिरने के अभ्यासी बलदास को और गाडीवान को जो जो स्थान पीछे छूटते चले जा रहे थे, उनका ऐसे पता लगता चला जा रहा था, मानो वे उन्हे सूँघते चले जा रहे हो।

कोई एक घण्टा बीत जाने पर इधर उधर से थोड़ा थोड़ा प्रकाश आता दिखाई दिया। कौओं की आवाज सुनकर अभी तक गाड़ी के अन्दर गूँगी बनी बैठी स्त्रियाँ भी चहचहाने लगी—

"यह कौन सी जगह है ?" अनुला ने पूछा।

"तुम्हें यह कौन-सी जगह मालूम होती है ?" वलदास ने थोड़ी चुहुल की।

"यह कौन-सी जगह है, न जानने के कारण ही तो पूछा है।"

"कट्टु कुरुन्द बाजार गुजर गया ?" पियल की माता की जिज्ञासा थी, जिसे सुन गाड़ीवान हँस पड़ा।

गाडी के भीतर बैठी हुइयो को अब यह पता लग गया कि वे सब ऐसी सडक से गुजर रहे हैं कि जिसके दोनों ओर वन-पाँति है। सड़क के किनारे कोई मिट्टी का घर या दुकान उन्हें बहुत कम ही दिखाई देता। गाड़ीवान और वलदास के अतिरिक्त किसी को भी इस बात की ठीक ठीक जानकारी न थी कि वे किस प्रदेश से गुजर रहे हैं ?

अब यह ऐसी जमीन थी, जिस पर एक एक डंठल में दो तीन के हिसाब से शाखाओं पर, तने के भी इर्द-गिर्द लटकने वाले कटहलो से भरे विशाल कटहल के वृक्षों, जुड़वें-वृक्षो तथा आम के वृक्षो की छाया पड़ रही थी। उसी जगह के बीच में से गुजरने वाली सड़क से गाड़ी चली जा रही थी। यह प्रदेश फलाहार पर जीवित रहने वाले बन्दरों, गिल-हरियो, चमगादडो तथा पक्षियो का निवास-स्थान सा था। एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर छलाँग मारने वाले बन्दरो की आवाज के कारण अपनी पूँछें फटकारती हुई नाचने वाली गिलहरियो की 'टं' 'टं' आवाज रास्ते चलते लोगो को सुनाई देती थी। गिलहरियो और चिमगादड़ो द्वारा खा खा कर छोड़े गये कटहल के कोओ की सुगन्धि से सुगन्धित शीतल हवा न केवल शरीर बल्कि नासिका को भी तृप्ति कर देती थी। कटहल और आम के पेड़ो की छाया वाली वह भूमि-खण्ड रूपी पुरानी जरा-जीर्ण चादर इतनी घनी थी कि उसे आँख फाड कर देखना होता था। सड़क के किनारे जो विशाल दोम्ब-वृक्ष था, उसके नीचे जो फल पडे थे, उन्हें वलदास ने पाँव से एक जगह इकट्ठा कर दिया। दोम्ब-वृक्ष से कुछ ही दूर पर जो काजू का वृक्ष था, उसके चिमगादड़ों द्वारा चबाये फल बटो-रने वाले ग्रामीण लडको से वलदास ने पूछा—

"अरे ! तुम लोग ये 'दोम्ब' नहीं बटोरते ?"

"पीछे बटोर लेंगे। आजकल एक पाउंड की कीमत केवल एक पैसा है।" एक लड़के का प्रत्युत्तर था।

गाड़ी के आगे से एक बटेर उडा और सड़क के दूसरी ओर एक खेत की पत्थर की दीवार पर जा बैठा। चारो ओर देखकर सड़क के इस पार से उस पार दौड जाने वाले नेवले पर बलदास की नजर पड़ी तो उसने एक ठीकरा उठाकर नेवले को मारा।

"पवित्र-दिन पर भी प्राणी को बिना हिंसा पहुँचाये बलदास से नही रहा जाता" मातर-स्वामिनी ने कहा।

"ऐसा लगता है कि बिना पाप बटोरे रह ही नही सकता।" पियल की माता बोली।

"बलदास हमारे साथ वन्दना करने के लिए नही आया है, बल्कि मनो-विनोद के लिये आया है।" कह कर विजय की पत्नी हँस दी।

"झूठ क्यो बोलूँ ! मै तो मनोविनोद के लिये ही आया हूँ। क्या पियल भी मनो विनोद के लिये ही नही आया है ?"

"और क्या नही ?" कहकर पियल मुस्करा उठा।

"यह तो सत्य है कि दोनो वृद्धा देवियाँ नाग पुष्प चढा कर पूजा करने और पुण्य कमाने के लिये ही आई होगी, लेकिन बाकी देवियाँ ......?"

"हम भी केवल नाग...पुष्प चढाने के लिये ही आई है।" कहकर अनुला मुस्करा दी।

"यह बात झूठ है।"

"झूठी नही, सच्ची बात है।"

"सिर्फ मर्द लोग मनो विनोद के लिये आये है।" विजय की पत्नि ने कहा।

"हाँ हम लोग सच्ची बात कहते है। लेकिन स्त्रियाँ झूठी बात कह-कर सच्ची बात को छिपाये रखने की कोशिश करती है।" विजय बोला।

"इन्ही महाशय ने" केवल सच्ची बात कही है। कहकर गाड़ीवान मुस्करा दिया।

"और कौन ?" अनुला के इस प्रश्न मे व्यङ्ग की छाया थी।

"कोई भी हो, सच्ची वात कही जाने में क्या हर्ज है ?"

"वलदास, तो क्या तुम पुष्पार्पण न करोगे ?"

"उपासिकयें जोर डालेंगी तो कर दूँगा, नही तो यूँ ही भी रह जाऊँगा।"

"तो क्या नरक आदि नारियल के छिलके भरने के लिये हैं ?" पियल की माँ बोली।

"हम नरकादि जाने से नही डरते। मर्दो के लिये नरको को सुरक्षित रखकर यदि सभी स्त्रियाँ स्वर्ग ही चली जायेंगी, तो स्वर्ग स्त्रियो से भर जायगा।"

"इसीलिये कहा जाता है न कि देवेन्द्र शक्र की हजारो दिव्याङ्गनायें है।" विजय ने सभी मर्दों को हँसा दिया।

"इस समय का नरक पहले जैसा नही है। वर्तमान यम-राज अपना मित्र है।"

"वलदास महाशय ! वह कौन हैं ?" वलदास की आवाज की ही नकल सी करते हुए गाड़ीवान ने पूछा।

"वह जो अलि-पुंची-राल मर गया, उसे जानते हो न ?"

"हाँ, हाँ, जो गांव भर मे सव से वडा शिकारी था।"

"विल्कुल ठीक। एक दिन भी ऐसा नही रहा होगा, जिस दिन उसने शिकार न खेला हो। खरगोश, जंगली सूअर, जंगली चूहा आदि जिस दिन उसके हाथ न लगता, उस दिन वह एक गोह ही मार कर घर लाता था।"

"तव ?"

"शिकार के प्रति अत्यधिक लालसा रहने के कारण उसने मरते समय कहा-कि उसकी बंदूक में वारूद भरकर, वह भी उसके 'तावूत' मे रख

दी जाय। मरने पर वह आदमी यम-राज के सामने उपस्थित हुआ तो उसकी बंदूक उसके साथ थी।

"दो नली वाली वन्दूक रही होगी", कह गाडीवान ने सहारा दिया।

"हाँ, यमराज ने पूछा-अरे! यह क्या है? अली-पुंची राल बोला-- "मुझे सर्दी लगती है, तो मै यही 'पाइप' पीता हूँ।' यमराज ने कहा--मेरी भी इच्छा होती है इस 'पाइप' को पीकर देखने की।' तब अली-पुंची-राल ने दो नली वन्दूक का सिरा यमराज के मुँह मे रख दिया। यमराज ने वन्दूक के सिरे को चूसना शुरू किया। पुंची-राल ने तत्काल 'घोड़ा' दवा दिया। यमराज वही मरकर गिर पड़ा।"

मातर-स्वामिनी और पियल की माता के अतिरिक्त शेप सभी खिल-खिलाकर हँस पड़े।

'तो अव अलि पुची राल ही नरक का राजा है?" अनुला ने पूछा।

"वड़ी लड़की, वलदास को उकसा-उकसा कर यूँ ही उससे झूठ बकवास न करा,' पियल की माँ ने उपदेश दिया।

'अब अलि-पुंची-राल ही नरक आदि का राजा है। वह प्राणी-हिंसा करने वालो को किसी प्रकार का दण्ड नही देता। काँटेदार-वृक्ष तक को कटवा कर, उसका ईधन बनवा दिया है।"

"तो महाशय! अव हमे डरने की जरूरत नही।" गाडीवान बोला।

"कैसा भय?"

कटहल के पेडों को पार कर चुकने पर गाड़ी खुले खेतों की जगह पर पहुँची। दूर ग्रामों से आनेवाली दो ग्राम-सभा सडकों के मिलने की जगह पर एक चौरस्ता था। वहाँ दुकानें भी थी। परचून का सामान, लत्ता कपड़ा और चाय आदि सभी-कुछ इन दुकानों पर मिल जाता था। उस चौरस्ते को ही इन दुकानो के लिये उपयुक्त समझने वाले ग्रामीणों के बारे मे यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता था कि वह व्योपार करने में चतुर है। कई ग्रामों के ग्रामीण इसी चौरस्ते पर इकट्ठे होते थे। उन ग्रामीणों की आवश्यक वस्तुयें उन्हें सहज पहुंचा, उन की वांसुली पर हाथ

फेरने के लिए बनी दुकानो के लिये योग्य स्थान था यही चौराहा। जिन ग्रामीणों ने उस चौरस्ते को दुकानदारी के लिये चुना, उन्हे व्यापार करने की स्कूली-शिक्षा नही मिली थी, तो भी उन्हे यह सहज ज्ञान सिद्ध था। यदि इस जगह पर दुकानें न होती, तो चारो ओर से यहाँ इकट्ठे होने वाले ग्रामीण, अपनी-अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति के लिये, जिस-जिस ओर उनकी जाने की इच्छा होती, उस उस ओर चले जाते।

"बैलो की साँस चढ गई है। कुछ रुककर, सुस्ता कर चले," कहते हुए गाडीवान ने गाडी को रोक, बैलो को खोल, घास की एक मुट्ठी लेकर उनके सामने डाल दिया। गाड़ीवान भी चाय का एक प्याला पीकर थकान उतारने के लिये काफो की दुकान मे जा घुसा।

चौरस्ते से कुछ ही गज अन्दर की ओर, सडक के दोनों किनारें पर फैले हुए दो बडे खेत थे। बायी ओर जहाँ खेत खतम होता था, वहाँ से क्षितिज तक समान रूप से फैला हुआ विशाल जगल था। वह ऐसा इसलिये प्रतीत होता था, क्योंकि बीच मे जहाँ तहाँ बसे हुए गांव आँख से दिखाई न देते थे। दाहिनी ओर एक घुमावदार खेत था, जिसका दूसरा सिरा दिखाई न देता था। उस खेत के एक ओर जा विशाल जगल आरम्भ होता था, वह जहाँ तक नजर जाती थी, वहाँ तक ऐसा प्रतीत होता था उसके शिखर पर धुएँ का पर्वत है और वह चक्रवाल को स्पर्श करने वाले नीले बादलो के सदृश है। गाड़ी के अन्दर बैठी स्त्रियो तक ने उस जंगल के बैदी, कटहल, आमा होर, बकिनि, कोन आदि वृक्षो को पहचान लिया। खेत के पेडो के बीच मे बगुला-भक्ति करने वाला सारस, गाड़ी मे बैठी स्त्रियो को उस समय दिखाई दिया, जब उसने उडकर अपने दुग्ध समान श्वेत परो का प्रदर्शन किया। यह दुकानें ऐसी भूमि पर थी, जिसके पीछे एक टीला था और जिसे थोडे ही समय पूर्व एक जंगल जलाकर साफ किया गया था।

इन दुकानो को, जंगल जलाकर साफ की गई भूमि को तथा चक्रवाल तक फैले हुए से प्रतीत होने वाले उस विशाल जंगल को देखने से नन्दा

को याद आई 'सिंहल, गये जिनदास की, उसके कारोबार की, और याद आई करोलिस की उस चिट्ठी की, जिसमें उसने लिखा था कि जिनदास अँकिरिन कुम्बुर मे एक देहाती-औरत के घर मे रहकर निम्न प्रकार की खेती करके पेट पाल रहा है। नन्दा मातर-स्वामिनी के समान अन्तर्मुख-दृष्टि वाली स्त्री नही थी। यह होने पर भी उसके हृदय में उठी इन अचानक भावनाओं के कारण, अतीत की घटना में पुतली के नाच के समान उसके मन पटल पर अंकित हो गई।

अपनी माता की इच्छा के अनुसार नन्दा ने जिनदास से विवाह किया था। पियल ने उसे चाहा था, लेकिन उसने पियल को नही चाहा। इसलिये विवाह के समय पियल और जिनदास मे से कौन उसके अधिक अनुकूल है, यह प्रश्न ही नन्दा के दिल मे पैदा नही हुआ था। हो सकता है कि राख से ढकी आग की तरह ग्रामीण-स्त्रियों के मन मे यह भावना रही हो कि जिनदास, और नन्दा का मेल नही बैठता, लेकिन नन्दा मे इस प्रकर की कोई भावना नही थी। जिस दिन नन्दा का जिनदास से विवाह हुआ, उसी रात से उसने जिनदास से प्रेम करना आरम्भ किया। जब नन्दा को विवाह के दिन, रात्रि के समय जिनदास से की गई बातचीत की, जिनदास को उसके प्रति तथा उसको जिनदास के प्रति प्रकट हुआ-प्रेम की तथा पहले से सर्वथा अपरिचित, कभी बातचीत तक न किये रहे जिनदास के साथ स्थापित हुए रिश्ते की याद आई तो उसके मन मे पहले तो संतोष उदय हुआ, उसके बाद शोक और उसके बाद तीव्र वेदना और उसके भी बाद भय।

जिनदास के साथ विवाह होने के बाद यदि नन्दा ने कभी पियल का विचार किया था, तो वह वैसे ही जैसे दूसरी स्त्रियाँ किसी भी ऐसे व्यक्ति की याद करती हैं, जिससे उनकी बचपन से जान-पहचान रही हो। लेकिन अब कुछ समय से, जब भी उसे कभी पियल का ध्यान आ जाता है तो उसके मन मे पूर्व प्रकार के उपेक्षा-भाव से भिन्न प्रकार की ही भावनायें उठती हैं। पहले जिनदास की याद आने पर उसे कभी पियल

का ध्यान नही आता था, लेकिन अब जिनदास याद आता है तो साथ-साथ पियल भी याद आ जाता है। इसीलिये उसे किसी के जिनदास की याद दिलाने पर क्रोध भी आ जाता है।

किसी भावी विपत्ति को स्त्री अपनी वुद्धि द्वारा नही देख पाती, वह देख पाती है उसे अपनी सहज चेतना द्वारा। कामेच्छा तथा भूख जैसी अनुभूतियों को मात्र वुद्धि से दवाना उतना आसान नही, जितना अभ्यास मिश्रित वुद्धि के द्वारा। मर्द वहुत करके इस अभ्यास से शून्य होते है। सहज चेतना से भावी भय का अन्दाजा कर सकने वाली स्त्रियो मे कामेच्छा तथा भूख जैसी मूल-प्रवृत्तियो को दवाये रखने की वैसी ही शक्ति होती है, जैसी सूँघकर भावी भय का पता पा जाने वाली चीती मे अपने वच्चो के प्राण वचाने के निमित्त। स्त्री को यह शक्ति कुलागत चरित्र या समाज सम्मत चरित्र से प्राप्त होती है।

नन्दा इस वात को असन्दिग्ध रूप से जानती थी कि जिनदास के साथ विवाह हो जाने से पहले पियल उसके वारे मे जैसे अव सोचता है, उससे सर्वथा भिन्न प्रकार से सोचता था। विवाह होने से पूर्व वह पियल से वातचीत करती थी, उसके साथ मजाक करती थी, उसमे पियल के प्रति न कोई शक रहता था, न भय रहता था और न रहता था संकोच। वचपन से वह पियल की संगति मे रही थी। इसलिये जव वह सयानी हो गई तव भी पियल के साथ पूर्ववत् ही वातचीत करती रही, उसके साथ हँसी-मजाक करती रही। पियल से चिट्ठी पाने पर भी नन्दा के मन मे पियल को लेकर कोई भाव-परिवर्तन नही हुआ था। जो थोडा परिवर्तन हुआ था, वह तभी जव नन्दा की माँ ने उससे प्रश्न किया था, सम्पूर्ण भाव-परिवर्तन हुआ जिनदास के साथ विवाह हो जाने पर ही।

पियल को लेकर जो लज्जा, शक, भय, चंचलता उसके मन मे पहले कभी नही थी, वह अव क्यो है, यह प्रश्न नन्दा के मन मे कभी पैदा नही हुआ था। अव जिनदास का ध्यान आते ही, उसके मानस-पटल पर पियल की सूरत क्यो अकित हो जाती है?

नन्दा आत्मवंचना करने मे अभ्यस्त, धर्म-भावना से युक्त स्त्री नही थी। पियल को लेकर जो लज्जा, शक, भय और चंचलता उसके मन मे पहले नही थी, वह अब पैदा होने लगी थी, क्योकि उसके अचेतन मन में यह बात पैठ गई थी कि ऐसा करना 'अशोभन' है। वंशाभिमान, समाज सम्मत धारणायें, पति-भक्ति आदि भावनाओं रूपी पहरेदार ऐसी 'अशोभन बातो को उसके चेतन-मन रूपी शिष्ट-समाज मे न घुसने देते थे। इसीलिये नन्दा को इस बात की अभी तक कोई जानकारी नही थी कि उसके अचेतन-मन में ये 'अशोभन-बातें' विद्यमान है। दूकानो, साफ की हुई जमीन और चक्रवाल तक फैला हुआ सा जंगल, ने जब नन्दा को उसके भूत और जिनदास की याद दिलाई उसी समय जो उसे पियल का भी ध्यान आया, उसका कारण उसके अचेतन-मन मे छिपा हुआ उक्त "अशोभन" व्यापार हो था।

"नन्दा कुछ गम्भीर चिन्तन में डूबी हुई सी है। यह ले आम," कहते हुए पियल ने एक पका आम नन्दा की ओर बढा दिया।

बनावटी हँसी हँसते हुए नन्दा ने वह आम लेकर खा लिया। अनुला को आम की अंतिम फाँक मिली है, यह बात नन्दा के ध्यान मे अभी आई। विजय की स्त्री पियल द्वारा काटकर दिया गया आम खा रही है।

"केवल नन्दा ही उस तरह जा रही है, जैसे पूजार्थी को जाना चाहिये, बलदास ने कहा।

"ऐसा क्यो कहते हो ?"

"नन्दा बिना कुछ भी बोले गुम-सुम बैठी है, इसीलिये। नाग पुष्प चढाकर, यदि अच्छी तरह पुण्यार्जन करना हो, तो इसी तरह यात्रा करनी चाहिये।"

"बोलने की जरूरत होने पर मै बोलती हूँ, बलदास की तरह बकवास नही करती रहती, नन्दा ने प्रत्युत्तर दिया।

"नन्दा को और आम चाहिये ?" पूछते हुए बलदास ने एक और आम आगे बढाया।

"वलदास मुझे ठगना चाहता है। क्या वह कच्चा आम नही है?"

"नही। ले।"

"तो क्या काटकर नही दिया जा सकता?" पूछते हुए नन्दा मुस्करा दी।

"नन्दा सचमुच वड़ी चण्ट है," कहते हुए वलदास ने कच्चा आम एक ओर रख कर, पका आम लें, काट कर नन्दा को दिया।

"वलदास ने सोचा होगा कि मुझे यूँ ही आसानी से ठगा जा सकता है," कहते हुए नन्दा मुस्कराई और उसने आम ले लिया।

पियल ने समझा कि नन्दा ने उसी को तीर का निशाना वनाया है।

"ठगी गई है जिनदास महाशय द्वारा," वन्नदास ने तुर्की-वतुर्की जवाव दिया।

"वलदास! मेरे साथ इस प्रकार का वेकार मजाक मत कर।"

"वलदास, नन्दा को वेकार मत चिढा। आराम से वैठ," पियल की माँ वोली।

"विलम्व हो जाने पर आज नाग-पुष्प हाथ नही लगेंगे। यह नाग पुष्प पूजा करने आने वाली ही भीड तो है न!" कहते हुए गाड़ीवान ने श्वेत-वस्त्रो से सुसज्जित, ग्राम सभा पर आते हुए स्त्री-मर्दों को दिखाया।

"हाँ हाँ, ये लोग भी परगोड जाने वाले यात्री ही है," पियल की माँ ने समर्थन किया।

"जल्दी-जल्दी हाँक," विजय ने गाड़ीवान से कहा।

आठ वजते-वजते गाड़ी परगोड विहार के पास पहुँची। जो सड़क विहार मे प्रविष्ट होती थी, उसके दोनों ओर फूल-पत्तो से लदे नाग पुष्पों के वृक्षो की छाया थी। सडक के दोनो ओर के समान ऊँचाई वाले पेड ऐसे प्रतीत होते थे जैसे कैंची से वरावर-वरावर कटी गयी झौवा की झाडियाँ हो। आकाश के तारो के समान चमकने वाले नाग पुष्पों से निकलने वाली मधुर सुवास के कारण मातर-स्वामिनी तथा पियल की माता की उन फूलों को चढ़ाने की इच्छा दृढ हो गई, तीव्र हो गई। गर्म-

गर्म गुलगुले पकने के समय जो ग्रामीण काफी की दुकान के पास से गुजरता है जैसे उसके मुँह से पानी भर आता है, उसी प्रकार नाग पुष्प की सुगन्धि ने जब मातर-स्वामिनी और पियल की माता की नाक को स्पर्श किया तो उनके मन मे जगी श्रद्धा और बुद्ध-पूजा की आकाक्षा। लेकिन नाग पुष्प की सुगन्धि ही जब अनुला नन्दा तथा श्रीमती विजय के नाक तक पहुँची, तो उनके मन मे जगी सर्वथा भिन्न प्रकार की अनुभूतियाँ। अनुला को याद आई उस आनन्द की जो उस समय हुआ था, जब उसके चाचा के एक लड़के की झाड़ी में उसे तरणो के साथ बातचीत करने का मौका मिला था और उस सुगन्धि की जो उसके इतर से भिगोये रुमाल के एक कोने से तथा इतर से ही सुवासित कुछ तरुणो के सिर से आ रही थी। नन्दा को याद आई उस सुगन्धि की जो जिनदास के साथ विवाह होने के दिन, रात्रि के समय, इतर से सिक्त उसके अपने सिर, उबटन लगा गदन और मुँह तथा इतर से ही सिक्त जिनदास के चेहरे से आ रही थी। इसी से नाग पुष्प-गन्ध सूँघने वाली नन्दा के मन मे शोक-युक्त प्रीति की भावना पैदा हुई और पैदा हुई अपने पास के ही पियल स दूर-दूर रहने का प्रवृत्ति को सहारा देने वाली भीति। विजय की पत्नी जिस भावना से विजय के और भी नजदीक हो गई थी, वह नन्दा के मन मे उसी भावना से कुछ विशेष असमान भावना न थी।

जब दोनो हाथ फूलो से भर, 'गाथा' का पाठ करती हुई स्त्रियाँ बुद्ध-मूर्ति के सामने के पुष्पासन पर एक एक फूल रख कर पूजा कर रही थीं, उसी समय बन्दास, पियल तथा विजय तीनों जने दो दो तीन तीन नाग पुष्प हाथ मे ले जाकर, पूजा कर, तीन तीन बार 'साधु, साधु, कह प्रतिमा-गृह से बाहर भी निकल आये।

'तरुणो की बुद्ध-पूजा हो गई ?" मातर-स्वामिनि ने पूछा। पुष्पासन पर एक एक पुष्प रख, पूजा कर अन्त मे उसने घुटने टेक वन्दना करने के लिये अपना रूमाल जमीन पर बिछाया।

"आकर भगवान् को नमस्कार करो", कह पियल की मां ने तीनो तरुणो को आज्ञा दी और स्वय मातर-स्वामिनि के पास ही घुटने टेक "इतिपि सो भगवा" कहते हुए दोनो हाथो को सिर पर ले जाकर वन्दना की। पीछे की ओर देख मुस्कराती हुई अनुला ने दोनो वृद्ध उपासिकाओ का अनुकरण किया। शेप तीनो देवियों ने भी हँसी को दवाये रख अनुला का अनुकरण किया। तीनो तरुणों ने भी स्त्रियो के पीछे बैठ, मंत्र पढने की अपेक्षा भी शीघ्रता से 'गाथा, का उच्चारण किया और बुद्ध को नमस्कार कर विहार से बाहर हुए। केवल दो तीन गाथाओं का पाठ करने मात्र से तरुण कान्ताओ को बुद्ध-पूजा भी समाप्त हो गई। दोनो वृद्ध उपासिकाओं के मुँह से ललित गीतो के समान निकलने वाली गीतावली इतनी शीघ्रता से समाप्त नही हुई। इसलिये नमस्कार-मुद्रा में ही बैठी तरुण कान्तायें बीच बीच मे नीची नजर से वृद्धा उपासिकाओ की ओर निहार रही थी।

मातर-स्वामिनी ने अपनी गाथाओ की समाप्ति होते ही दोनो हाथ तथा सिर को जमीन पर रख, 'साधु-साधु, कह वडी भक्ति और प्रेम से वँदना की। पियल की माता ने भी तुरन्त मातर-स्वामिनी का अनुकरण किया। वे दोनो उठी तो तरुण कान्ताओ की ओर देखती हुई नहो, वल्कि जमीन पर नीची नजर किये ही किये विहार से वाहर आईं।

वोधि-वृक्ष तथा चैत्य की भी पुष्पों से पूजा कर चुकने पर मातर-स्वामिनी तथा पियल की माँ ने भी प्रतिमा-गृह के एक ओर खडे हो देवताओ तथा मृत सगे-सम्वन्धियो को पुण्य दिया। सगे-सम्वन्धियो को 'पुण्य, देते समय मातर-स्वामिनी की आँखो मे जो आसू छलक आये थे, उन्हे दूसरी स्त्रियों ने नही देखा था। उसकी दोनो आंखों के सजल हो जाने का कारण था कि उसको अपने मृत पति की याद के साथ उसका कत्तिरिना से जो सौहार्द था, उसकी भी याद हो आई थी। उसने अपने मृत सगे-सम्वन्धियों को 'पुण्य, देने के वाद वड़ी श्रद्धा, भक्ति और प्रेम से अपने पति के लिए भी 'सुगति; की प्रार्थना की।

लगभग एक वजे के आस पास उनकी 'पूजा-विधि, समाप्त हुई। तब वे वहाँ लौटे, जहाँ गाडी खड़ी की गई थी और वही घास पर बिछी एक चटाई पर बैठकर उन्होंने खाना खाया। जिस तश्तरी मे पियल के द्वारा काटे गये प्याज और कच्ची मिर्च रखी थी, उसी तशतरी मे बलदास ने सार्डिन-मछली के दो डिब्बे खाली कर दिये। पूर्णिमा आदि पवित्र दिनों मे मॉस खाने की अनिच्छुक मातर-स्वामिनी तथा पियल की माँ ने अरुचि-पूर्वक ही पावरोटी तथा सार्डिन-मछली का भोजन किया। नाग पुष्पो की पूजा कर उन्होंने जो इतना कुशल (पुण्य) कर्म अर्जित किया था, उससे ,उनका मन इतना अधिक आनन्दित था कि उन्हे भूख की अनुभूति ही नही हुई। लेकिन पैदल चलने से जिनके शरीर थक गये थे, स्वच्छ वायु मे साँस लेने से जिनके मन प्रमुदित थे, वे न केवल सार्डिन-मछली ही वल्कि पाव-रोटी के साथ मास भी कौवो की तरह निगल गये।

"वन्दना करने नही, हम तो आये है खाने," कहते हुए बलदास ने तश्तरी मे जो तीन 'कटलिस, पड़े थे, उन्हे भी अपनी पत्तल पर रख लिया।

"नन्दा के लिये अब केवल पाव-रोटी ही वची है," कहकर पियल मुस्कराया।

"सार्डिन-मछली का एक और टिन खोला जाय," विजय ने प्रस्ताव किया।

"हमारे लिए पर्याप्त है," नन्द बोली।

"कम है, कम है, टिन खोलो," बलदास ने आग्रह किया। पियल ने एक और सार्डिन-दिन खोल, तशतरी मे जो कुछ प्याज-मिर्च बची थी, उस पर उण्डेल दिया। बलदास ने तशतरी ले, तीनो तरुण स्त्रियों की पत्तल पर मछली परोस दी।

"पियल को भी दूँ ?"

"थोडी सी पर्याप्त होगी।"

"और विजय को ?"

"मेरे पास तो है, हाँ नन्दा को कुछ और दो।"

"मुझे नही चाहिये।"

"अब माँगने पर भी नही मिलेगी," कहते हुये वलदास ने शेष मछली अपनी ही पत्तल पर गिरा ली और तरुण कान्ताओ की मुस्कराहट के बीच उसे पाव रोटी के साथ निगल गया।

"ये लोग भी तरुणो को बढावा देती है।" कहते हुए मातर-स्वामिनी ने हँसने वाली तरुणियों पर दोपारोपण किया।

'विहार (... पर्णशाला) आये है तो क्या हम विना हँसे-बोले रह सकते है ?" कहते हुए अनुला ने वलदास को ओर देखकर आँख मारी।

"क्या हँसना पाप है ?"

"इसका उत्तर देगी ये तरुण स्त्रियाँ।' पियल की माँ का प्रत्युत्तर था।

"हँसने बोलने के लिये क्या विहार आने की जरूरत है ?" मातर-स्वामिनी ने कुछ असतोष-पूर्ण भाव व्यक्त किया।

"क्या विहार मे रहने वाले भिक्षु नही हँसते है ?" वलदास का यह प्रश्न सुनने को मिला, तो तरुणियो के लिये हँसी रोकना कठिन हो गया।

पियल ने अनन्नास के दो टिन खोले। उनमें से एक दोनों वृद्धा उपासिकाओ के सामने रख, दूसरा अनुला के हाथ सौंपा।

' देवताओ को नही, स्त्रियो को चाहिये कि वे देवताओ की बजाय हमे पुण्य दें।"

"महाशय का कथन सर्वथा सत्य है।" कहते हुए गाड़ीवान ने अपने हाथ का अन्नास का टुकडा दिखाया।

"इतना अच्छा भोजन करके भी, पुण्य न देना पाप है।"

"तो पुण्य दें न" अनुला बोली।

"खाना समाप्त होने पर, हम पेट भर पुण्य देगे।"

"वलदास को किसी के दिए हुए पुण्य की अब और क्या जरूरत है ?"

"उपासिकाओं को चाहिये कि वे पुण्य दें।"

"उपासिकाएँ किसी को क्यों पुण्य दे ?"

"क्यों, पूछते हो ? इतना अच्छा भोजन कराने पर, खा चुकने पर, उपासिकाओं को चाहिए कि वे हमें ही पुण्य दें।"

"बलदास, तुमने रास्ते में कहा था न कि अब नरकादि का राजा एक मित्र ही होने के कारण पुण्य करने का कष्ट उठाने की जरूरत नही ?" नन्दा ने पूछा।

"पुण्य न कर सकने के कारण।"

"इसके लिए हम क्या करें ?"

"इसीलिए तो पुण्य देने के लिए कहा न !"

सभी अपने अपने स्थान से उठ खड़े हुए और तशतरियाँ तथा प्याले धोकर उन्हे गाड़ी के बकसे में रख दिया। गाड़ीवान ने चटाई को झाड़, लपेट गाड़ी मे रखा।

★

परिच्छेद/१३

परगोड विहार-स्थान से प्रस्थान किये यात्रियों ने रास्ते में यहगम प्राचीन विहार की भी वन्दना-पूजा की। इस प्रकार उन्हे अपने-अपने घर पहुँचते पहुँचते लगभग रात के आठ बज गये। अनुला, विजय की पत्नि, पियल, बलदास तथा विजय को इस यात्रा से वैसा आनन्द प्राप्त हुआ, जैसा किसी अन्य मनोविनोद से। अपने छुटपन मे अनुला प्रथम बार एक डोंगी मे बैठ कर गिनिवैल विहार की वन्दना करने के लिये गई थी। उस यात्रा में उसे बड़ा आनन्द आया था। इस यात्रा मे भी उसे जो आनन्द आया, वह उस आनन्द से किसी भी प्रकार कम न था। भूत या भविष्य को लेकर कोई भी ऐसी चिन्ता उसके मन में पैदा नहीं हुई, जिसने उसके आनन्द मे विघ्न डाला हो। इसलिये उसे इस यात्रा में आनन्द ही आनन्द आया। नन्दा इस प्रकार के अमिश्रित आनन्द का अनुभव नही कर सकी। नही कर सकी, इसीलिये क्योकि उसके अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्य के बारे में उसके मन में जो जो कल्पनाये उठी वे उसके आनन्द में बाधक सिद्ध हुई। इतना होने पर भी जब विहार-स्थान के समीप पहुँच उसने पुष्पार्पण किया था और प्रीति-भोज किया था, उस समय नन्दा को भी अनुला तथा श्रीमती विजय की भांति ही शोकाकुल भावना से रहित आनन्द की अनुभूति हुई थी।

परगोड जाते समय जब चौरस्ते पर गाड़ी रोकी गई थी, उस समय उन दुकानों और खेत को देखकर अनुला के मन में, अपने भूत और जिनदास के बारे मे मिली जानकारी से सम्बन्धित जो विचार उठे थे, वही विचार रात को सोने जाने के समय, नन्दा के मन में फिर फिर उठे। इस बार उसके मन मे पियल का जो चित्र खिचा, वह इससे पूर्व कभी न उठे कुछ विचारों के साथ था। यह नही कहा जा सकता कि कमरे का घोर अन्धकार उसके अचेतन मन में छिपे विकारो को उसके चेतन मन

की ऊपरी सतह पर लाने का कारण नही हुआ था। दिन मे हमारे चित्त मे उभर कर प्रगट हो सकने वाली कुछ अला-वला भावनाये अपने नग्न-स्वरूप की वजह से लज्जा और भय के मारे मुँह छिपाये रहती है। घोर अन्धकार होने पर, आँखो के सामने अन्धेरा छा जाने पर, चित्त भी कुछ अन्धकार पूर्ण हो जाता है, इसीलिये हमारे अचेतन मे छिपी हुई, अन्धकार से प्रेम करने वाली कुछ अलावला भावनाये रात को अकेले रहने पर ही हमारे मन मे प्रगट होती है।

जिनदास की याद आने पर पियल का चित्र भी क्यो नन्दा की आँखो के सामने आ जाता था, यह अब नन्दा को स्पष्ट था। उसके अपने चित्त मे पियल का जो चित्र उभर आता था, उसके मूल मे जो 'विकृति' थी, उसके गुप्त रहने के कारण ही उसे पहले भय लगता था। अब नन्दा को यह असदिग्धरूप से स्पष्ट था कि उस 'विकृति' का यथार्थ स्वरूप क्या है, इसलिये अब उसे न पहले की तरह डर लगता था, न लज्जा आती थी और न वह चंचलता का ही अनुभव करती थी। और क्यों? क्योंकि उसके अचेतन मन मे पियल को लेकर जो अला-वला अनुभूति है, उसकी जानकारी ने उसके वशानुगत गर्व को दृढतर बना दिया था।

परगोड विहार-स्थान पर, मध्यान भोजन के अनन्तर, खुले मे घूमते हुए पियल ने उसकी ओर आकर जो इधर-उधर की बात-चीत की थी, उससे नन्दा को उसके विचार-विशेष का आभास मिल गया था। क्योंकि नन्दा के सिर पर उस समय वंशाभिमान सवार था, इसलिये उसका पहला उत्तर इतना ही था कि उसने पियल को आँखो से तरेरा।

गाँव की सहज परिस्थिति न केवल कुछ चुने हुए घरों की स्त्रियों को, वल्कि सर्व सामान्य गरीब घरो की स्त्रियो को भी अपने वंशानुगत रीति रिवाजों को भंग करने की अपेक्षा, उन्हे बनाये रखने की ही प्रेरणा देती थी। वंशानुगत रीति रिवाजों की उपेक्षा करने वाली कोई कोई बातें ऊँचे परिवारों के कुछ चुने हुए घरों में ही दिखाई देती थीं।

12

इसलिये जिस समय की भी याद ताजा की जा सकती है, उस समय से, वशानुगत रीति रिवाजों का और भी अच्छी तरह निभाने की इच्छुक स्त्रियाँ उन रीति रिवाजों को सहज ही निभाने की अभ्यस्त हो गईं। कभी कभी चित्त मे पैदा होने वाली अला-बला भावनाओ को सहारा देने वालो विचार-सखी उनमे से किसी एक के भी चित्त में पैदा नहीं होती थी। अपनी चित्त-प्रवृत्ति के वशीभूत हो वंशानुगत रीति-रिवाज की उपेक्षा करने वाली एक भी स्त्री वंश परम्परा मे न रही होने के कारण, इस प्रकार की विचार-धारा 'बडे-घर' की किसी भी स्त्री के चित्त में उत्पन्न नही हुई। दूसरे घरो में भी ऐसा करने वाली स्त्रियो का मिलना सहज न था। सर्व-साधारण स्त्रियो द्वारा कुल-पम्परा के विरुद्ध किये गये आचरण की बात ऊँचे कुलो की तरुणियो को कभी ही सुनने को मिलती थी। बड़े बूढो की यही कोशिश रहती थी कि गाँव की किसी छिनाल औरत के सम्बन्ध मे कोई भी बातचीत ऊँचे वंश की तरुणियो के कान मे न पडने पावे।

मन और शरीर को प्रमुदित करने वाली चीजें गाँव मे कम ही रहती है। इसलिये जैसे शहरियो की दरिद्रता उनके हर परम्परागत रीति-रिवाज को तोडने मे सहायक होनेवाली होती है उसी प्रकार जो कुछ मिल जाय, उसी मे सन्तुष्ट रहने वाले ग्रामीणो की दरिद्रता नही। वंशानुगत रीति-रिवाज को तोडने में पहल करने वाले के लिये नगर एक बडी जगह हैं, जनाकीर्ण स्थान है। ऐसे लोग, जिनके विचार इतने विकसित हो कि ऐसा करने वाले पर अनुकम्पा कर सकें, जिनकी बुद्धि निर्मल हो, जो मनुष्य स्वभाव से परिचित हो, शहरो में कम नही है। ग्रामो की परिस्थिति इससे सर्वथा भिन्न है। वंशानुगत रीति-रिवाज को तोडने मे पहल करने वाले के लिये गाँव बड़ी जगह नही होती, उतनी जनाकीर्ण भी नही होती। वहाँ वंशानुगत रीति रिवाज का पालन न करने के कारण क्रोधित हो, ऐसा करने वाले को निर्दयता पूर्वक पीड़ा पहुँचाने के लिये प्रस्तुत, कष्ट देने तथा निन्दा करने के लिये तैयार, अनपढ़, असंयत,

विचार करने की सामर्थ्य न रखने वाले, पाषाण हृदय लोगों की कमी नही होती। ऐसी स्थिति मे क्या इसमे कोई आश्चर्य करने की वात है कि गाँव की परिस्थिति वंशानुगत रीति रिवाज का पालन करने मे अनायास ही सहायक सिद्ध होती है ?

गाँव मे दरिद्र ग्रामीण स्त्री को वहुधा अपनी कुल-मर्यादा से हाथ धोना पडता है, जब वह किसी दुस्साहसी का शिकार वन जाती है, अपनी दरिद्रता के ही कारण नही। गाँव की खानदानी औरतों को इस प्रकार के दुस्साहसी लोगों से कभी कोई खतरा नही होता। खानदानी स्त्री की परिस्थिति उसे अपनी कुल-मर्यादा का भंग करने की बजाय उसका संरक्षण करने मे ही सहायक होती है। उनकी कुल-मर्यादा को वनाये रखने मे सहायक होने वाली इस परिस्थिति का निर्माण होता है। गाँवों के छोटे होने से, जल-वहुत न होने से, कुलाभिमान से, ग्रामीणों के अनपढ़ होने से, उजडु होने से, विशेष विचार करने वाले न होने से, अनेक मिथ्या-विश्वासो से युक्त जड-भरत होने से तथा वहाँ इन्द्रियों को परितृप्त करने वाली अधिक चीजो के न होने से; ऐसे ही खिचडी कारणो से; कुछ इसलिये नही कि गाँव के लोग अधिक आध्यात्मिक होते हैं। कुल-मर्यादा को वनाये रखने मे केवल मनुष्यों की सच्चरित्रता, पवित्रता ही सहायक होती है। यह कुछ धर्मोपदेष्टाओ का विचार रहित मत है। कुल मर्यादा को वनाने रखने मे सहायक परिस्थिति उत्पन्न होती है मनुष्यो की सद्प्रवृत्तियो से, लेकिन साथ साथ उसकी दुर्वलताये भी सहायक कारण होती है।

क्या अव यह कोई आश्चर्य का विषय है कि अपने से पृथक हो गये जिनदास के ध्यान के साथ-साथ पियल का चित्र भी नन्दा के मानस पटल पर अंकित हो जाना, इस वात को समझ लेने वाली नन्दा के लिये कि इसका मूल कारण अभी तक उसके अचेतन मन मे इस भावना का छिपा रहना रहा है, कोई अधिक लज्जा या अधिक भय की वात नही रही ? नन्दा जानती थी कि पियल के सम्वन्ध मे उसके मन मे जो भावनायें

पैदा होती है, वह उन्हे अपने कुलाभिमान के बल पर ही दवाये रख सकती है, लेकिन अब वह किस लिये डरे ?

"वचपन मे भी पियल के लिये नन्दा के मन मे जगह थी ?' यह प्रश्न वर्तमान परिस्थिति मे फिर नन्दा ने अपने आप से पूछा। यदि उसकी माँ यह प्रस्ताव करती कि उसका विवाह पियल से होना चाहिये, तो वह उस प्रस्ताव को भी वैसे ही स्वीकार करती, जैसे जिनदास के साथ शादी करने के प्रस्ताव को उसने मान लिया था, लेकिन पहला प्रस्ताव, उसे अधिक प्रियकर होता। उसके 'अधिक प्रियकर' होने का कारण नन्दा के मन मे पियल के लिये विद्यमान ममत्व ही था। जिनदास की अपेक्षा पियल पढाइ-लिखाई मे, सौन्दर्य और पैसे मे अधिक अच्छा चुनाव था।

यात्रा से लौटने के लगभग तीन सप्ताह बाद नन्दा को सूखी खाँसी के साथ ज्वर भी आने लगा। जव तीसरे दिन वुखार १०२ को भी लाँघ गया तो तुरन्त वीर श्री वैद्य को वुलवाया गया। वैद्य ने नन्दा के रोग को 'निमोनिया' वताया और चिकित्सा आरम्भ की। पाँचवें दिन जव ज्वर १०४ पर जा पहुँचा तो भयभीत मातर-स्वामिनी और अनुला डाक्टर को वुलवा भेजने की वात पर विचार करने लगी। लेकिन तंगदस्ती से पीडित हालत मे यह उनकी शक्ति के वाहर का खर्च था। कोई ऐसे सोने के गहने जिन्हे गिरवी रखकर कुछ पैसा प्राप्त किया जा सके, अब न नन्दा के पास शेष वचे थे और न अनुला के पास। उनके स्वर्णभरण इसके पहले ही समय समय पर सेठ की दुकान पर जा पहुँचे थे। वे दोनों ही, यदि उन्हें कही वाहर जाना होता तो वलदास या विजय की वहनों के गहने पहनती थी।

क्योंकि छठे दिन नन्दा का ज्वर १०३° से ऊपर नही गया, इसलिये मातर-स्वामिनी का पहले दिन जो डाक्टर को वुलाने का विचार था, वह उतना उग्र नही रहा, लेकिन अनुला के मन में इस विचार ने अभी तक घर वनाया हुआ था। सातवें दिन ज्वर १०२° से ऊपर नही चढा और रोगिनी ने भी और दिनो की अपेक्षा अधिक शान्ति से वात चीत की तथा

इधर-उधर नजर भी डाली । वैद्य ने 'अब डर के लिये कोई कारण नहीं, कह मातर-स्वामिनी तथा अनुला को निर्भय बना दिया ।

'निमोनिया' तो अच्छा हो गया, लेकिन नन्दा को जो बुखार चढ़ा था, वह पूर्ण रूप से नही उतरा । अब उसे निन्नानवे और सौ के बीच में बुखार रहने लगा । चार सप्ताह बीत गये, किन्तु इस ज्वरांश का यथार्थ कारण वैद्य न समझ सका । अभी तक चावल की काजी का पानी पीते पीते नन्दा बहुत दुबला गई थी । अब वैद्य ने उसे 'माल्टेड मिल्क' देने को कहा । तंग दस्ती की हालत मे अनुला ने बडी मुश्किल से 'माल्टेड-मिल्क' की एक बोतल मँगवाने के लिये पैसे की व्यवस्था की । 'मोल्टेड मिल्क' की बोतल समाप्त हो गई, किन्तु नन्दा के ज्वर मे किसी प्रकार की भी कमी नही आई । वह निन्नानवे के नीचे नही उतरा । एक और 'मोल्टेड मिल्क की बोतल' मँगाने के लिये पैसे की व्यवस्था करना अनुला का सिर दर्द था । नन्दा ने 'थोडा भात' देने को कहा, लेकिन मातर-स्वामिनी इसके सर्वथा विरुद्ध थी ।

"नन्दा स्वेच्छाचारिता से काम मत ले । वैद्य ने कई बार कहा कि थोडा भी ज्वर रहने तक भात नही दिया जाना चाहिये । चार पाँच दिन और सहन कर," मातर-स्वामिनी बोली ।

"अनु, यह क्या वैद्य है । मातर-स्वामिनी के चले जाने पर नन्दा बोली ।" रोगी को भूखा मार मार कर चंगा करना ही इसकी चिकित्सा है । कौन है जो ऐसी चिकित्सा नही कर सकता । मैं काँजी पीते नहीं रह सकती । अनु, थोड़ा भात पका कर दे दे । तिस्स को आने के लिये चिट्ठी लिख दे ।"

"कल ही तिस्स को चिट्ठी लिख दी है । न आ सके तो कोई हर्ज नही । थोडा पैसा भेज दे । दो चार दिन मे कुछ न कुछ पैसा अवश्य आ जायगा ।"

"अनु, बिचारे तिस्स को इतना किसलिये हैरान करती है ? अब हम कितनी बार उससे पैसा मँगवा चुके । नये-वर्ष के दिन हम सबके

लिये कपड़े सिलाकर लाने के कारण उसका काफी खर्च हो गया होगा। उसको थोडा सा ही वेतन मिलता है।"

"यह पैसा मै तिस्स को वापिस लौटा दूँगी।"

"अनु, हम कहाँ से वापिस लौटा सकेंगे ?"

"जैसे भी बनेगा लौटा दूँगी। नन्दा को उसको लेकर घुलने की जरूरत नही।"

शाम को पियल के यहाँ से 'मोल्टेड मिलक' की दो बोतलो का आ जाना अनुला के संतोष का कारण हुआ। जिस दिन से नन्दा बीमार पडी है, उस दिन से प्रति सप्ताह गाँव आने वाले पियल ने उसकी 'तगदस्ती' का हाल जान 'मोल्टेड-मिल्क' की दो बोतले भिजवाई है, यह बात अनुला ने स्वप्न मे भी नही सोची। तंग-दस्ती' को छिपा कर, ऐसे ढग से रहने-सहने मे, जिसमे किसी के तग-दस्ती का सन्देह न हो, 'बड़े-घर' की स्त्रियाँ सिद्ध-हस्त थी। 'तंग-दस्ती' को छिपाये रखने के लिये वे ऐसे-ऐसे उपाय करती थी कि बड़े-बडे खुर्राण्ट मर्दो की बुद्धि भी वहाँ तक नही पहुँच पाती थी। अनुला ने एक से अधिक बार ऐसा किया कि बलदास की बहन के स्वर्णाभरण मँगवाये, उन्हे सादा के हाथ सेठ के यहाँ भिजवाकर एक दिन के लिए अपने गिरवी स्वर्णाभरण बदले मे मँगवा लिये, और किसी बड़े उत्सव मे सम्मिलित हो आई। दूसरे दिन उन आभूपणो को सेठ की दुकान पर वापिस भेज, बलदास की बहन के गहने वापिस मँगवा लिये। नन्दा के गले मे जो माला पडी है, वह सोने का पानी चढ़ी हुई चान्दी की माला है, इतना होने पर भी 'बडे-घर' की स्त्रियो मे ही नित्य मिलजुल कर रहने वाली किसी भी दूसरी स्त्री को इस बात का शक तक नही हो सकता था कि नन्दा सोने का पानी चढा चाँदी की माला पहने है।

नगर मे गरीब स्त्री की तो बात क्या यदि मध्यम श्रेणी की भी कोई स्त्री सच्ची कीमती माला पहने हो, तो भी प्राय सभी शक करते है कि गिल्ट की माला होगी। लेकिन दूसरी ओर कोई खानदानी स्त्री

चाहे गिल्ट की माला ही पहने हो, सभी विश्वास करते हैं कि उसने सच्ची कीमती माला पहन रखी होगी। इस प्रकार की धोखा-धड़ी अपनी झूठी 'शान' बनाये रखने की कोशिण करने वाले लोगो की शहरों में कभी नही है। तो इसमे आश्चर्य करने की कौन-सी बात है कि यदि 'बडे-घर' की जिन स्त्रियो ने पहले अच्छे दिन देखे थे, वे इस समय दरिद्र होने के वावजूद अपनी झूठी शान बनाये रखने की कोशिश कर रही हो ?

रात के आठ बजे के आस-पास अनुला ने 'मोल्टेड-मिल्क का प्याला तैयार कर नन्दा के हाथ मे दिया। अभी उसमे से भाप निकल रही थी। 'मिल्क' का प्याला हाथ मे आने पर नन्दा ने पूछा—'यह मोल्टेड मिल्क कहाँ से आया ?'' ''कही से भी आया हो, इससे क्या ?'' अनुला की आँखों मे शरारत पूर्ण हँसी थी।

''अनु ! कहाँ से ?''

''कही से भी हो इससे क्या ? वहन जी।''

''मै पीती हूँ, लेकिन बता न कि कहाँ से,'' कहते हुइ नन्दा नें दूध के प्याले मे से एक घूँट भर लिया।

''पियल ने दो बोतले भिजवाई है।''

''नन्दा को इतना गुस्सा आया, इतनी लज्जा का अनुभव हुआ कि उसका चेहरा काला पड गया। 'मोल्टेड मिल्क' का प्याला दीवार पर छोटे छिटकाता हुआ, दीवार के कोने मे गिरकर टुकडे-टुकड़े हो गया।

अनुला के सिर पर भी क्रोध सवार हो गया—

''सब मिथ्याचार है। दिन-रात पियल ही माला जपते-जपते ही बीमार पडी है। अब भी पियल को ही याद कर रही है। झूठ-मूठ दिखाना चाहती है कि पियल को नही चाहती, पियल से गुस्से है।''

'अनुला के मुँह से जहर मे बुझे हुए तीरो के समान एक के बाद एक, ये भयानक वाक्य केवल इसलिये नही निकले कि वह गुस्से थी, वल्कि इसलिये क्योकि उसके मन मे भी ईर्षा छिपी थी। यह ठीक है कि उसका अविवाहित ही रहने का संकल्प था, किन्तु कुछ समय से उसके

मनमे भी पियल के लिये जगह बन गई थी। पर अपने दृढ आत्माभिमान के कारण, कुलाभिमान के कारण, बहन को प्रेम करने के कारण, उसने पियल के सम्बन्ध मे उसके हृदय मे जो प्रेम उत्पन्न हुआ था, उसे लेकर जो ईर्षा का भाव पैदा हुआ था, उसे वैसे ही बल पूर्वक दबा दिया, जैसे कोई लोहे के काँटे-दार बूट से किसी सर्प का सिर कुचल डाले। जिस प्रकार लोहे के काँटो वाले बूट से कुचला गया, मर्माहत सर्प फिर सिर उठाने के लिये जान तोडता है, उसी प्रकार अनुला की यह भावना भी फिर सिर उठाने के लिये छटपटा रही थी। नन्दा को दूध का प्याला फेंक देने के कारण उस भावना ने फिर सिर उठा लिया। इसलिये उसे अचानक क्रोध आ गया।

जैसे पानी से भरी गेंद अकस्मात् फूट पडे, उसी तरह नन्दा की रुलाई फूट पड़ी। इस भय से कि उसके रोने की आवाज कमरे से बाहर के लोगों को भी सुनाई दे सकती है, नन्दा ने अपने मुँह को तुरन्त तकिये से ढँक लिया। तकिये से ढके हुए नन्दा के मुँह से अब केवल सिसकने की आवाज सुनाई दे रही थी। लेकिन उसके हृदय को कितना आघात पहुँचा था, उसके मन मे कितना बडा तूफान उठ रहा था, इसका पता अनुला को नन्दा के शरीर कम्पन से लगा। क्रोध के शान्त हो चुकने पर भया-क्रान्त अनुला ने इधर-उधर देखा। इस समय उसका मन दया तथा अनुकम्पा से सिक्त था—

"बहन ! बहन ! रो मत" कहती हुई अनुला नन्दा की चार पाई पर बैठ गई।

'बहन ! गुस्से मत हो," कहते हुए उसने अपना हाथ नन्दा के सिर पर रख दिया।

नन्दा ने सिर उठाकर देखा। उसकी सजल आँखो को देखने वाली नन्दा की आँखो से वर्षा की बूँदों के समान दो बडे-बडे अश्रु-बिन्दु टपक पडे।

'नन्दा ! रो मत।"

'अनु, इस समय तक जिस दुख को, जिस पीड़ा को मैं सहती रही हूँ, उसे तू नही जानती। अनु यदि तू जानती तो मेरे प्रति ऐसे शब्दो का व्यवहार न करती।"

'बहन, मेरे मुँह से जो कुछ निकल गया, उसकी गाँठ मत बाँध। गुस्से मे कुछ शब्द मुँह से निकल गये।"

"अनु! मैं जानती हूँ कि मेरी पीडा से तू अपरिचित है, मेरे सामने उसे प्रगट करने का मार्ग न था। मे कैसे प्रकट करती?"

"बहन! जो भी बात मनमे है, उसे कह। मैं नही जानती, बिना कहे कोई कैसे जान सकता है?"

"अनु यह बात सत्य है कि कुछ समय से मेरे मन मे पियल के लिये अनुराग उत्पन्न हो गया है, लेकिन मै इसे कैसे जगह दे सकती हूँ? मेरा जिनदास से विवाह हो चुका है, इस लिये पियल के अनुराग को दबाये रखने के लिये मैंने इतने दिन अपने से भयानक सघर्ष किया। तो भी वह यहाँ आता है, मेरे साथ बातचीत करने लगता है, मेरा हर तरह ख्याल रखता है, माँ और अनु भी उसको हमेशा यहाँ आते रहने के लिये प्रेरित करती है, कभी-कभी मुझे बातचीत करने के लिये बुलवाकर अनुला भी उसकी सहायक सिद्ध होती है।"

"बहन! हम नही जानती थी। यदि हम जानती तो हम उससे बात चीत करने न जाती। लेकिन अब माँ पियल को अस्वीकार नही करेगी।"

"अनु, बात तेरी समझ मे नही आती? माँ स्वीकार भी कर ले, तो भी क्या मेरी पियल के साथ शादी हो सकती है? उसके साथ बातचीत करने जाने से होती है, मात्र हमारे गौरव की हानि। वह दूसरी ही बात चाहता है।"

"दूसरी बात?"

"हाँ।"

"वह क्या?" अनुला ने बड़े कुतूहल से पूछा।

"पियल ने मुझसे कहा था कि मै पच्चीस हजार रुपये की जायदाद तेरे नाम लिख दूँगा, तू मेरे घर आकर रह। उसने यह प्रस्ताव परगोड से लौटने के चार-पाँच दिन बाद किया था।

"हूँ! ऐसी बात है!" उसे गालियाँ देकर भगाया क्यो नही? अनुला के इस प्रश्न की तह मे उसका कुलाभिमान था और उसकी आँखें क्रोध के मारे जल रही थी।

"अनु! मैने उसकी अच्छी तरह खबर ली। शर्म के मारे उसने आँख नीची कर ली। उसका मुँह लाल हो गया।"

"बहन! जरा ठहर। मै उसकी ऐसी खबर लेती हूँ कि उसकी धोती ढीली हो जाय।" अनुला के सिर पर क्रोध सवार था, इसीलिये वह अनुपस्थित पियल को डाँट रही थी।

"अनु! ऐसा न करना। उसे गुस्से करने से क्या लाभ, उसने यह प्रस्ताव तभी तक के लिये किया था, जब तक कि मै उससे शादी न कर सकूँ। जब तक जिनदास के होने, न होने के बारे में निश्चित जानकारी नही मिल जाती, तब तक शादी न कर सकने के कारण ही।"

"ऐसा हो तब भी, क्या उसे यह शोभा देता है कि वह हमसे ऐसा प्रस्ताव करे। उसके पास पैसा होने से उसे अहंकार हो गया है, इसीलिये उसने ऐसा प्रस्ताव किया है।"

"अनु, मै ऐसा नही समझती। पियल ने यह प्रस्ताव प्रतीक्षा न कर सकने के कारण ही किया है।"

"अब माँ पियल के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेगी। मै इस बारे मे माँ से पूछ सकती हूँ।"

"अनु, ऐसा मत करना। जिनदास के रहते मै कैसे किसी दूसरे के साथ शादी कर सकती हूँ?"

"यदि माँ राजी हो, तो हम तलाक की अर्जी दे सकते है।"

"अनु! क्या ऐसा किया जा सकता है? मेरे स्वामी ने मुझे कौन-सा कष्ट दिया है?"

"बहन ! तुझे छोड़कर चला गया। इससे बढ़कर कोई 'स्वामी' अपनी पत्नि को दूसरा कौन सा कष्ट दे सकता है ? पिछले छः वर्ष से उससे एक चिट्ठी भी नही मिली। पता नही, वह किस दुनिया मे है ?"

"वह जब यहाँ था, उसने मेरे लिये क्या नही किया ? जमीन तक गिरवी रख कर, मेरी बीमारी पर पैसा खर्च किया। मुझे वस्त्रादि सभी कुछ ले लेकर दिये। उसे जो विविल मे जाकर बुखार आ गया, उसी से यह सारी खराबी पैदा हुई। पास मे पैसा नही रहा, बीमार भी पड गया। पास मे पैसा नही है तो कोई बात नही गाँव वापिस चले आओ। लिख कर मैंने उसे जो पत्र भेजा था, उसकी ओर से उसका उत्तर आया था, "यदि फिर कुछ पैसा कमा सका तो आऊँगा; नही कमा सका तो नही आऊँगा।" लगता है कि उसके गाँव लौटने की अनिच्छा का प्रधान कारण यह है कि उसे ज्वर ने बहुत दुर्बल बना दिया है। यही सब कहते-कहते नन्दा के नेत्र भर आये।

"नन्दा ! उसका किया-कराया मैं सब जानती हूँ। उसने यहाँ रहते समय घर के लिये क्या खर्च किया ? उतने कष्ट-कसाले सहकर हमने ही जैसे तैसे घर का सारा खर्च चलाया। उसे जमीन गिरवी रखने से जो पैसा मिला, वह उसे छिपाये रहा।"

नन्दा जानती थी कि ठीक जानकारी न होने से और गुस्से की हालत में होने से ही अनुला ऐसा कह रही है।

"उसने भी बहुत खर्च किया है, मैं अच्छी तरह जानती हूँ। केवल वह ही पैसा उसने छिपाकर रखा था, जो बाद मे जमीन गिरवी रख कर मिला था। कुछ कारोबार कराने की इच्छा के कारण मैंने ही उसे कहा था कि यह पैसा खर्च न करना।"

"वह कारोबार करना जानता है !" अनुला के स्वर मे रोष था।

"अनुला ! यह कुछ भी हो, लोगो का कहना है कि हमारे स्टैण्डर्ड मे खर्च करने जाकर ही उसका दीवाला निकल गया। उसकी बहन ने कहा कि हमने ही उसे कहकर उसका बहुत खर्च करा दिया।"

"वह वाचाल औरत कुछ भी कहती फिरे, हमें इसकी परवाह नही। लेकिन नन्दा! मै सच कहती हूँ कि मुझे शुरू से ही जिनदास अच्छा नही लगा।"

"अनु, ऐसा मत कह। मै उसकी सारी परिस्थिति से परिचित हूँ। वह हम सबका हित-चिंतक है, सभी से प्रेम करता है। उसको भी हमारी ही तरह अर्थ-कष्ट रहा। उसी तंग-दस्ती की हालत मे उसे ज्वर भी आ गया। अन्यथा वह हमे कभी भी नही भुलाता। उसके दिल मे हमारे लिये इतनी अधिक हित-चिन्ता थी, हमारे प्रति इतना आदर का भाव था।"

"जिसके दिल मे प्रेम हो, क्या वह बिन्नतैन मे रहते हुए, वहाँ से एक पत्र भी नही भेज सकता?" कहते हुए अनुला ने तिपाई पर रखे हुए पीतल के प्रदीप की बत्ती को अपनी अगुली से आगे बढाया। फिर नाखून का झटका देकर अंगुली मे लगे हुए तेल को जलती हुई बत्ती के सिरे पर छिडक दिया। बत्ती कुछ अधिक प्रज्वलित हो उठने से, पहले की अपेक्षा कुछ प्रकाश अधिक हो गया।

अनभ्र आकाश मे चमकने वाले तारे झरोखे मे से दिखाई दे रहे थे। तारो के प्रकाश से कम हुए अन्धेरे मे लोवी वृक्ष, पत्थर की दीवार के अन्दर की तरफ की झाडियाँ, इन झाडियो के अन्दर की नारियल की कतारे, अनुला को स्पष्ट दिखाई दे रही थी। बगीचे मे के तिलैयों की वीणा-बाँसुरी खडताल का सम्मिलित स्वर कमरे मे रहने वाले को सारी रात सुनाई देता था। र्र-र्र आवाज करता हुआ एक भौरा झरोखे मे से अन्दर आया और प्रज्ज्वलित बत्ती से आकर्षित हो, उसी के साथ टकरा कर जमीन पर गिर पडा। अनुलाने भौरे को उठा पीतल की थूक-दानी के नीचे दबा दिया और जाकर हाथ धो लिये। गाँव के लोग भौरे को छोटा यक्ष कहते हैं। उसका कमरे मे आकर दीपक की लौ से टकरा कर जमीन पर गिर पडना अनुला की दृष्टि मे अशुभ लक्षण था। कही हवा का झोका दीपक को न बुझा दे, इस डर से ही शायद जब अनुला झरोखा

बन्द करने गई, तो अनुला को पत्थर की दीवार के पास से एक 'भूत' आता दिखाई दिया। वह उसे देखकर डर गई। बाद मे जब उसने समझा कि यह काजू खाने के लिये आये हुए चमगादड़ों की छाया-मात्र थी तो उसका भय दूर हुआ।

अनुला तथा नन्दा दोनों ने सुना कि मातर-स्वामिनी सादा को 'तू बड़ा पापी है' कह कर डाँट रही है। वे दोनों जानती थी कि माँ सादा को इसीलिये बुरा-भला कह रही है कि उसने देख लिया है कि सादा ने दीवार पर बैठे एक मच्छर को मार डाला है। सादा की यह बुरी आदत थी कि दिये कि प्रकाश मे यदि उसे दीवार पर बैठा एक भी मच्छर दिखाई दे जाता तो वह उसे मसल कर मार डालता था। मातर-स्वामिनी उसे कितना ही कहे, कितना ही डांटे, तब भी वह यह आदत नही छोड सकता था। जैसे आग के नजदीक गया हाथ अपने आप पीछे हट जाता है, उसी तरह सादा को मच्छर दिखाई देने पर उसका हाथ अपने आप ही मच्छर की ओर अग्रसर हो जाता था।

"दिया-बत्ती के समय तू दीवार के पास भी न आया कर, मनहूस कही का। कितना ही कहो तू बिना यह 'पाप' किये नही रह सकता।"

अनुला ने मातर-स्वामिनी की डांट-डपट सुनी तो वह हँस दी और बोली—

"यह 'वीर' मच्छरो को मार कर दीवार को मैला कर देता है, तो सुबह उठकर उनके खून के लाल लाल धब्बे मुझे ही धो धोकर साफ करने पड़ते है।"

"आश्चर्य की बात है कि सादा को मच्छरो के मसल डालने की आदत कैसे पड़ गई?" नन्दा बोली।

'पहले यदि उसके बदन पर कोई मच्छर आ बैठता, तो उसे मसल डालता था। इसीसे उसे यह आदत पड़ गई है कि जहाँ भी मच्छर दिखाई दे जाय, वही उसे मसल डाले।" कहते हुए अनुला कमरे से बाहर निकलने के लिये मुड़ी।

"अनु !"

"हाँ वहन !" कह कर अनुला नन्दा की चारपाई के पास एक पीढ़ा लेकर बैठ गई।

"अनु, अब समझ मे आया न कि पियल का भिजवाया मोल्टेड मिल्क मैने क्यो नही पिया ? उसने जो प्रस्ताव किया था, उसके लिये मैंने उसकी अच्छी तरह खबर ली थी। अब उसीका भेजा मोल्टेड-मिल्क पीना क्या हमारे लिये अशोभन नही है ?"

"हाँ नन्दा ! अब मै समझ गई। न पीना ही अच्छा था। हम भले ही पीलें, लेकिन वहन का पीना अच्छा नही था। मै सोच रही हूँ कि उसे 'मोल्टेड-मिल्क' की दोनो वोतलें वापिस भेज दूँ।"

"अनु ! ऐसा मत करना। पियल वहुत लज्जित हो जायगा। हमारे साथ एकदम गुस्से हो जा सकता है। सोचेगा कि हमें वहुत अधिक अभिमान हो गया हैं। हमे क्या जरूरत पड़ी है कि जो आदमी हमारा इतना ख्याल करता है, उसे ख्वाहमख्वाह गुस्सा दिलायें।"

"मै सादा के साथ जरा दो वात करके आती हूँ" कहते हुए अनुला कमरे से वाहर चली गई।

कमरे से वाहर निकल जब अनुला आगन मे पहुँची तो उसने देखा कि सादा रसोई-घर के वरामदे के खम्भे के सहारे वैठा है।

"मच्छरो को मसल कर मा से डाँट-डपट सुनो न !" सादा केवल हँस दिया। उसने कुछ जवाव नही दिया।

"नन्दा अभी पूरी तरह स्वस्थ नही हुई। अभी 'मोल्टेड-मिल्क' की वोतल लानी होगी।"

"पैसा दें, मैं जाकर ले आता हूँ।"

"पैसा नही होने से ही तो तुझे कहने आई हूँ।"

"मुझे कहने से भी, मै क्या कर सकता हूँ ?"

"अपने पास के पैसे से ही, एक वोतल ले आ।"

"मेरे पास पैसा कहाँ है।" सादा ने चिढ कर कहा।

"ऐसा कहने से कैसे चलेगा ? देख, जितना कुछ पैसा हो, उसीसे ले आ, जैसे भी बने नन्दा को मोल्टेड-मिल्क देना है। तेरा पैसा, तुझे वापिस लौटा दूँगी।"

"क्या तुम्हारा विचार है कि पैसे पेडों को लगते हैं, और मैं उन्हें वहीं से तोड़ लेता हूँ ? मेरे पास पैसा कहाँ से आता है ?"

"हम जानती हैं कि पैसे पेडो पर नही लगते। लेकिन हम जो कढाई-बुनाई करती है, उसमें से तुम्हे जो 'मुनाफा' होता है, उसका तुम क्या करते हो ?"

"मै कोई मुनाफा नही लेता ! सादा जरा ऊँचे स्वर मे बोला।" कढ़ाई-बुनाई बेचने से जो पैसा मिलता है, वह लाकर मै जैसे का तैसा तुम्हे ही दे देता हूँ। मै उसमे से एक पैसा भी नही लेता।"

"यह सब हम समझती है। बीच मे से थोडा मुनाफा लिया तो कोई हर्ज नही। हमे ढाई रुपये उधार दे दो, जिससे मोल्टेड-मिल्क, की बोतल आ जाय।"

"फिर वही बात। मेरे पास एक छदाम भी नही है।"

"पास नही है तो किसी से उधार ही ले लेना।"

"किस से ?"

"हम क्या बतायें ?"

"सम्भव हुआ तो बोतल लेकर आता हूँ।" कहते हुए सादा आँगन की ओर बढा।

अनुला अच्छी तरह जानती थी कि सादा अपने पास छिपाकर रखे पैसे से बोतल ले आयेगा और फिर कसम खाकर कहेगा कि बोतल उधार लाया हूँ। यह पहली दफा नही थी कि अनुला ने सादा से कुछ मँगवाया हो।

☆

परिच्छेद/१४

लगभग डेढ महीना वीत गया, लेकिन नन्दा का ज्वरांश कम नहीं हुआ। क्योकि कोई 'चिकित्सा' करने को नही वची थी, इसलिये वैद्य ने भी सोचा कि कदाचित् उसके ज्वरांश का कारण इसके चित्त तथा शरीर की दुर्बलता ही न हो। इसलिये उसने कहा 'इसे केवल दोपहर के समय मिर्च के सूप के साथ भात खिला दिया करें। अनुला ने मिर्च के सूप की वजाय, दो तरकारियो के साथ नन्दा को भात खिलाया। अभ्यस्त आहार मिलने से नन्दा के चित्त और शरीर में स्फूर्ति आई। नाम मात्र का ज्वर रहने के वावजूद नन्दा घर में घुसी न रहकर दिन के समय आंगन में वैठने लगी। दुर्छांदे पीने के कारण नही, वल्कि अभ्यस्त आहार के मिलने और स्वच्छ धूप-हवा के सेवन से एक सप्ताह में नन्दा पूर्ण रूप से ज्वर मुक्त हो गई।

निरोग हो जाने के लगभग तीन महीने के वाद नन्दा को करोलिस का एक पत्र मिला, जिसे पाकर वह अपने कमरे मे जा चारपाई पर लेट कर, रोने लगी। साश्रु अनुला भी खिड़की के पास जाकर खड़ी-खड़ी वाहर की ओर निहारने लगी।

अन्धेरा छा जाने की इस स्थिति में 'वड़े-घर' के अहाते के वृक्ष और उनके पत्ते अनुला को ऐसे प्रतीत हुये कि जैसे जरा-जीर्ण होकर कुम्हला गये हो। विना पत्तो के लोवी वृक्ष पर एक भी फल नही दिखाई दिया। नारियल के पेड़ों पर भी जो फलों की कमी हो गई थी, वह इसलिये नही कि पेड़ वांझ हो चले थे, वल्कि अनुला के मत के अनुसार अव उनकी उतरती कला ही इसका कारण थी। गहरे हरे रंग के पत्तो की छाया वाला विशाल आम वृक्ष, प्राचीन समय से 'वड़े-घर' की देख-भाल करते रहने वाले, वृक्ष के रूप में, वयिसारु वत्ते के कुल का कोई आदि पुरुप सा था। 'वड़े-घर' के अहाते के एक कोने को ही जिस आमु-

घन ने आच्छादित कर रखा था, उस वृक्ष की शाखाओ की कटाई और उसपर लगी काई आदि की सफाई इसलिये नही कराई जाती थी, क्योकि मातर-स्वामिनी का विश्वास था कि उस वृक्ष पर देवता का निवास है। अहाता और इलाका बे रौनक दिखाई देनेवाली अनुला को आकाश भी ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वह भी उनके शोक मे सम्मिलित हो। 'कक्-कुओ' करके कोवयिक पक्षी की आवाज तथा उस आवाज को नकल करने वाले ग्रामीण लड़कों की आवाज, दोनो अनुला के कानों मे पड रही थी। यद्यपि कौवे का स्वर कभी भी सुनाई दे जाता है, लेकिन अब अनुला को कौवे की आवाज ऐसी प्रतीत हो रही थी, मानों वह किसी भावी विपत्ति की सूचना देने वाले किसी ज्योतिषी का बकवास हो। खिड़की मे से बाहर झाकती खडी अनुला मुड़ी। उसने देखा कि नन्दा सिसकियां भर रही है। घर का भीतरी भाग भी अनुला को वीरान हुआ जैसा लगा। अन-पढ ग्रामीण तक को इस परिस्थिति मे यह बात समझ मे आने लगती है कि दुनिया कितनी बडी है और वह स्वयं कितना छोटा है।

सजल नेत्र लिये मातर स्वामिनी ने कमरे मे प्रवेश किया और नन्दा को सान्त्वना देने लगी—

"नन्दा रो मत। रोने से क्या होगा। उसके कर्म को लेकर हम क्या कर सकते हैं ?"

अब से कोई तीन महीने पहले बदुल्ल के अस्पताल मे जिनदास की मृत्यु हो गई, यह बात करोलिस के पत्र मे लिखी थी। इस समाचार को पाकर ही नन्दा रोने लगी थी। जिनदास की मृत्यु की जानकारी करोलिस को भी तीन महीने बाद हुई। उसने बदुल्ल जाकर अस्पताल के क्लर्क को कुछ रिश्वत देकर, सारी जानकारी प्राप्त करके ही मातर-स्वामिनी को चिट्ठी लिखी थी। गिल्टी लिये एक भयानक रोगी ऐकिरियन-कुम्बुरु से बड़ी ही मुश्किल से बदुल्ल अस्पताल मे पहुँचा। अस्पताल मे भर्ती होने के दो सप्ताह के भीतर वह मर गया। उसका नाम जिनदास था और वह अहंगम का रहने वाला था। यह बात भी करोलिस ने अस्पताल

के कलर्क से ही जानी। नन्दा के स्वामी जिनदास का गाँव अहंगम नहीं; बल्कि पियदिगम था। पियदिगम कोई दूसरा भी हो सकता है, इसलिये चिट्ठियों पर हमेशा 'पियदिगम' अहंगम, ही लिखा जाता था। इसीसे अस्पताल के रजिस्टर में जिनदास का गाँव अहंगम लिख लिया होगा। करोलिस इतना मूर्ख न था कि इतनी सी बात का भी अनुमान न लगा सकता हो।

"मुझे इसी बात का दुःख है कि उसकी मृत्यु अस्पताल में हुई है। उसने मेरे ही कारण इतना दुख भोगा। तबियत ठीक नही तो कारोबार छोड छाडकर गाँव चले आओ, यह पत्र मैंने उसे तब लिखा था, जब वह विब्विल में था। मेरी बात मान, यदि वह गाँव लौट आता तो यह सब कुछ नही होता," अश्रु-मुख नन्दा विलाप कर रही थी। अम्मा! उसका इस प्रकार दुख भोगकर मरना, मुझसे सहन नही होता। याद आने पर रहा नही जाता। मैं उसकी कुछ भी सेवा सुश्रूषा नहीं कर सकी। उसको एक चम्मच दवा भी न पिला सकी।"

"उसका कर्म" फलित हुआ है। इसलिये उसे गाँव आने का संकल्प नही हुआ। हमारी उपेक्षा के कारण उसकी मृत्यु अस्पताल में नही हुई है। अब हम क्या कर सकते हैं? अपना कोई भी आज तक इस तरह अस्पताल मे नही मरा। हाथ कितना ही तंग रहा हो, यदि वह गाँव चला आता तो हम जो कुछ भी उसके लिये करणीय होता, वह सभी कुछ करते, मातर स्वामिनी बोली।

"जिनदास की मृत्यु अफसोस नाक मृत्यु ही है। हमने कोई ऐसी गलती नही की, जो उसको अस्पताल मे जाकर मरने का कारण हुई हो। लेकिन उसके कारण हमारी बदनामी ही हुई है। कुछ भी कहो, वह हमें बदनाम करने के लिये ही अस्पताल मे जाकर मरा है," अनुला से बिना कहे नही रहा गया।

"अनु, ऐसे वचन मत बोल। मुझे बडा कष्ट होता है। उसके हाथ

का पैसा खतम हो गया। वह बीमार पड़ गया। यह सब मेरे कारण हुआ। वह कुछ कारोबार करने गया। इसके मूल मे भी मैं ही हूँ।

"अब इस बारे मे कुछ भी बोलना निष्प्रयोजन है।" मातर-स्वामिनी ने समाधान किया।

जिनदास की मृत्यु का समाचार सुन, कोई एक सप्ताह के बाद तिस्स गाँव आया। यद्यपि उसे कोलब जाकर जीविका कमाते चार वर्ष हो गये थे, तो भी इससे पहले तिस्स केवल दो ही बार गाँव आया था। सुबह से शाम तक दुकान मे काम करते रहने पर भी, तिस्स और उसके साथियों को सप्ताह मे केवल एकबार रविवार के दिन ही छुट्टी मिलती थी। बारह महीने मे एक बार सिंहल वर्षारम्भ के अवसर पर उसे दो या तीन दिन की छुट्टी मिलती थी। इसलिये तिस्स का बडी मुश्किल से ही गाँव आना होता है।

जिनदास की मृत्यु को निमित्त बनाकर मातर-स्वामिनी ने आठ 'भिक्षुओं'[1] को निमंत्रित कर "साधिक-दान" दिया। साधिक दान का सारा खर्च तिस्स ने वहन किया। वह इसीलिये गाँव आया था। साधिक दान के लिये नन्दा के चाचा के परिवार की स्त्रियाँ, बलदास तथा उसकी बहन और जिनदास की बहन भी आई।

गाँव मे कितना ही गरीब परिवार हो, लोग साधिक-दान पर इतना खर्च कर देना चाहते है, जितना एक छोटे-मोटे विवाहोत्सव पर। साधिक-दान के लिये रिश्तेदारो को, पास के पड़ोसियो को, निमन्त्रित करना छोटे-बड़े सभी मे प्रचलित रिवाज है।

शादी-विवाह के लिये जितनी साग-सब्जी पकाई जाती है, जितना मछली-मांस रांधा जाता है, उतना ही सांधिक दान के लिये भी। जितना भी जुटाया जा सके उतना दही-शीरा और फलादि भी अपेक्षित

---

१ चार भिक्षुओं से कम भिक्षुओ को दिया जाने वाला दान 'व्यक्ति-गत-दान' माना जाता है।

होते हैं। कपड-छान किये पानी से भात पकाने मे सभी स्त्रियाँ मदद करती है, क्योकि उससे पुण्य की प्राप्ति होती है। गाँव मे साधिक-दान, पकाया जा रहा है, यह सभी लोग जान जाते है, उसके लिये पकाई जाने वाली साग-सब्जी की गन्ध को सूँघ कर। साधिक-दान के लिये जो मछली-माँस तथा व्यञ्जन तैयार किये जाते है, उनसे जो सुगन्ध आती है, वैसी सुगन्ध उन मछली-मासो से तथा व्यञ्जनो से भी नही आती, जो शादी-विवाह के लिये तैयार किये जाते है। स्त्रियाँ अपनी पाक-विद्या की सारी जानकारी और सावधानी खर्च करके खाना पकाती है। साधिक-दान के लिये कभी कभी सुनने मे आता है कि इस बात से परिचित ग्रामीण अपनी पत्नि को मजाक मे कह देते है, 'जिह्वा को अच्छा लगे, ऐसा खाना मेरी पत्नि मेरे लिये शायद ही कभी बनाती हो। लेकिन भिक्षुओ के लिये खाना तैयार करते समय इतनी अच्छी तरह पकाती है कि कोई मील भर की दूरी से गुजर रहा हो, वह भी उसकी सुगधि सूँघ ले। मेरे लिये यही रह गया है, कि इस स्त्री को ले जाकर विहार मे बैठा आऊँ।

गाँव मे जो यह प्रलाप फैला है, वह यथार्थ रूप से किसी ग्रामीण का कथन नही हो सकता, बल्कि भिक्षुओ के प्रति ईर्षा रखने वाले किसी निम्नस्तर के व्यक्ति की काल्पनिक रचना ही हो सकती है।

कपड़-छान किये पानी से भरे बर्तन के पास उकडूँ बैठे एक आदमी ने पधारने वाले भिक्षुओ का पाद-प्रक्षालन किया। घर की देहली के ऊपर बैठे सोमदास ने तौलिये से उनके पाँव पोछ, उनके पाँव का गीलापन दूर किया।

धोयें-पोछे पैरों को लिये भिक्षुओ ने शाला मे प्रवेश किया। जमीन पर बैठो वृद्धा स्त्रियों ने तथा बच्चों ने उन्हे नमस्कार किया। भिक्षुओ ने उन्हे 'सुख प्राप्त हो, निर्वाण प्राप्त हो' आशीर्वाद दिया और अपना अपना आसन ग्रहण किया। दीवार के साथ सटी हुई एक चटाई पर चादर बिछा और उस पर तकिये रख ग्रामीण-जन भिक्षुओ के बैठने की व्यवस्था करते

है। भिक्षु को पीठ को सहारा देने के लिये, दीवार से सटा कर रखे हुए तकिये पर एक चादर बिछा कर, उसके ऊपर ग्रामीण-जन जो दूसरा तकिया लगा देते हैं, वह केवल इसलिये नहीं कि भिक्षुओं का चीवर दीवार से लग कर मैला न हो, बल्कि आसन को अधिक आराम-देह बनाने के लिये भी। भिक्षुओं के लिये वे इस लोक में जितनी ही अधिक सुख-सुविधा की व्यवस्था करेंगे परलोक में उन्हें उतना ही अधिक आराम रहेगा -इस बात से ग्रामीण-जन भली प्रकार परिचित हैं।

नायक स्थविर भिक्षु ने मातर-स्वामिनि से पालि-पाठ[1] कहलवाकर दान को 'सांघिक' किया। इसके बाद उन्होंने इस दान-विशेष का फल कहा। जब उन्होंने जिनदास का नाम लिया, नन्दा की आँखें छलक आईं।

साग-सब्जी के साथ भात खा चुकने पर भिक्षुओं ने दही के साथ शीरा ग्रहण किया। चाय या काफी के अनन्तर ताम्बूल-सेवन, इसके बाद 'धर्म-देशना' करने में समर्थ एक भिक्षु के अतिरिक्त शेष सभी भिक्षु जमीन पर सिर रखे नमस्कार करने वाली वृद्धा स्त्रियों तथा बच्चों को आशीर्वाद देते हुए बाहर चले गये। जो भिक्षु धर्म-देशना के निमित्त पीछे रह गये थे, उन्होंने लगभग आध घण्टा धर्म-देशना की और बाद में धर्म-पूजा-स्वरूप एक बड़ा सा तौलिया प्राप्त कर वे विदा हुए। उसी दिन शाम को तिस्स रेल से कोलम्बु चला गया।

यह देख कि तिस्स शक्ल-सूरत और स्वभाव दोनों में अच्छा है, न केवल मातर-स्वामिनी को बल्कि अनुला तथा नन्दा को भी सन्तोष होता था। कोलम्बु पहुँचने पर उसकी पढ़ने-लिखने में अधिक रुचि हो गई थी. यह बात मातर-स्वामिनी के विशेष आनन्द का कारण थी। लेकिन यदि वह जानती कि पुस्तकें पढ़ने से वह इस तरह बदल जायगा, तो उसे असन्दिग्ध रूप से शोक होता। गाँव में रहते समय भी तिस्स का

१, इमं भिक्खं ससूप व्यञ्जनं सपरिक्खारं भिक्खुसंघस्स देम।

धर्म की ओर विशेष झुकाव नही था, अब तो उसकी धार्मिक भावना में और भी अधिक ह्रास हो गया था। मित्रो की संगति का अभाव होने से ही वह कोलम्बु पहुँचने पर अधिक पुस्तके वाँचने लगा। गाँव मे मित्रो की संगति से उसे जो संतोष, जो आनन्द प्राप्त होता, कोलम्बु पहुँचने पर वही संतोष, वही आनन्द उसे पुस्तको से प्राप्त होने लगा। यार-दोस्तो का स्थान पुस्तकों को मिल जाने पर तिस्स की बुद्धि पर अवश्य कुछ सान चढ गई; लेकिन उसकी व्यायाम प्रियता और खेल-कूद की रुचि जाती रही।

गाँव पर रहते समय भी पुस्तकें पढने की तिस्स के मन मे लालसा थी, लेकिन यार-दोस्तो के साथ घूमने और खेल-कूद में लगे रहने के कारण उसकी वह इच्छा दवी हुई थी। इसलिये गाँव पर रहते समय वह विरले ही कभी पुस्तक देखता था। कोलम्बु पहुँचने पर तिस्स का पुस्तक-प्रेम ऐसे प्रज्वलित हो गया, जैसे राख से ढको आग के कोयले राख हटा देने पर यकायक प्रज्वलित हो उठे। शुरू मे वह अंग्रेजी पुस्तकें ही देखता था, लेकिन जब उसकी इच्छा अर्जी-नवीसी की परीक्षा देने की हुई तो वह सिंहल पुस्तके भी पढने लगा। बोरैल्ले के भिक्षु-निवास मे रहने वाले एक भिक्षु से उसने पहले सिदत्-संग्राव[1] और बाद मे काव्य-शेखर तथा सैल-लिहिणि-असन[2] भी पढे। उसने गणित भी पढना आरम्भ किया क्योकि अर्जी नवीसी की गणित की परीक्षा बहुत कठिन होती है। पुस्तकें पढने के ही लिये अधिक लालायित रहने वाले तिस्स ने गणित के प्रति अधिक रुचि नही दिखाई। गणित के प्रति उपेक्षा भाव बने रहने के कारण तिस्स अर्जी-नवीसी की परीक्षा मे नही बैठा। अधिक परिश्रम पूर्वक गणित का अभ्यास न कर सकने के कारण धीरे धीरे अर्जी-नवीसी की परीक्षा देने का संकल्प ही हृदय से जाता रहा। लेकिन अंग्रेजी तथा सिंहल पुस्तकें वह विशेष मनोयोग पूर्वक पढता रहा।

---

१. सिंहल-व्याकरण का ग्रन्थ। २. काव्य ग्रन्थ।

उसने अर्जी-नवीसी की परीक्षा देने के लिये सिहल भी बहुत कठिनाई से पढनी आरम्भ की थी। चाहे कुछ काम हो और चाहे न हो, तो भी प्रातःकाल से रात के सात आठ बजे तक दुकान पर बैठे रहने वाले तिस्स को पुस्तको के पन्ने पलटने का समय मिलता था, रात को खाना खा चुकने के बाद ही। पढने लिखने को लालसा रहने के कारण उसने हिम्मत न हार 'सिदत्-संग्राव' पढ़ना आरम्भ किया। रात को भोजनान्तर वह उसे कण्ठस्थ करता। नीद आने लगती तो आँखें भिगो लेता। फिर सुबह चार या पाँच बजे उठकर पाठ याद करता। इतनी मुसीवत झेल कर उसने 'सिदत संग्राव' याद किया। मन और शरीर के साथ इतनी जोर-जबर्दस्ती करके, भले ही कोई तरुण ही हो, तो भी बहुत दिन नही चला सकता। 'सिदत-संग्राव' की पढाई हो चुकने पर तिस्स ने सूर्योदय से पूर्व उठने का परिश्रम करना छोड दिया। क्रमशः अर्जी-नवीसी की परीक्षा देने की इच्छा एक दम न रहने पर तिस्स के मन मे समाचार-पत्रों तथा मासिक-पत्रिकाओ मे लेख लिखने की इच्छा जाग्रत हुई। इसलिये पुस्तकें देखते रहने का उसका शौक बना रहा।

तिस्स को केवल पुस्तकें पढने मे ही नही, बल्कि सिनिमा-चित्रपट तथा सरकस आदि देखने मे भी वडा मजा आता था। वह सप्ताह में एक वार सिनिमा देखने जाता था। केवल मनोविनोद के लिये नही, बल्कि वहाँ से कुछ सीखने के लिये भी। कोलम्वु पहुँचे अभी उसे अधिक दिन नही हुए थे कि उसे एक के बाद एक तीन सरकस देखने को मिले।

बचपन की सीमा पार करते ही करते तिस्स के मन मे स्त्रियो के सम्बन्ध मे अद्भुत, विचित्र तथा ऊँची भावना का उदय हो गया था, यह पहले कहा जा चुका है। स्त्रियो को लेकर तिस्स के मन में अकारण भय के साथ साथ गौरव तथा प्रेम की भावना भी विद्यमान थी। इसकी वजह यही थी कि स्त्रियो को लेकर उठी भावना को उसने अपनी शर्मीली प्रकृति से दबा दिया था। सरकस की नाट्यशाला में प्रविष्ट हुई आयु तथा वुद्धि से विकसित स्त्रियों के प्रति उसके मन मे गौरव तथा प्रेम की भावना नहीं

थी। रंगीन पाउडर पोत कर रचे गये सौन्दर्य, तथा ऊँची कला वाली वे या तो वाराङ्गनायें होंगी, अथवा दुश्चरित्रा होंगी, यह प्रौढ़ लोगों की मान्यता थी। इसलिये सरकस में प्रविष्ट होने पर, वहाँ की नर्तकियों को देखकर, पहले ही दिन तिस्स के मन में जो विचित्र भावना तथा गौरवादर उत्पन्न हुआ, यदि दूसरे तरुणो को इसकी जानकारी हो जाती तो वे तिस्स को अपने उपहास का निशाना बनाये बिना नही रहते। तिस्स उपहास का पात्र इसीलिये नही बना, क्योंकि स्त्रियो को लेकर उसके मन में जो भाव पैदा हुआ, तिस्स ने उसे कभी मुखरित नही होने दिया।

सरकस के रङ्गमंडप मे प्रविष्ट हुई नर्तकियों का नृत्य और सौन्दर्य देखकर तिस्स का हृदय उनकी ओर आकर्षित हो गया था। तिस्स उन्हें सीता के समान पति-व्रता समझता था। इन्हें एक ही मर्द नही, अनेक मर्द चाहते होंगे, सोचने से तिस्स को एक आघात पहुँचता, उसके मन में एक विरक्ति सी पैदा हो जाती। कभी-कभी ऐसी भावना के पैदा होने पर भी, वह उसे दबाये रखकर, स्त्रियों के सम्बन्ध में उसके मन में जो पहले से चली आई अद्भुत ऊँची धारणा थी, वह उसी का पल्ला पकड़े था। तिस्स को लगता था कि सरकस में काम करने वाली नर्तकियाँ यदि उसे स्वेच्छा से अपना हाथ चूमने को दें, तो इस एक बात को लेकर वह जीवन भर आनंन्दित रह सकता है। यह सोचकर जीवन की आवश्यकताओं की प्राप्ति के लिए उन्हे रङ्गमंडप में आकर पसीना-पसीना होकर नाचना पडता है, तिस्स के मन में घृणा का भाव उदय होता। इस घृणा के मूल मे उसकी यही धारणा थी कि ये सभी नर्तकियाँ सीता स्वरूपा हैं। यदि उसमें लज्जा का भाव अधिक न होता, या वह पढा लिखा अधिक न होता, तो वह न केवल मर्दों के, बल्कि स्त्रियों के भी उपहास का निशाना बनता। लज्जा और बुद्धि की मात्रा अधिक होने के कारण कभी-कभी वह तरुणियो के समान शर्मीला 'भक्त' बन जाता। लेकिन तिस्स कोई 'भक्त' नही था। स्त्रियों को जो वह ऐसा प्रतीत होता था, उसका कारण था उसके मन में विद्यमान लज्जा का अतिरेक तथा स्त्रियो के बारे में उसकी अविचार पूर्ण धारणा।

एक साप्ताहिक पत्र तथा एक मासिक पत्रिका के लिये तिस्स ने कभी-कभी लेख लिखे। परम्परागत विचारों पर टीका टिप्पणी करने वाले उसके लेखों का उन पत्र-पत्रिकाओ के सम्पादको द्वारा प्राय स्वागत ही होता था। एक बार शादियो के रजिस्ट्रार महाशय ने अपने कई अनुभव तिस्स को सुनाये। तिस्स ने शादियो के रजिस्ट्रार महाशय के अनुभवो का उपयोग कर एक बढिया लेख लिखा। एक 'लघु-कथा' जैसे सरस उस लेख को सम्पादक ने अपने साप्ताहिक मे प्रथम स्थान दिया। पाठको ने उस लेख को बहुत पसंद किया होगा, सोच उस पत्र के संपादक ने तिस्स को इसी प्रकार के और भी लेख लिखने की प्रेरणा देने के लिये उसके पास दस रुपये भेज दिये।

रविवार के दिन घूमने जाने पर तिस्स शाम का समय रेलवे-स्टेशन के पास स्थित नृत्यशाला से सटी हुई एक दवाइयो की दुकान पर बिताता। इस दवाईयों की दुकान का मालिक वैद्यराज सप्ताह मे केवल एक दिन रोगियो को देखने के लिए अपनी दुकान पर आता। दूसरे दिनो मे जो तरुण उस दवाओं की दुकान पर बैठता था, वह तिस्स का मित्र था। रविवार के दिन तिस्स दवाइयों की दुकान पर बैठा-बैठा नृत्य-शाला मे नृत्य देखने के लिये आने-जाने वाले तरुण-तरुणियो की टीका करता रहता और वह तथा उसका मित्र दोनों हँसी-मजाक करते हुए आनन्द मनाते। नृत्य देखने आने-जाने वाले स्त्री-पुरुष प्राय. तिस्स के उपहास का निशाना बनते। तिस्स की टीका टिप्पणी उन दर्शको को नही सुनाई देती थी, यह सुनाई देती थी अकेले उसके तरुण मित्र को ही। सिनिमा देखने का अभ्यस्त तिस्स सिंहल-नाटकों मे काम करने वालो को 'पतंग-बाज' कहकर उनका मजाक उडाता था। इसीलिये नाटक देखने जाने वाले भी उसके उपहास के तीरों का निशाना बनते थे।

रेल्वे स्टेशन और दवाई की दुकान के बीच जो चौरस्ता था, वहाँ शाम के समय दो तीन तरुणियाँ आती थी। ऐसे वस्त्राभूषणो से अलंकृत जो देखने वालों के चित्त को आकर्पित कर लें, सुगन्धित पाउडर पोते

हुए जो तरुणियाँ वहाँ विचरती थी, वे सब वाराङ्गनायें ही थी। उनमें से एक रूपवती ने तिस्स के चित्त को भी मोह लिया। यह वात तो नही थी कि तिस्स उस को देखने के लिये दवाई की दुकान पर आता हो, लेकिन यदि वह दिखाई दे जाती तो तिस्स को खुशी अवश्य होती। दूर-दूर से सप्ताह मे एक वार उसकी ओर देखने वाले तिस्स ने कभी उससे वात चीत नही की। उसने उसके साथ जो कभी वात चीत नही की, उसका कारण तिस्स की लज्जा ही थी। इस वार तीस्स ने सोचा लज्जा को दूर हटा वह उसके साथ वातचीत करेगा, क्योकि वातचीत कर, उसके वारे मे जानकारी प्राप्त कर, वह उसके विषय मे एक बढिया लेख लिख सकेगा। उसके साथ वातचीत करने का इरादा लेकर वह तीन सप्ताहों तक प्रति रविवार 'दवाई की दुकान' पर गया, लेकिन वह अपने 'शर्मीले-पन' पर काबू न पा सका। तिस्स सोचता था कि उसे वुलाने पर यदि उसने उसे कुछ खरी-खोटी सुना दी, तो वह तिस्स के लिये कितनी बड़ी लज्जा होगी! यदि अपना यह विचार वह 'दवाई की दुकान' पर बैठने वाले अपने उस तरुण मित्र पर प्रकट करता तो तिस्स उसका भी उप-हास भाजन बनता। तिस्स की अपेक्षा कम पढा-लिखा होने पर भी वह तरुण जानता था कि आँख के इशारे मात्र से उस तरुण सुमुखी को दुकान पर वुलाया जा सकता है।

एक दिन 'दवाई की दुकान' के दरवाजे के पास वहुत देर तक प्रतीक्षा करते रहने के वाद, आस-पास किसी को न देख तिस्स ने उस तरुणी को आवाज दी। वह क्षण भर मे दुकान पर आ पहुँची।

"अन्दर आ" कहते हुए तिस्स 'दवाई की दुकान' के भीतर एक मेज के पास रखी कुर्सी पर वैठ गया।

'दवाई की दुकान' पर वैठे तरुण ने जब सुना कि तिस्स एक वैश्या को "अन्दर आ" कह रहा है, तो उसके होठों पर हँसी खेल गई।

"महाशय किस लिये ?" पूछती हुई तरुणी दरवाजे से सटकर खड़ी हो गई। सुन्दर नासिका, छोटा सा मुँह और नील वर्ण आँखें थी उसकी।

जब तिस्स ने उस चेहरे की ओर ध्यान से देखा तो उसके मन मे भी छिपी आकांक्षा का उदय हो गया।

"आ, जरूरत है।"

"क्या जरूरत है ? यहाँ यह नही हो सकता। रास्ता चल रहा है। जरूरत हो तो हमारे निवास स्थान पर चले आओ।"

"वह जरूरत नही" कहकर तिस्स मुस्करा दिया।

"तो और कैसी जरूरत है ?"

"तुम्हारे बारे मे कुछ जानकारी प्राप्त करने के लिये ही बुलाया है।"

"मेरे बारे मे जानकारी किस लिये ?" प्रश्न करते हुए तरुणी दुकान के भीतर चली आई।

"यूँ ही।"

"हम जानती है,......पुलिस को देने के लिये" कहते हुए तरुणी चल देने के लिये मुडी।

"नही, नही" कहते हुए तिस्स ने एक रुपया उस तरुणी के हाथ मे थमा दिया।

तिस्स के मन मे उसके यहाँ आने की इच्छा है ! उसे छिपाये रखने के लिये वह जानकारी प्राप्त करने की बात करता है—तरुणी ने सोचा।

"मेरी जानकारी से क्या प्रयोजन ?"

"एक किताब लिखना चाहता हूँ।"

"यह झूठी बात है।"

"झूठी बात नही," कहते हुए तिस्स ने अपनी जेब से कागज और पेंसिल निकाली।

"क्या जानकारी चाहिये ?" पूछते हुए तरुणी मुस्कराई।

"इससे पहले क्या किया ?"

"गाँव पर रही।"

"नाम ?"

"मैंगिलिन।"

"गाँव कहाँ है ? पिता क्या करता था ?"

वह कैण्डी-प्रदेश की तरुणी थी, और उसका पिता हथवान था। पिता की मृत्यु के अनन्तर एक बूढी स्त्री उसकी माँ को दस रुपये देकर कोलम्ब लिवा लाई। जब तरुणी अपने बारे मे यह जानकारी दे रही थी उसी समय टूटी-फूटी सराय जैसी शक्ल और शरीर वाली एक बूढी स्त्री वहाँ आई और तरुणी को डाँटने लगी।

"चली आ, चली आ" कहते हुए उस बूढी ने पहले उस तरुण स्त्री की ओर घूर कर देखा और बाद मे तिस्स की ओर। वह बोली—"वह पुलिस का भेजा आदमी है।"

"महाशय! हमारे घर की ओर आना" कहते हुए तरुणी दवाई की दुकान से बाहर आई।

"किसलिए?" थोडी ही दूर आगे बढने पर वुढिया ने रोष प्रकट किया। "अरी दिखाई नही देता कि वह खुफिया पुलिस का आदमी है।"

"कोई भी हो, हमे इससे क्या?"

"हम पुलिस मे नही आ जा सकते।"

"महाशय का रुपया खटाई मे पडा"—कहते हुए दवाई की दुकान का तरुण हँसने लगा।

"अरे! उस वुढिया ने ही न सब गड़बड घोटाला कर दिया?"

"वह बड़ी चण्ट औरत है।"

जब तिस्स अपनी दुकान पर लौटा तो उसके लिये उस तरुण वेश्या को अपने दिल से भुला सकना कठिन हो गया। उस दिन जब वह सोने गया तो भी उसे उसकी याद आई। उसे याद आई उसकी हाव-भाव-पूर्ण मुस्कराहट, तिरछी नजर, बढिया शक्ल तथा उठे हुए उरोज। उसके सम्बन्ध मे जो नाम-मात्र की जानकारी उसने प्राप्त की थी, वह भी उसे याद आ रही थी। अब उसके दिल में आया कि वेश्या के घर ही क्यों न चले? किन्तु इस विचार के मन मे पैदा होते ही, साथ साथ लज्जा-भय की भी उत्पत्ति हुई। इसलिये वह सोचने लगा कि बिना किसी को भी जानकारी होने दिये, वह कैसे उसके यहाँ होकर आ सकता है?

उसने दवाई की दुकान पर उस वेश्या को बुलाया था, उससे कुछ जानकारी प्राप्त कर, पत्र के लिये लेख लिखने के विचार से। लेकिन अब तिस्स को यह अनुभव हो रहा था कि वह उस वेश्या के घर केवल उक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही नही जाना चाहता, बल्कि उसे देखने की लालसा से भी। उसको देखकर उसके जीवन के बारे मे कुछ भी जान-कारी प्राप्त करने मे क्या बुराई है? लेकिन यदि मेरे पहचान का कोई आदमी मुझे वहाँ देख ले? क्योकि उसे चूमने और उसका आलिङ्गन करने की लालसा मेरे मन मे नही, इसलिये वहाँ जाकर, उससे बात चीत कर मै आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकता हूँ। कोई कुछ भी कहे सुने, लेकिन क्या मै यह नही जानता कि मै वहाँ किसी बुरी नीयत से नही जा रहा हूँ? लेकिन वहाँ जाने पर कही मै उस दलदल मे न फँस जाऊँ? क्या यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि मेरे मन मे कही भी कुछ बद-नीयत है ही नही?"

बिजली की चमक की तरह तिस्स के मन में यह विचार उत्पन्न हुए। शर्मीली प्रकृति के कारण स्त्रियो से दूर दूर ही रहने वाले, उनके बारे मे सोच लेने मात्र से सन्तुष्ट हो सकने के अभ्यासी तिस्स के लिये ये विचार, ये लालसाये भी कष्टप्रद सिद्ध नही हुई, इसलिये चारपाई पर लेटते ही उसे थोडे समय मे ही नीद आ गई।

उसके बाद आने वाले इतवार के दिन सात या आठ बजे तिस्स दुकान से निकल कर वेश्याओ के चकले मे पहुँचा। शाम के समय इस चकले मे प्रकाश कुछ इतना कम रहता था कि कोई भी आदमी कुछ ही दूर खडे किसी भी दूसरे आदमी को न पहचान सकता था। किसी घर के अध-खुले दरवाजे से, किसी घर के बन्द दरवाजे के चाभी के छेद मे से तथा किसी घर की खुली खिड़की से बाहर आने वाले प्रकाश से सडक जहाँ तहाँ प्रकाशित थी। चकले मे थोडी ही दूर आगे बढने पर तिस्स को नाक के अगले सिरे मे खुजलापट पैदा करने वाली ऐसी दुर्गन्ध आई जैसी किसी ऐसे घर मे प्रविष्ट होते समय आये, जिसमे पुराने बोरे भरे हो। किसी झोपड़ी

मे से मर्पिणा-स्वर सुनाई दे रहा था। एक दूसरे घर में से आ रही थी तरुणो के खिल-खिलाकर हँसने की आवाज, और एक तीसरे घर में से आ रही थी छोटे वच्चे के रोने की आवाज। घरो के वीच मे से गुजरने वाले तिस्स को सुनाई दी किसी के दूसरे को निर्दयता-पूर्ण पीटने की आवाज और साथ साथ किसी स्त्री की चीख-पुकार। मारने-पीटने की आवाज और स्त्री की चीख-पुकार सुनकर तिस्स को भय लगा। भय से उत्पन्न नाना संकल्प-विकल्पो के कारण तिस्स व्याकुल हो उठा। किसी पुरुष के द्वारा किसी स्त्री को वुरी तरह पिटते देख कर जो भाव किसी पुरुष के मन मे पैदा होता है, वैसा ही भाव तिस्स के मन में पैदा हुआ। यह सोच कर कि इस कलह का परिणाम मनुष्य-घात तक हो सकता है; तिस्स के रोंगटे खडे हो गये। दूसरे आस पास के घरो मे रहने वाले लोग वीच-वचाव करने के लिए भाग कर क्यो नही आते?' सोचते हुए तिस्स सडक के दोनो ओर के घरों के दरवाजो की ओर देखते हुए पहले की अपेक्षा तेज कदम उठाने लगा।

किसी किसी घर से मास के भुनने की गन्ध आ रही थी। उन झोप-डियो की नालियो में से उठने वाली दुर्गन्ध ने इस सडाघ के साथ मिलकर तिस्स के लिये साँस लेना कठिन कर दिया। यहाँ के घर भी मैले, उन घरो मे रहने वाले भी मैले, उनके कपडे-लत्ते भी मैले तथा उनकी चीजें भी मैली थी। यह गन्दगी तिस्स को और भी अधिक असह्य से उठी, क्योकि जहाँ मास भूना जा रहा था, उन नालियो से जो दुर्गन्ध पूर्ण धुआँ उठ रहा था, वह भी उसे सूँघना पडता था।

अव तिस्स को अपनी मूर्खता समझ मे आई, क्योकि उसने उस तरुण-वेश्या के रहने की गली का नाम तो पूछ लिया था, लेकिन उसके घर का नम्बर नही पूछा था। रात के समय उसका घर दूसरो से पूछकर ही जाना जा सकता था। नही तो घरो के अन्दर रहने वाली स्त्रियो के चेहरे देखते हुए फिरने से, कुछ के दरवाजे वन्द रहने के कारण, वह दिखाई ही दे जायगी, सोचना कठिन था। तिस्स ने सोचा कि वह घरों

के दूसरे कोने पर जाकर, वहाँ से गली मे आ, दुकान की ओर बढ चलेगा। घरो के दूसरे सिरे पर पहुँच कर उसके उत्साह मे कुछ कमी आ गई। रुक कर देखने पर तिस्स को पुनः उसी वीराने-पन का अनुभव हुआ, जिसे उसने वहाँ प्रवेश करते समय अनुभव किया था। उस स्त्री के विलाप ने भी उन घरो के सूनेपन को विशेप रूप से कम नही किया था।

तिस्स दुकान की ओर न जाकर फिर वापिस उन झोपड़ियो की ओर ही लौट आया। उसने ऐसा इसीलिए किया था क्योकि उस तरुण वेश्या को देखने की लालसा फिर उसके मन मे उभर आई थी। थोड़ी दूर आगे बढने पर ही उसने दाहिने-हाथ अँधेरे मे एक छोटे घर का खुला दरवाजा देखा। दरवाजे से वाहर आने वाले दीपक के प्रकाश मे, घर से वाहर निकल कर जाने वाले दो तरुणों मे से एक को तिस्स ने पहचान लिया। इसीलिये उन दोनों तरुणों के आँख से ओझल होने तक तिस्स रुक गया था। उन दोनों मे से एक दवाई की दुकान पर बैठने वाला उसका तरुण मित्र ही था। तिस्स ने सोचा कि असदिग्ध रूप से यही वह तरुण-वेश्या का घर होगा, जिसकी वह तलाश मे है। इतना होने पर भी जब उसने उस छोटे घर की ओर कदम वढाया तो उसका दिल धड़क रहा था और उसको उस तरुण वेश्या से भेंट कर सकने की आशा थी। दर-वाजे के पास पहुँचते ही उसे एक आकर्पक चेहरा दिखाई दिया। दरवाजे के और भी समीप जाने पर उसे स्पष्ट हुआ कि इस आकर्पक चेहरे वाली स्त्री कोई एक प्रौढ कान्ता है।

मरदाने मे जो दवाई को दुकान' है, उसका वीर-मेन यहाँ आया था क्या? यह प्रश्न अचानक तिस्स पूछ वैठा। यदि अवसर के अनुरूप यह वाक्य उसके मुँह से न निकला होता तो द्वार पर खडी स्त्री उस पर शक करने लग जाती।

पहले तो उसने तिस्स की ओर सन्देह की दृष्टि डाली। दरवाजे से आने वाले प्रकाश मे जब उसे तिस्स का भोला-भाला चेहरा दिखाई दिया तो उसका शक दूर हो गया। तिस्स उससे पहले कभी भी वहाँ नही दिखाई

दिया था, उसकी नजर मे वह रास्ता भटक कर वहाँ पहुँचा हुआ कोई था।

"अरे! वह अभी अभी मेरे बेटे के साथ नृत्य देखने गया है," कहते हुए वह स्त्री दरवाजे से थोड़ा हट गई। तिस्स को लगा कि उसका दरवाजे से हट कर खडे हो जाना तिस्स को अन्दर चले आने का निमंत्रण देने जैसा था। घर के अन्दर प्रविष्ट होने पर भी यद्यपि तिस्स को 'मैंगलिन' का पता लगाने की चिन्ता थी, किन्तु उसने उस विचार को दबा दिया।

वह प्रौढा स्त्री दरवाजे से इसीलिए हटी थी कि तिस्स को भीतर बुलाकर उससे वीरसेन के बारे मे कुछ जानकारी प्राप्त कर सके। वह वीर-सेन के बारे मे इसीलिये जानकारी प्राप्त करना चाहती थी, क्योकि 'वीर-सेन' ने उसकी लड़की के साथ शादी करने का वचन दिया था।

"ऐसा लगता है कि इससे पहले तुम इस तरफ कभी नही आये?" दरवाजे के पास खडी हुई स्त्री बोली।

"नही।"

"इस असमय मे इस अनभ्यस्त गली में क्यो घूमने आये हो?"

"घूमने नही आया हूँ।"

"मैंने थोड़ी ही देर पहले देखा था कि तुम उस ओर जा रहे थे।"

'क्या सच्ची बात प्रकट होने देकर इस औरत से ही 'मैंगलिन' का पता लगाना उचित होगा?' तिस्स के लिये इस प्रश्न का हल करना सहज कार्य न था। बचपन से ही तिस्स विचार करने मे जितना शूर-वीर था, उतना उन विचारो को क्रियात्मक स्वरूप देने मे नही। पुस्तको के बाँचने और खेल-कूद के अतिरिक्त किसी भी बारे मे वह कुछ भी सोचने लगता तो तिस्स के मन मे उसका विरोधी विचार भी तुरन्त उत्पन्न हो जाता। इस प्रकार की दो विरोधी विचारधाराओ मे संघर्ष होने के कारण तिस्स को अपना कार्य-क्रम स्थगित कर देना पडता। 'यदि हम 'मैंगलिन' का निवास स्थान का इसकी मदद से पता लगाना

चाहे, तो इसमें शक नही कि वह वीरसेन से अवश्य कह देगी। वीर-सेन अपनी दुकान के दूसरे लोगो से कहेगा; और अपने दोस्तों को भी।'

"मै वीर सेन को खोजने के विचार से ही गया था। दवाई की दूकान का दरवाजा बन्द था। दुकान पर बैठे एक लड़के ने कहा कि वह इधर आया होगा।"

"तुम उन दोनो को जाते देखकर क्यो ठिठक गये ?" पूछते हुए वह प्रौढा अपने मुँह के एक सिरे से मुस्कराई।

तिस्स भौचक्का सा रह गया।

"मै रुका था..." तिस्स को परिस्थिति के अनुरूप कोई उत्तर नही सूझा। वह अधिक नही कह सका।

"हाँ, मैंने देखा था।"

"मै वीर सेन को यकायक न पहचान सका था।"

"मै विश्वास नही करती," कहकर वह मुस्करा दी। "तुम्हारे जैसे लडकों के लिये उस ओर की जगह घूमने के लिये अच्छा स्थान नही है'" कहते हुए उसने गली के आगे की ओर संकेत किया!

असंदिग्धरूप से मैंगलिन उस गली के उसी तरफ के किसी घर मे रहती है, तिस्स ने सोचा। लेकिन इस स्त्री के देखते रहते अब वापिस उसी ओर लौट कर नही जाया जा सकता।

"वीरसेन से मिलने के लिये ही इधर आये थे," तिस्स बोला।

"तुम्हारा नाम क्या है ?" पूछते समय उसके सारे चेहरे पर मुस्कराहट छाई थी।

"तिस्स।"

"तिस्स! तुम्हारे बारे मे वीरसेन कभी कभी बातचीत करता रहा है। उसने जब भी तुम्हारे बारे में कुछ कहा, उससे यह कभी नही मालूम हुआ कि तुम रात के समय इस प्रकार घूमने-फिरने वाले लडके हो।" कहते हुए उसने तिस्स को सिर से पाँव तक देखा। वीरसेन ने तिस्स के

बारे मे जो कुछ उससे कहा था, उससे उसने यही समझा था कि तिस्स पतलून पहनने वाला लड़का है।

"तुम आज लुंगी और कोट क्यों पहन कर आये हो ?"

"रात को मै यही कपड़े पहनता हूँ।"

"घर पर भी ?"

"किसी किसी दिन रात को खेल देखने के लिये जाते समय लुंगी ही पहनता हूँ।"

"तो आज का यहाँ आना एक प्रकार का क्रीडा मात्र ही है।"

"नही। वीरसेन को खोजने के लिये भी।"

"तो केवल वीर-सेन को खोजने के लिये नही," कहकर वह हंस दी। "तुम दुकान पर लौट जाओ। रात के समय यहाँ भटकना अच्छा नही। यह जगह ऐसी नही जहाँ अनजान लोग रात में आयें जायें।"

"हम सीधे अपनी दुकान पर जा रहे है," कहते हुए जिस रास्ते से उसने पहले उन घरो मे प्रवेश किया था, उसी रास्ते पर चल पडा।

दुकान के पास पहुँचने पर तिस्स ने अपनी माँ के पास से आई चिट्ठी बाँची। तुरन्त प्रत्युत्तर की आशा से लिखी गई उस चिट्ठी को पढकर तिस्स को उस दिन अपना शाम को घूमने जाना लज्जा और भय का कारण मालूम हुआ। उसके मन मे लज्जा और भय का सचार हुआ, क्योकि माँ की चिट्ठी पढकर उसे अपना घर और बहनो की याद हो आई। चकले मे जो कुछ वह देख-सुन कर आया था, उस सब को भुला कर उसने रात का खाना खाया और माँ की चिट्ठी का जवाब देने के अनन्तर सो गया।

परिच्छेद/१५

मातर स्वामिनी का चिट्ठी भेजने का उद्देश्य पियल की व्यापारिक स्थिति के बारे मे यथार्थ जानकारी प्राप्त करना नही था, उद्देश्य पियल और नन्दा का विवाह करने के प्रस्ताव के बारे मे तिस्स की प्रतिक्रिया मालूम करना। अनुला ने इधर उधर देख लेने के बाद ही तिस्स के पास से आई चिट्ठी को बाँचना आरम्भ किया। उसके इधर-उधर देखने से ही नन्दा समझ गई कि इस चिट्ठी का पियल से और उससे कुछ सम्बन्ध है। इसलिये वह वहाँ से रसोई घर की ओर खिसक गई।

तिस्स की चिट्ठी के लम्बे होने का कारण था कि उसमे पियल के व्यापार के बारे मे जानकारी भरी थी। उसमे कुछ जानकारी तो माँ के प्रश्नो के उत्तर-स्वरूप थी और कुछ ऐसी, जिसे प्राप्त कर माँ और बहनो को खुशी हो।

"बडा व्यापार करने वाले पियल की आमदनी थोड़ी नही है, तिस्स ने लिखा था। पियल के यहाँ काम करने वाले २३ कर्मचारियों मे एक हालैण्ड-सिंहल आदमी है। उसे बहुत पैसा मिलता है। यद्यपि पियल का व्योपार ऐसा है कि जिसमे बड़ी पूँजी लगी होगी, लेकिन फिर भी यह सुनने को नही मिला कि वह किसी का कर्जदार है।

"जिस समय वह अपने आफिस मे बैठता है, उस समय पियल एक अहंकारी आदमी की तरह बर्ताव करता है। 'अहंकारी' कहने का मतलब है कि उसके 'आफिस' के समय मे यदि कोई उसका मित्र भी मिलने आता है, तब भी वह उससे अधिक बात-चीत नही करता। मेरे जाने पर भी, वह हाथ मे लिया कार्य बिना समाप्त किये, मुझसे बात चीत नही करता। लेकिन सच्ची बात है कि यह 'अहकार' नही, यह 'व्यापार'

को मनोयोग पूर्वक करने के लिये एक अच्छा गुण है। 'व्यापार' मे भी संयम चाहिए।

"पियल ने कुछ ही दिन पूर्व दो 'रबर के बगीचे' खरीदे है, ऐसा मैंने सुना है। लेकिन यह कहाँ तक सही है मै निश्चय से नहीं कह सकता।" यह बात तिस्स ने अपने पत्र के अन्तिम हिस्से मे लिखी थी। "पियल का व्योपार क्रमश उन्नति पर है। अभी भी उसके आधीन काम करने वाले उसे एक 'धनी आदमी' मानते है। पियल का सम्पत्तिशाली होना यही दिखाई देता है, गाँव मे नही।"

"लगता है तिस्स को मन से मजूर है," अनुला द्वारा पढी जाने वाली चिट्ठी को सुनकर मातर-स्वामिनी ने प्रमुदित मन से कहा।

"हाँ, तिस्स को मन से मंजूर है, इसीलिये तिस्स ने ऐसा लिखा है।"

"हमने तिस्स के रजामन्द होने या न होने की बात पियल के व्योपार को लेकर नही जाननी चाही। मै यह जानना चाहती थी कि उसने पियल के पिता के बारे मे सुन रखा होगा, इस लिये वह क्या कहता है? तुम्हारे पिता के जीवन काल मे हम सभी पियल को लेकर राजी नही थे, तिस्स जानता है न? आरम्भ मे हमारे राजी न होने का कारण पियल के 'पिता-पितामह' का 'अच्छा' न होना था, इस बात से तिस्स सुपरिचित है।"

"उन दिनो भी तिस्स इस बात को कुछ महत्व नही देता था। दादा-परदादा की स्थिति को हम महत्व देते है, इसे लेकर उन दिनो भी तिस्स मजाक करता था।"

"दूसरों के दादा-परदादा ऐसे नही थे, कि वे उनके बारे मे गर्व कर सकें। तुम्हारे थे, इसीलिये तुम उनके बारे मे नही सोचते हो।"

"हम ऐसा कहे भी, तो भी तिस्स मानने वाला नही" कह अनुला हँस दी।

'दादा-परदादा के नाम की रक्षा करने वाला केवल वह ही है। वह भी ऐसे सोचने लगेगा, तो कैसे चलेगा?''

''यह सब तिस्स के मन मे नही। वह इन सब बातो का मजाक बनाता है।''

जब से तिस्स कोलम्ब गया है, तब से वह इन सब बातों को और भी अधिक नही मानता। गॉव मे दो तीन परिवार है, जो 'मेरा बाप बादशाह था' ही सोचते रहते है। ऐसे लोगो की याद आने पर उसे याद आती है प्रियदास श्री सेन की पुस्तक मे पढी एक बढिया कहानी—उसने मुझे पहले लिखी एक चिट्ठी मे लिखा था। 'गॉव मे गरीबो की जमीन लूट कर ही बडे लोग सम्पत्ति शाली होते है,' तिस्स द्वारा लिखे गये एक छपे लेख मे पढने को मिला है।''

''हमारे वश का कोई भी गरीबो की जमीन लूट कर धनी नही हुआ है। नये दो जने इसी प्रकार धनी बने है, इसीलिये वह सोचता है कि दूसरे भी इसी प्रकार धनी बने होगे। हमारे वश मे कोई भी इस तरह धनी नही बना है। बलदास का पिता भी दूसरो को लूटकर धनी नही बना है।''

भले ही नन्दा और पियल के विवाह के अवसर पर कोई बड़ा उत्सव न किया गया हो, तो भी उनके विवाह पर इतना अधिक खर्च हुआ था जितना निकट-भूतकाल मे, गाँव मे, किसी के विवाह पर भी खर्च नही हुआ था। केवल नन्दा के लिये ही नही, अनुला के भी वस्त्रादि की सारी व्यवस्था पियल ने ही की थी। उन दिनो गाँवो मे जो रिवाज जोर पकड़ गया था उसके अनुसार विवाह के दिन नन्दा ने ''गाउन'' पहना था। अपने हालैण्ड-सिंहल आदमी की भार्या की मदद से सिलवाये गये उस 'गाउन'' पर, उस ''गाउन'' से मेल खाने वाले जूतो पर, पखे पर तथा दस्तानो आदि पर पियल ने बहुत पैसा खर्च किया था। पियल के उस क्लर्क ने, उसकी भार्या ने तथा उसकी लड़कियो ने भी विवाह के दिन पहुँच कर वस्त्रादि से सुसज्जित होने मे नन्दा की सहायता की।

यद्यपि नन्दा अनभ्यस्त "गाउन" और उसी से मेल खाने वाले दूसरे वस्त्रादि से सुसज्जित ग्राम-तरुणी थी तो भी वह अपने सौन्दर्य से किसी भी नागरिक हालैण्ड-सिंहल तरुणी को पराजित कर रही थी। उसकी पतली कमर, उँचा कद, सुन्दर चेहरा, घुँघराले काले बालो से युक्त सिर, अंग्रेजी पोशाक मे खूब फबा। यद्यपि वह अनभ्यस्त पोशाक पहने थी, तो भी अपनी चाल-ढाल से, अपनी बात-चीत से, अपनी शक्ल-सूरत से वह ऐसी नही लगती थी कि वह ग्रामीण-तरुणी हो। तो इसमे क्या आश्चर्य है कि वह हालैण्ड-सिंघल तरुणियो की भी प्रशसा की भाजन बन गई थी।

'बडे-घर' पर ही नन्दा और पियल के विवाह की रजिस्ट्री हुई। यद्यपि इस 'मंगल-कार्य' के लिये अधिक रिश्तेदारो तथा परिचितो को निमन्त्रण नही दिया गया था, तो भी आगन्तुको को इससे पूर्व गाँव मे किसी भी विवाह के अवसर पर जैसी नाना प्रकार की स्वादिष्ठ मिठाइयाँ खाने को नही मिली थी वैसी मिठाइयो से उनका स्वागत हुआ।

बलदास और विजय पियल की उपस्थिति मे ही नन्दा से उपहास करने लगे। जिस नन्दा को पहले उनके हँसी-मजाक पर क्रोध आ जाता था, आज वह उन्हे तुर्की-बतुर्की जवाब देकर सबको हँसा रही थी।

उस दिन शाम को जब नन्दा पियल के घर पहुँच, अपने कमरे मे घुसी, तो उसे असंदिग्ध रूप से इसका अदाजा लग गया कि पियल ने उसकी सुविधा का ख्याल रख कितना अधिक खर्च किया है। ऐसी चीजें, जिन्होने अभी तक पुराने ग्रामीण धनियो के घरो मे प्रवेश भी नही किया था, उसे अपने कमरे मे दिखाई दी। उसके कमरे के एक कोने मे रक्खा था एक बडा 'जग', एक 'बेसिन', दाँत साफ करने का 'ब्रुश', एक छोटा सफेद पात्र और रखी थी एक मेज। इस मेज के ही पास रखी थी सफेद ढक्कन वाली एक बाल्टी, खराब पानी फेकने के लिये। एक शीशे वाली मेज थी, जैसी इससे पूर्व कभी किसी ग्रामीण ने न देखी हो। अदृष्टपूर्व नाना प्रकार के सुगन्धित लेपो तथा इतरो से निकलने वाली सुगन्धि का जब नन्दा ने अनुभव किया, तो उसे अपनी परगोड-विहार की यात्रा याद

आई। और याद आई वहां हुई बात चीत। उसे घर मे हर जगह कीमती पलंग, मेज कुर्सियाँ तथा सुन्दर चटाइयाँ दिखाई दी। स्नानागार मे श्वेत-वर्ण नहाने का टब देखकर नन्दा के मन मे आनन्द का भाव उदित होने के बजाये एक भय का संचार हुआ। वह सोचने लगी कि इस प्रकार की फिजूल-खर्ची से कही जिनदास की तरह पियल भी कठिनाई मे न पड़ जाय।

विवाह के दो दिन बाद जब एक नई मोटर-गाडी पियल के घर के पास आ कर खडी हो गई तो नन्दा का यह भय और भी अधिक बढ गया। क्योकि अपने मन मे उत्पन्न भय और शंका को दबाकर न रख सकी, इसलिये जब पियल उसके कमरे आया तो उसने प्रश्न किया।

"मोटर-गाड़ी खरीदने पर पैसा क्यो खर्च किया है ? हम मोटर-गाड़ी मे बैठकर जायेंगे वहाँ ?"

"क्या रिस्तेदारो, मित्रो के मिलने के लिए नही जाया जा सकता ?"

"इसके लिये मोटर-गाडी क्यो ? मै पैदल जा सकती हूँ। अधिक दूर जाना हो तो घोडा-गाडी से जाया जा सकता है।"

"घोडा गाड़ी से तभी जाया जा सकता है, जब मोटर गाडी रखने की सामर्थ्य न हो," पियल ने मुस्कराहट के साथ कहा।

"अनावश्यक खर्च करने से हम कठिनाई मे पड़ गये तो ? मेरे लिये इतना खर्च न करें, मै पसन्द नही करती।"

अब कही जाकर यह बात पियल की समझ मे आई कि नन्दा मोटर-गाडी को अनावश्यक क्यो ठहरा रही है।

"नन्दा का विचार है कि मोटर-गाडी रखने से मै कठिनाई मे पड जा सकता हूँ। मेरी आमदनी इतनी है कि एक नही, दो दो मोटर-गाड़ियाँ रख सकता हूँ। कोलम्बो कारोबार के लिए मेरे पास एक गाडी है। हालैण्ड-सिंहल महाशय, उसकी भार्या तथा उसकी लड़कियाँ शादी के दिन उसी मोटर-गाडी से यहां आई थी। यह नई गाडी नन्दा के ही उपयोग मे आने के लिए लाया हूँ।"

"हम कब कहीं अधिक दूर जाते हैं ? नजदीक कहीं आना-जाना हो तो घोड़ा-गाड़ी से आना जाना हो सकता है। अनावश्यक खर्च किस लिए करते हो ?"

पियल भी जिनदास की बहन द्वारा नन्दा पर लगाया गया यह दोषारोपण उससे पहले सुन चुका था कि नन्दा ने जिनदास से इतना अधिक खर्च करा दिया कि वह दरिद्र हो गया।

"नन्दा ! डर मत," कहकर पियल ने इसीलिए अपनी बड़ाई करनी शुरू की। "मेरे व्योपार के बारे में तिस्स ने कुछ बताया नहीं ?"

"उसने बताया है कि बड़ा व्योपार है।"

"नन्दा ! बड़ा व्योपार ही नहीं है, बड़े मुनाफे का व्योपार है। रबर से भी मुझे आमदनी है।"

"क्या व्योपार में हमेशा एक जैसे मुनाफे की आशा की जा सकती है ?"

"मुनाफा न होने के समय भी मेरे पास आमदनी के दूसरे रास्ते हैं। मूर्ख ही मुनाफे के व्योपार में से हमेशा मुनाफा नहीं कमा सकते।"

"पहाड़ी-प्रदेश में व्योपार करने जाकर कितने व्योपारी कठिनाई में पड़ चुके हैं ?"

"अन-पढ़ होने के कारण। कुछ पढ़ लिख कर व्योपार करते, तो यह सब नहीं होता।"

"अम्मा भी अधिक खर्चीलेपन को पसन्द नहीं करेंगी ?"

"हमारी अम्मा ?"

"हाँ।"

"नहीं," पियल ने मुस्कराहट से उत्तर दिया। "नन्दा के साथ मोटर-गाड़ी में बैठकर जाना अम्मा को खूब अच्छा लगेगा।"

मातर-स्वामिनी, अनुला, तथा तिस्स एक सप्ताह में तीन बार पियल के घर आये-गये। तिस्स के कोलम्बु लौट जाने के सात आठ दिन बाद मातर-स्वामिनी और अनुला फिर पियल से भेंट करने गयी। उसी दिन

उन दोनो को 'बड़े-घर' वापिस जाने के लिये पियल ने नन्दा पर दोषारोपण किया।

"इस घर मे सात आठ जनो के और रहने की जगह है। क्या अनुला और अम्मा दोनो यही नही रह सकते ?"

"मैने रहने के लिये कहा था दोनो को। दोनों घर छोड कर अन्यत्र कही रहना पसन्द नही करती। कितना ही कहो, अपना यह विचार नही बदलती।"

"क्या अनुला भी ऐसी ही है ?"

"हॉ।"

"वह घर खण्डहर होने जा रहा है। सभी को कहो कि उसे छोडकर अब यही आकर रहे।"

"कहने पर सुनती नही। घर 'उजड जायगा' कह कर वापिस जाने का ही आग्रह करती है।"

'मुझे तो अब भी वह उजाड सा ही लगता है। जो पहले ही उजडा है, अब वह और क्या उजडेगा ?"

नन्दा हँस दी।

"अनुला को सुनाकर यदि ऐसा कहोगे तो वह झगड पडेगी।"

"मैने सच कहा है। छत पुरानी पड गई है, दीवारे गिरने जा रही है। अच्छी कटहल की लकड़ी होने से शहतीर के नीचे की कड़ियों मे दीमक नही लगा है।"

"भले हो सड-गल जाय। दादा-परदादा का निवास-स्थान घर ! उसका एक हिस्सा गिर भी जाय तब भी अम्मा उस घर को छोड़ने वाली नही।"

"लडकिया भी क्यों माँ का समर्थन करती है ?"

"अनुला भी माँ जैसी ही है। यदि माँ को यहाँ रहने के लिये राजी भी कर लिया, तो भी अनुला को राजी कर सकना नामुमकिन है।"

"मै अनुला से बातचीत करूँ ?"

"बातचीत करो। लेकिन बातचीत करने जाकर उसके साथ झगड़ना पड़ेगा।"

"झगड़ेगी, तो भी मुझे मारेगी तो नहीं," कह कर पियल मुस्कराने लगा।

विवाहोत्सव के लगभग तीन सप्ताह बाद पियल जो कोलम्ब गया, तो कभी सप्ताह में एक बार, कभी दो सप्ताह में एक बार गाँव आने जाने लगा। क्रमश व्यापार में तरक्की होने पर और उसके लिये अधिक समय देने की आवश्यकता होने पर पियल स्थायी रूप में कोलम्ब में ही रहने की बात सोचने लगा। कुछ समय पूर्व उसने मोदर-तनवट में जो मकान बनवाना आरम्भ किया था, वह विवाह के दो महीने पूर्व ही बनकर समाप्त हुआ था। उसने यह घर किराये पर उठाने के लिये ही बनाया था, कुछ अपने रहने के लिये नहीं। लेकिन अब अपने बनवाये इस घर का सही उपयोग करने की बात पियल के ध्यान में आई। पियल जानता था कि नन्दा राजी भी हो गई, तो भी उसकी माँ कोलम्ब जाने के लिये तैयार न होगी। तो भी यदि नन्दा तैयार हो जाय, तो माँ को राजी करने की कोशिश की जा सकती थी।

नन्दा जानती थी कि पियल की माँ किसी भी तरह कोलम्ब जाने के लिये राजी न होगी, इसलिये वह अपनी माँ और अनुला को छोड़कर कोलम्ब जाकर रहने से और भी अधिक डरती थी। कोलम्ब रहने के लिये जाना नापसन्द होने पर भी नन्दा और पियल की माँ वहाँ कुछ दिन रहकर वापिस गाँव लौट आने के लिये, वहाँ जाने पर दिल से रजामन्द थी। क्यों ? क्योंकि उन्होंने वहाँ की कई विचित्र चीजों के बारे में अद्भुत् बातें सुन रखी थी—अंग्रेजों की तरह अपना जीवन व्यतीत करने वाले सिंहालियों के बारे में, ट्रेम-कार, बन्दरगाह और बाँध के बारे में। पियल का विचार था कि यदि वे दो तीन सप्ताह के लिये कोलम्बु रह जायें, वहाँ की विचित्र-विचित्र चीजें देखें, एक 'स्विच' को ऊपर नीचे कर देने से जल-बुझ सकने वाले लैम्पों वाले घर में रहें, हर तरह की

सुख-सुविधा का जीवन बितायें, तो सम्भव है स्थिर-रूप से ही कोलम्बु मे रहने का विचार उनके मन मे जड जमा जाय।

यद्यपि वे कपडे-लत्ते पर निस्संकोच खर्च करती थी, लेकिन 'वडे-घर' की देवियो को उसका अभ्यास था कि सभी दूसरी वातो मे 'किफायत-शआरी' से काम ले। मुहदिरम के मरने के वाद नन्दा तथा अनुला दोनों कंजूस-प्रकृति की हो गई। तंगदस्ती से कष्ट पाने वाली नन्दा पाँच पैसो को पाँच रुपये समझने लगी। अनुला, नन्दा तथा उनकी माँ को जीवन बनाये रखने के लिये और क्षुधाग्नि को शान्त करने के लिये जितने और जैसे आहार की जरूरत थी, उसके अतिरिक्त वे मिठाई आदि कोई दूसरी चीज ग्रहण न करती थी। तंगदस्ती रहित पियल के घर आने पर भी नन्दा को अपने घर पर इधर जो अभ्यास पड गया था, उसे उसने न छोडा। क्योकि 'वडे-घर' की स्त्रियाँ भली प्रकार सज धज कर इधर-उधर आती जाती थी और अच्छी से अच्छी पोशाक पहनती थी, इसलिये पियल को माँ तक ने स्वप्न मे भी यह नही सोचा था कि नन्दा एक कंजूस स्त्री की तरह 'किफायत-शआरी' से काम लेने वाली गृहणी है। मुहदिरम् के मरने के वाद भिखारी को दरिद्र अवस्था मे जीवन विताने वाली 'वडे-घर' की स्त्रियो के वारे मे उनके घर के नौकर-चाकर तक यह अच्छी तरह नही जानते थे कि वे कितनी 'किफायत-शआरी' से काम लेती है। उन दिनो भी जव वे घर से बाहर निकलती थी, तो मानो मोर के पर खोंस कर'। जिस पियल की माँ ने देखा था कि 'वडे घर' की स्त्रियाँ नये धनी वने लोगो की लडकियों से भी कही अधिक सज धज कर हमेशा घर से वाहर निकलती है उसे अव नन्दा की 'किफायत-शआरी' पर आश्चर्य होता था।

जमीन पर एक आलपिन भी पड़ी दिखाई दे जाय तो नन्दा उसे उठाकर अपने कुर्ती के गले मे खोस लेती। एक दिया-सलाई भी जमीन पर पडी दिखाई दे जाती तो उसे उठाकर देखती और यदि वह जली न हो; तो उसे ले जाकर दिया सलाई की डिब्बी मे रख देती। पियल

घर खर्च के लिये जो पैसा देता, उसका दो-तिहाई हिस्सा ही वह खर्च करती। वह मछली या सब्जी खरीदती तो बस उतनी ही जिससे एक 'डंग' का काम चल जाय। हमेशा कुछ कम ही तेल डालने की अभ्यस्त नन्दा जब बडे कमरे के लैम्प मे मिट्टी का तेल डालती, तो भी एक ही बार उतना तेल न डालती कि उससे दो दिन तक भी लैम्प जलता रहे।

पहले इतनी सजधज से बाहर-भीतर जाने वाली नन्दा इतनी 'किफायत-शारी से काम लेगी, यह पियल की माँ ने कभी नही सोचा था। जब पियल की माँ ने प्रत्यक्ष देखा कि नन्दा उसकी अपेक्षा से भी दस गुना अधिक गुणवती है तो उसे ऐसी पुत्र-वधु मिलने पर बडा सन्तोष हुआ। पियल की माँ यह नही जानती थी कि नन्दा की यह आदत उसके कंजूस-पन का लक्षण नही है। पिता की मृत्यु के बाद सदैव तंग-दस्ती मे ही दिन गुजारने की मजबूरी आ पडने से ही उसे इस 'किफायत-शआरी' का अभ्यास पड गया था। यद्यपि अपनी पोशाक और अपने सोचने-विचारने के हिसाब से नन्दा 'बडे-घर' मे रहते समय एक धनी कुल कान्ता का जीवन बिताती थी, किन्तु अन्य सभी बातो मे उसका सारा जीवन एक 'गरीबनी' का जीवन था। ये लोग जो क्रमश दरिद्र हो गये थे, इसका यह कारण न था कि घर की आमदनी कम हो गई थी, बल्कि इसका कारण वे नये-नये 'फैशन' थे, जो गाँव मे प्रचलित हो गये थे। शहर से गाँव मे प्रचारित होने वाले नये-नये फैशनो का सर्व प्रथम शिकार होती है गाँव मे ऊँचे खानदान की औरतें। उन रीति-रिवाजों की शिकार हो जाने के कारण वे अधिक खर्चा करने लग जाती है। खेत-खलिहान से जो आमदनी होती है, वह सादे जीवन के लिये भले ही पर्याप्त हो, लेकिन इस नयी फैशन परस्ती के कारण किये जाने वाले खर्चों के लिये पर्याप्त नही होती। उन्हे पता भी नही लगता और वे धीरे-धीरे दरिद्र हो जाती है। पियल की माँ के मन मे नन्दा के लिये जो प्रेम था, वह उसके इस अज्ञात-पूर्व गुण के कारण और भी अधिक बढ गया। लेकिन तिस पर भी पियल की माँ यह नहीं जानती थी कि नन्दा

के ये गुण तथा नन्दा का दया पूर्ण स्वभाव उसके भीतर के दृढ़ वंशाभिमान को ढके हुए है ।

लयिसा के विवाह-मङ्गल मे शामिल होने के लिये पुंची अप्पु ने पियल की माँ, पियल तथा नन्दा को निमंत्रित किया। अपने व्योपार सम्बन्धी काम-काज के कारण अपना आ सकना असम्भव जान पियल ने माँ को लिखा, यदि नन्दा चाहे तो माँ और नन्दा दोनो लयिसा के विवाह मे सम्मिलित हो जाये ।" नन्दा ने समझा कि लयिसा के विवाह मे सम्मिलित होने का प्रस्ताव स्वयं पियल की मा की ओर से ही किया गया है ।

"मै नही जा सकती ।" नन्दा ने अपनी सास को दो टूक जवाब दे दिया ।

"पुंची अप्पु हमारा रिश्तेदार लगता है, हमारे हर काम मे आता जाता है, वहाँ न जाने से कैसे चलेगा ?"

"तो अम्मा तुम हो आओ, मै नही जा सकती । उन लोगो के घर लयिसा के घर--मै छुटपन मे भी कभी नही गई ।"

पियल की माँ सोचे बैठे थी कि वह नन्दा के साथ मोटर में बैठकर लयिसा के विवाह मे शामिल होने जायगी । 'बडे-घर' की सुन्दर कान्ता के साथ मोटर-गाडी मे बैठ, गाँव के दूसरे लोगो के देखते रहने पर, मोटर-गाड़ी मे से उतर कर विवाह वाले घर मे प्रविष्ट होना, पियल की माँ की दृष्टि में एक गर्व की बात थी ।

"पुंची-अप्पु लोग यूँ ही 'छुई-मूई' नही है । भले ही गरीब लोग हों, लेकिन खानदानी लोग है," पियल की मा कुछ असन्तुष्ट होकर बोली ।

"पुची अप्पु कोई भी हो, लयिसा की शादी मे मै शामिल नही होऊँगी ।"

"क्या इसलिये कि उनका घर बहुत बड़ा नही है ?"

"लयिसा का घर चाहे छोटा हो, चाहे बड़ा हो, मेरे लिये सब बराबर है ।"

"क्या मातर-स्वामिनी नही जायेंगी ?"

'मा शायद चली जायेंगी।"

"माँ जायेंगी, तो बेटी के न जाने का कारण क्या है ?"

"माँ जिस-जिस जगह जाती है, बेटी हर जगह साथ नही जाती।" नन्दा ने विनोद-पूर्ण उत्तर दिया।

अपनी सास को नई पोशाक से सुसज्जित होने मे नन्दा ने सहायता दी। अपनी सास को मोटर-गाड़ी मे बिठाकर, 'माँ, मेरे साथ न जा सकने का बुरा न मानना' वह वापिस घर मे लौट आई।

लयिसा को प्रसन्नता थी कि पियल की माँ और मातर-स्वामिनी दोनो की दोनो उसके विवाह मे सम्मिलित हुई हैं। तो भी नन्दा और अनुला का न आना उसके शोक का कारण था। उसे आशा थी कि वे दोनों भी उसकी शादी में शामिल होगी।

"बड़ी बहन नही आई," लयिसा ने मातर-स्वामिनी से पूछा।

"कुछ अस्वस्थ होने के कारण नही आई,' मातर-स्वामिनी ने उत्तर दिया।

"छोटी-बहन को साथ लेकर नही आई, क्यो ? इसके तुरन्त बाद लयिसा ने पियल की माता से प्रश्न किया।

"स्वामी के न आ सकने के कारण ही संभवत: नही आई।"

"मै सोच रही थी कि 'स्कूल-मास्टर' जरूर आयगे।"

"दुकान पर अधिक कार्य होने से आना सभव नही है, लिखा था।"

लयिसा के मन मे यह विचार नही आया कि अनुला तथा नन्दा के न आने का कारण उनका कुलाभिमान रहा है। यद्यपि लयिसा हाव-भाव दिखाने वाली स्त्री थी, लेकिन उसमे ईर्षा-द्वेष का भाव न था। पहले की तरह ही वह उस दिन भी बलदास से हँसी-ठठोली करने लगी। बलदास के मजाक करने पर वह भी बलदास से हँसी-मजाक करने लगी।

"छोटी-बहन के न आ सकने का कारण यही है कि वह लयिसा से गुस्से है।"

"क्यो ! वह मुझसे गुस्से क्यो होगी ? उसका क्या है जो मैने लेकर वापिस नही दिया ?"

बलदास इधर-उधर देख कर चुप रह गया। परलोक प्राप्त जिनदास की बहन पास बैठी थी।

"गुस्से की वजह से नही—अहंकार की वजह से।"

जिनदास की बहन के उक्त कथन को सुना तो बलदास ने व्यङ्ग किया--

"हमारी अपेक्षा ननद को अधिक अच्छी तरह पहचानने के कारण ही शायद यह कहा है।"

'ननद की पहचान होने के कारण ही इस तरह कहा है।"

"हमारे साथ तो अहंकार का व्यवहार नही।"

"ये अपना अहंकार मर्दो के सामने नही, केवल औरतो के सामने प्रकट करना जानती है" कहते हुए जिनदास की बहन मुस्कराई।

"हो सकता है कि इसी कारण हमे कुछ पता नही पड़ा।"

"यदि मर्दो को अपना अहकार दिखाती, तो क्या 'स्कूल-मास्टर' को अपने चगुल मे फँसाने मे समर्थ हो सकती थी।"

"क्या 'स्कूल-मास्टर' को वुद्धू बनाया है ?"

"हँस हँस कर बात करके वे किसी भी तरुण को वुद्धू बनाने की विद्या मे कुशल है"

"छोटी-वहन ?"

"न केवल छोटी, वल्कि बड़ी भी ऐसी ही है।"

"तो जिनदास महाशय को भी ऐसे ही उल्लु बनाया होगा ?"

"इन के 'फैशनो' को निभाने जाकर ही उसका सर्वनाश हुआ।"

"इससे जिनदास महाशय का सर्व-नाश कैसे हुआ ?"

"इनके फैशनो के लिये सारा खर्च किया 'जिनदास' ने। इनके चगुल मे जो कोई भी फँसेगा, उसकी खैर नहीं। जिसे चाहे उसे अपना 'दास' बनाकर रखने का 'वशीकरण मंत्र' ये जानती है।"

वलदास के साथ लयिसा भी हँस पड़ी। जिनदास की वहन ने अपनी वाचालता जारी रखी--

"जिनदास ने इन लोगो के लिये खर्च किया, दुख भोगा, वाद मे अस्पताल में मर गया। अभी उसे मरे छ महीने भी नही हुए, एक पैसे वाले दूसरे आदमी को फाँस लिया।"

"जो इनके झासे में आ जाते हैं, क्या वे मर्द ही दोषी नही है ?"

"आदमी क्या करें ? खाते पीते घर का पढा लिखा कोई भी तरुण घर पर आये तो दोनों वहने शर्म-हया छोड़कर उससे वातचीत करने लगती है। वे तरुण वाहरी दिखावे के धोखे मे आ जाते है। उनके पास वाहरी दिखावे की कमी नही है।"

"क्या 'छोटी-वहन' ने पहले 'स्कूल-मास्टर' से शादी करना अस्वीकार नही किया था !"

"यह झूठ-मूठ। केवल अपनी कीमत वढाने का एक तौर-तरीका था। पहले राजी नही थी, तो वाद मे कैसे राजी हो गई ! यह झूठ-मूठ का वशी-करण मंत्र मात्र है।"

"वशीकरण मंत्र--इसका मतलव ?"

"वलदास महाशय अर्जी-नवीस की पत्नि को क्यो बार वार उकसा रहे हो। अव चुप करो। मातर-स्वामिनी और स्कूल मास्टर की माँ भी, देखो वे यही है।" लयिसा वोली।

"ये दोनो उपस्थित हैं, तो भी मुझे क्या। क्या मै उनसे डरता हूँ। यदि मैं उनसे डरूँ, तो क्या मै यह सव कहूँगा ?"

"हमारे साथ भी गुस्से हो जायेंगी।"

"मै कुछ कहूँ तो मेरे साथ ही गुस्से होना चाहिये। किसी दूसरे के साथ क्यो ? उनके डर से क्या सच्ची वात बिना कहे रहा जा सकता है ? जो आदमी इनके चंगुल में फँसा, वस उसका मरण है। वह इनके फैशन की वलि ! 'स्कूल-मास्टर' के घर पहुँचते ही अव बिना मोटर-गाड़ी के जमीन पर पाँव नही धरा जाता।"

"क्या दोषी वे मर्द नही, जो लाकर देते है ?"

"हर किसी को उल्लु बनाना वे जानती है, वे जानती ही है बस यही सब कुछ। अम्मा भी अपनी शान बचाये रखकर बेटियो की सहायता करती है।"

"मातर-स्वामिनी पर इलजाम लगाना गलती है" लयिसा ने कहा।

"मैं सभी 'स्वामिनियो को' अच्छी तरह पहचानने के कारण ही उन पर दोषारोपण करती हूँ। जब लड़की को सन्तान होने वाली थी, तो जिनदास को कहकर कितना खर्च कराया ? लडकियाँ जैसे-जैसे कहे, वैसे ही नाचने के लिये अम्मा भी तैयार है। सन्तान होने से पहले तकिये, चादर, फैनल के कपड़े, मोम-जामा, नई कैंची और न जाने अनन्त चीजों के लिये खर्च कराया। इन सब तैयारियो के कारण ही न, बच्चा तीन या चार दिन जीता रहकर ही चल बसा। बच्चे को मामूली बुखार आया। उसके लिये वैद्य का मामूली इलाज न करवा डाक्टर को बुलवाया। डाक्टर आने तक कोई चिकित्सा न होने के कारण डाक्टर के आने से पहले ही बच्चा मर गया। इन सबके लिये खर्च किया जिनदास ने।"

"इस जमाने मे बडे-घरो मे ऐसा ही होता है न," लयिसा बोली।

"गाँव के दूसरे घरो के लोग भी यह सब इन्ही से सीखते हैं। गाल्ल या मातर जाकर किसी रिश्तेदार के घर कुछ ही दिन रहने जाकर ये ही लोग यह सब नये नये फैशन सीख आते है। सीख कर बड़ी शान से इन सबका प्रदर्शन करते है। तिपाई पर सफेद चादर बिछा उसी पर नई कैंची रखी थी। ताकि लोगो को दिखाई दे। दाई ने उस कैंची के रहते पुरानी कैंची से लडके की नार काट डाली। उस औरत ने किया अच्छा, बहुत अच्छा।"

"अच्छा कैसे हुआ ! क्या डाक्टर ने यह नही कहा था कि पुरानी कैंची से नार काटने जाकर ही बच्चे की नार खिच गई और उसी से उसे ज्वर आया ?"

"लयिसा भी इन लोगो के झूठ का विश्वास करती है। यह बात इन्ही लोगो ने डाक्टर से कहलवायी है। इससे पहले क्या बच्चे-बच्चियों की नार नई कैंची से ही काटी गई है! दाई से यदि पूरी बात पूछी जाय तो वह बतायेगी। उससे इन लोगो की नई फैशन परस्ती देखी नही जाती।"

"गुस्से को रोक कर इस प्रकार बोलना बन्द कर," कह लयिसा कमरे से बाहर चली गई। लयिसा को चाहने वाला कण्डी-प्रदेश की किसी दुकान मे हिसाब किताब लिखने वाला स्वस्थ तरुण था। वह पहली बार लयिसा के घर तभी गया था, जब उसे पुंची अप्पु द्वारा गिरवी रखी गई जमीन के सिलसिले में जाना पडा था। लयिसा को जो हाव-भाव अनायास प्राप्त थे, उनमे एक था आँख के कोने से देखना और दूसरा था मुँह के कोने से मुस्कराना। तिरछी नजर वाले, अपनी नजर के सामने की चीज के अतिरिक्त जो इधर-उधर नजर दौड़ाते हैं, यह कोई अपनी जरूरत से ही नही। लयिसा भी जो हर तरुण की ओर तिरछी नजर से देखती थी, वह कुछ उसे आकर्षित करने के लिये ही नही। किसी भी तरुण के हृदय में हलचल पैदा कर देने वाली यह दृष्टि लयिसा को अनायास सिद्ध थी। मुँह के एक कोने से उठने वाली मुस्कराहट भी किसी आभास का परिणाम न थी। लेकिन इन दोनों अनायास सिद्ध हाव-भावो के कारण लयिसा को पहचानने वाले सौ में से अठानवे लोग उसे एक चरित्र हीन स्त्री समझते थे। इसीलिये कोई भी तरुण जो उसकी तिरछी-नजर का शिकार हो जाता, वह उसे बार बार देखने की इच्छा से उसके यहाँ आने-जाने लगता था। दूल्हा बनने जाने वाले क्लार्क तरुण का चित्त भी पहली बार इसी तरह आकर्षित हुआ था। जब पहली बार वह लयिसा के घर आया था, तो लयिसा ने उसकी ओर उसी तरह निहारा था, जैसे वह और तरुणो की ओर निहारती थी। तो भी उसकी नजर मे वह तरुण निहाल हो गया। इस विचार ने कि लयिसा जैसी सुन्दरी उससे प्रेम करती है, उसके हृदय को सुकोमल बना दिया। इसके

बाद से जब-जब कैण्डी-प्रदेश से गाँव आया तो हमेशा लयिसा को देखने के लिए उसके घर भी गया। थोड़ा समय इसी प्रकार गुजरने पर दोनों का सौहार्द्र बढा। तब उसने लयिसा को एक चिट्ठी लिखी। इसी क्रमशः बढे हुए सौहार्द्र के फलस्वरूप दोनो विवाह बंधन मे बँधने को तैयार हुए।

लयिसा-दुल्हन का वेष था---सफेद रंग का एक सामान्य गाऊन, मैले किन्तु सफेद रंग के ही दस्तानो से ढके हुए दोनो हाथों मे से एक मे पंखा। वह बडी कठिनाई से एडी उठाकर चल पाती थी, क्योकि दो छोटे छोटे जूतों मे उसे अपने पैरो को जैसे-तैसे घँसाना पड़ा था। दुल्हन के घोडा-गाड़ी पर चढकर, परिवार के अन्य लोगो के साथ विदा होने के थोडी ही देर बाद, मातर-स्वामिनी और पियल की माँ भी मोटर-गाड़ी मे बैठ विवाहो के रजिस्ट्रार के यहाँ पहुँची। उनके विवाह रजिस्ट्रार के यहाँ पहुँचने के थोडे ही समय बाद दुल्हन की अंग्रेजी ढग की पोशाक से मेल खाने वाली पोशाक पहने दुल्हा भी वहाँ पहुँच गया।

विवाह-रजिस्ट्रार द्वारा विवाह की रजिस्ट्री हो चुकने पर दोनो पक्ष दूल्हे के घर की ओर गये। वहाँ जब वे घोड़ा-गाड़ी से उतरे तो पटाखो की आवाज सुनाई दी। जिस समय दुल्हन और दूल्हा कदम नापते हुए से गृह-की सीढियो पर चढ रहे थे, उस समय चार छोटी-छोटी लड़कियाँ मधुर-कण्ठ से मङ्गल-गीत का गान कर रही थी। मङ्गल-गीत की समाप्ति होते ही दूल्हा तथा दुल्हन अपने लिए निश्चित कमरे की ओर बढे। उसी समय प्रौढ अवस्था को प्राप्त एक जन ने उन दोनों के मङ्गल की कामना करते हुए लम्बा आशीर्वाद दिया। गाँव भर में 'पण्डित' माने-जाने वाले इस आदमी ने बडे स्पष्ट स्वर मे अपने आशीर्वाद का पाठ किया। और भी दो तीन जनो ने जब अपने स्वर का आलाप भरा तो यह ऐसा हुआ कि जैसे किसी नारियल पर कोई कटार पड़ी हो और वह नारियल पट्स आवाज करके दो फाड़ियाँ हो जाये। जिन्होने भी उस आवाज की ओर मुँह किये स्त्री-पुरुषो के हँसते हुए चेहरो को देखा, वे सभी जान गये कि नारियल की दोनो फाड़ियो के एक साथ उठे चन्द्रमा-द्वय के मण्डलाकार के समान, उनका मुँह ऊपर की ओर था।

दूल्हा और दुल्हन दोनो ही कमरे के भीतर गये, लेकिन थोडे ही देर मे वाहर आकर शाला मे वैठ गये। जिस पण्डित ने उन्हे आशीर्वाद दिया था, अब यहाँ वैठकर उसका उपदेश से बोझिल व्याख्यान सुनना था। स्त्री पुरुप एक ही जुए में जुते दो प्राणी है। एक यदि अपना कंधा गिरा देगा, तो दोनो को कष्ट होगा।' अभ्यस्त व्याख्याता ने राहुल स्वामी के काव्य-शेखर के दो पद्यो को जितना खीचा जा सके, उतना खीच कर सुनाया और उनकी व्याख्या करके कहा कि इस उपदेश का अक्षरशः पालन होना चाहिये। बूढी स्त्रियो को छोड जो दूसरे ऐसे मर्द थे जिन्होने कवि-पण्डित का यह उपदेश सुना था कि वातचीत नही करनी चाहिये, तथा वलदास, नीची नजर करके दूल्हा की ओर देख रहे थे। 'दाँत निकालकर हँसना नही' उपदेश दिये जाते समय, वलदास सोच रहा था कि लयिसा भी नीचा मुँह किये हँस रही होगी। लयिसा के मोती जैसे दान्तो का प्रदर्शन करने वाली उसके मुँह के एक कोने से उत्पन्न होने वाली मुस्कराहट अनायास ही लम्वी हो जाती थी। भले ही पण्डित इस वात से अपरिचित रहा हो, लेकिन वलदास परिचित था कि इसे दवाकर नही रखा जा सकता।

रीति-रिवाज के अनुसार विवाह-गृह के सभी लोगो से मातर-स्वामिनी को सत्कार-सम्मान प्राप्त हुआ। उसके साथ आने के कारण पियल की माँ को भी और दिनो की अपेक्षा अधिक सत्कार-सम्मान मिला। जिन चार स्त्रियो ने दुल्हन को (दूल्हा के यहाँ) पहुँचाया था, उनमे से दो थी—मातर-स्वामिनी तथा पियल की माँ। तो भी वे रात के खाने पर न रुक, चली गई। विवाह गृह की कुछ स्त्रियाँ इस वात से काफी असं-तुष्ट हुई।

'वडे-घर' के लोगो का यही हाल है। छोटे-घरो मे भोजन करने का अवसर आने पर कोई न कोई वहाना बनाकर पहले ही निकल जाती है। पुराना अहकार अभी भी ज्यो का त्यो है,'' दूल्हा की चाची ने कहा।

"मातर स्वामिनी का यह कथन कि 'हम उन्ही के मुँह से खाते है' क्या सफेद झूठ नही था। बेटी को कही कुछ बीमारी-बीमारी नही है," कहते हुए एक दूसरी स्त्री ने दूल्हा की चाची का समर्थन किया।

सदाशयता युक्त लयिसा ने और दिनो की तरह ही अच्छी तरह शिष्टता पूर्वक बातचीत करके मातर-स्वामिनी को रात के भोजन के लिये रोकने की कोशिश की थी।

"अब इस बार नन्दा को साथ लेकर आना," लयिसा ने मातर-स्वामिनी की मोटर को विदा करते समय कहा।

'अनुला भी आई होती तो लयिसा को और भी खुशी हुई होती," मोटर-गाडी मे ही बैठे-बैठे घर की ओर विदा होते समय पियल की माँ ने कहा।

क्योकि मातर-स्वामिनी चुप रही, इसलिये पियल की माँ ने यह भी कहा—"मैने बुलाया था, लेकिन नन्दा ने कहा, असमर्थ हूँ।"

"वे लोग छुटपन मे भी कत्तिरिना आदि के घर नही गई है," मातर-स्वामिनी ने न आ सकने का कारण बताया।

"यह होने पर भी, यदि आज गई होती, तो अच्छा था।"

"अनुला को शादी मे मेरा भी आना पसन्द नही था। नन्दा को तो खास आपत्ति नही। पुची अप्पु की कही बात सुनी नही ?"

"उसने बताया है कि करोलिस ने पुची अप्पु तथा लयिसा को बुरा भला कहते हुए, उनका बहुत उपहास करके चिट्ठी भेजी है।"

"ऐसा क्यो ?"

मातर-स्वामिनी ने कुछ समय पूर्व करोलिस तथा लयिसा के बीच बढते अनुराग के बारे मे कहा।

"तो क्या करोलिस इसी उलझन के कारण "सिहल" गया ?"

"हाँ, गाँव मे रहा तो बिगड जायगा, सोच मुहदिरम ने कारोलिस को सिहल भेज दिया।"

"लयिसा ने इस दूल्हे के साथ चिठ्ठी-पत्री की थी, आज विवाह-घर में एक स्त्री कह रही थी।"

"लयिसा तो ऐसी ही है।"

"मुझे सुनाई दिया कि एक और स्त्री काना-फूसी कर रही थी कि इसकी बलदास के साथ भी साठ-गाठ है।"

"बलदास लयिसा के घर यूँ ही विनोदार्थ आता-जाता होगा। इसमें लयिसा का कुछ दोष नही है, दोष है उसकी माँ का। जब वह घर पर रहती है, तो किसी भी तरुण के आने पर वह उससे बातचीत करवाती है, लयिसा ने भी इसी से सीख सीखी है।"

"एक दिन रात के समय बलदास खिड़की के पास खडा होकर रात के समय अकेला ही लयिसा से बतियाता रहा है--यह नन्दियस अफसर ने देखा।"

"किसने कहा?"

"आज विवाह-गृह मे दो स्त्रियाँ इधर-उधर देखकर कुछ काना-फूँसी-सी कर रही थी। उनमे से एक की बात मुझे सुनाई दे गई।"

यह कहते हुए पियल की माँ ने मातर-स्वामिनी के कान के पास मुँह ले जाकर कहा--

"मुझे सुनाई दिया है कि यह औरत तिस्स का नाम भी ले रही थी।"

"बलदास के साथ तिस्स दो तीन दिन लयिसा के घर आया-गया है। जब से मैंने उसे फटकारा, उसके बाद वह नहीं गया।"

"नन्दियस अफसर ने उसे अचानक देख लिया है।"

"क्या यह विवाह-घर की स्त्रियों की आज की बातचीत है?"

"हाँ।"

"सम्भवत. झूठ प्रलाप होगा। आस-पास की स्त्रियाँ लयिसा से गुस्से है। झूठ-मूठ का किस्सा गढकर वे प्रचार करती है। जिस दिन की घटना का वे जिक्र करती है यदि तिस्स बलदास के आने तक सड़क पर

बैल-गाड़ी के अन्दर बैठा उसकी प्रतीक्षा करता रहा, तो नन्दियस अफसर मुझ को इसकी सूचना अवश्य देता, लेकिन मुझे अफसर ने ऐसी कोई बात नहीं कही। पुंची अप्पु ने एक दिन मुझे बताया कि लयिसा पर दोषारोपण करते हुए दूल्हा के पास भी इन लोगो ने कई चिट्ठियाँ भिजवाई है।"

मातर-स्वामिनी ने रात का भोजन पियल के घर खाया और फिर उसी समय मोटर से 'बडे-घर' वापिस चली गई।

★

परिच्छेद/१६

अक्तूबर महीने मे जोर का पानी बरसा और आँधी आई, उससे कटहल का बड़ा पेड उखड़ कर जो 'बडे-घर' पर गिरा, उससे वाई ओर की छत और दीवार गिर गई। गिरी दिवार को जैसे तैसे खडा करवा, नारियल के ठठ्ठरो से ढाँक, ऐसी व्यवस्था की गई कि घर का भीतरी भाग न भीगे। मातर-स्वामिनी और अनुला घर के दाहिनी ओर के कमरों में रहने लगी। तो भी तेज हवा से आने वाली पानी की बौछार टूटी हुई दीवार के भीतर पहुँचती ही थी। उससे घर का बरामदा भीग जाता और यहाँ तक कि दीवार भी थोड़ी थोड़ी धोयी जाती। टूट-फूट और छत की मरम्मत कराने के लिये दो तीन हजार रुपये खर्च करने की जरूरत थी। जराजीर्ण हो गई उस छत को नये सिरे से डलवाना असम्भव था। यद्यपि मातर-स्वामिनी इस समय पचास-साठ रुपये भी खर्च करने की स्थिति में नही थी, तो भी उसने कुला-भिमान के कारण पियल की मदद नही लेनी चाही।

इस वार जब कोई एक महीने के वाद पियल गाँव लौटा और उसने 'वडे-घर' का एक सिरा गिरा देखा तो उसे यह सोचकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि इसकी मरम्मत अभी तक क्यो नही करवाई जा सकी? कोई दो सौ वर्ष पुराने इस घर की मरम्मत के लिये काफी पैसा खर्च होने वाला था। यह बात बुद्धिमान पियल के ध्यान मे आ गई कि गिरी दीवार को उठवा कर नई छत डलवाने आदि के मरम्मत का कार्य बिना दो तीन हजार रुपये खर्च किये नही हो सकता।

"नन्दा, अम्मा और अनुला को यही आकर रहने के लिये क्यों नही कहा?" पियल के अपनी भार्या से यह प्रश्न पूछने का एक कारण यह भी था कि वह जानता था कि घर की मरम्मत मे बहुत पैसा लग सकता है।

"वे लोग आते नही। मैने कहा कि कुछ दिन यही आकर रह जायें, दोनो ने ही मेरी बात अनसुनी कर दी।"

"कुछ ही दिन क्यो? क्या हमेशा ही यही नही रहा जा सकता?"

"जो लोग थोडे दिन के लिये भी रहने नही आना चाहते, क्या वे हमेशा के लिये आना पसन्द करेंगे?"

"घर का एक हिस्सा एक दम गिर सकता है।"

"घर का एक हिस्सा गिर भी पडा तो भी, अम्मा-अनुला घर छोड़ कर और कही नही जायेगी। हम ही खर्च करके घर की मरम्मत करवा दे।"

"क्या माँ ने ऐसा कहा?" पूछते हुए पियल मुस्कराया।

"माँ ने ऐसा नही कहा। वह कभी ऐसा कहेगी भी नहीं।"

"घर की छत पूरी पूरी डलवानी पडेगी। विना दो तीन हजार रुपये खर्च किये, यह कार्य पूरा होने वाला नही।"

"इतना खर्च करने की जरूरत नही। थोड़ा सा खर्च करके काम चलाऊ मरम्मत करा देना काफी होगा।"

"इस प्रकार की मरम्मत एक साल भी नही ठहरेगी।"

"इसकी परवाह नहीं। बाद मे वे लोग जितना चाहेगे उतना खर्च करके मरम्मत करा लेगे। अब काम चलाऊ मरम्मत करा दे।

"मुझसे ऐसी झूठ-मूठ की मरम्मत नही कराई जाती। मरम्मत कराई जाय तो ऐसी हो कि कुछ समय टिके।"

"मुझे पैसा भिजवा दे। मै मरम्मत करवा दूँगी।"

पियल ने कोलम्ब पहुँच, कोई एक सप्ताह के भीतर नन्दा के पास पाच सौ रुपये भिजवा दिये। नन्दा ने 'वडे-घर' की दीवार खड़ी करवा, जैसे तैसे छत की भी मरम्मत करवा, खपरैल डलवा दी।

मरम्मत करा दी गई, तो भी उस घर की जीर्णता मे कुछ अन्तर नही पडा। वरसात के दिनो मे उस घर मे ऐसी जगह खोजनी मुश्किल हो जाती, जो चूती न हो। पहले जो जगह थोड़ी-थोड़ी चूती थी, अव

अच्छी तरह चूने लग गई। एक दिन रात को जब आंधी-पानी साथ साथ आये तो अनुला और मातर-स्वामिनी ने बरामदे में तीन ऐसी जगहों पर जहाँ अधिक चू रहा था, बाल्टी, चिलमची और हाण्डी रखी। छत मे से, जहाँ एक जगह खपरैल टूट गई थी, ऐसी धारा बँधी थी कि उसके नीचे रखी बाल्टी थोडी ही देर मे भर जाती थी। उसे फिर फिर खाली करना पडता था। जब तक वह भारी वर्षा चालू रही, तब तक अनुला, मातर स्वामिनी और घर के नौकर-चाकर बरामदे को नदी बन जाने से बचाने के लिये बरतनो मे बरसात का जो पानी भर भर जाता था, उसे खाली करते रहे। क्योंकि सवेरा होने से कुछ पहले ही बारिश रुक गई थी इसलिये मातर-स्वामिनी तथा अनुला फिर सोने चली गयी। यद्यपि दोनो चारपाई पर जा लेटी थी, लेकिन दोनो मे से किसी एक की भी आँख नही लगी। बरामदे मे और अलमारी के ऊपर बीच बीच मे पानी की जो बूँदें टपकती थी, उनकी आवाज अनुला को सुनाई देती थी। चारपाई पर जागती पडी अनुला को अपने बीते दिन याद आने लगे। 'बडा-घर' इस प्रकार जीर्ण-शीर्ण हो जायगा और उनके ऐसे खराब दिन आ जायेंगे, यह बात उस दिन शाम के समय अनुला के मन में आई थी, जिस दिन उसने जिनदास के मरने के बारे मे सुना था। उस दिन उसके मन में जैसी शोकाकुल भावना पैदा हुई थी, वैसी ही दुबारा उत्पन्न हुई। हमारे अच्छे दिन जाते रहे, यह हमारा परलोक-वासी पिता तो जानता होगा। अनुला ने सुन रखा है कि सम्भवतः उसके पिता ने देव-योनि ग्रहण की होगी। मातर स्वामिनी ने यह बात जब तब इसलिये कही थी, क्योंकि कत्तिरिना ने अपने जीते जी कहा था कि उसने मुँहदिरम कयिसारवत्ते का देव-योनि मे जन्म ग्रहण करना दैवज्ञो से जाना है। पिता यदि देव-योनि में उत्पन्न हुआ है तो वह उसकी और उसकी माता की सहायता क्यो नही करता ? यदि इसी प्रकार यह घर चूता रहा, तो इसमें कोई शक नही कि तीन चार वर्ष मे यह धराशायी हो जायगा।

इसी प्रकार की चिन्तन-धारा में उलझी हुई अनुला को नींद आ गई।

प्रात:काल कौओ की कायँ कायँ सुनाई देने पर जब अनुला की आँख खुली तो उसने प्राची मे से उदय होने वाले सूर्य मण्डल के दर्शन किये और उसे सुनाई दी कौवो की कायँ कायँ तथा दूसरे पक्षियो का मधुर स्वर। रात को अनुला का मन जो शोक-ग्रस्त हो गया था, वह जैसे सूर्य के उदय होने पर अन्धकार नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार शोक-मुक्त हो गया। प्रात:काल उठकर घर का काम-काज करने वाली अनुला को रात का किया, कहा कुछ याद नही रहा। इसलिये उसका मन शोकाकुल चिन्ता धाराओ से मुक्त हो गया।

प्रात:काल लगभग नौ बजे नन्दा के नाम बड़े-घर' के पते पर एक तार पहुँचा, जिसे पढ अनुला भौचक्की रह गई। मातर-स्वामिनी को सुनाते हुए अनुला ने सिंहल मे तार का भाषान्तर किया, "तुम्हारे पति अस्वस्थ है।" यह देख कि यह तार रतनपुर के अस्पताल के डाक्टर का भिजवाया हुआ है, अनुला और भी अधिक चकरा गई।

"क्या यह बात याद नही कि नन्दा ने बताया था कि गत चिट्ठी के अनुसार पियल दियतलाव जाने वाला है, वहाँ ठेके का काम होने के कारण तीन चार सप्ताह रुक भी सकता है" मातर स्वामिनी ने याद कराया।

"माँ दियतलाव एक दिशा मे है और रतनपुर उसके सर्वथा विरोधी दिशा मे।"

"क्या यह संभव नही कि पियल दियतलाव से रतनपुर गया हो?"

यह बात अनुला के ध्यान मे आ गई कि जिस पियल के पास मोटर गाड़ी है, उसका दियतलाव से रतनपुर चला आना एक दम सम्भव है।

मातर-स्वामिनी सादा को साथ लेकर तार लिये लिये पियल के घर पहुँची। तार पढते ही नन्दा ने रतनपुर के लिये विदा होने का विचार किया। गठिया के दर्द से पीड़ित, चारपाई पर पड़ी हुई, हाय हाय करती पियल की माँ ने भी नन्दा का साथ देने का निश्चय किया।

"पियल इससे पहले भी दो वार रतनपुर आ जा चुका है। एक वार एक अंग्रेज महिला के लिये कोई हीरा खोजने गया था," कपडे-लत्ते पहन, लगडाती हुई पियल की माँ ने वाहर आकर कहा।

"मेरे पास जो पत्र आया है, उसमे लिखा है कि दियतलाव जा रहा हूँ।"

"हम कैसे कह सकते है कि वाद मे इस विचार को वदल कर रतन-पुर चला गया हो। ले इसे सभाल कर रख," कहते हुए पियल की माँ ने पाँच पाँच रुपये के, दस दस रुपयो के नोटो के दो वण्डल नन्दा के हाथ मे थमा दिये।

"माँ, मैने पैसा ले लिया है। इतना अधिक पैसा क्यो ले चलें ?"

"जरूरत पडने पर वहाँ किस से माँगते फिरेंगे ? अम्मे !....अम्मे ! ऊई।" कहते हुए पियल की माँ अपना घुटना पकड कर कुर्सी पर वैठ गई।

"अम्मा को तकलीफ है तो यही रहे, मै अकेली जाती हूँ।" कहते हुए नन्दा ने अपनी सास के घुटने को मला।

वैग मे पैसा रख कर नन्दा, पियल की माँ के साथ साथ दरवाजे के पास खडी मोटर गाडी मे जा चढी।

"रतनपुर पहुँचते ही रोगी के स्वास्थ्य की सूचना तार द्वारा देना," मातर स्वामिनी ने नन्दा को आदेश दिया।

"अम्मा ! अच्छा।"

सीधी पानदुरे तक गई मोटर गाडी--वहाँ पहुँच कर एक छोटी सडक पर हो ली। पानदुरे से विदा होकर दो घण्टे वीतते-वीतते अव मोटर गाडी ऐसे रास्ते पर चली जा रही थी, जो ऐसे इलाके मे से गुजर रहा था कि जिसमे ऊष्ण कटि-प्रदेश मे ही उगते कहे जाने वाले यथार्थ जंगल तथा रवर के वगीचे थे। न केवल नदियो झरनो और वर्षा के ही कारण, वल्कि गिट्टे तक धँस जाने वाले पुराने पत्तो और घने पेडो के कारण यहाँ सदा ही नमी वनी रहती थी। सड़े-गले पत्तो के कारण घने पेड़ो वाली

जमीन का रग काला पड़ गया था। जिन लताओं ने छोटे-छोटे वृक्षों को ढक रखा था, वे उनके शिखरों को भी लाँघ कर ऊपर तक चली गई थी और फिर कितुल-पेड की दाढी की तरह लटकने लगी थी। क्षितिज तक फैले हुए बडे भारी जंगल से ढके हुए छोटे-छोटे पर्वत दैत्यों के समान प्रतीत हो रहे थे और स्वयं वे जंगल नन्दा की दृष्टि मे कटी हुई झाड़ियों के समान थे।

रैंडियन पक्षी का स्वर मोटर गाडी मे बैठे हुए लोगों को किसी वियोगिनी का विलाप प्रतीत होता था। इस विलाप को दवा देने वाली आवाज केवल वह थी, जो दोनों पर्वतों के बीच, पुलिया के नीचे से बहने वाली जल-धारा के साथ-साथ गिरने वाले पत्थरो की सुनाई देती थी। सूर्य की किरणें कितनी भी प्रखर रही हों, तो भी वृक्ष-समूहो के मध्य घना अन्धकार बना ही था। जगल मे विशाल कदम्ब वृक्ष की शाखा पर बैठे 'कपास-चोर' पक्षी ने जब मोटर-गाडी की अनभ्यस्त आवाज सुनी तो वह डर कर उड़ गया। उसके पर सफेद रेशमी वस्त्र के से थे और वह ऊपर उठने, नीचे गिरने वाली समुद्र लहरियों की तरह लहरा रहे थे। पियल की माँ की नजर उन पर पड़ी तो उसने दूसरी ओर देख रही नन्दा का ध्यान इधर आकर्षित करते हुए कहा—'नन्दा! देख इन कपास चोरो का सौन्दर्य!' 'कपास-चोर' तथा 'अग्नि-चोर' बडे-बडे परो वाले तथा कलंगी-धारी उन सुन्दर पक्षियो का नाम है, जो ग्रामीणो के लिये कर्मवाद के प्रत्यक्ष साक्षी है। इन पक्षियों को ग्रामीणो द्वारा दिये गये ये नाम ग्रामीणो की कर्म-वाद सम्बन्धी आस्था की ही कृपा है। पूर्व-जन्म मे वस्त्रादि की चोरी करने वाला 'कपास-चोर' बनता है और अग्नि की चोरी करने वाला 'अग्नि-चोर।'

इस जंगल के मध्य मे से, मोटर-गाडी मे बैठी हुई नन्दा और पियल की माँ गुजर रही थी। न केवल नन्दा के ही मन मे बल्कि पियल की माँ के भी मन मे शोक की एक लहर-सी पैदा हुई। नन्दा स्वयं न समझ सकी कि उसे अचानक जिनदास की याद क्यों आ गई?

"हम जब घर से निकले थे तो हमे सामने मिली थी खाली घडा लिये एक स्त्री ! अरे मेरी अम्मा। ऊँ," कहते हुए पियल की माँ चिल्लाई।

"माँ के घुटने मे ज्यादा दर्द है ? वह औरत तो हमारे सामने आने से पहले चौरस्ते पर से घूम गई थी। हमे तो सामने मिला था नन्दियस आफिसर," नन्दा बोली।

"आफिसर का मिलना भी तो अच्छा नही है न ? मेरे पाँव का दर्द बढता जा रहा है। मै नही जानती कि किस कर्म का फल है। स....स।"

"कहाँ की गप्प है, अम्मा ! नन्दियस आफिसर अच्छा भाग्यवान आदमी है। पैर के दर्द के लिये अस्पताल के डाक्टर से दवाई ले लेंगे। और क्या किया जा सकता है ?"

यद्यपि नन्दा इस प्रकार अपनी सास को आश्वस्त कर रही थी, लेकिन धीरे-धीरे उसके अपने मन की व्याकुलता बढ़ती जा रही थी। अस्वस्थ होने पर पियल घर न आकर हस्पताल मे भर्ती हो गया है, इसका कारण उस पर आई कोई अचानक विपत्ति होना चाहिये। क्या पियल की मोटर गाडी पलट गई ? यदि ऐसा नही तो वह किसी मारकाट में तो नहीं उलझ गया ? कही किसी शत्रु द्वारा जख्मी किये जाने के कारण ही तो उसे अस्पताल मे भर्ती नही होना पडा है ? लगभग शाम के छह बजे जब मोटर गाड़ी रतनपुर हस्पताल के पास पहुँची, तब तक नन्दा के मन मे इसी प्रकार के संकल्प-विकल्प उठते रहे। हस्पताल से थोडी ही दूर पर जब रथ रुका तो नन्दा दरवाजा खोलकर बाहर आई।

"माँ के लिये चलना फिरना कष्ट प्रद है, इसलिये गाडी मे ही बैठे रहना ठीक है। मै ड्राइवर को साथ लेकर जाती हूँ और डाक्टर से मिलकर रोगी के सम्बन्ध मे जानकारी और वह किस वार्ड मे है, मालूम करके आती हूँ।"

"यद्यपि चलना-फिरना कठिन है, तब भी मै आती हूँ।"

"माँ, ऐसा मत कर। माँ के पैर का दर्द अधिक बढ़ जा सकता है। मै डाक्टर से मिलकर, रोगी के बारे मे जानकारी प्राप्त कर और वह किस वार्ड मे है, मालूम करके आती हूँ।"

"अच्छा तो जल्दी लौटना। देर नही लगाना। स····से·· अम्मा···· उयी !"

जिस समय नन्दा ने हस्पताल मे प्रवेश किया, उसी समय यह बात उनकी समझ मे आ गई कि किसी भी एसिड और कई दवाओ की गन्ध को गाँव के लोगो ने "हस्पताल-दुर्गन्ध" का नाम क्यो दे रखा है ? हस्पताल के बरामदे और उसके पिछवाडे से फनैल की बू आ रही थी, जिसे ग्रामीण जन 'अग्नि-जल' कहना पसन्द करते है। हस्पताल मे प्रविष्ट हुई नन्दा को ऐसा लग रहा था कि दवाइयो की दुर्गन्ध ने फनैल की दुर्गन्ध को भी दबा दिया है। नगर की नालियो, सड़को, सडते हुए कचरे से उठने वाली दुर्गन्ध तथा धूलि से शून्य, गाँव के वृक्षो के पत्तो को स्पर्श करने वाली स्वच्छ वायु मे साँस लेने की अभ्यस्त नन्दा को 'हस्पताल की दुर्गन्ध' अच्छी नही लगी। उसने अपने बैग मे से इतर लगा हुआ रूमाल निकाला, उसकी गोली सी बनाई और दो तीन बार नाक के समीप ले जाकर उसे वापिस बैग मे रख लिया। हस्पताल के एक वार्ड मे से किसी रोगी के रोने चिल्लाने की आवाज आई, नन्दा की चाल तेज हो गई। जब उसने श्वेत वस्त्रो से तन और सिर ढके एक 'नर्स' को अपनी ओर आते देखा तो नन्दा ने अपनी चाल मन्द कर दी और उस 'नर्स' को ही अपने आगमन का प्रायोजन बताया। उसने एक कर्मचारी को कहा, जिसने नन्दा को एक दफ्तर तक पहुँचा दिया। वहाँ नन्दा ने देखा कि एक मेज के पास, गले मे एक रबर की नली डाले, एक तरुण कुर्सी पर बैठा है। 'यह उप-डाक्टर है' नन्दा को जानकारी मिली। उस डाक्टर ने नन्दा को देखते ही उठकर नमस्कार किया। इस शिष्टाचार का कारण था नन्दा का सौन्दर्य' वंशाभिमान युक्त नेत्रो से प्रकट होने वाली उसकी दृष्टि। जिस कुर्सी की ओर डाक्टर ने संकेत किया था, उस पर बैठकर

नन्दा ने वह तार डाक्टर के हाथ मे दिया। तार पढते ही डाक्टर ने एकाधिक वार नन्दा की ओर और एकाधिक वार तार की ओर देखा।

"यह रोगी तो कोई एक वजे के आस-पास आज मर गया।" डाक्टर बोला। 'यह रोगी तो' शब्द डाक्टर के मुँह से निकले कुछ संदेहास्पद ढंग से।

"मर गया!"

यह शब्द मुँह से निकलने से भी पूर्व नन्दा रोने लगी। वह कुर्सी से गिरने ही जा रही थी कि डाक्टर और ड्राइवर ने नजदीक पहुँच उसे सम्भाल लिया। डाक्टर ने दृढ विश्वास से उसका हाथ पकड़, नाड़ी देखी और तब ड्राइवर से कहा—

"जो रोगी मरा है, वह ऐसी विरूपी का पति नही हो सकता—एक भिखमंगा सा आदमी था। यह भी असम्भव नही कि यह टैलिग्राम गलती से भेजा गया हो।"

यद्यपि डाक्टर के मुँह से निकली यह बात शोक संतप्त नन्दा की अच्छी तरह समझ में नही आई थी, तो भी इस बात से उसके अन्धकार पूर्ण हृदय मे जो आशा की किरण सी उदय हो गई थी, वह एक क्षण में ही विलीन हो गई।

"मृत शरीर देखना है," आँसू पोछती हुई, कुर्सी से उठती हुई नन्दा बोली।

"ड्राइवर के जाकर देख आने तक आप यही ठहरें। तबीयत ठीक लगने पर बाद मे जाकर देख सकती है।"

"नही, अब मुझे कोई तकलीफ नही है, मै चल सकती हूँ।"

हस्पताल के एक कर्मचारी के साथ नन्दा और ड्राइवर दोनों मुर्दों के कमरे की ओर गये।

"मै दौड़कर स्वामिनी को साथ ले आऊँ?" ड्राइवर ने पूछा।

"नही" नन्दा ने डाँट दिया। "पहले देख लें, कौन है, तब जाकर ले आना।"

कर्मचारी ने मुर्दा-गृह का दरवाजा खोला। स्वयं एक ओर हो गया और अपने हाथ का लैम्प उस कमरे मे मृत-शरीर रखने के लिये बने चबूतरो की ओर घुमाया। जैसे दो बोरियो मे दो केलो की गाँठें भरी हों उसी प्रकार दो मोटे-मोटे कपड़ो के टुकडों मे दो मृत शरीर लपेटे पडे थे। दीपक का प्रकाश होने से नन्दा उनके मुँह तथा सिर देख सकी। उनमे से एक चेहरा नन्दा की तुरन्त पहचान मे आ गया—ब्रुश मे भरे जाने वाले, घोडे के काले बालो की याद दिलाने वाली दाढ़ी से युक्त चेहरा। उसकी दोनों आँखों से आँसू बह चले, लेकिन उसने अपने हृदय की तीव्र वेदना तथा हलचल को प्रगट करने वाले बाह्य लक्षणो पर जैसे-तैसे काबू पा लिया और दीवार का सहारा ले खड़ी रही।

"डाक्टर से गलती हो गई। हमारा 'मालिक' यदि कोलम्बु नही है, तो दियतलाव मे सकुशल होगा," ड्राइवर ने मुस्कराते हुए कहा।

"हाँ, हम चलें।"

नन्दा ने एक बार फिर मृत-शरीर की ओर देखा और मुँह फेर कर अपनी आँख मे आये आँसू पोछ डाले। अश्रु-मुख नन्दा को आते देखा, तो पियल की माँ ने बे-सब्री से पूछा—

"नन्दा, रो क्यो रही है? क्या पियल को बहुत तकलीफ है?"

"अम्मा, नही, वह पियल नही है।"

"तो कौन है?"

"जिनदास।"

"जिनदास?"

"हाँ जिनदास, आज एक बजे मर गया है।"

"क्या बकवास, यहाँ जिनदास कहाँ मरने के लिये।"

वह रात विश्राम-गृह मे बिताकर नन्दा और पियल की माँ ने दूसरे दिन प्रातःकाल ड्राइवर के हाथ एक बहुत अच्छी 'मृत-शरीर-पेटिका' मँगवाकर हस्पताल भिजवा दी। चार भिक्षुओं को स्मशान-भूमि मे पधारने की प्रार्थना कर, उन्हे मृतक वस्त्र का दान दिया। इसके बाद जब

16

मृत देह का 'भूमि-दान' हो गया, तो उन्होंने भी सीधे गांव की ओर प्रस्थान किया।

"पियल को इस बारे मे कुछ न लिखना," मोटर गाडी की सीट पर हाय-हाय करती हुई पियल की माँ बोली।

"मैंने भी यही सोचा है कि कुछ न लिखना। आने के दिन कह दूँगी।"

"हाँ, उसके आने के दिन बता दे सकती हो। मुझे तो यह सब एक स्वप्न सा प्रतीत होता है। क्या करोलिस ने यह लिखित सूचना नही दी थी कि जिनदास बदुल्ल के हस्पताल मे मर गया है?"

"हां माँ, उसे महामूर्ख होना चाहिये।"

"करोलिस ने झूठ लिखा। जिनदास की मृत्यु हो गई, यह झूठी बात करोलिस ने लिखी।"

"किसी की कही-सुनी झूठी बात उसने हमें लिख भेजी होगी।"

"क्या उसने यह नही लिखा था कि उसने हस्पताल जाकर स्वयं यह जानकारी प्राप्त की है?"

"हाँ, करोलिस की इतनी बात मन-घडन्त रही होगी, करोलिस कुछ मूर्ख तो है ही।"

"तो जिनदास रतनपुर कैसे पहुँचा? यदि वह बिब्लिल मे बीमार पडा, तो वह रतनपुर किसलिये आया?

"जिनदास बिबिल से हस्पताल मे नही आया है। बिबिल का कारो-बार बन्द कर वह यहाँ-वहाँ घूमता रहा होगा। बाद मे नौकरी की तलाश मे रतनपुर की ओर चला आया। वह रतनपुर मे ही रोग-ग्रस्त हुआ होगा।"

"डाक्टर को तार भेजने के लिये तुम्हारे पते की जानकारी कैसे मिली?"

"जिनदास ने दी होगी।"

"गाड़ी इतनी तेज मत दौड़ा," पियल की माँ ने ड्राइवर को कहा। उसने रफ्तार थोडी कम कर दी।

"अब हम कहाँ है ?"

"अभी रतनपुर मे ही है।"

रतनपुर पीछे छूट जाने पर मोटर गाडी ऐसी सडक पर जा रही थी, जिसके दाहिनी ओर रबर के बगीचे तथा जगल थे और बाईं ओर अभी अपरिपक्व धानो मे से होकर बहने वाली नदी। कुछ बगीचों के ऐसे रबड के पेडो के झुण्ड, जिनके पैरों पर ब्राह्मी घास बिछी हुई थी देखने मे बडे सुन्दर लगते थे। जिस जगह जंगल से ढकी हुई दोनो पहाडियाँ एक हो गई थी, वहाँ बहकर आने वाली जलधारा बड़ी सड़क के किनारे के एक गढे मे गिरकर, एक पुली के नीचे से बहती हुई दूसरी ओर निकल कर नदी में शामिल हो जाती थी। कैण्डी-प्रदेश मे इस प्रकार की स्वच्छ जल-वाहिनी नहीं देखी रहने के कारण नन्दा और पियल की माँ किसी-किसी जल-धारा के पास गाडी रुकवा देती और थोडी देर वही रुक, उसे अच्छी तरह निहार कर गाड़ी को आगे चलने की आज्ञा देती।

किसी-किसी मोड पर ऐसी जगह आई जहाँ मोटर-गाडी को सडक के बीचो-बीच अडकर खडे हुए लगभग १२ फुट ऊँचे पत्थर के पास से गुजरना पडा। जहाँ पत्थर समाप्त होता था, वही से जंगल की छाया से आच्छादित शिखर वाले एक पर्वत का श्रीगणेश होता था। बाईं ओर की नीची भूमि मे धीरे-धीरे उतरने वाली नदी के बाईं ओर के खेतो के बीच से उठी पर्वत-शृङ्खला को ढक रखने वाले, क्षितिज तक फैले हुए वन पर सफेद दाग वाले बडे भारी चदवे के समान विस्तृत आकाश की छाया पड़ रही थी, जिससे वह नील-वर्ण जैसे हरित-वर्ण के प्रतीत हो रहे थे। नदी मे कहीं-कहीं पुली के पास के पर्वत-शिखर के गिर्द छोटे-छोटे पत्थरों का ढेर दिखाई देता था। इन पत्थरो के ढेरो मे के कोई-कोई छोटे पत्थर अण्डो की सी शक्ल के थे, कुछ गेंद की तरह, कुछ दीवार पर लटकाने की घडी मे लटकन के समान। घिसने से जिन पत्थरों का

खुरदरा पन जाता रहा, ऐसे पत्थरों को ये नाना प्रकार की शक्लें किसने दी ? छोटे बच्चो की तरह कल्पना करने वाले ग्रामीणो ने निरन्तर बह बह कर आने वाले तथा नदियों के किनारो पर आसानी से पाये जानेवाले इन पत्थर के टुकडों को लेकर नाना प्रकार की कल्पनायें कर रखी है। उनकी दृष्टि मे कुछ पत्थर पुराने वरदान-प्राप्त राजाओ द्वारा पानी मे फके लड्डू हैं। कोई कोई घिसे घिसे पत्थर उन राजाओ की रानियो द्वारा वदन रगडने के काम मे आये हुए प्रस्तर-खण्ड है। जो गोल-मटोल पत्थर होते है, वे उनकी दृष्टि मे उन रानियो की सन्तान के खेलने की गेदे होती है।

मोटर-गाडी मे बैठे वे लोग होरण तक आ पहुँचे। इस बीच उन्हे 'गाँव' कहला सकने वाली बस्तियाँ बहुत कम दिखाई दी। झोपडियो के सामने के आँगनो मे नंग-धडग खेलने वाले ग्रामीण-बच्चो को देखकर न नन्दा को ही कोई आश्चर्य हुआ और न पियल की माँ को ही। वे जानती थी कि उनके अपने गाँव के दरिद्र परिवारों के बच्चे सात-सात और आठ-आठ वर्ष के हो जाने तक अपनी लज्जा ढकने के लिये कमीज या दूसरे कोई वस्त्र तभी पहनते है जब उन्हे अपने घर से बाहर कही जाना होता है। जब वह पानदुर के समीप पहुँचे तब उन्होने नये फैशन के बडे-बडे घरो से युक्त, जनाकीर्ण नगर देखा। पानदुर के कुछ घरो को देखकर नन्दा को पियल द्वारा बनवाया घर याद आया। क्योंकि उसकी छत, झरोखो की तराशी हुई लकडी पानदुर में देखे इन घरो के समान थी।

पानदुर से गुजर चुकने पर, कलुतर के समीप पहुँचने पर, नन्दा और उसकी सास के चित्त को नदी और उसके पुल ने आकर्षित किया। यद्यपि समुद्र और नदी का दृश्य उनके लिये नया नही था, तो भी इतना बडा पुल और दरिया उनके लिये अनभ्यस्त दृश्य था। कलुतर के कुछ पुराने घरो को देखकर नन्दा को अपने माता-पिता का पुराना मकान याद आया। कुछ बडे पुराने मकान, बनावट के ख्याल से, मजबूत दीवारो के ख्याल

से, खम्भो के ख्याल से, खपरैली छत के ख्याल से तथा झरोखो आदि से कयिसारुवत्त के वंश परम्परागत घर के समान थे।

अलुत-ग्राम को पार कर सन्ध्या होते होते वे गाल्ल पहुँचे। गाल्ल से आगे बढने पर नन्दा की सास कराहने लगी। घर का ध्यान आने से उसके पाँव की पीडा बढ गई। यात्रा की थकावट से चकनाचूर हुई सास, घर के नजदीक पहुँचते-पहुँचते चारपाई पर गिर कर, पाँव मे तेल की मालिश करा, अपने दर्द से मुक्ति पाने की बात सोचने लगी।

"नन्दा! मेरे पाँव का दर्द बढ गया है। सहन नही होता। स... सा...।" कहते हुए पियल की माँ ने मोटर गाडी से उतर घर मे प्रवेश किया।

"इस यात्रा ने माँ की बीमारी को बढा दिया," कहते हुए नन्दा ने अपनी सास के बदन पर हाथ फेरा और कमरे मे चली गई।

"माँ को अधिक तकलीफ हो, तो डाक्टर को बुलवाऊँ?"

"इसकी जरूरत नही। वीर श्री वैद्य को सदेश भेज दे। उसके आने तक पैर मे थोडा तेल लगा मालिश कर दे।"

नन्दा ने अपनी माँ और अनुला को बुला लाने के लिये ड्राइवर को 'बडे-घर' भेजा। फिर 'वात-विद्रुरंगय' लेबल लगी हुई तेल की बोतल ला, उसमे से थोडा सा ले, अपनी सास के पाँवो मे मल मालिश की।

"अब जो कुछ रतनपुर मे किया-कहा है, वह सब कुछ भूल जाना है। पियल को कुछ मत लिखना। जिस दिन यहाँ आयेगा, उसी दिन सूचित कर देगे। अब अम्मा और बडी बहन के आने पर उन्हे कह देने मे हर्ज नही। बाहर किसी को भी जिनदास के मरने के बारे मे कुछ भी कहने की जरूरत नही।"

"हाँ, अम्मा मैने भी इसी प्रकार सोचा है। एक ही बात है, जिसका भुला सकना मेरे लिये असम्भव सा है," नन्दा ने बडे दुख के साथ कहा।

"क्या बात?"

"मुर्दा-गृह मे देखा जिनदास की मृत-देह। वही दाढी, अन्दर धँसी आँखें, ऐसा चेहरा देखते ही मुझे चक्कर आने लगा। जैसे तैसे दीवार का सहारा लेने से गिरते गिरते बच गई। और भी मृत-शरीरो के साथ जिनदास के मृत-शरीर पर एक मोटा-झोटा कम्बल लिपटा हुआ था। रात को विश्राम-गृह मे सोने जाने पर भी मेरी आँखों के सामने जिनदास का मृत-शरीर ही नाचता रहा। आते हुए भी वही दिखाई देता रहा। अब भी वही याद आ रहा है।"

"अब उसे याद न कर। अब उसे दिल से भुला दे। नन्दा, उस मनहूस की मनहूसियत को लेकर क्या किया जा सकता है! हस्पताल मे मरने वाले हर किसी की ऐसी ही हालत होती है।"

रतनपुर की यात्रा, जिनदास का मरण, नन्दा के लिये ऐसा अनुभव न था, जिसे स्वप्न की भाँति भुलाया जा सके। जिस समय अभी उसका पहला पति जीवित था, उसी समय उसकी पियल के साथ शादी हुई। पति के जीवित रहते, किसी दूसरे की भार्या बन जाना कुल-कलंकिनी का कार्य है। नन्दा के दिल को जो बात साल रही थी, वह इस प्रश्न का कानूनी पहलू नही था, बल्कि वंशाभिमान का पहलू ही था। अपने माता-पिता का ध्यान आने पर अब उसका मन रोष से भर जाता है। पियल का ध्यान आने पर भी उसे रोष ही आता है। नन्दा अपनी कुल परम्परा की बात को झूठे अभिमान के वशीभूत हो महत्व नही देती थी। गाँव मे ऊँचे खानदान की लडकियो को अनायास रूप से जो 'वंश-गौरव' की शिक्षा मिल जाती है, उसमे अहंकार का भाव नही रहता। हाँ, पुराने परिवारो मे से जो विशेष रूप से धनवान भी हो जाते है, उनमे यह अहंकार का भाव पैदा हो जाता है। इतना होने पर भी यह आश्चर्य की बात है कि जिन पुराने खानदानी परिवारो मे धन, वंशभिमान तथा अहकार की त्रिवेणी आ मिली है, ऐसे परिवारो को कुछ कहने-सुनने वाला गाँव मे दुर्लभ है। जो दरिद्र स्त्रियाँ वंशाभिमान की बात करती है, वे बहुधा मध्य-वृत्त-परिवारो की स्त्रियों की व्यंगोक्तियो का शिकार बन

जाती है। लेकिन जहाँ तक गरीबो की बात है, ऐसी स्त्रियाँ उनकी और भी अधिक गौरव-भाजन बन जाती है। यह समझना कठिन नही है कि मध्य-वृत-परिवारो की स्त्रियाँ, दरिद्र परिवारो की ऐसी स्त्रियों को जो अपने वंशाभिमान का पल्ला नही छोडना चाहती, अपनी व्यगोक्तियो का शिकार क्यो बनाती है ? गाँव मे मध्यवृत्त परिवारो का पढा लिखा तरुण यदि किसी रमणी की आकाक्षा कर सकता है, तो वह ऐसी ही होनी चाहिये जिसके यहाँ धन भले न हो, लेकिन जो ऊँचे खानदान की हो। वह ऐसी रमणी को पाने की आशा नही कर सकता, जिसका परिवार धनी भी हो और खानदानी भी हो। जब धन-विहीन खानदानी रमणियाँ अपने वशाभिमान के कारण मध्य-वृत्त-परिवार के ग्रामीणों की ओर आँखे उठा कर न देखती हो, तो इसमे आश्चर्य करने की कौन बडी बात है, यदि उन गामीणो के मन मे ईर्षा घर कर जाय ?

नन्दा को याद आया कि जिनदास उसे कितना प्रेम करता था, उसका कितना ख्याल करता था और उसका कितना आदर करता था। यह सोच सोचकर कि इतना प्रेम करने वाले जिनदास के लिये वह कुछ भी न कर सकी, उसे मर्मान्तक वेदना होने लगी। उसके लिये कपड़ा-लत्ता खरीद देने को जब कभी जिनदास का हाथ तग होता, तो उसकी 'तंग-दस्ती' हमेशा जिनदास के सजल नेत्रो से ही प्रकट होती। नन्दा का शोक यह सोचकर और भी अधिक हो गया कि इतना अधिक प्रेम करने वाले जिनदास के मुँह मे दवाई के दो चम्मच डालकर, वह उसे सान्त्वना देने के लिये दो शब्द भी न कह सकी।

जिनदास की मृत्यु का वृत्तान्त जब नन्दा तथा पियल की माता से मातर-स्वामिनी को सुनने को मिला तो उसकी आँखो मे भी आँसू डब-डबाने लगे। अनुला के हृदय मे तो जितना शोक उत्पन्न हुआ, उससे अधिक कोप। कारोबार मे जब मुनाफा नही हुआ था, तो घर वापिस न आकर जिनदास इधर-उधर यूँ ही क्यो घूमता रहा ? क्या जिनदास ने यह सब 'बडे-घर' के परिवार की बदनामी करने के लिये ही नही

किया ? सभव है कि जिनदास की वहन भी इस मामले मे उसकी सहायक वनी हो। उसकी वहन नन्दा और अनुला दोनो के प्रति वडी ईर्षा रखती थी; यह अनुला की धारणा थी। जिनदास के मरने के वारे मे यह वृत्तान्त जव जिनदास की वहन सुनेगी तो इसमे झूठ का वहुत सा नमक-मिर्च लगाकर इसका प्रचार करगी। पहले जिनदास के मरने की वात उड़ा दी, ताकि पियल नन्दा के साथ शादी कर सके। यह जानकारी करोलिस ने नही भेजी थी, 'वडे-घर' की औरतो ने ही इस मन-घडन्त झूठी कहानी को फैलाया था। इसी प्रकार सोचने-विचारने के कारण अनुला के चित्त मे शोक के वजाय क्रोध का उदय हुआ।

किसी पर भी सन्देह न करने वाली मातर-स्वामिनी ने जव जिनदास की मृत्यु का समाचार सुना तो उसके हृदय मे केवल शोक ही उत्पन्न हुआ। उसको लगा कि जिनदास के हस्पताल मे मरने के लिये वह स्वय तथा नन्दा दोनो दोषी है। गांव वापिस लौट आने के लिये मातर-स्वामिनी ने अपने दामाद को कभी पत्र नही लिखा था। वह लिखती तो जिनदास अवश्य गाँव लौट आता। क्या यह असम्भव है कि जिनदास इसीलिये गाँव वापिस नही आया कि उसे मातर-स्वामिनी द्वारा लिखी चिट्ठी नही मिली ? इस चिन्ता से दुखित मातर-स्वामिनी के चित्त को 'कर्म-वाद' से ही कुछ सान्त्वना मिली। किसी भी आपत्ति के कारण किसी भी ग्रामीण पुरुष वा स्त्री का चित्त शोक-मग्न हो, उसके मन मे सदैव एक ही भाव का उदय होता है कि यह आपत्ति उसके पूर्व जन्म के कर्म का फल है। यह सोच कि जिनदास का हस्पताल मे मरना भी उसके पूर्व जन्म के कर्मो का फल है, मातर स्वामिनी ने कुछ सान्त्वना का अनुभव किया।

"उसके 'कर्म' को लेकर हम क्या कर सकते है ?" मातर-स्वामिनी के मुँह से यह शब्द उस समय निकले जव नन्दा तथा पियल की माँ ने जिनदास के हस्पताल में मरने के वारे विस्तृत जानकारी दी।

"कर्म नही है," पियल की माँ बोली, "उसकी मृत्यु का कारण है उसकी मनहूसियत।" यह बात नन्दा के कानों को सुख पहुँचाने वाली न थी।

"न कर्म और न मनहूसियत ही इसके कारण हैं। बल्कि इसका कारण है मूर्खता," इतनी बात अनुला ने इसीलिये कही, क्योंकि वह पियल की मा पर व्यङ्ग नही कस सकती थी।

"हमारे घर का कोई नौकर चाकर ही हो, बीमारी-ठिमारी मे हमने कभी उसकी भी उपेक्षा नही की। जिनदास को जो गांव लौटने का विचार नही आया यह उसका कर्म ही है," मातर-स्वामिनी बोली।

पियल की माँ ने, जो जिनदास को 'मनहूस' कहा था, वह कुछ बहुत सोच-विचार कर नही। पियल की माँ की समझ मे यह बात आई कि उसके मुँह से निकला हुआ यह शब्द न नन्दा के लिये ही सुखद हो सकता है और न मातर-स्वामिनी के लिये ही, इसलिये उसने आगे इस प्रकार बात बदली—

"मातर स्वामिनी का कहना सही है। 'कर्म' के ही कारण उसे मातर स्वामिनी के पास लौट आने का विचार नही आया। अगर चला आता तो बडे मजे मे निरोग होकर, फिर कारोबार शुरू कर सकता था। पैलमडुल से दूर के एक गांव में जिनदास चाय की एक दुकान पर चाय बनाने के लिये नौकरी करता रहा है। वह जगह जगह इसीलिये भटकता रहा है कि उसे जुये की लत पड गई थी। रतनपुर मे नन्दा ने और मैंने जब कुछ पूछ-ताछ की तो यह बात सुनने को मिली। नन्दा तो बहुत पूछ-ताछ करने के लिये उत्सुक नही थी।"

"उसे जुए की लत पड़ गई है, यह बात हमे भी विबिल के एक आदमी से पहले सुनने को मिली थी"

"क्या कर्नेलिस से ?"

"नही, उससे नही।"

"उसने जब जिनदास के मरने की बात लिखी थी, उससे भी पहले यह जानकारी मिली थी।"

"सिंहल पहुँच कर जिस आदमी को जुए की लत पड़ गई हो, वह फिर अपने गाँव-घर कहाँ वापिस आता है।"

"शादी करने से पूर्व भी जिनदास कोई काम-काज नहीं करता था। उस समय भी वह जुआ खेलता था लेकिन हमें इसका ठीक ठीक कुछ पता नहीं चला," अनुला ने कहा।

"हाँ," कहकर मातर-स्वामिनी ने भी अनुला का समर्थन किया। जेम्ज़ से पूछने पर उसने कहा था, 'स्वामिनी! यह कहाँ की गप्प है। नव वर्ष के अवसर पर एक दो दिन जिनदास ताश खेलता है। क्या यह जुआ है? 'नव-वर्ष' के मौके पर कौन है जो खेल नहीं खेलता?'

अपने भीतरी प्रकाश से अपने जो दोष दृष्टिगोचर हों, उन्हें धर्म की किसी मान्यता की चादर से ढके रखने का अभ्यास नन्दा को न था। इसलिये यह व्याख्या कि जिनदास अपने किसी पूर्व-कर्म के ही फल-स्वरूप हस्पताल में मरा है, नन्दा को नहीं सूझी थी। जिनदास को जो दुःख भोगना पड़ा, उसकी जिम्मेदारी समाज पर थी, नन्दा पर थी। क्या इन सबके लिये सर्वाधिक दोषी स्वयं नन्दा के माता-पिता ही न थे? पियल ने पहले जब प्रस्ताव किया था तो अपने माता पिता के ही कारण नन्दा ने उसे अस्वीकार किया था। और उसके माता पिता ने उस प्रस्ताव को इसलिये अस्वीकार किया था, क्योंकि पियल का दादा कंधे पर बैहगी लेकर सब्जी बेचा करता था। यदि कुलाभिमान या वंशाभिमान को अत्यधिक महत्व देने वाले माता पिता की ओर से बाधा उपस्थित न की गई होती तो नन्दा की शादी पहले ही पियल के साथ हो गई होती। तब जिनदास विपत्ति में नहीं पड़ता और नन्दा भी एक 'पति' के रहते दूसरे 'पति' को अपना कर कुल को दाग लगाने वाली सिद्ध न होती।

यदि नन्दा माता-पिता की सम्मति की उपेक्षा कर पियल के साथ शादी कर लेती, तब भी उक्त विपत्ति अनुत्पन्न सन्तान के समान होती।

तो क्या इससे यह सिद्ध नही होता कि यह सारा दोष नन्दा का ही है। यदि नन्दा माता-पिता की आज्ञा की अवहेलना करती, तो पता नही इसके क्या क्या परिणाम होते ? तो फिर यथार्थ दोषी किसे माना जाय ? कर्म को ? मनुष्य-स्वभाव को ? अथवा सभी प्रकार की विपत्तियो की चिन्ता न कर, मानव के सहज-स्वभाव की परवाह न कर, समाज को कानून के बन्धन मे बाँधने का आदमी का जो प्रयास है, यह सब उसी का परिणाम है।

तर्क-स्वरूप बादलो के घोडे पर सवार होने का प्रयास न कर नन्दा ने अपने माता-पिता को दोषी ठहराया, अपने आपको दोषी ठहराया।

नन्दा को रत्नपुर से लौटे दो ही दिन हुए थे कि पियल भी गांव वापिस आया। उलझन मे उलझे हुए पियल के चित्त को गांव पहुँचने पर नन्दा तथा मा से जिनदास के सम्बन्ध मे जो समाचार जानने को मिला, उससे उसका चित्त कुछ हलका हुआ। इससे कोई एक सप्ताह पहले पियल को सुनने का मिला था कि रत्नपुर से कोई चौदह मील की दूरी पर वह एक गाव मे, एक चाय की दुकान पर, बहुत मामूली तनख्वाह लेकर चाय बनाने का काम करता है। इस समाचार को सुन-कर उसके मन मे संवेग उत्पन्न हुआ। वह 'दियतलाव' न जाकर सीधा बिबिल पहुँचा। बिबिल से वह बदुल्ल पहुँचा और वहाँ हस्पताल मे जो जिनदास के मरने की बात सुनी गई थी, उसकी यथार्थता का पता लगाने की कोशिश की। बदुल्ल मे जिस जिनदास की मृत्यु हुई थी, वह नन्दा का 'पति' जिनदास नही था, बल्कि अहंगम का कोई दूसरा ही जिनदास था। उसके बाद जब पियल ऐकिरियन कुम्बरु पहुँचा और उसने जिनदास के बारे मे पूछ-ताछ की तो उसे असदिग्ध रूप से यह विश्वास हो गया कि जिस जिनदास की बदुल्ल हस्पताल मे मृत्यु हुई है वह कोई दूसरा ही जिनदास है।

यह बात मालूम होने पर खुफिया-पुलिस के एक आदमी की तरह पियल जिनदास के आने-जाने की जगहो का पता लगाने लगा। वह सबसे

पहले मडकलपुव पहुँचा। जिनदास नाम के किसी आदमी के बारे मे वहाँ के व्योपारियो से कोई विश्वसनीय जानकारी नही मिली। मडकलपुव मे रहते समय पियल ने विविल से आये किसी आदमी से सुना था कि जिनदास कलमुने के सिंहल व्योपारी की दुकान पर सामान तोल तोल कर देने की नौकरी करता है। उसने कलमुने पहुँच कर यह पता लगा लिया कि कलमुने के सिंहल-व्योपारी की दुकान पर माल तोलने वाला आदमी जिनदास नही है। तब वह मुनरागल पहुँचा। वहाँ के दुकानदारो से पियल को पता लगा कि जिनदास नाम का एक आदमी मुनरागल की एक चाय की दुकान पर कई महीने काम करता रहकर अब वलंगोड प्रदेश की ओर गया है। सोसलंद, वैल्लवाय, वलगोड आदि इलाकों का चक्कर काट कर अन्त मे हम्वंतोट पहुँचा। हम्वतोट से निकल कर पियल ने दिकवैल, मातर तथा गन्दर आदि जगहो की खाक छानी। जब उसे कही भी जिनदास के बारे मे कोई पक्की खबर नही लगी तो वह वापिस गाँव लौट आया। क्योंकि वह जिनदास को तलाश मे भटकता रहा था, इसीलिये वह नन्दा को पत्र तक नही डाल सका था।

नन्दा तथा अपनी माँ से जब जिनदास के बारे मे पक्की जानकारी मिली तो पियल ने कुछ हलके पन का अनुभव किया। लेकिन क्योंकि नन्दा ने जिनदास की अन्त्येष्ठि की कराई थी, इससे पियल के मन मे ईर्षा ही नही, क्रोध का भाव भी उदय हुआ। नन्दा के सम्बन्ध मे जो उसने प्रस्ताव किया था, नन्दा के माता-पिता ने उसे पहले अस्वीकार कर दिया था। उसका प्रस्ताव अस्वीकार कर उन्होने नन्दा जिनदास को सौंप दी थी। नन्दा भी उसे भूल कर जिनदास को चाहने लगी थी। इस बार नन्दा के माता पिता पियल से शादी करने के लिये तभी राजी हुए, जब उन्होने सुना कि जिनदास दरिद्र अवस्था मे मर गया है। जिनदास के मरने का बात न सुनी होती, तो नन्दा उसे न चाहती। इस प्रकार सोचने वाले पियल के मन मे यदि क्रोध का भाव पैदा हो गया हो, नन्दा तथा जिनदास को लेकर ईर्षा जाग उठी हो, तो इसमे कौन आश्चर्य है।

"तो मृत-वस्त्र का दान कर, जिनदास का जो भूमिदान किया-कराया गया है, वह मेरे ही पैसे से न !" ईर्षा और क्रोध के वशीभूत हुए पियल के मुँह से निकल ही तो गया। उसके मुँह से यह विषैला वाक्य उस समय निकला, जब नन्दा सजल नेत्रो से जिनदास सम्बन्धी सारा वृत्तान्त उसे सुना चुकी और वह चुप चाप वैठा उसे सुनता रहा।

नन्दा ने पियल का दारुण व्यङ्ग सुना तो वह कोडे की मार खाई स्त्री की तरह दोहरी होकर रह गई। उसका कुलाभिमान उसके सिर पर सवार हो गया। दोनो आँखो से निकलती हुई क्रोधाग्नि ने जिनदास की याद मे बहते आँसुओ को सुखा दिया। नन्दा विना एक भी शब्द बोले कुर्सी से उठी और कमरे मे जाकर, चारपाई पर लेट सोचने लगी। उसके चिन्तन की पृष्ठ-भूमि मे उसकी भयानक क्रोधाग्नि थी। उसे लगा कि वह उसी समय उठकर वडे-घर' वापिस चली जाय।

यद्यपि दूसरी वार वह पियल की पत्नि वन गई थी, तो भी पियल वंश-परम्परा की दृष्टि से उससे हेठा था और उसके रीति रिवाज तथा रहने-सहने की विधि नन्दा की अपेक्षा निम्नस्तर की थी, यह वात नन्दा के हृदय से नही मिटी थी। पियल का व्यङ्ग-वाण सुना तो नन्दा का कुलाभिमान जाग उठा। पियल का पिता अपने जीवन-काल मे उसके घर आता था तो शायद ही कभी कुर्सी पर वैठा हो। उसकी आमदनी उसके परिश्रम का ही परिणाम न था. वल्कि वह अपनी 'नीच-वृत्ति' से भी वहुत कुछ कमा लेता था। यह वात नन्दा जानती थी। जव पास मे कुछ पैसा हो गया, तो पियल की माता ने जो अपनी परम्परागत-वृत्ति छोड़ी, वह नन्दा के ही घर आ जाने के कारण। पियल की माता को जो अव यह आदर-सत्कार मिलता है, उसका भी कारण यही है कि पियल का विवाह 'वडे-घर' की एक रमणी के साथ हो गया है। जो ग्रामीण स्त्रियाँ पियल की माँ को पहले 'वबुन-भार्या' कहकर बुलाती थी, वे ही अव उसे 'वैलीगम-स्वामिनी' कहकर पुकारती है। नन्दा की मान्यता थी कि ग्रामीण स्त्रियाँ पियल की माता को जो अब इस आदर-सूचक सम्बोधन से पुका-

रती है, उसका कारण यही है कि पियल का 'बड़े-घर' से सम्बन्ध हो गया है। एकाध को छोड़कर पियल के रिस्तेदारों से आज भी यदि कोई 'बड़े-घर' आता जाता है तो कुर्सी पर नहीं बैठता।

निम्न-श्रेणी में उत्पन्न स्त्रियों की कुछ विशेषतायें अभी भी पियल की माँ में देखी जा सकती हैं। जब वह देखती है कि बलदास के साथ बातचीत चालू है तो पियल की माँ यदि वहाँ आती है, तो वह ऐसी जगह खड़ी रहती है, जहाँ से उसे सारी बातचीत सुनाई देती रह सके। एक दिन बँहगी पर सब्जी बेचने वाले के साथ पियल की माँ झगड़ पड़ी। उसने उसे गालियाँ दीं। जब नन्दा ने उसे डाँटा, तभी उस बँहगी पर सब्जी बेचने वाले ने अपनी गालियाँ बन्द कीं।

कुलाभिमान से उत्पन्न इस विचार-सरणी के कारण नन्दा के कोप ने और भी अधिक कठोर रूप धारण कर लिया। तो भी, क्योंकि उसे किसी को बुरा-भला कहने का अभ्यास नहीं था, इसलिये उसके कुलाभिमान ने उसके मुँह से नहीं बल्कि उसकी दोनों सजल आँखों के माध्यम से अभिव्यक्ति पाई। पियल के मुँह से जो वाक्य निकला था, वह कठोर था तथा अत्यन्त अनुचित था, यह बात पियल की समझ में अब आई जब नन्दा आसन से उठ, उसको घोर अंगारे के समान जलते हुए नेत्रों से देखती हुई, वहाँ से चली गई। पियल को यह सोचकर बड़ी लज्जा आने लगी कि वह उस क्षण अपनी ईर्षा और अपने क्रोध पर काबू नहीं रख सका। कुर्सी से उठकर पियल नन्दा के कमरे की तरफ बढ़ा।

"नन्दा! गुस्से मत हो," पियल ने विनती की।

चारपाई पर पड़ी नन्दा दूसरी ओर घूम गई।

"नन्दा! मुझे क्षमा कर" कहते हुए पियल उसके पास ही बैठ गया। "उस समय मुझे गुस्सा आ गया था, इसीलिये मेरे मुँह से वह वाक्य निकल गया।"

"गुस्सा आ गया था!"